हमारी एडवर्ड तिलक यात्रा

(विलायत)

अर्थात्

महाराजाधिराज एडवर्ड सप्तम् के लण्डन में राज-
तिलक महोत्सव का आंखों देखा वर्णन

तथा

समुद्रयात्रा और विलायत के अनेक दर्शनीय
स्थानों और निर्माणों के रोचक और
हृदयग्राही विवरण

ठाकुर गदाधरसिंह कृत

लाला सीताराम जी के निज यन्त्रालय
जुही, कानपुर में प्रकाशित

प्रथमबार
१२५० प्रति

मूल्य
॥=) मात्र

प्रेमभक्त आर्य्य (हिन्दू) जाति के प्रति

समर्पण ।

प्यारे !

जन्म और कर्म दोनों प्रकार से तुम्हारा जातीय सैनिक होने के कारण मुझको महाराजाधिराज एडवर्ड सप्तम के राजतिलक महायज्ञ में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुवाथा, अतः अपनी यात्रा का वृत्तान्त लिखकर तुम्हारेही सन्मुख निवेदन करदेना अपना औचित्य समझताहूं । सो मैं अत्यन्त प्रेम और भक्तिपूर्वक हृदय के उपहार सहित इस तुच्छ गाथा को तुम्हारे चरणों में समर्पण करताहूं ।

तुम्हाराही

गदाधर

DEDICATED

TO

THE WHOLE INDIAN NATION.

BROTHERS !

I had the good fortune of joining the Coronation Ceremony of our Emperor Edward VII only because I am your national soldier both by birth and profession. I therefore consider it to be my bounden duty to present to you an account of my journey.

Hence it is that I lay this humble narrative at your feet with the greatest love and adoration.

Yours own,

GADADHAR.

निवेदन।

महाराजा एडवर्ड सप्तम के राजतिलक महोत्सव में सम्मिलित होने का शुभसम्बाद पाने के दिन सेही मेरेमनमें यह अभिलाषा उत्पन्न हुईथी कि चीन की भांति अपनी इस यात्रा का बृत्तान्त भी लिखकर अपनी प्यारी जाति के समर्पण करूं। मेरेअनेकों कृपालु मित्रों ने भी मुझको इस बात की आग्रह पूर्वक आज्ञा कीथी। और चीन बृत्तान्त की समालोचना करते हुए कतिपय मान्य सम्पादक महाशयों ने भी मुझसे और भी ग्रन्थों के लिखे जाने की अभिलाषा प्रगट की थी। अतः मेरी हार्दिक इच्छाथी कि इंगलिस्तानसे लौटतेही यह ग्रन्थ अतिशीघ्र सबके हाथों में देसकता! मैने चाहा था कि विलायत में रहतेही लिखना आरम्भ करदूं परन्तु थोड़ा अवकाश और अधिक कार्य्य होनेके कारण वहां पर मैं समय नहीं बचासका! अकतूबर सन् १९०२ ई० में विलायत से लौटतेही मैंने लिखना आरम्भ करदिया और परमेश्वर की कृपासे फरवरी सन १९०३ ई० में लगभग समाप्त कर चुकाथा। दुर्भाग्य से हमारे देशमें ग्रन्थकारों को केवल रचना की ही नहीं बरन छपाई और बिक्री आदि की चिन्ता भी स्वयम् करनी पड़तीहै। सो मुझको भी इस चिन्ता में ग्रस्त होना पड़ा!

चीन में तेरह मास की छपाई आदि में जल्दी करनेके कारण मुझको अधिक व्यय करना पड़ा और इस पुस्तक का मूल्य भी इसीसे अधिक रखना पड़ाथा। सो इसबेर कुछ किफायत की लालसासे अपने किसी परिचित प्रकाशक की शरण लेन की इच्छा हुई। भगवान की कृपासे हमें एक ऐसेही महाशय मिलभी गये। कानपुर व्यापारी प्रेस के अध्यक्ष लाला सीताराम जी ने

इस ग्रन्थ के प्रकाशन और बिक्रय आदि का भार अपने ज़िम्मे स्वीकार करके दो महीने के अवसर में प्रकाशित करदेने की प्रतिज्ञा की। मैंने अत्यन्त हर्षपूर्वक प्रतिलिपि को उनके सिपुर्द किया और लाला साहब ने तत्काल छपाई आरम्भ भी करदी। परन्तु हमारे दुर्भाग्यवश कानपुर में महामारी का प्रकोप ऐसाबढ़ा कि प्रेस का चलना असंभव होगया। लाचार लाला साहब को प्रेस बन्द करना पड़ा। कई महीनों पश्चात् प्रेस खुलने के उपरान्त भी कतिपय ऐसी असुबिधायें पड़ती रहीं कि जिनके कारण पुस्तक प्रकाशित होने में देरही देर होती गई!

मुझको इस बिलम्ब का बहुतही दुःखहै क्योंकि मैंने इस पुस्तक के प्रकाशन में देर करने से अपने सैकड़ों मित्रों को उत्कंठा जनित कष्ट पहुंचाया! पुस्तक की बात पूछने को मेरेपास अनेकों पत्र नित्य आते रहे परन्तु मैं अबतक उन कृपालु मित्रों की इच्छा को पूरित न करसका!!! मैं विनयपूर्बक सब महाशयों से इसकी क्षमा प्रार्थना करताहूं और आशावान हूं कि अबेर की माफ़ी देकर इस पुस्तक को उसी प्रेम और दयादृष्टि से स्वीकार करेंगे जैसे कि चीन को स्वीकार कियाथा।

इस ग्रन्थ की भाषा के सम्बन्ध में भी एक बात कहने की आवश्यकता जानपड़तीहै। इसमें संस्कृत शब्दों का प्रयोग कुछ अधिकहै। कोई कोई ऐसे शब्द और वाक्य भीहैं जिनका प्रयोग नया जान पड़ेगा और वे मेरी निज गढ़न्त कहेजासकतेहैं। मैंने अपनी समझ में बंगभाषा की भांति हिन्दी का लालित्य संस्कृत शब्दों के प्रयोग में समझा था। और यह बिचाराथा कि जैसे बंगभाषा में सम्मिलित होकर संस्कृत के बहुतेरे शब्द साधारण बोलचालके बनगयेहैं उसी भांति हिन्दी में भी यदि संस्कृत शब्द

बहुतायतसे काम में लाएजांय तो आजकल के फारसी, अरबी शब्दों की जगह समयान्तर में अवश्यही अधिकार करसकेंगे। परन्तु साम्प्रतिक लेख प्रणाली के अनुसार आजकल इस बात की आवश्यकता हिन्दी के लिए नहीं समझी जाती। अतः मैं अपनी पुस्तक में कठिन भाषा लिखी जाने की त्रुटि के लिये क्षमा का प्रार्थीहूं। छापे की अशुद्धियां भी बहुत स्थानों पर रहगईहैंजिनको निवेदनहै कि पाठक कृपाकर सुधारलेंगे।

इस पुस्तक के लिखने का उद्देश्य न तो किसी प्रकार से साहित्य सेवा काहै और न कोई नवीन शिक्षा देने का। उद्देश्य अपने हृदय के भावों का प्रकाशित करदेना मात्रहै। अंग्रेज़ी आदि विदेशी भाषाओं में सैकड़ों सहस्रों ग्रन्थ देश देशान्तरों और द्वीप द्वीपान्तरों के भ्रमण वृत्तान्तों और अनेक प्रकार के अन्वेषणों के बनते देखता सुनताहूं इसीसे मनुष्य स्वभाव सुघट ईर्षाके वशवर्ती होकर अपने इस तुच्छ भ्रमण वृतान्त को भी लिखने की धृष्टता करने पर उद्यत होगया! पाठक क्षमाकरैं।

सेवक

गदाधर

विषय सूची ।

ओ३म्

हमारी एडवर्ड तिलकयात्रा।

MY CORONATION VISIT TO ENGLAND

आनन्द सम्वाद THE WELCOME NEWS.

राजा के प्रति हम भारतवासियों की पूज्य बुद्धि होती है, यहां तक कि हम लोग परमेश्वर के नीचे दूसरा स्थान राजा ही को देते आये हैं। इतना ही नहीं, मर्य्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जैसे धर्म परायण राजाओं को हमने ईश्वर के समान तक पूजापात्र जाना और माना है।

आर्य्यगण राजा में जैसी श्रद्धा और भक्ति रखते थे राजा की भी प्रजा के प्रति वात्सल्य और निःस्वार्थ न्याय परायणता किसी अंशमें भी कम न थी।

यह प्रायः सर्व सम्मत सिद्धान्त है कि संसार भर में सब से प्राचीन सभ्यता की पुस्तक वेद ही हैं और सर्वादि व्यवस्थापक मनुही हुये हैं। हमारे विश्वास के अनुसार और नये अन्वेषण के अनुकूल भी वेद और मनु को सहस्रों, लक्षों नहीं करोड़ों, वर्षों से भी अधिक समय व्यतीत हुआ। तौभी इतने बड़े स्मृति पथ विदूरित समय में आज पर्य्यन्त आर्य्य जाति की राज भक्ति समान भाव से चली आरही है। चाहे उसके कारण अनेकों क्षतियां ही क्यों न उठानी पड़ी हों।

अवश्यही कालकी कुटिल गति से इस देश में सम्प्रति कई बड़े बड़े राज परिवर्तन भी हुए और उनके मूल में स्वार्थ परता की दुर्गन्ध के कारण आर्य्य प्रजाके मन बहुधा मचलाये और डगमगाये भी पन्रतु ज्योंही किसी न किसी मिससे उस दुर्बास पर कुछ आवरण पड़गया त्योंहीं प्रजाभी शांत और पूर्ब्बवत् भक्ति परिपूरित होगई।

प्राचीन काल — वैदिक समय — में चातुर्व्वर्ण बिभाग के अनुकूल सब लोग — राजा प्रजा सभी — अपने अपने निर्दिष्ट कार्य्यों में संलग्न रहा करते थे। स्वार्थीपन का नाम भी न था। प्रजा गण अपने अपने कार्य्य व्यापार में लवलीन, और राजा, प्रजा रक्षणमें दत्त चित्त। सभी अभ्युदय और निःश्रेयस सिद्धियों की प्राप्ति में तत्पर रहा करते थे। प्रत्येक का एक दूसरे पर बिश्वास था। किसी को किसी से छल कपट का स्वप्न भी न था।

जब करोड़ों बर्षों तक आर्य्यगण ऐसेही आनन्द में — शांति में — रहे हैं, तब ऐसी प्रजा की राजभक्ति अटल क्यों न होती?

यह सत्य है कि इदानीन्तन सैकड़ों बर्ष इस देश में बिदेशी राज्य रहा और उसके मूल में स्वार्थ रूपी खाद भी पड़ी है परन्तु करोड़ों बर्षों का स्वभाव इन कतिपय बर्षों के परिवर्तन से बदल नहीं सकता। राजभक्ति की सुटेव वा कुटेव जो हो, हममें अबतक बर्तमान है।

समय के प्रभाव से मुसलमानों का राज्य हम पर से दूर होगया और न्याय प्रिय अंगरेजी राज्यकी शीतलछाया हम को प्राप्तहुई। राजराजेश्वरी रानी विक्टोरिया ने अपने घोषणा पत्र द्वारा हमको यहभी विश्वास दिलाया कि काले गोरे का

वर्णभेद त्यागकर न्यायतुला पर भारतवासी और अंगरेज प्रजा दोनों समान समझी जावेंगी * ।

बस फिर हमको अविश्वासकी कौनसी बात शेषरही? आर्य्य संतानने अपने सच्चे सरल स्वभाव से अंगरेजों को विदेशी और बिधर्मी होने पर भी स्वदेशी आर्य्य नरेश की भांति पूज्य माना और वैसीही दृढ़ भक्ति से इनकी आज्ञा पालन करनेलगी ।

परमेश्वर ने आधुनिक काल में अंगरेज जाति को राजनीति कुशलता भी ऐसी दे रक्खी है कि जिसके बलसे यह न केवल देश के अधिपति बने बरन इन्होंने हमारे धन, धर्म और स्वभाव सभी वस्तुओं पर अधिकार प्राप्त कर लिया है ।

ऐसे सर्वाधिकारी राजाधिराजको राजभक्त भारतप्रजा अपना इष्टदेव मानकर उसकी पूजाकरे तो क्या कोई आश्चर्य्यकी बातहै ?

आश्चर्य्य काहे को—हमारे लिए तो यह स्वाभाविक है:—

मिष्ट बचन से जात मिटि, उत्तम जन अभिमान ।
तनक शीत जल ते मिटै, जैसे दूध उफान ॥

शुद्ध हृदय भारतीय प्रजाको बशमें करनेके लिए मीठे बचन मात्र ही पर्य्याप्त हैं सो इसकी वर्तमान नरेशों के घर में कमी नहीं—बस राजाने चाहै हमको अपने देशियों [British sub-

* आश्चर्य है कि दिल्ली दरबारमें महाराज एडवर्डकी ओर से जो घोषणा पत्र प्रकाशित हुआथा उसमें इस बिषयका कुछ उल्लेख नहीं हुआ। अवश्यही यदि श्रीमान् अपनी पुण्यवती माताके बचनोंका प्रतिपाल करना न चाहते तो किसी न किसी भांति उसका प्रतिबाद करही देते । तौभी यदि घोषणा पत्रमें इस बिषय पर वेभी अपनी सहानुभूति प्रकाशित करदेते तो भारत प्रजा का दुगुना बिश्वास होगया होता ।

jects] के समान प्रजा नहीं भी समझा हो पर हमने तो अपना सर्वस्व जीवन, मरण, व्योहार, व्यापार आदि उन्हीं पर निर्भर कर दिया और हम पांव पसार कर सुख से नींद लेने लगे।

राजा के दुःख में दुखी और सुख में सुखी होना हमारा स्वभाव है। रानी विछोह के दुख से हिन्दोस्तानी प्रजा कितनी बिकल होगई थी—यह कह कर समझाने की बात नहीं है।

क्षुधा तृषा से कातर, हाथ पर मूड़ धरे, कपाल पीटती हुई प्रजा का अपना पेट काट कर—हां, बच्चोंके आगेका ग्रास छीन कर—रानीस्मारक कोष में करोड़ों रुपयों का देना इस बातका प्रत्यक्ष प्रमाण है। पर—

दुख देखे सुख होयगो, सुख नहिं दुख बिहीन!

सो क्रमशः वह दुख पीछे पड़ने लगा। नवीन राजा के नवीन उत्साहोंसे उत्साहित होकर भारतीय प्रजा भी अपने सब दुख भूल गई। नवाभिषेक की बधाई भारतवर्ष में चहुंओर सजनेलगी।

नवल बसन्त के आगमन से जिसभांति समस्त वृक्षावली नये नये पत्र पल्लवादि से हास्यमयी हो जाती हैं, नन्हीं नन्हीं बेला, चमेली, नबेली आदि अपनी तनिक तनिक सी कलिकाओं को प्रातःकालीन मन्द समीर के स्पर्श से जिस भांति बिकसित कर देतीहैं और कोकिल आदि पक्षियों को प्रलोभित करके तन्मय बना देतीहैं, ठीक उसी भांति बिलायत में राजतिलकोत्सव के शुभसम्वाद ने हम भारतवासियों को बिकसित और प्रफुलित कर दिया।

हमारे कुछेक बृद्ध महाशय गण, जिन्हें प्रत्येक बिषयमें गुसांई जी की रामायण ही परम प्रामाण्य है, कहने लगे :—

अरे भय्या! राज तिलक हो। बड़ी अच्छी बात है।

भगवान उनको शुभ करें । वह फरें फूलें । पर—

कोउ नृप होय हमें का हानी । चेरी छाँड़ न होउब रानी !!

परन्तु पाठक ! जैसा कि आप जानते हैं, आजकल समय विज्ञान का है । तेल के प्रदीप में उस दिन जो उजास पर्य्याप्त समझा जाता था, आज विज्ञान शक्ति से उसकी अपेक्षा अनेक गुणा अधिक वैद्युत प्रकाश [Electric light] भी कम समझा जाता है । उन्नति करने की जगह उसमें अब भी दीख पड़ती है । परमेश्वर ने सूर्य में जो प्रकाश प्राकृत ही दे रक्खा है वह हमारे वैद्युत प्रकाश से कितना अधिक है, कुछ ठिकाना है? उन्हीं सूर्य्य की प्रखर किरणों को शीतल मन्द होकर हम तक पहुंचाने के लिए बीच में कैसा सुन्दर चन्द्रमा रूपी प्रतिक्षेपक [Reflector] डाला है । इत्यादि प्राकृत प्रकाश से उजीले मस्तिष्क वाले नवयुवक गण कहने और सोचने लगते हैं कि जैसा कि परमेश्वर ने हम सब लोगों को सब विषयों की शिक्षा प्रकृति द्वारा ही की है । तो हम क्यों न उसके अनुकूल उन्नति करने में अग्रसर होते रहें ? अधिक नहीं तो प्रकृति के बराबरी तक पहुंचने का तो हमको भी परमेश्वर ने अधिकार दिया है ?

इसी तरह की नई रोशनी के लोग हमारे बूढ़े लोगों से भी कह बैठते हैं कि 'बाबा ! हमारे प्राचीन शास्त्रों में भी तो निःस्वार्थ भक्ति का बड़ा महात्म्य लिखा है' । बसन्त आगमन में कोकिल भी तो निःस्वार्थ ही आनन्द मनाती है । वास्तव में फूल, कलिकायें, पत्र पल्लवादि सभी कुछ मनुष्यों के हार, गुलदस्ते, आदि के कामों में आते हैं । बेचारे पक्षी को तो केवल आंखों का सुख ही पर्य्याप्त होता है । और इतने ही से वह फूले अंग नहीं समाता । हम भी यदि अपने राजा के सुख में निःस्वार्थ ही सुखी हों तो क्या वह

वैदिक निःश्रेयस सिद्धि के बराबर न होगा ? इत्यादि " यह सब तो घरेलू बातें [Home talks] हैं । सारांश यह कि भारतवर्षभर के आबाल, वृद्ध वनिता सभी इस आनन्दमय महोत्सव का शुभ सम्वाद पाकर अहलाद से पुलकित होगये । यह आनन्द कितना अधिक बढ़गया जब कि बहुत से हिन्दुस्तानी सज्जनोंको महाराजा की ओर से उत्सव में सम्मिलित होने का निमन्त्रण प्राप्त हुआ।

हमारा आनन्दघट भी वर्षा कालीन क्षुद्र नदियों की भांति इतरा कर महासागर में जा मिलने की लालसा से उमड़ उठा ।

महाराजा ने अपनी भारतीय सेना के सब जातियोंके प्रतिनिधियों को निमन्त्रित कियाहै यह जानकर वास्तव में हम लोगों को बड़ाही हर्ष हुआ ।

हमारे शास्त्रों में राजाका दर्शन पुण्यप्रद लिखा है । फिर ऐसे राजा का दर्शन जिसके द्वारपर अष्ट सिद्धि और नवनिधियां हाथ बांधे खड़ी हों—जिसके राज्य में सूर्य्यका अस्त ही न होता हो—जो संसार की (न्यूनाधिक) प्रायः सभी जातियोंका अधिपति हो—कितना अधिक पुण्यास्पद न होगा? फिर इस महापुण्य के भागी होने के अतिरिक्त उस महानगरी—महादेश—केभी तो दर्शन होंगे जो आज अभ्युदय का सर्वांग आदर्श और सभ्यता वितरण का केन्द्र बन रहा है । सो राजतिलक के अवसरपर इंग्लिस्तान जानेका शुभसंवाद हम लोगोंको बहुतही हर्षदायकहुआ ।

—+:o:+—

यात्रा JOURNEY.

इंगलिस्तान आज संसार भरमें सर्व श्रेष्ट देश है । उसकी राजधानी महानगरी लंडन सब की शिरमौर क्यों न हो ! फिर सोनामें सुगंध—राज तिलकोत्सव के साजबाज में सर्वांग सौन्दर्य्य

मयी, ऐसे दुर्लभ अवसर में लंदन यात्रा के शुभदिनकी प्रतीक्षा मैं प्रतिक्षण करने लगा।

कतिपय प्रस्तुतियां करते कराते परमेश्वर की कृपा से वह सुदिन भी आन पहुंचा। तारीख १० मई १९०२ ईस्वी को हम राज पूत सैनिक प्रतिनिधिगण लखनऊसे बम्बई की ओर देवलाली केम्प को प्रस्थानित हुए।

प्रातःकाल ही हम लोग अपने सैनिक वेष बिन्यास से सुसज्जित हुए और अपने कई अंगरेज अफसरों के साथ साथ जो कि केवल आदरार्थ पहुंचाने को पधारे थे रेलवे स्टेशनको चले। फौजी बैंडबाजा आगेआगे सुरीले रागसे Soldiers of the King राजाके सैनिकों की यात्रा इत्यादि बजाता हुआ आगे बढ़ा। और पलटन के जन समूह ने बड़े उत्साह से महाराजा रामचन्द्र की जय—बजरंगबली की जय—राजा एडवर्ड की जय इत्यादि जय जय कार की ध्वनि की।

अनेक उमंगों से भरपूर हमलोग स्टेशन पर पहुंचे और वहां कुछ देरके लिए बिश्राम लिया क्योंकि रेलछूटनेमें कुछ बिलम्बथा।

मैं स्टेशन पर इतस्ततः घूमने लगा। वहां पर उपस्थित सभी लोगों की जिह्वा पर बिलायत की ही चर्चा बिराज रही थी।

हमारे एक कप्तान साहब ने बातचीत करतेहुए मुझसे पूछा कि तुम इतनी बड़ी यात्रा—राज तिलक यात्रा—तो कर रहे हो भला अपने महाराजा के लिए भेंट क्या ले चले हो? अवश्यही इस प्रश्नका उत्तर सूखा था! दीन, हीन, दरिद्री, निरुद्योगी भारत सन्तान के पास आज राजा एडवर्ड के भेंट योग्य क्या बचा है? सो मुझको कहना पड़ा कि साहब! कुछ भी नहीं, केवल

अपना शरीर मात्र ! क्योंकि अपनी सर्वापेक्षा अधिक प्रिय वस्तु ही राज भेंट के योग्य हो सकती है। और कालगति से आजकल हम को अपनी देहकीही बड़ी ममताहोगई है सो यही महाराजा की भेंट के लिए प्रस्तुत है।

मैंने कहते तो कह डाला, परन्तु पीछे कुछ लज्जा सी बोध हुई क्योंकि मैं तो पहिलेही से अंगरेजों का क्रीतदास सिपाही हो चुका हूं ! मुझे अपने शरीर पर अधिकार कहां ? राजभेंट में इसका पुनर्दान कैसा ? मैं क्या सारादेश ही उनके अनुगत है।

परन्तु त्वदीयं वस्तु राजेन्द्र, तुभ्य मेव समर्पए ! कहकर मन को समझाया और सन्तोष किया। एक और साहब बातचीत करते हुए कहने लगे कि मैं समझता हूं तुम इंग्लिस्तान को बहुत चाहोगे। आश्चर्य्य नहीं कि तुमको यहां लौटाहुआ देखनेके बदले केवल यह सन्देशा सुनना पड़े कि तुम लंडनमें रहगए हो।

मैंने कहा कि—निःसन्देह साहब ! आपकादेश मैंने ऐसाही सुना है। लंडन में या अंगरेज जाति में आकर्षिणी शक्ति वास्तविक विद्यमान है। परन्तु मेरे लिए तो—जननी जन्मभूमिश्च, स्वर्गादपि गरीयसी। जननी-जन्मभूमि—स्वर्ग सेभी श्रेष्टहै। भला मैं अपने देश की ममता कैसे त्याग सकूंगा ?

इत्यादि बातें करते करातेरेलका समय भी आन पहुंचा। हम लोग सवार होगए। और अनेकों चियर्स और जय जयकार की ध्वनि के साथ साथ रेलभी अपनी प्रखर ध्वनिको सम्मिलित करके कानपूर की ओर रवाना हुई। हमलोग सवारी गाड़ी से चले थे सो दस तारीख मईको लखनऊ छोड़कर बारहको देवलाली कैम्प में पहुंचे। इस बीच के मार्ग में अनेकों प्रकार के प्राकृतिक दृश्य देखते हुए, गंगा, सिन्ध, यमुना, बेतवती, नर्मदा, आदि नदियों को

पार करते और अनेकों छोटे बड़े पर्वत, खाल, जंगल और मैदान आदि की स्वाभाविक शोभा निरखतेहुए बड़ा आनन्द पाते थे।

कहीं पलाश आदिके घने जंगल, कही दूर तक शश्य बिहीन ऊसर मरुवत् मैदान, कहीं कहीं हरिण आदि वनचर जीव जंतु स्वच्छन्दता से इधर उधर चरते विचरते दीख पड़े। और कहीं छोटी छोटी क्षुद्र कुटीरों के दस बीस जनावास जिनके आस पास अनेकों खर्बकाय कृष्णबर्ण बालक बालिकायें और जर्जर कलेवर बूढ़े लोग गांवके डंगर गोरू चरा रहे हैं! जिन की दशा देखकर अनुकम्पावान हृदय तो बिना किसी प्रकारका भाव मनमें धारण किए अपनी दृष्टि फेर नहीं सकता!

सहस्रों, प्रायः सभी, अंगरेज लोग इसी मार्ग से हिन्दुस्तान की यात्रा करते हैं। मुझको ज्ञात नहीं है कि कितने अंगरेजोंने इस करुणोत्पादक दृश्यकी ओर दृष्टिक्षेप किया है! और उनके रसा वह सुदृढ़ हृदयों में इन बेचारों के लिए क्षणिक, तनिक भी जगह मिली वा नहीं?

परन्तु अधिकतर तो मुझको ऐसा जानपड़ताहै कि कदाचित् कोई इधर उधर ताकतेही काहेको होंगे। अपनी फर्स्ट क्लाश गाड़ी में खिड़की की ओर सबूट चरण कमलों को पसार कर मुख और नेत्रों के सामने पायनियर आदि समाचार पत्रोंके वरके लेकर पढ़नेही में सारा समय निकाल देते होंगे फिर गांव गवंईकी ओर ताकने और बृथा आदर्श्य दृश्य देखकर मन को दुखी करने की आवश्यकताही क्याहै?

अवश्य ऐसाही होगा, नहीं तो अपनी आश्रित प्रजाकी ऐसी हीन अवस्था अपनी ही आंखों देखकर अंगरेजके सुविशाल और

महान हृदयमें सहानुभूति न उत्पन्न हो, ऐसी बात हमारे ध्यान में नहीं आती ।

इसीभांति रेल यात्रा करते, छोटेबड़े अनेकों स्टेशनों से होते हुए देवलाली पहुंचे ।

स्टेशनसे निकटही छोलदारियों (डेरों· खेमों) का स्थायी कैम्प लगा हुआथा, उन्हीं में जाकर डेराकिया ।

इसी स्थानपर समस्त सैनिक प्रतिनिधियों के एकत्रित होने का प्रबंध किया गयाथा, सो आगे पीछे, अबेर सबेर, सभी ओर से सब जातियोंकी टोलियां यहां आ आकर एकत्रित होने लगीं ।

बम्बई यहां से प्राय: पांच छ: घंटेका रेल मार्ग है ।

—— +:o:+ ——

देवलाली DEOLALI.

यहकैम्प इंगलिस्तान जानेआनेवाली फौजों का प्रधान अड्डा है । गोरी फौजें घर [Home] के यातायात समय इसी कैम्प में उतारी जातीहैं । सो यहां सैनिकों के आराम योग्य सभी प्रबंध अच्छे हैं ।

परन्तु हिन्दुस्तानियों के लिए :—

हा ! जहां जाय भूखा । तहां पड़े सूखा !!! कुछ तो अपनी कुटेव और कुसंस्कारों के कारण हम स्वयम् कई प्रकार के कष्ट अपने सिर लेते हैं । फिर रही सही कसर 'द्विभाव भूषित' हमारे अंगरेज कर्तार लोग पूरी कर देते हैं ।

सुन्दर पक्के बावरचीखानों में भोजन न पाक करवाके अलग अलग धूपमें वा पेड़ तले चूल्हे फूंकते फिरना और साफ सुथरे गुसलखानों (जाय जरूरत) को न बर्तना आदि आदि तो हमारी

कुटेवमें सम्मिलित हैं । परन्तु लोहे और तख्तोंकी चारपाइयों पर से गद्दे [Mattresses] उठवा लेना और स्नान करने के टबों और तालाबों में जल न देना (यह कहकर कि यह सब गोरोंके वास्तेहैं कालों के वास्ते नहीं) आदि कर्तारोंकी कृपामें परिगणित होंगी । सो यहांभी हमैं यथापूर्व कालेकपालपर हाथ मारनाहीपड़ा !

इस कैम्पमें हमलोग प्रायः दस बारह दिन तक रहे । इतने में सम्पूर्ण सैन्य और कार्यभारी लोग एकत्रित होगये थे ।

हिन्दुस्तानी फौजों के कुल एक सहस्र जन रिसाला, तोपखाना, पैदल, सफरमैना, रजवाड़ी इत्यादिके सब जातियों में से निर्वाचित करके भेजनेकी व्यवस्था हुईथी । सो निम्न लिखित जातियोंकी टोलियां बड़े जंगीलाट साहबकी आज्ञासे चुनी हुई आई थीं :—

जाट सिख । मजबी सिख । डोगरा । राजपूत । जाट । दक्षिणी मरहटा । कोकनी मरहटा । मेर । ब्राह्मण । गोरखा । गढ़वाली । तामिल ।

पटान । अफरीदी । पंजाबी मुसलमान । मदरासी मुसलमान । हिन्दुस्तानी मुसलमान (मुसलमान राजपूत-रांघड़) मोपला । हजारा । बलूची । मुलतानी पटान ।

उपरोक्त जातियों का निर्वाचन इसभांति हुआ था :—

रिसाला । पंजाबसे—एक एक टोली सिख, डोगरा, पंजाबी मुसलमान, मुलतानी पटान, और पठान । इन्हीं जातियों के रिसालों से ।

बंगाल से—एकएक टोली जाट और रांघड़ोंकी ।

बम्बई से—एकएक टोली राजपूत और मरहटोंकी ।

मदराससे—एक टोली मदरासी मुसलमानोंकी ।
हैदराबादसे—एक टोली दक्खिनी मुसलमानोंकी ।
गवर्नर जनरल तथा बम्बई और मदरासके गवर्नरोंके बाडी गारडों में से एकएक टोली ।
इसभांति रिसाले के कुल कोई ढाई सौ आदमी ।

पैदल । पंजाबसे—एकएक टोली जाटसिख, मजबीसिख, डोगरा, पंजाबी मुसलमान, अफरीदी, और पठानोंकी ।
बंगाल से—ब्राह्मण, राजपूत, जाट, गोरखा, गढ़वाली, और रांघड़ मुसलमान ।
मदराससे—तामिल, मोपला, और मदरासी मुसलमान ।
बम्बई से—दक्षिणी मरहटा, कोकनी मरहटा, मेरवारा, हजारा, और बलूची ।
हैदराबाद से—दक्खिनी मुसलमान ।
इसभांति पैदल पलटनके कुल कोई साढ़ पांच सौ आदमी ।

पहाड़ी तोपखानों (Mountain Artillery) के छप्पन आदमी ।

सफरमैना (Sappers & Miners) बंगाल, बम्बई और मदरास से एक एक टोली—कुल पचास आदमी ।

रजवाड़ेकी फौजों (Imperial Service Troops) में से चुनकर करीब एकसौ आदमी ।

डाक्टरी बिभाग में :—

पांच हिन्दुस्तानी डाक्टर लोग—सिख, खत्री, पहाड़ी राजपूत, तामिल और दक्खिनी मुसलमान ।
चार कम्पाउन्डर—ब्राह्मण, तामिल, पठान, और सिख ।
एवं दस सेवक बावरची, भिस्ती इत्यादि ।

अंगरेज अफसर भी बीस बाईस हमारे साथ हुएथे ।

साधारन सेवक लोग:—

४० बावरची । २५ नाई । २० धोबी । ४० मेहतर । ४ दरजी। ४ मोची थे ।

कमसरियट बिभागमें—एक कन्डक्टर (अंगरेज) एक स्टोर गुमाश्ता बंगाली बाबू । एक क्लर्क बंगाली । और छः डंडीदार ।

बूचड़ नहीं भेजे गएथे सो सब लोग अपनी अपनी टोलियों के लिए भेंड़ बकरियोंको आपही काटकूटकर बूचरीकार्य सम्पादन करलिया करते थे ।

यही सब उपरोक्त जातियोंकी पार्टियां अपनी अपनी अलग अलग सज धज से देवलाली कैम्पमें एकत्रित हुईं ।

सब लोगोंकी रीति रस्में, ब्यौहार बर्ताव, और बहुधा बोली बानीभी जुदी जुदीथीं। पहिनाव पोशाकभी कुछ कुछ भिन्नहीथा।

इतनी जातियों के सैनिक लोग कदाचितही कभी इतना सन्निकट एकत्रित हुए होंगे ।

सबलोग एक दूसरे से मिलने और बात चीत करने में बड़े प्रसन्न जान पड़ते थे ।

अक्सर चरचा कवायद परेट और वरदी पोशाककी ही हुआ करती थी । इससे भी बड़ी चर्चाकी बात तो हमारे बावरची खानेकी है । कैम्पके आस पासकी सारी भूमि जहां कहीं कुछ छायाथी सब चूल्हे चौकों से भरपूर होगई । उपरोक्त टोलियां प्रत्येक कोई बीस पचीस आदमियोंकी थीं । सो और तो सब लोगों में प्रायःएक एक जातिवालों का एक चौका बनाथा परंतु ब्राह्मण देवताओं और मरहटों के पचीस आदमियों के लिए शायद छब्बीस चूल्हे बने थे ।

प्रत्येक आदमी अपनी रोटी दाल अलग पकाता—खाता—फिर अपने बर्तनभी आपही मांजकर हथेली पर धर टेन्टमें ले आताथा। कैसा हास्यास्पद दृश्य !!! परन्तु इन लोगोंको इसीमें धार्मिकता बोध होती थी।

वास्तवमें आज कल गोरा फौजों में भोजनके पश्चात् अपने बर्तन आपही साफ करना एकप्रकार दंडमें परिगणितहै। परन्तु हमारे ब्राह्मण भाई लोग बिना अपराधही इस अशुचि दंडको नित्य भोगते हुए अपमान नहीं बोध करते ! शायद यह उनके पूर्व जन्मके कर्मोंका फलहो ?

पाकभूमि वा चौकों के आस पास मरभुखे कंगालोंकी भीड़ लगी रहा करतीथी ! एक रोटी या मुट्ठीभर भातके लिए बीसियों कंगले दौड़ पड़ते थे !

हाय ! पेटकी ज्वाला कैसी भयावनी है ! दरिद्रतासे मनुष्य की कैसी दुर्गति होजातीहै ? इस बातका हृदय बिदारी प्रमाण भारतवर्षमें आज प्रत्येक ठौर पर मिलताहै। परन्तु शोक कि इस पर ध्यान देनेवाले बिरले हैं !!!

देवलाली का जल वायु बहुत अच्छा स्वास्थ्यकरहै। मईका महीना हमारे देश भारत भरमें प्राय: कठिन तपन का है परन्तु इसस्थान पर द्विप्रहरकी धूपतो अवश्यही प्रचंडहै किन्तु सायंकाल की मंद समीर शरीर और मन दोनोंको शीतल और प्रसन्न करने वाली है। सन्ध्या समय छोलदारियों के सामने भूमि पर बिस्तरे डालकर चन्द्रज्योत्स्ना में बैठे हुए परस्पर अनेक बिषयों के कथोपकथन करने में बड़ा हर्ष होताथा।

यहांके दस बारह दिन इसीप्रकार व्यतीत होगए। और

तारीख २३ मई के रात्रिको कैम्पसे बिदा होकर दो स्पेशल रेलों द्वारा बम्बई बन्दर को रवाना हुए । मनुष्य जहां कहीं थोड़े दिनों के लिएभी निवास करताहै वहांकी मनमें एकप्रकार ममता उत्पन्न होजाती है । सो देवलाली छोड़ते समय हृदय भर आयाथा और मनमें एक भाव उत्पन्न हुआ कि देखिये कब इस कैम्पके पुनः दर्शन प्राप्त होते हैं ?

भारत सन्तान आज अपनी पुरातन दशाको जिसमें लक्षों वर्ष बिताए थे स्मृति पथमें भी नहीं लाती, यही आश्चर्य है उसके पुनर्दर्शन की तो क्याही कथा ?

—— +:o:+ ——

समुद्र यात्रा VOYAGE.

स्वर्गीय प्रकाश हमारा पथदर्शक ।

HEAVEN'S LIGHT OUR GUIDE.

तेईस तारीख मई १९०२ ई० की रात्रिको देवलाली से रेल यात्रा करके चौबीसको बम्बई बन्दर पर पहुंचे । यहां पर फौजों के बिश्राम का बहुत सुन्दर स्थानहै । रेल मार्ग बिलकुल बारिकों के पास घाटके किनारे तक बना हुआहै । यहां पर कुछ देर बिश्राम करनेके अनन्तर डाक्टर साहबकी बारी आई यह प्लेग परीक्षा थी। दो तीन घंटेकी देखभाल टटोल टटाल के पीछे स्वास्थ्यकी मानो सनद प्राप्त होगई । जबसे इस प्लेगकी महामारी ने हमारे देशका पल्ला पकड़ा है (सात आठ वर्षों से) तबसे प्रायः सभी ओर इसभांति परीक्षाके अड्डे स्थापित हो गएहैं । और यात्रियोंको थोड़ी बहुत झंझट अवश्यही झेलनी पड़ती है ।

सो हमको भी समुद्र यात्रा के पूर्व इसके पार होनाहीथा सफलता पूर्वक उतीर्ण होगए।

हम लोगों के वास्ते जहाज हारडिंज (Royal Indian Marine Steam Ship Hardinge) सब असवाब और खानपान के रसद सामान इत्यादि से भरपूर लंगरगाह में प्रस्तुत था। सो उसतक पहुचने के लिए छोटी वाष्पीय नौकाओं में सवार हुए। और थोड़ी देरतक ऊंची नीची लहरों के थपेड़ खाने के पीछे हारडिंज की गोदमें जा बिराजे। कुछलोग इन छोटी नौकाओं में लहरों के हाला डोलेसे बहुत घबरा गएथे और कहने लगे थे कि अभी किनारे ही यह दशाहै तो आगे समुद्रमें क्या होगा? परन्तु वास्तवमें भयकी कोई बात न थी। छोटी वस्तुको धक्के लगाने वाले बहुत हुआ करते हैं परन्तु बृहत् शक्ति शालीसे टक्कर लगाना सहज बात नहीं होती। छोटी नौका किनारे पर भी डोलायमान हो सक्ती है परन्तु हारडिंज समुद्रके मध्यमें भी साधारणतः डोलने वाला नहीं।

जहाज पर पहुंच कर सबलोग तनिक स्थिरहो अपनी अपनी निर्वाचित जगहों पर बैठगए। यद्यपि यह जहाज खूब लम्बा चौड़ा था तथापि डेढ़ हजार जन समूहके कारण भीड़ भाड़ अधिक प्रतीत होती थी।

ऊपर वर्णन कियेहुए सैनिक समुदायोंके अतिरिक्त जहाजपर लगभग एकसौ के हिन्दुस्तानी वल्लन्टियर (Indian Volunteers) गोरे, अधगोरे, और काले कृष्टान भी सवार थे जो डेक (जहाजका सहन) का एक अच्छा भाग घेरे हुएथे। जैसा कि प्रायः सभी लोग जानते हैं कि हिन्दुस्तानमें स्वेच्छा सैनिक नियुक्ति (Volunteers) का द्वार केवल कृष्टान लोगों के ही लिए

खुला है और वही लोग हिन्दुस्तानी बल्लमटेर कहलाते हैं । वास्तव में हिन्दुस्तानी लोग जो कृष्टान नहीं हैं वह उसमें नहीं लिए जाते । हमारे महाराजा कृष्टान हैं सो कृष्टानों के प्रति उनकी ममता और उदारता होनीही उचितहै। अपने धर्म में ऐसीही प्रीति चाहिए। हमारे शास्त्र भी यही कहते हैं — स्वधर्मे प्रीतिः । स्वधर्मे निधनं श्रेयः ।

जो लोग यह समझते हैं कि अंगरेज राज का हिन्दुस्तानी प्रजा पर विश्वास नहीं है उनका यह नितान्त भ्रमहै । ऐसा होने से सरकार हिन्दुस्तानियों की फौजें भी काहे को रखती ? अतः ऐसी भ्रमात्मक बात पर कभी विश्वास न करना चाहिए । उपरोक्त द्विभाव का कारण केवल धर्म प्रीति ही है । वह प्रीति भी अपने धर्म पर ।

इसका ज्वलन्त प्रमाण हमारी अंगरेजी सरकार ऐसेही ऐसे कामों द्वारा हमको प्रत्यक्ष दिखला रही है । जैसा कि मुन्ड कर (जज़िया) आदि द्वारा मुसल्मान राजाओं ने दिखाया था । इसे नेत्रसम्पन्न लोगों को अच्छी तरह निरखना चाहिए ।

जहाज पर आरोहित हो चुकने और बिस्तर असबाब सब यथा स्थान रख देने के पश्चात् ऊपर के छत (Upper deck) पर थोड़ी सी बातप्रद जगह की प्रायः सभी को चिन्ता पड़ी । सो ऊपर इतनी भीड़ होगई थी कि जिससे बहुतही तंगी बोध होती थी और उष्णतासे हम लोग नितान्त व्याकुल होगए थे।

हमारा देश हिन्दुस्तान बहुविस्तृत समथर भूमि में बसाहुआहै। सो समुद्र तटस्थ थोड़े से नगर नागरिकों के सिवाय प्रायः सभी हिन्दुस्तानी लोग सागर की प्राकृतिक शोभा से अनजान होते हैं । समुद्रसे दूर बसनेके अतिरिक्त बिदेश यात्रा भी हमारे लोगों

के मध्य में बहुतही कम प्रचलित होगई है इसी से बहुधा लोग जल, जलमार्ग, और जलयानों से उतना अधिक परिचित और अभ्यस्थ नहीं हैं जितना कि अंगरेज लोग स्वाभाविकही होते हैं। सो हमारे नेत्रों को बन्दरगाह की बनावट. राशि राशि जल पर छोटी छोटी नौकाओं का इतस्ततः धाव मान होना, कर्णधारत्व (Pilot service) और समुद्र का समय समय पर दृश्य परिवर्तन इत्यादि आश्चर्य्यमय दीख पड़ते थे।

ज्वार के न होनेसे जहाज को कुछ देर वहीं खड़ा रहना पड़ा था उस समय समुद्र के हरित वर्ण जल में कैसा गाम्भीर्य्य था — समान--स्थिर, निश्चल, मानो बंगालेकी एक दीर्घिका(दीघी)है।

ज्यों ज्यों दिन ढलता जाता था त्यों त्यों सूर्य्य की तिरछी किरणें जल पर चंचलता के साथ ऐसी खेलने लगीं मानो चहुं ओर सुवर्णरेणु की बृष्टि होरहीहै। अधिक काल विलम्ब न होने पाया था कि जल की निस्तब्धता भंग होगई। निश्चल जल चंचल लहरों से उत्थलित हो उठा। स्वर्ण प्रभ सूर्य्य किरणें उसी उठते बैठते हुए जल के गम्भीर हृदयमें मानो प्रविष्ट होकर उसी में विलीन होने लगीं।

ज्वार के आतेही जहाज ने भी अपना लंगर उठाया। और मस्तक ऊंचा करके [Heaven's light our guide] स्वर्गीय प्रकाश ही हमारा मार्गदर्शक है* कहता हुआ विशाल समुद्र के बक्षस्थल पर अपने मार्ग चलता हुआ। धीरे धीरे अग्रसर होते हुए आस पास की सब चहल पहल, नन्हीं नन्हीं नौकाओं के बिचित्र खेल--और बम्बई का पथरीला घाट किनारा आदि सभी

*(जहाज हार्डिंज के मस्तक पर उपरोक्त वाक्य स्वर्णाक्षरों में सर्वोपरि लिखा हुआ है)।

छूटने लगे! थोड़ीही देर पीछे बम्बई के प्रकाशस्तम्भ के सिवाय सभी कुछ मानो अंधकार में लीन होगया! इसी भांति हम भारत बासी लोग ज्यों ज्यों विद्या नगरीसे दूर दूर चलते गए त्यों त्यों अविद्या रूपी अंधकार ने संसार महानगर के सभी पदार्थों और हमारे नेत्रोंके बीच घना परदा डालदिया, जिससे उसकी झलक पर्य्यन्त न दीख पड़ने लगी!

वास्तव में नाश किसी बस्तु का नहीं होता, रूपान्तर भले ही होता रहै। सो हमारी भी कोई बस्तु, कोई ज्ञान, नाश नहीं हुआ, केवल हम उन सभों से दूर जा पड़े हैं। हमारी धरती का आकार गोल है, सो यदि हम काल क्रमागत विद्यानगरी से दूर होगए हैं तो फिर लौटना आवश्यक नहीं। जैसी बहै बयारि पीठि तब तैसी दीजे के अनुसार समय चक्र के साथ साथ आगे आगे ही बढ़ते रहैं (क्योंकि वह भी तो गोलहै?) चाहे जितना कष्ट और नैरास्य क्यों न हो। तब बिना लौटेही अपने उसी अभीष्ट स्थान पर अनायासही पहुंच जांयगे। क्योंकि गोल मार्गपर अनवरत चलते रहनेसे अवश्यही फिर उसी ठौर पहुचना होताहै। सो हमारा जहाज लंडन महानगरी के तिलक सौन्दर्य्य दर्शन की लालसा से अगम समुद्र के भयावह बक्षस्थल पर सब प्रकारकी कठिनाइयां (यात्रियों की समुद्री अस्वास्थय, तूफान, इत्यादि) झेलता हुआ आगे ही आगे बढ़ता गया।

अंगरेज लोग समुद्रीय जाति (Maritime people) कह लाते हैं सो इनका तो समुद्र से घनिष्ट सम्बन्ध है ही परन्तु अब नातेदार के रिश्तेदार की भांति इनकी कृपा और संसर्ग से हम हिन्दुस्तानी लोग भी जलीय जीवन (Sea life) से कुछ कुछ परिचित होते जाते हैं और जैसे जल द्वारा अनेक बाहरी

अपवित्रतायें परिमार्जित होती हैं उसी भांति हमारे इस जलनिधि परिचय के साथ साथ हमारी कुटेव रूपी अशुचि समूह भी दूर होती जाती है । थोड़ा पानी थोड़ी सफाई कर सकता है तो बहुत पानी बड़ी सफाई क्यों न कर सकेगा ? सो वास्तवमें समुद्र यात्रा हम हिन्दू लोगों की छूआछूत मिटा कर समयानुसार शुद्ध परिस्कृत कर देने के लिए बड़ा सुन्दर मार्ग व साधन है । हम लोगों मेंसे कुछ लोग ऐसे भी थे जो बरमा, चीन, अदन, मरीशस, अफ्रीका आदि देशान्तरों की यात्रायें समुद्र द्वारा किए हुए थे परन्तु अधिकांश निरे कोरे थे जिन्हों ने समुद्र और जहाज को पहिले कभी देखा भी न था ।

जो हो, हिन्दुस्तान भरकी प्रायः सभी जातियोंके लोगों को एकत्र एकही जहाजपर एक साथही सवार होने का तो कदाचित यह पहिला ही अवसर था । इसलिए यह यात्रा हिन्दू दृष्टि से एक नई बात थी । सो जहाज पर सवार होने के बाद ही खाने पीने की वार्ता उठी । जहाज पर कुल आठ अंगेठियां थीं, चार एक तरफ चार दूसरी तरफ । सो एक ओर की अंगेठियां हिन्दुओं के लिए और दूसरी ओर की मुसल्मानों के वास्ते नियत कर दी गई । मुसल्मानों ने तो बिस्मिल्लाह कह के आरम्भ कर दिया परन्तु हिन्दुओं के श्रीगणेश में अभी भद्रा थीं । इन अंगेठियों में पत्थरी कोयले जलाये जाते हैं । और तन्दूरी तवे, देगचे वा कड़ाह इत्यादि चढ़ सकते हैं । सो पहिले तो यह चर्चा उठी कि एक एक चूल्हा अलग अलग टोलियों के लिए नियत किया जावे । परन्तु जब यह असम्भव जान पड़ा तब कुछ कुछ मेल मिलाया जाने लगा । राजपूत, गढ़वाली, डोगरे, सिख, जाट, मेर आदि आदि । परन्तु होते करते जैसे जैसे हम शेषशायी भगवान

विष्णु के पावन अगमसागर में बढ़ते गए तैसे तैसे हमारा ओछापन भी मिटने लगा और सब बखेड़े पाक होगए । सिख, राजपूत, मजवी, डोगरे, तामिल, गढ़वाली, गोरखे आदि सभी हिन्दू लोग जब जिसको अवकाश मिलता था तभी उन्हीं चार चूल्हों पर अपने भोजन, पूरी, तरकारी, रोटी, दाल, भात, हलवा, आदि पकवाने और अपने अपने स्थानपर उठा लाकर सब लोग आनंद पूर्वक खाने पीने लगे ।

आटा दाल इत्यादि राशन के साथ बम्बई में भेड़ बकरे बैल गारू आदि काट पीटकर उनका मांसभी बरफ में सिझाकर जहाज पर रख दिया गयाथा परन्तु सब तरहका मांस एक ठौरही बरफ में रक्खे रहने के सबब हिन्दू लोगोंने लेना स्वीकार नहीं किया था । सो जहाज पर केवल मुसल्मान और कृष्टान लोगही मांसाहारी थे । हिन्दू सब निरामिष भोजी रहे । परन्तु सुरा निषेधक (Teetotaler) तो सब न थे । पंजाबी, दक्खिनी और मदरासी लोग शराब अपने दाम से प्रायः नित्यही लिया करते थे । इस जाति समूह में एकादि शुष्काहारी टोलियां भी अवश्यही थीं । ब्राह्मण और मरहटे । सो यहलोग टीनके अंगरेजी दूध (Condenced milk) में चिउरा (पावा) भिगोकर नित्य बासी दूध भात का स्वाद लेते थे । और मन फेर करने को चने चाबते थे । चूल्हे की आगपर खाना कभी नहीं पकाया । जहाज पर कनौजिया आदि ब्राह्मणों को प्याज के गट्ठे और इमली खटाई, एवं मरहटों को एक एक ड्राम रम बहुत प्रिय वस्तु जान पड़ती थी ।

इसी प्रकार खाते पीते आनन्दसे यात्राके दिन व्यतीत होने लगे । मानों जहाजही हम लोगोंका घर होगया था । और उपरोक्त अनेक जाति के लोग परस्पर एक कुटुम्बी भाई बन्धु बन गए थे ।

यद्यपि इन लोगों की निज निज भाषायें भी जुदी जुदी थीं तथापि हिन्दुस्तानी भाषा [हिन्दी] प्रायः सभी लोग समझते और बोलते थे। हिन्दुस्तान भरकी राष्ट्र भाषा कौनसी होसकती है? इसका एक उत्तर यहां परभी मिलता है कि वह हिन्दी ही है।

इंगलिस्तान पहुंचने की कर्तारों को कुछ जल्दीही सी थीं सो मार्ग के किसी बन्दर पर ठहरने का विधान न था। अतएव अदन भी हमारे विना देखे छूटगया। हिन्दुस्तानी पानी और अरब की खाड़ी पार करके लालसागर में प्रविष्ट हुए। यहां का जल भी नीलिमा युक्त साधारण समुद्रीय जल मात्र था लालिमा का आभास भी न था। फिर इसको अरुणोदधि क्यों कहते हैं? यह प्रश्न स्वाभाविक ही उत्पन्न होता है। बहुधा लोग कहा करते हैं कि यदा कदा इस भाग में रक्तवर्ण बृक्ष लताओं की भांति मूंगा की झाड़ें दिखाई पड़ा करती हैं इसीसे लाल समुद्र नाम पड़ा है। अपर लोगोंका यहभी कथन है कि यहां कुछ लाल रंगके कीड़े होते हैं जो कभी कभी झुंडके झुंड इकट्ठे दिखाई पड़ते हैं, इत्यादि। परन्तु हमको तो यह कुछ भी दीख नहीं पड़ा। इस भाग में उष्णता की बड़ी अधिकता रहा करती है। दोनों ओरके स्थल अफ्रीका और अरब जैसे तप्त बालुकारण्य से परिवेष्ठित होने के कारण यहांपर स्वाभाविकही उत्ताप विशेष रहाकरता है। सो संभव है कि इसी ऊष्मा के कारण इस भागका नाम लाल-सागर पड़ाहो। अरबकी ओर दूर दृष्टि दौड़ाने से कहीं कहीं नग्न पर्वतमाला सी भी दीख पड़ने लगती है। एकठौर कुछ ऐसेही पर्वत दृष्टिगोचर होते हैं। जिनको अंगरेज लोग मसीहके द्वादश दूतों का पर्वत कहते हैं। इसीको अरब निवासी सात भाइयों का पहाड़ (असहाबेकहफ) कहते हैं। वास्तव में इसके स्वत्त्वाधिकारी

बारह थे वा सात सो मैं निश्चय रूप से नहीं जानसका परन्तु यह स्थान कुछ महापुरुषों का स्मारक अवश्यही है।

जिन जातियों वा देशों के प्रति उक्त महात्माओं ने उपकार किए होंगे उनकी सन्तान आजभी उनके सत्कर्तव्यों को भली भांति स्मरण रखती और उदाहरणरूप में गायन करती होंगी। उपकारी महापुरुषों के उपकार उपकृत सन्तान क्या कभी भूल सकती है ?

लाल सागर में पी० एन्ड ओ० नाविक कम्पनी का एक प्रकाश स्तम्भ (P. and O. Co's. Funnel) बना हुआ है। सब ओर ऊंची ऊंची लहरें उछालता हुआ विशाल समुद्र, तिसके मध्य में यह छोटासा स्तम्भ धीरता पूर्वक पदारोपण किए हुए दंडायमान-नवीन दर्शक के मन में अपूर्व भाव उत्पन्न कराता है।

संसार चक्रके मार्ग परिवर्तक महात्मागण भी इसीभांति एकाकी असहाय अवस्था में नानारूप जगत की बादापवाद रूपी लहरों के आघात सहन करते हुए अपने उद्देश्यों के प्रतिपालन और प्रचार में अटल अचल रहते हैं। और संसार सागर के यात्रियों को धीरभाव से निरापद मार्ग बतलाते हुए निरन्तर उनका कल्याण साधन करते हैं। और चक्रकी वक्र गतिको प्रशस्थ पथ की ओर मोड़कर पतित और पतनोन्मुख वा दलित जातियों को ऊर्ध्व चेता बनाकर उनको संसार के समकक्ष करके अपने महत्व पूर्ण यशको इतिहास के विशाल बक्षस्थलपर स्वर्णांकित छोड़ जाते हैं। लालसागर के बीच अनेकों पहाड़ और टीले जलगर्भ में छिपे पड़े हैं उन्हीं से टकराकर उक्त नाविक कम्पनी के भी कई जहाज विध्वंस होगये थे। तभी विपुल धन व्यय द्वारा कम्पनी ने यह मार्ग दर्शक स्तम्भ निर्मित किया है। सो इसके आधार से

अब इस ठौरका जलमार्ग निरापद होगया है । इस समुद्र में छोटी छोटी मछलियों का जलपर इतस्ततः झुंड के झुंड उड़ना और एक प्रकार के बकवत् पक्षियों का अन्तरिक्ष में मंडलाते डोलना भी एक अपूर्ब दृश्य था । यह पक्षी कदाचित समुद्र तटस्थ पर्ब्बतों और जंगलों में रहाकरते हैं और मध्यसागर में केवल अपने शिकार के वास्ते आजाते होंगे ।

जहाज के पुस्तकालय में समुद्री और जहाजी बिज्ञान तथा इतिहास आदि की बहुत सी पुस्तकें थीं जिनमे अच्छा चित्त बिनोद् और ज्ञान प्राप्त होता था ।

स्वेज मोहाना SUEZ CANAL.

इंगलिस्तान के लोगों ने जब रोमवालोंसे सभ्यता सीख ली और उनको यह ज्ञात हुआ कि भारतवर्ष भी धरती पर एक परम समृद्धिशाली देश है । जहां की ब्यवहृत बस्तुओं से प्रायः तत-कालीन सब देश देशान्तर सभ्यता निर्बाह करते हैं तभी से उन लोगों को यहां आने की चट पटी पड़ी । पीछे इन्हों ने भारत बर्ष का मार्ग पाने और यहां से ब्यापार सम्बन्ध स्थिर करने आदि में कैसे कैसे उद्योग किए और कठिनाइयां झेलीं सो सब लोगों को भली भांति विदित है ।

जब पाल जहाज चलते थे तब इंगलिस्तान से भारतबर्ष छः महीने से भी अधिक का मार्ग था । फिर जब बिज्ञान बल से वाष्पीय तीर्थ (तारने वाले, अर्थात् स्टीमर) उपस्थित किए गए तब भी इस यात्रा में प्रायः तीन महीने से कम न लगते थे । इतने अधिक दिनोंतक संसार से नाता तोड़कर, स्वजन, पुरजन से

अलग जलपर केवल मच्छ कच्छादिकों का सहचर बन डोलते रहना कैसी स्थिरता का कामथा सो एतद्देशीय जनों को विशेष टीकासे समझाना न पड़ैगा। धन्य है कृतविद्य फ्रान्सीसी विश्वकर्मा (Engineer) फर्डिनेन्ड लेसेप्स (Ferdinand Lesseps) को, जिसके महान उद्योग का फल यह स्वेज नामक नहर है। इस प्रायः सत्तासी मीलकी नहर द्वारा महापुरुष लेसेप्स ने महीनों के मार्ग को घंटों में समाप्त करने के योग्य बना दिया। आज यूरोप के सभी लोग इस विश्वकर्मा के महा कार्य्य की सराहना करते हैं, हमभी मुक्तकंठ से उसकी बड़ाई बखानते हैं। परन्तु मनुष्य की स्वाभाविक सहगामिनी ईर्षा के बश होकर इनका यश गायन करते हुए जब अपने भूतपूर्व महापुरुष भगीरथ की स्मृति हृदय में जाग्रत होती है तब अश्रुमार्जन के बिना रह नहीं सकते !

भगीरथ ने कैसे परिश्रम और अमानुषीय साहस द्वारा गंगा को शैल शिखर से भारतवर्ष में घुमाया था सो आज किसी को शायद स्मरण भी नहीं है ! कहने सुनने से विश्वास भी नहींहोता गंगा कृतृम है, इसकी धारा को भगीरथ यथेच्छ स्थानों को ले गये थे, ऐसा कहना आजकल के सभ्य जगत् के सन्मुख हास्यास्पद होना है, क्योंकि आज तो गंगा एक स्वाभाविक प्रवाहित नदी मात्रही मानी जाती है। परन्तु वास्तव में समयकी परिवर्तन शीलता वस्तुओं को समयान्तर में कुछ का कुछ बनाडाला करती है ! कौन कहसकता है कि यह स्वेजनहर भी कालपाकर एक स्वाभाविक नदी वा झील न बनजायगी ?

आज हमारे सौभाग्य समयकी सभी बातें सभी कौशल, काल के गहिरे अंधेरे गढे में गिरकर लुप्तप्राय होगए हैं। स्मारक भी शेष हैं वा नहीं सो तक हम नहीं जानते ! हमारा समृद्ध समय,

वैदिक काल, एक अरब छानबे करोड़ वर्षो के अतीत दिन, आज अनैतिहासिक (Prehistoric) समझे जाते हैं। फिर हम उनकी स्मृतिके भी अभाव में इन साम्प्रतिक महत्कार्य्यों की सराहना क्यों न करें? आज न हमहीं प्राचीन आर्य्य हैं और न यह देश ही प्राचीन भारतवर्ष! हमारा और इस देशका तो मानो यह पुनर्जन्म हुआ है! सो इस नवीन श्रष्टि के नवजीवन में हमको सभी नए नए पदार्थ आश्चर्यमय जानपड़ते हैं।

स्वेज मोहाने को भी हम सब लोगों ने आश्चर्य्य दृष्टि से देखा। कई दिन जल में डोलते डालते यहांपर धरती माता के दर्शन पाए, अगम जलसे कुछदेरके लिये निस्तार पाकर छोटी सी नहरके किनारे आए. यह देखकर बड़ा हर्षहुआ। स्वेज नगर भी बड़ा रमणीक प्रतीत हुआ। बन्दरगाह के सन्मुख ही बड़ा सुन्दर प्रस्तर निर्मित होटल बना हुआहै। ऊंचा मस्तक किए हुए गिरजा घरभी खड़ा दीखपड़ता है। उपबन और बाटिकाओं की हरियाली भी अपनी निराली छटासे इस मरुभूमिको मानो बासन्तिक तिलकमुद्रार्चित कर रही है। सो हमको तो इस नगर की यौवन शृंगारवत् शोभा बड़ी मनभावन जानपड़ी। काले काले मिश्री लोग गधोंपर सवार होकर इधर उधर जाते आते हिन्दुस्तानी नेत्रों को अपूर्व दृश्य दिखलाते थे।

स्वेज मोहाने पर शाह रूमके दो तुर्क पुलीसमैन हमारे जहाज में आये। यह दोनों अच्छे सुन्दर सुडौल जवान तुर्की टोपी को छोड़ सबप्रकार से अंगरेजों के सदृश ही थे। यहांका नियम है कि प्रत्येक जहाजपर दो पुलीसमैन नियत करदिये जाते हैं जो कि स्वेज पार होनेतक साथ रहते हैं। और सयीद बन्दर में डाक्टरी परीक्षा होने पर्य्यन्त किसी यात्री को उतरने नहीं देते।

स्वेज नहर बहुत तंगहै। दो जहाज बराबर से एक साथ सर्वत्र निकल नहीं सकते। ठौर ठौर पर स्टेशन नियत हैं। किनारे किनारे तारस्तम्भ भी गड़े हैं। स्टेशनों के निकट कई स्थानों पर नहर को खूबचौड़ी बनायाहै। जिसमें दोनों ओरसे आने जाने वाले जहाज सुगमता से निकल सकें। नहर में चलते समय जहाज की चाल बहुत धीमी रहती है मानो चलताही नहीं। प्रायशः घंटे में छःमील के प्रमाण से चलाते हैं। दोनोंओर बिशाल बालुका राशि! कहीं टीले कहीं खाल, परन्तु तरु, बल्ली, घास, पात आदि का कहीं नामभी नहीं। केवल कहीं झाऊ की भांति लकड़ियां जंगलका नाम स्थिर रखने के लिये कंकालवत् खड़ी दीख पड़ती थीं। सूर्य्य भगवान की किरणरूपी मुसक्यान को निरख कर तुच्छ रेणुका भी कैसी हास्यमय उज्वल वर्ण होजाती थी मानो मणिकणिकायें बिखेरदीगई हों।

समुद्र को छोड़े हुए अभी थोड़ीही देरहुई थी और उसका विशाल प्रासार आंखों में भली भांति बस रहाथा, सो दूरतक विस्तीर्ण बालुकारण्य में सर्वत्र ही मृगजलका धोखा बारम्बार होताथा। उज्वल चमचमाती हुई बालुका साक्षात् भराहुआ स्थिर और कभी २ लहराते हुए जलकी भांति प्रतीयमान होतीथी।

नहरकी मरम्मत सदा हुआकरती है। कहीं अनेकों कुली मजूर किनारे बांध रहे हैं, कहीं माटी बालू आदि हटा रहे हैं और कहीं तार आदि सुधार रहेहैं। ठौर ठौर पर पानी के बीच में से बालू रेता आदि निकालने के लिए बड़ेबड़े (Dredgers) लौहमय यन्त्र चलते हैं जो निरन्तर मृत्तिका निकाल निकाल कर किनारे फेंकते रहते हैं। जिस में बालू के कारण नहर की गहिराई कम न होने पावे।

इंगलिस्तान की यात्रा में स्वेज पार करना बहुतही मन भावन कौतुक वा मनफेर है। मानवी प्रकृति सदा परिवर्तन प्रिय होतीहै। एकही अवस्थामें चिरकाल वा अधिक दिनों तक रहना जीवन का भार रूप होजाता है। अथवा मनुष्य को निष्कर्मण्य बना देता है। इसी हेतु परमेश्वरने जगत नाम (गच्छतीति जगत्) सार्थक करने के लिए प्रकृति को सदा परिवर्तन शीला रक्खा है 'षटऋतु, बारह मास, निरन्तर फेरी लगाते हुए मनुष्यों को कर्मवान बनने का उपदेश देते रहते हैं'। इसी भांति अठारह बीस दिन जलीय जीवन के मध्य बीस पचीस घंटे का मरु भ्रमण अवश्यही उत्तम मन फेर का स्वाद देता है। यह सुगमता और चित्तविनोद हमें महापुरुष लेसेप्स की कृपा से प्राप्त होता है अत एव नहर पार होने के प्रथम उनका धन्यवाद सहित उपकार मानना अवश्य कर्तव्य है। ४ फरवरी १९२२ ई०।

पोर्ट सेड वा सयीद बन्दर PORT SAID.

नहर के परले छोर का नाम सयीद बन्दर है ! नाम अरबीहै परन्तु आज कल काम सब अंगरेजी ! यहां पर कोयले ही का ब्यापार बहुत अधिक है। सभी जहाज आते वा जाते समय यहां पर कोयला भरते हैं सो कोयले के बाणिज्य की इस जगहपर बहुतेरी कम्पनियां हैं। बड़े बड़े लाइटर (किश्तियां) सहस्रों मन कोयले और सैकड़ों कुलियों से लदे लदाये प्रायः सदैव तय्यार रहा करते हैं। इंगित मात्र पर वही लाइटर, जहाज से आ लगते और कोयला बोझाई होने लगती है। कोयले की ढोलाई होते समय तक यात्रियों को कुछ कष्ट अवश्यही रहता है। क्योंकि जहाज भर में प्रायः सर्वत्र ही कालिख उड़ उड़ कर पड़ती रहती

है इस हेतु निकलना मुश्किल होजाता है। कई घंटों बाद कोयला लद चुकने पर जब जहाज की धुलाई होकर सब स्थान परिस्कृत हो जाते हैं तब कहीं यात्रियों को चैन आता है।

यहां पर मुलतानी डाक्टर लोग सब यात्रियों की प्लेग परीक्षा करते हैं। सो हमें भी परीक्षित होना पड़ा। धन्यबाद का स्थल है कि प्लेगी तक्षक द्वारा दंशित होने का दुर्भाग्य किसी को नहीं हुआ। और तुरक रखवाले भी यहां जहाज से उतर गए। प्रायः सभी बन्दरों पर फल मेवे आदि बेचने वाले लोग जहाज पर आया करते हैं, अथवा छोटी किश्तियों पर जहाज के आस पास डोला करते हैं। सो हम लोग उन से अपने आवश्य कीय फल फूल आदि ले लिवा कर भूमध्यसागर प्रवेश के लिए प्रस्तुत होगए।

सैयद बंदर से आगे बढ़ते ही हम एशिया खंड से बियुक्त हो कर यूरोप में घुसे। और बांध छोड़ते ही पुनरपि विशाल समुद्र के बक्षस्थल पर किलोल करने लगे। जहाज ने जो तनिक बदन हिलाया कि हममें से बहुत लोगों के माथे चकरा गए। घंटों शय्या सेवन के पीछे होश आया तो देखते क्या हैं कि समय ही बिलकुल पलट गया है। अकाश की नीलिमा मेघावृत्ति के कारण मानो समुद्र गर्भ में अवतीर्ण होकर रंग दिखा रही है। उत्तरी बायु अपने शीतल स्पर्श से रोंगटे खड़े कर रहा है। जहाजी कर्मचारी लोग जो कल स्वेत बस्त्र धारण किए हुए पुतलियों की भांति इतस्ततः नाच रहे थे आज सब कृष्ण बसन परिवेष्ठित दीख पड़े। एंजिन के भीतर काम करनेवाले लोगों को जिन्हें हम सदा नहाते और पंखाघर में बायु सेवन करते भी पसीनों से तर देखते थे, आज उन्हें बड़े प्रसन्न मन अपने स्थानों पर बैठे गप

शप करते देखते हैं। जिन कैबिनों और नीचे के स्थानों में जाते दम घुटता था आज वहीं पर कम्बल ओढ़ कर रहने से सुख मिलता है। सार यह कि एशिया छोड़नेही सब ओर शरद बधाई बजने लगी।

——— +:o:+ ———

शेषयात्रा JOURNEY CONCLUDED.

समुद्र में यात्रा करते करते कई ऋतुयें बदलीं। ग्रीष्म, बसन्त, शरद, शिशिर, और कुछ कुछ बर्षा भी। घड़ी का समय भी कितनेही बार बदला। और दिनरात के परिमाण में परिवर्तन हुए। पर जहाज निरन्तर अपनी चाल चलता रहा। काला, लाल, मेडिटरेनियन, विस्केबे, आदि सभी सागरों में प्रायः एक ही अवस्था रही। विस्के की खाड़ी में अवश्यही लोगों का स्वास्थ्य कुछ बिचलित हुआ था क्योंकि इस ठौरपर समुद्र अकसर लहराता रहता है। मार्ग में कितनी ही बेर किनारे और किनारों पर पर्वत आदि दीख पड़े फिर छिप गए। माल्टा, जिबराल्टर, आदि सब बन्दर छूट गए, किसी जगह ठहरने का अवकाश न था अन्ततः 'आइल आफ वाइट' (Isle of Wight) के निकट होते हुए अभीष्ट स्थान नियराने लगे इंगलिस्तान में साउथाम्पटन पोर्ट हमारे उतरने का नियत बन्दर था।

बारहवीं तारीख सितम्बर का बिहान। बिहान क्या घड़ी में कई बज चुके हैं। जहाज की धुलाई आदि सब होचुकी है। सब सैनिकों को वरदी असबाब पहिनने, ठीक करने, की आज्ञा मिल गई है, परन्तु समय अब तक ऊषा काल ही प्रतीत होता है। यह क्यों? आज अंधेरा क्यों है? नौ बज गए? आज इतने अंधेरे ही घड़ी क्यों नौ बजाती है?

जहाजी छोकरे (Cabin boys) कहने लगे, महाशय सचमुचही नौ वज गए हैं. नौ क्या दिनमान के सभी घंटे बज जांएगे और समय प्रत्यूष ही बना रहैगा। यह हिन्दुस्तान नहीं इंगलिस्तान है तनिक उठ कर ऊपर तो देखिये, आदि। उठ कर कपड़े, कोट, ओवरकोट, सभी पहिन कर जाड़े का बचाव किया। और अपर डेक पर जाकर देखतेहैं तो सब ओर घना कुहिरसा दब रहा है। दस ग्यारह बज गए जब कुहिरा तनिक कमहुआ तव आकाश को सूना पाकर मेघराज ने धावा कर दिया! सूर्य्य को प्रकाश करने का अवकाश कहां?

पाठक! बिचार का अवसर है, जो सूर्य्य भारतबर्ष में अपने प्रचंड उत्ताप से प्राणी मात्र को सन्तप्त कर डालता है, यहां तक कि लाल रक्तमांसमय मानवपिंड की आकृति को भी कृष्णवर्ण बना देता है। वही सूर्य्य इंगलिस्तान में छुद्र कुहरे की ओट में ऐसा छिपजाता है कि महीनों दिखाई भी नहीं पड़ता यदि कभी कुहिरे से छुटकारा मिला तो मेघमाला से तिमिराबृत्त!

जिसको हम अपने देश में दिनमणि कहते थे उसकी इंगलिस्तानमें यह दशा देख कर चित्त द्रवित हो उठा। फिर क्षणैक ही में स्वभाव सुलभ द्वेष्य बुद्धि ने आ दबाया और हम मनही मन प्रसन्न होने लगे कि भलेही सूर्य्य भगवान को इस देश में नीचा देखना पड़ता है। इन्हीं की अनुकम्पा से तो हम श्रेष्ट आर्यत्व से पतित होकर काले होगए! और ऋतुजात उत्ताप के कारण आलसी निरुद्यमी और निरुत्साही बन कर बानरी के मृतवत्स की भांति अपना आर्य नाम पेट तले दबाये डोलते हैं!

जैसे जैसे साउथाम्प्टन पोर्ट नियराने लगा तैसे तैसे दोनों

किनारों की शोभा अनूप दीख पड़ने लगी । ऊंची नीची विषम भूमिपर तृणावर्तों (चौगानों) की हरित क्यारियां नवपल्लवित, कुसुमित, श्रेणीबद्ध बृक्षावली और छोटे छोटे रंग बिरंगे पक्षियों का इतस्ततः उड़ना आदि सौन्दर्य समूह समुद्र बक्ष से देखना बड़ाही आह्लादक था । देखकर श्रजनहार की अलौकिक लीला को धन्यबाद दिया कि जिसकी अनुकम्पा से हमारे सदृश तुच्छ जीवों को भी इतने बड़े महानद पार यह मनोहर सौरभ सम्पन्न उद्यान इंगलिस्तान का समृद्धिवान मानवोद्यान देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

आस पास समुद्रमें कितनेही छोटे बड़े जहाज और किश्तियां इधर से उधर याता यात कर रही थीं जिनकी आदर सन्मान सूचक सीटियों की ध्वनि से बारम्बार आकाश गुंजायमान होने लगा । पाइलट (मार्ग दर्शक नाव) की अगवानी से हमारा जहाज बंदर की ओरचला । मेघराजभी हम लोगों के मुखारबिन्दों पर गुलाब जल सिंचन करने लगे । हमको तो अपने आनन्द में इनकी नन्हीं नन्हीं फुलझड़ियां गुलाब जलही प्रतीत हुई थीं चाहे वह उनका अश्रु जलही क्यों न रहा हो ।

जब से दुर्गा, लक्ष्मी, विद्या आदि भारत माता की दुलारी ललना गणों ने मातृक्रोड़ परित्याग करके इंगलिस्तान को गमन किया है तब से इन्द्र महाराज की भी सुधि बुधि न जाने कहां विलीन सी होगई है कि ऋतु अनऋतु आदि का भी परिज्ञान शेष न रहगया । कभी अतिबृष्टि कभी अनाबृष्टि, कभी सूखा, कभी बूड़ा, यही द्वन्द हमारे प्रतिवर्ष लगे रहते हैं ! सो इंगलिस्तान के सुकालिक धाराधरने भारतबर्ष की अधमुई प्रजाको देखकर करुणार्द्र हो प्रेमाश्रु वर्षण कियाहो, और उपरोक्त फुलझड़ियां उन्हीं

के नयन नीर की बौछारहो, अधिक सम्भावना इसीकीहै ! क्योंकि हमारे काले मुख नतो अरबिन्द हैं और न बिना मूर्छित हुए जलप्राश (गुलावजल छिड़के जाने) के पात्रही होसकते हैं !!!

आज हम राजाधिराज एडवर्ड सप्तम के महिमान हैं । राज पाहुनों की सभी लोग प्रकृति से ले पुरुष पर्य्यन्त, सुश्रूषा और आदर सन्मान करते हैं । सो बन्दरगाह पर पहुंचतेही अच्छे धूम धाम की अगवानी हुई । घाट कर्मचारियों के अतिरिक्त नगरके बड़े बड़े लोग और सिटीबैंड बाजाभी पेशवाई को आया । हमलोग घाटपर के साधारण जनवासे में उतारे गए ।

कई दिनों, हफ्तों बाद भूमिपर उतरपाये थे, भूमि भी इंगलिस्तानकी स्वर्णभूमि, और देवताओं के निवास करनेका सुरलोक, बड़ाही आनन्द प्राप्त हुआ । दिन सुन्दर शरद ऋतु का सा जानपड़ता था ।

पवन मन्द सुगन्ध शीतल, हेम मन्दिर शोभितं ।
निकट जलनिधि बहत निर्मल, प्रकृति सिद्ध मनोरमम् ।

साउथाम्प्टन SOUTHAMPTON.

यद्यपि मैंने इंगलिस्तान के विषय थोड़ा बहुत पहिलेभी पढ़ा सुनाथा । और बहुतेरे अंगरेजों के मेल मिलाप के कारण उनकी रीति भांतियों से भी यत्किंचित परिचित था । तथापि मुझको जहाज से उतरते ही प्रायः सभी बातैं नवीन और आश्चर्य्यप्रद दीख पड़ीं ! सबसे पहिली आश्चर्य्य की बात तो यही जानपड़ी कि यहांके सभी अंगरेज लोग बड़े बिनयी, नम्र और अतिथि सेवक थे ।

हमलोग (हिन्दूलोग) तनमद, धनमद, विभवमद और राज्यमद इन मद्य चतुष्टय को बड़ा बिकारी समझते हैं। और अपने देश में अंगरेज लोगों को इस चतुरंग के अतिरिक्त पांचवीं सर्ब ज्येष्ठा सुराभवानी की भक्ति में भी रत रहने के कारण पंच सेवी देखते थे, सो अपने प्रति उनका अनुचित वा विषम बर्ताव उपरोक्त पंचविकार जनित उन्मत्तताही के कारण समझकर कुछ आश्चर्य्य नहीं करतेथे। समझ रक्खाथा कि अंगरेज सर्वत्रही ऐसे होंगे. क्योंकि यह पंचविकार तो उनके घने सहचर सदैव सर्बत्रही बने रहे हैं। परन्तु यहांपर प्रायः सभी अंगरेजों को अपने अनुमान के नितान्त बिरुद्ध पाकर एक अचरजसा जानपड़ा! इस आश्चर्य्य को दूरकरने के लिये जो तनिक बातचीत की तो ज्ञातहुआ कि पापका आश्रय दाता अन्धकार हुआ करता है। प्रकाश में विकार कैसा? सो यदि हिन्दुस्तानमें मदोन्मत्त अंगरेजों की ओर से विषम बर्ताव होता है वह हिन्दुस्तानियों के अविद्या रूपी अन्धेरे में हीं होसकता है। यदि हिन्दुस्तान में भी वैसाही विद्याके प्रकाशित हो जैसा कि इंगलिस्तान में है तो अंगरेजों को अपनी उन्मत्तता दिखाने का अवसरही न रहजाय। सो इसमें दोष हिन्दुस्तानियों हींका है। उपरोक्त मदों के कारण इंगलिस्तान में तो किसी प्रकारका बिवाद, पैशुन्य वा विभेद नहीं है! इससे सिद्ध है कि तनमद, धनमद, बिभवमद, और राजमद इत्यादि स्वयम् बिकारी नहीं हैं किन्तु ब्याधिका हेतु केवल अविद्या है। बात बिलकुलही सच है। हमलोग अविद्याके कारणअपना पराया तक बिलकुल भूलगये हैं, अधिक क्या कहाजाय! इस दशामें अंगरेजों को दोषदेनाभी हमाराही दोष है।

हिन्दुस्तान में चाहे जो हो। साउथाम्प्टन तो इंगलिस्तान है

यहां विद्याका प्रकाश है। उसी उजाले में हमभी संसारकी एक जातिके मनुष्य देखेगये। और मानवोचित आदर सत्कार पाकर फूले अंग न समाये। बन्दरगाह बहुतसुन्दर है। बिश्रामस्थल भी खूब प्रशस्थ और बिशाल है। डाकघर, तारघर और कई अढ़-तियों (Agents) के कार्य्यालय टिकान के भीतर ही बने हैं। रेलभी एकओर बन्दरके अन्दरसे होकर बनी है। सो यात्रियों के लिये सबतरहका सुपास और आराम है।

जहाज किनारे पर लगारहा। और असबाब सामान इत्यादि उतारा जानेलगा। जहाजके ऊपरसे बड़े बड़े सन्दूकों का क्रेनों द्वारा नीचे उताराजाना और गोरे कुलियों द्वारा ठेलोंपर लाद लाद कर रेलगाड़ियों में पहुंचाना कैसी शीघ्रतासे होता था कि हजारोंमन असबाब बातकी बात में स्थानान्तरित होगया। गोरे कुली लोगोंकी फुरती और परिश्रमी बानि को देखकर हमें तो प्रकृतिकी कुटिलता पर डाह उत्पन्न होती थी।

टिकान के सब ओर गोरे पुलीसमैन पहरा देनेको नियुक्त होगये। दोनों ओरके फाटक बन्द करदिये गए जिसमें भीड़ न जमा होने पावे। सो फाटकों के आस पास स्वेतकाय अजीतबर्ण मुखड़ों की मानो कपास फूल रहीथी। अन्दर बड़े बड़े गण्यमान्य ब्यक्तिही आते थे और बड़ी खातिरदारी से सन्मान पूर्वक बातचीत करते थे। इसीतरह असबाब बिस्तर आदि के उतार चढ़ाव और आतिथ्य सत्कारादि में दिन ब्यतीत होगया। रात्रि में कुछ लोगोंने स्टेशन पर और बहुतोंने जहाजही पर शयन किया।

दूसरे दिन प्रातःकाल आठबजे नगर निरीक्षणका ठहराव हुआथा। अगवानी के वास्ते बैंड बाजा आकर उपस्थित होगया समाचार पत्रद्वारा समस्त नगरमें यहबात बिख्यात होगई थी।

सबलोग हिन्दुस्तानी सैनिकों के देखने को आतुर होरहे थे। परन्तु इन्द्रमहाराजकी गुलाबपाशी का अनादर करके भला हमलोग नगर परिभ्रमण को कैसे जासकते थे ? बहुत देरतक बृष्टि बन्दहोने की अपेक्षा करते रहे, परन्तु जब अधिक देर होने परभी आकाश स्वच्छ होने के लक्षण न दीखपड़े तब भ्रमण सायं-काल के चारबजे के लिये बिलम्बित कियागया।

सन्ध्या समय में बृष्टि बिलकुल थमगई। सूर्य्यदेवभी मुख मोड़ते मोड़ते मन्द मुसक्यान से हमलोगों को ताकने झांकने लगे। उनकी मुसक्यान से मालूम होता था कि कदाचित इतने हिन्दुस्तानियों को इंगलिस्तान में देखकर उन्हें आश्चर्य्य हुआ। अथवा अपने निज (सूर्य्य) वंशी क्षत्रियों को सहस्रों वर्ष पीछे इस दूर देश में राजसूययज्ञ का अतिथि देख कर उनके मन में उल्लास उत्पन्न हुआ जिसके कारण चेहरे पर हठात् मृदुहास्य रेखा झलक उठी।

ऐसेही अनूठे प्राकृत समय में हम लोग साउथाम्प्टन नगर देखने के लिए बाहर निकले। फाटक बाहर निकलते ही देखा कि सड़क के दोनों ओर मानो मनुष्यों की किलेबन्दी हो रही है। लक्षों मनुष्य, नर नारी, बालक, युवा, प्रौढ़, बृद्ध, अमीर, गरीब, ठट्ठ के ठट्ठ दोनों ओर डटे खड़े हैं। पुलीस अपने प्रबन्ध कार्य्य में खूब सावधानी से लगी थी। हुर्रा आदि की ध्वनि से आकाश गूंज रहा था।

साउथाम्प्टन एक बड़ा समृद्धिवान् नगरहै। यहां पर बहुत बड़े बड़े धनवान् व्यापारी अपने कारबार करतेहैं। उनकी बड़ी बड़ी कोठियां उच्च मस्तक दंडायमान हैं। देखकर लक्ष्मी के चोचले हृदयमें चुभगए। आज हिन्दुस्तानी महिमानों के लिए नगर और

हाट बाट बिशेष रूपसे सुसज्जित हुएहैं। प्रत्येक मोड़पर पताकाओं की झालरें आर पार लटक रहीहैं। खिड़कियोंपर राजपताकाएं लहरा रही हैं। प्राय: सभी बड़ी बड़ी कोठियां शुभागमन का प्रेम सम्बाद अपने अपने मस्तकों पर धारण किए हुए अतिथियों का आवाहन कर रही हैं। ठौर ठौर पर बड़े बड़े पुष्प गुच्छ (गुलदस्ते) लटकते हुए अपूर्ब शोभा दे रहे हैं। और सजी हुई दूकानें अपनी सुघरई से बिना बचनही अपनी ओर बुलाए लेती हैं, आदि। शोभासमूह का बखान हम कहां तक करें अंगरेजों के आदर सत्कार और मान सन्मान की बिवेचना (अटकल) पाठक इसी से कर लेवें कि वह लोग हमको अपने राजा का ही अतिथि नहीं मानते थे, बरन जाति (Nation) का महिमान समझते थे। क्योंकि राजतिलक भी उनका जातीय महोत्सव था।

हमने यह भी देखा कि मार्गपर चलते हुए अनेकों शुभ्रबसना युवतियां सिपाहियों को पुष्प गुच्छादि भेंट करती थीं, और ग्रहीत होने पर परम प्रसन्न होकर धन्यबाद दक्षिणा में देती थीं। यह लोग शायद होटलों और दूकानों आदि की परिचारिकायें थीं। ऊंची ऊंची अट्टालिकाओं और वातायनों में से कुलीन महिला गणों का रूमाल हिलाना और हुर्रे आदि ध्वनि में योग देना हम लोगों को आश्चर्य्यमय किन्तु मनोहर दीखपड़ता था।

जहाज बनाने के कारखानों और मरम्मत की दीर्घिकाओं को देख कर अपूर्ब चमत्कार जान पड़ता था। बूढ़े मनु महाराज का बाक्य "बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्ध्यति" यहां प्रत्यक्ष अनुभव हुआ धन्य अंगरेजों की परिष्कार बुद्धि! ज्ञानद्वारा मानव बुद्धि का यथार्थ शोधन अंगरेजों के ही भाग पड़ा है।

योंतो परमेश्वर ने बुद्धि सबही को दी है और प्रकृति द्वारा आदर्श ज्ञान भी सब के लिए प्रस्तुत किया है परन्तु जो उन साधनों को काममें ही न लावें उनकी बुद्धि क्योंकर स्फूर्ति पा सकती है ? और शुद्धता फिर कैसी ? हम लोग कई घंटे नगर में घूमते रहे । प्रत्येक सड़क हरएक गली में, एकसां भीड़, समान सजावट और निर्विराम स्वागत ध्वनि बर्तमान रही ।

इंगलिस्तान में नगर निरीक्षण का हमारा यह प्रथम दिवस था । सो हमको यह सब बातें बिलकुलही नवीन जान पड़ती थीं । घूम घाम कर फिर अपने ठिकाने पर वापिस आये । यद्यपि ऋतु ग्रीष्म कही जाती थी तथापि जाड़ा इतना अधिक मालूम हुआ कि हमारा शिशिर भी उतना शीत नहीं होता । रात्रि के समय एक नाट्यशाला में आमन्त्रण हुआ । कुछ लोग वहां गए और शेष सब लोग शयन का चिरपरिचित आनन्द लेने लगे ।

दूसरे दिन तारीख चौदह जूनके मध्यान्होत्तर दो बिशेष रेल ट्रेनों द्वारा लंडन राजधानी के लिए हम सब प्रस्थानित हुए ।

इस देश के अखबार ऐसे तीब्र और बायु बेगवत् दूत हैं कि जैसे हमारे शास्त्रों में अग्नि दूत का बखान कियाहै । अग्नि वा बिद्युत अपनी शक्ति द्वारा जैसी द्रुतगति उत्पन्न करती है वैसेही यहां के समाचार पत्र जन समूह को सम्बाद देने और संचालित करने में काम देतेहैं । सो इन्हीं दूतों द्वारा सम्पूर्ण देश में हम लोगों की यात्रा का समय बिदित होगया था ।

साउथाम्प्टन से हैम्प्टन कोर्ट प्रायः अस्सी मील का मार्ग है सो इस बीच के प्रायः सभी स्टेशन और रेल मार्ग के निकट वर्ती सभी नगर और गांव जनसमूह से भरपूर, सत्कारबाद से

गुंजायमान, और पताका रूमाल आदिके आन्दोलनसे चमत्कार मय हो रहे थे। सब ओर अपूर्व आनन्द छा रहा था। सभों को हिन्दुस्तानी सैनिकों के देखने का बड़ा चाव प्रतीत होता था। मार्ग में बहुतेरे बड़े बड़े खेत, उद्यान, और तृणावर्त (सब्ज़ा ज़ार) देखे जिनकी प्राकृतिक और कृत्रिम शोभा निरखते ही बनि आती थी।

खेतों के बीच में छोटे छोटे कुटीर कैसी सुघरई से बनाये गए हैं जो बहुतही रमणीक जान पड़ते थे। बहुतेरे पशुओं के चौबाड़े भी देखे जिनमें गाय, बैल, शूकर, घोड़े, भेड़, आदि पशु पाले जाते हैं।

इसी तरह धूमिल आकाश (Dusky sky) के नीचे दुनियां की शोभा निरखते हुए वैकाल चार बजे के समय हैम्पटन कोर्ट स्टेशन पर पहुंच गए।

हैम्पटन कोर्ट HAMPTON COURT.

हमारी यह यात्रा कैसी आनन्दमयी थी कहकर कैसे समझावैं। साउथाम्प्टन से हैम्पटन कोर्ट तक पहुंचनेके इन कई घंटों के थोड़े से समय में हीं प्रकृति ने कितने रूप बदले, कैसे कैसे दृश्य दिखलाये, रेल में सवारहुए तब थोड़ी थोड़ी बूंदें पड़ती थीं। कुछ मिनटों बाद धूप खिल निकली। मानो सूर्य्य भगवान हमें राह दिखाने के वास्ते आगे आगे प्रकाश लेकर चलने लगे। तनिक ही देर हुई थी कि मानो इनका कार्य्य शेषहुआ और नाट्य शाला में पटाक्षेप होगया। दूसरा दृश्य घनघोर घटाका था। खूब उमड़ घुमड़ कर धवले धूमिले बादल घिरआये और वृष्टि होने लगी। चलती हुई रेलपरसे उपवनों की सुन्दर सजीली

हरियाली पर धीमी धीमी वर्षा के बिन्दु पड़ते हुए देखने में अपूर्व शोभायमानथे । तनिकहीं में अंधेरी छाजाती फिर उजाला होता, फिर जलकणकी फुलझरियां होने लगतीं । इसी तरहका पावस प्रमोद मार्गभर होतारहा ।

हैम्पटन कोर्ट स्टेशन पर पहुंचने के समय यद्यपि आकाश मेघाच्छादित था तथापि बर्षा बिलकुल बन्दथी । स्टेशन से जनवासा लगभग पावघंटेका पैदल रास्ता था । मार्ग दोनोंओर जनसमूह से भरपूर, तिल डालने से भी धरतीतक न पहुंचता । टोपियों, रूमालों और पुष्प गुच्छादि के उछाल एवं हुरेंकी धुनि से दिगन्त गुंजायमान होतेथे । इसीजनसमूह रूपी द्विकूल तरंगिनी के मध्य होकर हमारा बेड़ा कैम्पकी ओर अग्रसर हुआ । क्या जानै इस नदी के बीचमें हमारे बेड़ेको बिनाजलही चलता हुआ देखकर मेघराज को अच्छा न लगा वा क्यों ? चलते चलते तुरन्तही बर्षा आरम्भहोगई । और इन कतिपय मिनटों के समय मेंहीं हम सबलोग तरबतर होगये । पर दर्शकों की भीड़ अटूट बनी रही । भीगते भागते कांपते थर्राते जैसे तैसे कैम्पमें पहुंचे । बिस्तर असबाब स्टेशनसे आने में कुछ देर हुई । भीगे बस्त्रों में कई घंटे रहने के कारण बहुत जाड़ा मालूम हुआ और अधिक कष्ट बोध हुआ । इस दिनके इन्द्रजालिक नाटक के उपरोक्त दृश्य चाहे जितने रुचेहों पर यह अन्तिम झांकी तो हमें बहुतही अरोचक हुई ।

राज महल हैम्प्टन कोर्ट के होमपार्क नामक बिशाल उद्यान में हमलोगों को जनवासा मिलाथा सो इस महलका कुछ ऐतिहासिक बृत्तान्त भी संक्षेप से बर्णन करदेना यहांपर आवश्यक जानपड़ता है ।

यह महल और उपबन खृष्टीय सम्बत १५१५ में पोपधर्माधिपति वलसी (Cardinal Wolsey) ने निर्माण करके चौदह पन्द्रह वर्ष तक अपने पांचसौ के लगभग परिवार और परिजन सहित इसमें आनन्दबास कियाथा। सन् १५२९ ईसवी में जब पोपडम का पतनकाल आया तब यह महल तत्कालीन राजा हेनरी अष्टम के अधिकार में पहुंचकर "राजमहल" की पदवी को प्राप्त हुआ। सन् १५३७ईसवी में छठे एडवर्डका जन्म इसी राजभवनमें हुआथा। राजा प्रथम चार्लस की मृत्युके पश्चात सुप्रसिद्ध अलिवर क्रामबेलने इस राजप्रसाद पर अपना अधिकार जमाया था राजा विलियमतृतीय,रानीअनी, राजाजार्ज प्रथम और राजाजार्ज द्वितीय अपने अपने राजत्व काल में इसी महल में निवास करते थे। राजा तृतीय जार्ज ने इस महल का निवास छोड़ दिया था तब से इस में कई बिभाग कर दिए गए और देश के कतिपय बड़े बड़े हितैषियों और कार्य्य कर्ताओंको इसमें रहनेकी राजाज्ञा दी गई थी। सो तब से आज पर्य्यन्त यहां पर बराबर बड़े बड़े सैनिक जनरलों और नामी राजनैतिकों के कतिपय परिवार निवास करते हैं। इसमें पैतालीस बड़े बड़े बिभाग और एकहजार से ऊपर कमरेहैं। राजद्वार से होकर प्रथम प्रांगण से आगे जाते ही एक चौक में पहुंचते हैं। वहां पर एक ज्योतिष सम्बन्धी बिशाल घटिका फाटक के ऊपर स्थापित है। इसी बिभाग में एक स्थान पर आचार्य्य वलसी के अस्त्र शस्त्रादि सजाये हुए रक्खे हैं। और उनका मन्त्र (Motto) Dominus mihi adjuter "ईश्वर हमारा सहायक है" सुन्दर रूपसे स्वर्णांकित है। आगे चल कर परम सुन्दर स्तम्भ पंक्तिसे होते हुए राज सोपान श्रेणी पर चढ़तेहैं। ऊपर एक बिशाल कचहरीहै जहांपर सुप्रसिद्ध जल-स्थलीय सैनिकों की मूर्तियां बड़े सन्मान पूर्बक स्थापित हैं।

इनके अतिरिक्त अन्यान्य बहुत से कमरेहैं जिनमें समय समय के ऐतिहासिक और प्रसिद्ध चित्रकारों की कारीगरी के चित्र शोभायमानहैं। इन चित्रों की संख्या एक सहस्र से ऊपर होगी और एकसे एक मनोहर एवं अपनेअपने समयके वास्तविक भावों को ततकाल नेत्रों के सन्मुख लाकर उपस्थित कर देने वाले हैं। इन चित्रों के देखने से प्राचीन काल के लोगों की रुचि साम्यता स्पष्ट रीति से बिदित होती है। यहां की प्राचीन पाकशाला में बहुतेरे प्राचीन यन्त्र, लोहे के अनगढ़ हथियार और पत्थर एवं हड्डियों के काटने पीटने वाले यन्त्र देखे जो प्राचीन ब्रिटनों की यादगार हैं।

बड़ी कचहरी जिसको ग्राम्यनिर्माण (Gothic style)कहते हैं उसकी नाप १०६ फीट लम्बी ४० फीट चौड़ी और ६० फीट ऊंची है। इसकी रचना भी बड़ी मनोहर और सुघर है। प्राचीन गाथ लोगों का निर्माण होनेही के कारण इसको गाथिक अर्थात् गंवारी निर्माण कहते हैं। रानी अलिजबेथ और राजा जेम्स प्रथम के समयमें यह स्थान नाटकशाला की भांति उपयुक्त होता था। प्रसिद्ध कवि शेक्सपियर के कतिपय नाटक प्रथमतः (Originally) इसी ठौर पर खेले गएथे। राजा जार्ज प्रथम के अधिकार से सम्बत १७१८ खृष्टीय में शेक्सपियर का नाटक अष्टम हेनरी और बलजी पतन [Shakespear's Henry viii with the fall of Wolsey] भी इसी भवन में अभिनीत हुआ था। २३

पाठक ! इस संसार रूपी रंगभूमि के मायामय सूत्रधार के बिचित्र खेलोंकी ओर तनिक ध्यानपूर्बक देखिए ! जिस वलजी ने गौरव गरिमासे भरपूर उत्थान पूर्बक इस महल का निर्माण किया था और अपने समयमें राजाओं को भी कुछ बस्तु न समझता था,

उसी का पतन उसके निज निर्मित आमोद भवन में अभिनीतहो? यह उस बड़े खिलाड़ी का विचित्र खेल नहीं तो क्या है ? यह बात सभी जातियों और व्यक्तियों पर प्रगटहै कि संसार में परिवर्तन अवश्य होताहै। आज तुम, तो, कल हम का मामला सदा कालसे चला आताहै और चलता रहेगा। अनगिनतियों प्रमाण इस बिषय के सन्मुख रखते हुए भी न जाने मानव रुचि की कैसी बिलक्षण गतिहै कि अपने उत्थान के गर्वमें मत्त होकर सब कुछ भूल जाता है और विजित के अपमान करने में कुछ भी लज्जा नहीं करता! पुरानी बातों की चर्चा यदि इसलिए छोड़ दी जावै कि तब सभ्यता का इतना प्रकाश न था जितना कि आज कल है तौ भी इस दिन दुपहरीमें ऐसे ऐसे अपमान के नमूने कम नहीं मिलते! अभी उस दिन दिसम्बर सन् १९०० ईसवी कीही बात याद करें! यूरोपियन वैद्युत सभ्यता समूह के द्वारा चीन. राजधानी पीकिन के स्वर्ग मन्दिरस्थ शांति निकेतन [Hall of Harmoney Temple of Heaven] में लूट के दिया [Wonderful looted lamp] का अभिनय क्या कुछ छोटीसी बात थी? महाराज चीन नरेश के परम पवित्र शान्ति निकेतन में बिदेशी सभी सभ्य जातियों द्वारा लूट के दीपक सन्मुख महारानी चीन का नीलाम किया जाना हमारा आंखों देखा हुआ खेल है! यह सब बातें मनुष्यकी रुचिसे सम्बन्ध रखती हैं। अधिक बाद प्रतिबाद की इसमें आवश्यकता नहीं है। कहना केवल इतनाही है कि यदि इस सभ्यता के समय में भी मनुष्यों की रुचि यदि इतनी अधःपतित बनी रहसकती है तो स्वीकार करना पड़ैगा कि इस साम्प्रतिक सभ्यतामें अभी बहुत कुछ त्रुटियां हैं जिनकी पूर्ति वा शोधन करना अग्रगामी महत जनोंका आवश्यकीय कर्तव्य है। हैम्पटन कोर्ट महल एक साधारण प्रजा द्वारा निर्मित

हुआथा । फिर राजमहल बना, कितनेही बेर विप्लव और युद्ध देखे, अनेकों राजमन्त्रणायें, सन्धि, बिग्रह आदि इसमें हुए, बिवाह, जन्म, प्रणय, परिणय इत्यादि मांगलिक उत्सव देखे, कितने पतनोत्थान आदि भोग भुगत कर आज फिरभी यह साधारण प्रजाकी सम्पत्ति रूप में दंडायमान है ।

होमपार्क उद्यानभी एक बहुत बड़ा बगीचा है । मनोहर हरियाली, सुन्दर पुष्पावली, उच्चशिर जुबिलीगेट नामक फाटक, पार्श्व में टेम्स नदी की एक रम्य शाखा जिसके द्विकूल अत्यन्त रमणीक पुष्पोद्यान और श्रेणीबद्ध जनपथसे सुशोभित, इत्यादि अनेक सौन्दर्य सम्पन्न होमपार्क हमारे लिये वास्तविक (होम) गृह सुखका देनेवाला बनायागया था । कैम्प में हिन्दुस्तानियों के आराम के योग्य सभी प्रस्तुतियां की गई थीं । बाबरचीखाने, गुसलखाने, मालखाने, बूचरखाने, आदि सब तरह के खाने हर जाति के लोगों के वास्ते अलग अलग, बनाए गए थे । बाबरचीखाने की भूमि लोहे के तखतों से आच्छादित थी जिस से बहुत सुबिधा होगई थी ।

केम्पजीवन THE CAMP LIFE.

उपरोक्त कैम्प में हमलोग आराम से रहने लगे ! पहुंचतेही कई दिनों तक बादलबूंदी अधिक रहने के कारण शरदी का खूब अनुभव हुआ । कैम्पके भीतरही डाक घर और तारघर नियत हो गए थे और चौकी पहरा आदि के वास्ते गोरे पुलीसमेन बांट दिए गए थे । कमसरियट, रसद, सामान तो बहुत कुछ हमारे साथ ही गया था शेष ताजा दूध, तरकारी, मांस, मक्खन, अंडा, सबजी, इत्यादि नित्य प्रातःकाल अंगरेज नौकर लोग लाकर

प्रस्तुत करते थे । अटाला असबाब (कुरसी मेज वगैरः) भी आवश्यकता भरको यत्किंचित् मिल गया था । सो हमें किसीप्रकार की असुबिधा नहीं थी ।

अंगरेज दर्शकों को कैम्पके भीतर आने का साधारणत: बिना आज्ञा अधिकार न था, सो चतुर्वेष्टनके आस पास भीड़के भीड़ स्त्री पुरुष खड़े होकर देखा करते थे । बहुतेरे हिन्दुस्तानी लोग दीवारों और रस्सों के पास जाकर कुछ कुछ बातचीत भी करते थे जिससे वह लोग बड़े सन्तुष्ट होते जान पड़ते थे । जो लोग आज्ञा प्राप्त करके भीतर आते थे उनको हिन्दुस्तानी कैम्पकी सभी बातें अनोखी सी जान पड़ती थीं । पाकशालाओं में पाक कार्य्य, धोबियों की अस्तरियां, कहारों की बाल्टियां, तवे, कड़ाह, देगचे, पीतल के थाल थालियां, इत्यादि सब कुछ उनको कौतूहलजनक था ।

बहुत से अंगरेज लोग जो पहिले हिन्दुस्तान में रह गए थे वह अपने मित्रों को साथ लाते और उनके सन्मुख हिन्दी भाषा में बातचीत करके बड़े गौरवान्वित होते थे । बहुत लोगों ने कचौड़ी जलेबी आदि हिन्दुस्तानी खानों की अपने मित्रों में बड़ी प्रसंशा की थी और अब अवसर जान कर उन्हीं खानों का स्वाद चखाने को उन्हें हमारे कैम्पमें लेआते थे । परन्तु दुर्भाग्यबश हमारे साथ के बावरची लोग दाल चपाती भिन्न और कुछ बनाना ही नहीं जानते थे सो हम उन लोगों की इच्छा पूरी न कर सकते थे । कतिपय अंगरेज लोगों ने यह भी कहा कि ऐसे रसोइये क्यों रखते हो जो तुम्हारी इच्छा और आवश्यकता के अनुकूल भोजन पाक करना नहीं जानते ?

अवश्यही उनको यह ज्ञात नहीं था कि चार रुपया वेतन

पानेवाले बावरची से दाल रोटी पकवाने से अधिक और क्या आशा की जासकती थी ? फिर स्वयम् सिपाही का वेतन भी तो पूरे नौ रुपये महीना (बारह शिलिंग मासिक) बिना रसद पानी या नान शबीना के है। और वरदी पोशाक का खरचा भी वह इसी में से करताहै। ऐसी सौख्यमयी ? दशाका सिपाही क्या कचौड़ी जलेबी पकवाता खाता और क्या अपने आश्रित परिवार का पालन करता ?

हमारे साथी कुछ सिपाही लोग सच्ची बात कह भी डालते थे कि साहब ! तुम्हारी कृपा से अब हिन्दुस्तान के वह दिन नहीं हैं जब हाथी घोड़े दूध जलेबी खाते थे ! अब तो हम नाममात्र राज पूत और सिख इत्यादि हैं !! वास्तव में हम तुम्हारी बचीहुई सूखी रोटी के मोहताज होगए हैं !!!

उपरोक्त अंगरेज आगन्तुकों में कतिपय ऐसे थे जो अपने हिन्दुस्तान में रहने के समय राजपूताना आदि प्रान्तों में बहुधा रईसों जमींदारों आदि के अतिथि रहे थे और उनकी तत्कालीन श्री समृद्धि देख कर हिन्दुस्तान की धनाढ्यता का अटकल लगाए हुए थे।

हां ! अतिथि सतकारमें हिन्दुस्तानी आज भी वैसाही उदार बना हुआ है जैसा कि पहिले था, परन्तु अब की उदारता और तब की उदारता में आकाश पाताल का अन्तर होगया है !! तब की उदारता नित्यकर्म में परिगणित थी, और अबकी ! जीवन मरण का प्रश्न है !!!

प्रश्न हो सकता है कि ऐसा क्यों है ? एकही शताब्दी के भीतर, एकही राजाकी प्रजा, इंगलिस्तान इतना ऊंचे चढ़ जाय और हिन्दुस्तान ऐसी अधोगति को प्राप्त होजाय, इसमें कुछ

कारण अवश्य होगा ! नहींतो एक राजा की सम्पूर्ण प्रजा उन्नत्या वनति में समान क्यों न हो ? माना कि संसार में प्रायः यह नियम ही सा हो रहा है कि मूर्खों की मूखर्ता से बुद्धिमान लोग लाभ उठाते हैं परन्तु राज व्यवस्थाओं में जहां ऐसा वैषम्य हो वहां हमारी आर्य्य (हिन्दू) दृष्टिसे न्याय की कमी तो अवश्यही दीख पड़ेगी। अस्तु ! जो हो, इस बिषय की बिवेचना हमारे अधिकार से बाहर है। पाठक स्वयम् अपने लिये अपना निर्णय करलें।

आप व्यवस्था चाहे जैसीदें परन्तु हमारी हैम्पटन कोर्ट की चपातियों ने अंगरेज साधारण को प्रत्यक्ष बतला दिया कि हमारा आहार बहुतही साधारण और कंगालीका द्योतक है यह चपातियां वे लोग एक अजूबा जिनिस (Curio) की भांति ले जाया करते थे।

इंगलिस्तान पहुंचकर हैम्पटन कोर्ट के जनवासे में राजदर्शन सम्बन्धी प्रथमावलोकन (Review) स्वर्गवासिनी महारानी विक्टोरिया के तृतीय पुत्र राजकुमार ड्यूक आफ कनाट का तारीख १७ जूनको हुआ। यद्यपि हमलोग ता० १४ जूनके सायंकालही पहुंचगये थे तथापि बर्षा आदिके कारण दो तीन दिन तक बिलकुल अनास्थिर रहे इसी से राज दर्शन भी उपरोक्त मिति पर्य्यन्त बिलम्बित रहा।

इस रिव्यू के विषय कन्टिनजन्ट आर्डरमें जो प्रकाशित हुआ था उसको संक्षेप में हम यहां उद्धृत करतेहैं :—

His Royal Highness the Duke of Connaught was very pleased with the smart turn out and soldierly appearance of all ranks. It was a great pleasure to him to telegraph to His Majesty the King Emperor

the loyalty and devotion of the men to the crown and to welcome the contingent to England in the name of His Majesty. H. R. H. expressed a hope that His Majesty the King Emperor would inspect the contingent himself and that H. R. H. the Duke of Cannaught would place himself at its head to receive His Majesty.

अर्थ यह है कि—राजमान्य राजेश्री श्री ड्यूक आफ कनाट हिन्दुस्तान के सब दरजे के सैनिकों की बांकी बीरता और सिपाहियानी धज से बहुत प्रसन्न हुए। उक्त मान्यबर ने बड़ी प्रसन्नता पूर्बक श्री महाराजाधिराज की सेवामें तार से हिन्दुस्तानी सैन्यगण की राजभक्ति और अनुराग का संदेशा भेजा है और महाराजाकी ओर से हिन्दुस्तानी सेनाका इंगलिस्तान में स्वागत करते हैं। मान्यबर ने यहभी आशा प्रगटकी कि महाराजाधिराज स्वयम् इस सेनाका अवलोकन करेंगे और उस समय राजेश्री ड्यूक आफ कनाट सेनानायक पदको ग्रहण करके ससैन्य महाराजाका स्वागत करेंगे।

राज सहोदर के दर्शन से हम सब लोगों को बड़ीही प्रसन्नता हुई और वहभी बहुतही सन्तुष्ट हुए थे क्योंकि वह स्वयम् कुछ लोगों से परिचित थे। हिन्दके राजमन्त्री लाट जार्ज हमिल्टन साहबभी कैम्प में पधारकर स्वागत करगये थे। औरभी अनेक राज कर्मचारीगण आते और आदर सतकार करते रहे।

हिन्दुस्तान से इन दिनों बहुतेरे अंगरेज सैनिक अफसर लोग छुट्टीपर आए हुए थे, सो प्रायः नित्यही वे लोग कैम्प में अपनी अपनी सेना के लोगों को पूंछते हुए आते और बड़े प्रेमपूर्बक मिलते जुलते अलाप करते थे। हमारी निज सेनाके भी कतिपय अंगरेज सैनिक अफसर विलायत में छुट्टीपर थे, सो हमैभी उनसे

मिलने की बड़ी उत्कंठा होरही थी इतने में हमारे निज फौजके कतिपय अफसर भी आये और निज बन्धु बांधवों की भांति मिले भेंटे जिससे हम सब लोगों को बड़ी प्रसन्नता हुई।

कैम्प में हमारे सिपाहीलोग अपने देशकीही भांति रहने लगे। जब कभी तनिक धूप निकलती थी तो अपनी हिन्दुस्तानी टेंवके कारण कोई कोई खुली देहही घासपर घाम में बैठ जाते थे। घासही पर बैठे हुए हजामत बनवाते और कोई कोई अपने बड़े बड़े और लम्बे लम्बे हुक्के और पेंचवानों के घूंट सटकाने लगते थे। यह सभी बातें अंगरेज दर्शकों को अनोखी जानपड़ती थीं, सो वहलोग इधर उधरसे घातलगाये ताकाही करते थे, ज्योंहीं अवसर देखते कि ततकाल फोटो तस्वीर उतार लेते थे। ऐसीही हमारी एक न एक बातकी चर्चा प्रातःकाल के समाचार पत्रों में प्रायः नित्यही छपने लगीं।

महिमानोंके आदरसतकार के लिये सरकारी तौरपर एक सभा बनी थी, सो उसी सभाकी ओरसे सब लोगों को सैर तमाशे, नाटक थियेटर, इत्यादि दिखलाने का प्रबन्ध होता था। इसी प्रबन्ध के अनुकूल नित्यही एक न एक तमाशा, स्थान, वा कार्य्यालय इत्यादि देखने को जाते थे। जिनका अलग अलग वृत्तान्त लिखना आवश्यक नहीं क्यों कि यह इतने अधिक हैं कि सविस्तर लिखने से नित्यचर्य्याही की चर्चा में एक बड़ा ग्रन्थ बन जायगा।

—:o:—

लंडन प्रथमावलोकन LONDON, FIRST VIEW.

कई दिन तक हमलोग कैम्पही में रहे। वहीं पर बड़े बड़े राज कर्मचारी और अन्यान्य मिलने भेंटने वालों के आदर सतकार

इत्यादि में समय चला गया । फिर हैम्पटन कोर्ट राजमहल स्वयम् कुछ थोड़ा आमोदकारी न था । एकादि दिवस इसी की सैर में बीतगए । फिर जब इन सामान्य कार्य्यों से सावकाश मिला और पहिले पहिल लंडन नगर निरीक्षण को गये उसदिन के मनोभाव वर्णन करने के बाहर हैं ।

महाघोर अन्धकार मयी रजनी में अकस्मात चपलाकी चमक से जिसभांति नेत्रोंको चकाचौंध होता है वैसीही लंडन महानगरी की जाज्वल्य सजीवता देखकर मेरी दशा होगई । इतिहास ने प्राचीन ब्रिटिनों की दशा का स्मरण दिलाया, उनका धरती खोदकर गड़हों में शृगाल आदि पशुओं की भांति रहना, अपने नग्न शरीरोंको कोयला, मट्टी, आदिसे रंगना और मनुष्यों तक का आखेट करना इत्यादि यादकरके चित्त में एक अपूर्व भाव उदय होआया । पुस्तकों में पढ़ाथा कि ब्रिटनलोग आदिमें बड़ेही असभ्य थे, पशुओं को पत्थरों से मारपीटकर लाते और आगपर भूनते थे, वही इनका आहार था । मारतौल, छुरी, इत्यादि सब पत्थरसे बनाते थे । धातु का बरतना स्वप्न में भी न देखा था । कुत्ता पालने के यह लोग तबभी बड़े प्रेमी थे यहां तक कि मृतक के साथ उसके पालतू कुत्तेको भी मारकर गाड़ देते थे जिसमें स्वर्ग में भी वह अपने मालिक के साथ रहै । खेती बारी करना कुछनहीं जानते थे वृक्षों की जड़ैं, फल-फूल और पशुओं के मांस, यहीसब इनके भोज्य पदार्थ थे ।

जिस समय रोमवालों ने इनकी चर्चा सुनी उससमय वे इनकी अपेक्षा बुद्धिमानथे अर्थात खेती बारी करना, घोड़े पालना, रथ बनाना आदि जानते और घास फूसके घरों में रहते थे । वे लोग अपने बैरियों से युद्धकरना और अपने आपको बचाना

जानते थे। इनके अस्त्र शस्त्र लोहे पीतल के होते थे। सभ्यता के साथ साथ हकूमत और राज लालसा भी होतीही है सो रोमी लोगों ने भी इस टापूपर सन् ७८ ईसवी में धावा किया और जय करके अपने राज्य में मिला लिया। रोमियों और ब्रिटनोंमें युद्ध तो घनघोर हुआ था परन्तु जय रोमवालों कीही हुई और वे लोग इस टापूपर सन ६४४ ईसवी पर्य्यन्त राज्य करते रहे। इस अवसर में ब्रिटनों की दशा क्रमशः उन्नत होतीगई और वे पशुत्व से मनुष्यत्व में परिवर्तित होनेलगे।

इस साढ़े छःसौ वर्षों के बड़े समय में इन लोगोंने घर बनाकर रहना, खेती करना और सामान्य बाणिज्य करना सीखपाया। कितनेही लोग अन्यान्य देशों में जाने आने लगे और बहुतेरों ने रोमियों की सेना में भरती होकर युद्धविद्या सीखी और अन्यान्य प्रान्तों में युद्ध भी किए।

उस समय इनका धर्मविश्वास अबसे बहुत बिलक्षण था। चन्द्र, सूर्य्य, ज्वालामुखी पर्वत, और शिलाओं को पूजते एवं नरबलि करते थे। रोमवालों की संगति से जब इनमें सभ्यता आई और यह आत्मगौरव समझने लगे, तब अपने पुरोहितों द्वारा उत्तेजित होकर रोमियों से लड़ने लगे। यह लोग युद्धके कैदियों को पकड़कर अपने देवताओं के सन्मुख बलिदान करते थे। इस कार्य्य से दोनों जातियों में बड़ा बैर होगया! अन्त में बहुतेरे पुरोहित लोग मारेगये और शनैः शनैः नरबलि का निर्दयप्रचार भी बन्द होगया।

इसी छठी सदी में बिलासप्रियता के कारण रोमियों का राज्य शिथिल हुआ और अपने देशपर जरमनों के लगातार आक्रमणों से तंग होकर उन लोगों के यह देश त्यागदिया। उन

के जानेके पीछे ब्रटनवासियों ने बड़ी विपत्तियें भोगीं। इनमें कोई ऐसा न था जो सारे देशका प्रबन्ध करसकता सो बहुतेरों ने यथारुचि थोड़ाथोड़ा भाग छीनझपटकर अपने अधिकारमें कर के राज्यकिया। इस अवसर में उत्तरी पर्वतों के निवासियों ने इन पर कई चढ़ाइयां कीं और इन्हें बहुत सताया। उन्हीं दिनों सेक्सन जातिके कुछ लोगभी अपनी नौकाओंपर से ब्रटनकी एक ओर उतरे। ब्रटनों ने इनसे सहायता मांगी, इसपर सेक्सनों ने अपने देशसे और लोगों को बुलाकर ब्रटनवासियों की सहायता की और पर्वती लोगों को दबाया। सेक्सनों के साथ साथ ऐंगलि नामक जाति के भी कुछ लोग आए थे, पीछे यहतीनों इसभांति मिलजुल गये कि उसी ऐंगलि जातिके नामसे यह सम्पूर्ण देश इंगलिस्तान कहलाया।

उपरोक्त पुरावृत्त जानते हुए जब मैंने प्रथमतः लंडन नगर की वर्त्तमान ज्वलन्त क्षमता को देखा तो हठात मानों बिज्जु-प्रकाश से नेत्र झपगए।

आज लंडन की अपूर्वशोभा और शक्तिमत्ताके सन्मुख इन्द्रकी अमरावती भी कदाचित लज्जित होजायगी। इसकी प्रत्येक गली ऊंचे ऊंचे प्रस्तरमय महल, अट्टालिकाओं की मानो द्विकूल तरंगिनी है जिसकी इच्छा और प्रयत्न रूपी तीव्र धारा में लक्षों नर नारि गण बहे चले जाते हैं। लंडन वास्तव में रूप गुणका बड़ाभारी मेला, विद्या बुद्धिका हाट और जीवन होड़की विचक्षण द्यूतशाला है।

लंडन इंगलिस्तान के इतिहासमें प्राचीन नगर है। रोमन समय के पहिले से यहां एक बस्ती थी जिसको ब्रटन लोग (Caer Ludd) लड नगर कहते थे। बर्त्तमान लंडन नाम लैटिन

शब्द (Londinium) से बना है जिसका अर्थ ब्यापार केन्द्रस्थली होता है। जिस समय यह नामकरण हुआथा उस समय चाहै वैसीही बात रहीहो जैसी कि कोई कंगाल आदमी अपने नवजात पुत्रका नाम जगतसेठ रक्खे परन्तु कालगतिके वही नाम आज सम्पूर्ण रूपसे नाम और गुण में समान होगया है। अंगरेज कहते हैं:—

The freedom of our city is bestowed on all the gods of mankind, and without preference for race or creed we adopt virtue and merit, whether in ourselves or in strangers.

हमारी नागरिक स्वतंत्रता मनुष्य मात्रके लिए उन्मुक्तहै। और बिना जाति वा मत भेद के हम भलाई और गुणका ग्रहण बिना बिलम्ब करलेते हैं। चाहें वह हममें हों अथवा बिदेशियों में। पाठक ! आया कुछ समझ में ? बसुधैव कुटुम्बकम् का वास्तविक अर्थ यह है !

प्रधान नगर लंडन की जन संख्या लग भग छांसठ लाखके है। शहर के बारह मील ब्यास में कोई दो सौ साठ रेलवे स्टेशन हैं और रेल की समस्त परिक्रमायें यदि नापी जावें तो ढाई सौ मील का लम्बान होताहै। मकानों की संख्या नौ लाखसे ऊपरहै। यदि सब गली कूचे नापलिए जावें तो लम्बान तीन हजार मील से ऊपर होता है। लंडन के गिरजाघरों और उपासनालयों की संख्या एक हजार छः सौ है।

आठ हजार प्याऊ (मद्यादि पान की दूकानें) और सत्तरह सौ चाय घर हैं। इन जलपान की दूकानों में रसद पानी कितना उठताहै ? सो भी तनिक सुन लीजिए। सालमें बीस लाख कार्टर (१४ सेरके लगभग का वजन) गेहूं—साढ़े आठ लाख बैल—चालीस

लाख भेंड़, बछड़े और सुअर–जब्बेलाख मुरगीमुरगाबी आदि पक्षी, डेढ़ लाख टन मछली–बीसकरोड़ बोतल मादकपान–तीस करोड़ बोतल शराब और बीस करोड़ बोतल स्पिरिट। यह सब केवल जल पान में जाताहै, प्रधान भोजन की बात अलग है। पाठक! अब तो आप हमारे कुम्भकरण के जल पान वाले भैंसों पर कुछ तर्क बितर्क न कीजिएगा?

नगर में दीपावली का व्यय लगभग चालीस करोड़ पाउंड साल का है। और शीत निवारणके लिए कोई एक करोड़ बीस लाख टन कोयला आवश्यक होताहै।

बाहन परोहनों का लेखा भी ऐसाही विलक्षण है। रेल तो सैकड़ों मील की धरती पर ऊपर नीचे, बीच, अधर, आदि जहां ठौर पाती है तहां दौड़तीहीहै उसके भिन्न आमनीबस, कैब, आदि भी रात दिन दौड़ा करती हैं। एक बस में प्रायः बीस तीस आदमी ऊपर नीचेके खंडों में बैठतेहैं। दो हजार से ऊपर आमनी बस और कई हजार अन्यान्य गाड़ियां सवारियां चला करती हैं। प्रत्येक गाड़ी की आय लगभग ढाई सौ रुपया सप्ताहिक होती है।

नगरके पुलिसकी संख्या सोलह सहस्र है। विनोदशालाओं की भी इस नगरमें खूब बहुतायतहै। लगभग साठ बड़े बड़े नाटक भवन और चारसौ से ऊपर संगीतशालायें एवं बहुतसी समस्वर गायन मंडलियां हैं।

इसी मानव नन्दनबन में जब पहिले पहिल मैं गया तो आत्म बिस्मृत सा होगया था। भगवान की अद्भुत लीला को देखकर बुद्धि ठिकाने नहीं रही। भगवन, सत्य है! रच्यो तृस रेणुन से जगत कौतुक अदभुत महा। कहां यह पुराकालीन बन्य बृटन

जाति और कहां आज के सुसभ्य सभ्यतादर्श ग्रेटब्रिटनबासी अंगरेज ! कहां वह भूकन्दरा निवास, और कहां आज का राजप्रासाद बास ! कहां पर्वतीय तुच्छ असभ्योंसे त्रासितहोकर सेक्सनों की सहायता मांगना, और कहां आज, न केवल अपनेही देशपर स्वतन्त्र राज्य करना बरन पृथ्वी के बड़े भागका रक्षक बन कर संसार भरको रोमांचित करना ! आदि आकाश पाताल का अन्तर देखकर आपही कहैं पाठक ! बुद्धि क्यों न चक्कर में पड़ेगी ।

मैं तो लंडनकी ज्वलन्त जीवनी और सभी बातोंमें चमत्कार स्फूर्ति, लोकाचार, सदाचार और मानसिक विचारादि की उदार नीति एवं व्यवसाय नैपुण्य, आविर्भावक शक्ति, वाग्मिता और अर्थ सिद्धि चातुर्य्य आदि देखकर मोहित सा होगया।

अंगरेज लोगों से मैंने सुनाथा कि जातियां (Nations) पतित तो अपनेही कुकर्मों से होजाया करती हैं परन्तु उद्धार अपनेआप नहीं करसकतीं। श्रष्टि के आरम्भ में चाहै ब्रटनबासी भी सभ्य हों, परन्तु पतित होजाने के बाद यदि रोमियों द्वारा शिक्षा न पाते तो उनका उद्धार होना और साम्प्रतिक उन्नति प्राप्त करना असंभव होता। इसीबात को स्मरण करके जब हम ने अपनी और लंडनकी दशाओं पर ध्यान दिया तो मनमें कुछ सन्तोष सा आगया।

परमेश्वर ने हमारी भलाई ही के लिये हमारा अंगरेजों से सम्बंध कियाहै और इनके द्वारा हमारा सम्पूर्ण रूपसे कल्याण होसकता है। अंगरेज जो इतने ऊंचे दरजे की उन्नति प्राप्त हैं तो निःसन्देह हमको भी उन्नत करना अवश्य चाहैंगे, यदि हम उन्नति के पात्र बनजाएं।

पाठक ! सत्यमानिये, अंगरेज जाति हमारी उन्नतिकी अभिलाषी है नहीं तो क्यों हमको वह अपना जाज्वल्य चमत्कार दिखलाने में इतना कष्ट उठाकर हमको संसारी बिभवका लालच दिलाते ? जब तक कोई सांसारिक चमत्कारी पदार्थों को नहीं देखता, जानता, तबतक उनकीओर उसका मनभी नहीं दौड़ता परन्तु ज्ञान प्राप्त होनेपर तो फिर मनकी लगाम थामी नहीं जासकती ? जब हमने रेल नहीं देखी थी' तब हम बैल गाड़ियां ही पर्य्याप्त समझते थे । वृटनों ने जब घर नहीं देखेथे तब गड़हों कोही सीसमहल जानते थे, इत्यादि । परन्तु विद्याके प्रकाश में भगवान की समस्त देन जब आंखोंके सामने दीखपड़ती हो तब उनके उपभोग की ओर चित्त क्यों न चलैगा ? और चित्त चलायमान होने पर फिर इच्छापूर्ति में मनुष्य कितना उद्योगवान होता है सो सभी लोग जानते होंगे ।

हमतो देखते हैं कि हमारे राजाधिराज अंगरेज लोग हमको मानसिक और सामाजिक आदि गुलामी के गर्त्त से निकालने के लिये भरपूर उद्योग करते हैं । इस बेर हिन्दुस्तान भरके प्रायः सभी श्रेणी के लोगों को घरपर बुलाकर अपना प्रबल प्रताप दिखलाना और उनके हार्दिक अन्धकार को दूर करना एवं उन्नति की ओर उनका मन चलायमान कराना अंगरेजों की उदारता का प्रत्यक्ष प्रमाण है । सो भाई, सच्चे राजभक्तो ! अपने परम उदार राजा महाराजा के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और नैतिक महत्वों का अनुकरण करने में अब जानबूझकर आनाकानी मतकरो । उनके प्रबल प्रताप और महत् गुणोंको देख सुनकर अब उनके सुराज्य में कलंक न बने रहो । बरन सचमुच अंगरेजी प्रजा बनने में यत्नवान

होकर विद्या, बुद्धि, स्फूर्ति, कार्य्यकौशल, नीति आदि आदि सद्गुणों को अपने आपमें धारण करके उनके विशाल राज्यरूपी उद्यानका एक सौरभ सम्पन्न पुष्प बनौ और गलेके हार में नहीं तो मेजके स्तवक (गुलदस्ते) में तो स्थान अधिकारकरौ। भगवान तुम्हारे सहायक हों।

मैं उस दिन लंडन की अनेक दूकानें, गलियां, आदि देख कर अनेकों प्रकार की रेलों, ऊपर, नीचे, अस्सी फीट गहिरे, चलने वाली वैद्युत रेल आदि यानों द्वारा घूमता घामता फिर अपने कैम्प को वापिस आया। फिर तो कैम्प में वे काज क्षण भर भी रहना भार मालूम होने लगा। रात्रि में शयन करने के अतिरिक्त अन्य प्रायः सभी समय लंडनमें इधर उधर सैर तमाशों, सत्कार दावतों, आदि आदिमें व्यतीत होता था। मैं सच कहता हूं लंडनमें रहने मात्रसे कायर मनुष्यमें भी संजीवनी शक्ति संचारित होतीहै और वह रात दिन काम काज करनेपर भी थकावट नहीं बोधकरता। इसका कारण कुछ तो ऋतुहै, परन्तु अधिकतर मेरे समझ में सामाजिक स्वतन्त्रताही है।

अंगरेजों ने नित्यचर्य्या के सामाजिक नियम ऐसे भले और सर्बावस्थानुमोदित बनाये हैं कि जिनमें गड़बड़ किसी अवस्था में भी नहीं होती अतः मनस्फूर्ति स्वाभाविक ही होजातीहै।

——+:0:+—— १३ जनवरी सन् १९१२

लंडन तिलक तयारी।

THE CORONATION PREPARATIONS.

सोना और सुगंध की कहावत मानो इसी दिन के लिए बनी थी। आज राजधानी लंडन में वह जन श्रुति सजीव चरितार्थ

होरही है । लोगों का कथन है कि यद्यपि जुबिली और हीराजुबिली दोनों अवसरोंपर लंडन नगरकी तैयारी बहुत बढ़िया थी तथापि इस बेरकी सजावट शिल्प चातुर्य्य और विचित्रता में बहुत श्रेष्ट हुई है ।

पूर्व समय में नगर और जनपथों के अलंकृत करने की रीति अपनी अपनी रुचिके अनुसार थी, परन्तु इसबेर सम्पूर्ण नगरका अलंकार एकही प्रणाली पर कियागया है । इससे शोभा अनूप होगई है । अलंकार प्रणाली में इसबातपर पूरा पूरा ध्यान दिया गया है कि सजावट करने वालों और शोभा निरखने वालोंका समान रूपसे चितबिनोद होवै । सो आज लंडन के जनपथ ऐसे शोभायमान होरहे हैं जिसको प्राचीन बृटन ने पहिले कल्पनाके संसार में भी शायद न देखाहोगा ।

सड़कों के आरपार खूब उंचाईसे धन्वाकार पर्णावली अनेक पुष्प गुच्छोंसे अलंकृत लम्बे मणिमय मस्तूलों के आधार झूमते हुए आने जाने वालों के मस्तकों पर मानो छत्र चंवर दोलायमान करती है । ठौर ठौर पर छोटे स्तम्भों के आश्रय बक्राकार चमकीली बरछियों के फूल शोभायमान हैं । जिनके बीच में सुनहरी ढालपर राजा एडवर्ड सप्तम और रानी अलेक्जंड्रा के नामाक्षर बिराजमानहैं । जिनसे दर्शकों के चित्तपर रचना सौन्दर्य्य के महत्वके साथ साथ इसबातका भी एक अच्छा भाव उदय हो उठता है कि जातिगणों के सदर्प जागरण सेही राजाके नाम सहित राज्यकी रक्षा और बड़ाई होसकती है ।

हमारे सौभाग्य समय में जैसे सिंहबाहिनी दुर्गा, हंसबाहिनी सरस्वती और मयूरबाहिनी लक्ष्मी आदि की मूर्त्तियों द्वारा बिश्वकर्मागण साधारण जनसमूह पर प्रभाव डालते और उन्हें

शिक्षा देते थे. उसी रीतिका अनुसरण करके कदाचित इंगलिस्तान ने भी सबलोगों को बरछी के फूल इत्यादि दिखलाए हैं।

हमने अपने देशमें खड्गपाणि, दुर्गबिदारिणी, मातेश्वरी दुर्गाका दर्शन करके मनको एकही समय अनेक रसों से आप्लावित मानो त्रिबेणी मज्जन कराया है। जब व्यक्ति वा जातिकी सरल प्रकृति रूपी देवी विराट पराक्रम रूपी सिंहपर आरोहन करके दैहिक, मानसिक, दैविक आदि शत्रुओं का गर्वविदारण हेतु प्रचंडरूप दर्शन देतीथीं, तब मन में कितनेही रसों का आविर्भाव होता और निस्तेज व्यक्तिभी कर्मवान होजाताथा। इसी भांति विद्या और ज्ञान विज्ञान रूपिणी सरस्वती बुद्धि और बिबेकद्वारा क्षीर नीर बिलगकारी हंसपर सवारहोकर अपनी सौम्य, शान्त, और जनमन मोदकारी रूपका दर्शन देतीथी तब हृदय और मन ज्ञानके प्रकाशसे आलोकमय होजाता और समस्त संसार, हां शृष्टि और शृष्टा दोनोंही हस्तामलक होजाते थे। एवं विधि लक्ष्मी का वाहन सौन्दर्य्यमय मयूर बतलाने में उनकी अपूर्ब काल्पनिक शक्ति प्रत्यच्च है। यह सब देखे सुने रहने के कारण हमको लंडन नगर की रचना सम्बन्धी कल्पनाओं में भी कुछ वैसीही बातैं बोध हुईं।

सजावट सब अच्छी पुष्टिके साथ, मोमी और रेशमी बस्त्रों को काट काट कर कीगई थी। गुच्छों के बीच बीच और स्तम्भों पर ठौर ठौर वैद्युत आलोकपात्र (गिलास आदि) लगाये थे। जो दिन में रंग बिरंगी शोभा और राति में चन्द्रज्योत्स्ना की आभा देते थे। इन प्रकाश पुंजों में बहुधा देश गौरव, जातीय संगीत, बीरदर्प और राजभक्ति आदि सूचक शब्द और बाक्य बनाए हुए थे जो दिन में और रात्रिमें प्रत्येक समय सुचारु दर्शन

और सुपाठ्य थे । इसी भांति लंडन की प्रायः प्रत्येक गली प्रत्येक द्वार, दीवार हाट बाट, होटल आदि शृंगार सजावटमें अपने आप ही आदर्श थे । प्रत्येक बात में समस्त अंगरेज जाति का मनोल्लास प्रगट था । और राज्यमद एवं धनमद की सुगन्ध (दुर्गन्ध कदापि नहीं क्योंकि यह सब उनकी ताजी टटकी वस्तुएं हैं) सब ओर खूब फैल रही थी । जिसको देख कर और आघ्राण करके मुझसरीखे दरिद्र, निवृत्त (Abstainer) व्यक्ति की बुद्धि कहां ठिकाने रह सकती थी ? सो अधिक निरखना परखना भी दुःसाध्यसा होगया, बर्णन करने की बात ही क्या कहूं ?

---+:o:+---

टेम्पल बार स्मारक TEMPLE BAR MEMORIAL.

इस स्मारक चिन्हकी प्रतिष्ठा नगरके प्रधान बिश्वकर्मा (City Architect) सर हरेस जोन्स (Sir Horace Jones) ने नवम्बर सन १८८० ई० में की थी इसकी उंचाई लगभग बत्तीस फीट, चौड़ाई पांच फीट और लम्बाई करीब आठ फीटहै । यहांपर प्राचीन समय में कतिपय राजबिद्रोहियों के शिरच्छेद हुए थे, उन्हीं की यादगार में यह स्मारकचिन्ह स्थापित हुआ था ।

इसके उत्तर और दक्षिण निकेतनों में रानी बिक्टोरिया और राजा एडवर्ड सप्तम की प्रस्तरमयी मूर्तियां स्थापित हैं, और स्तम्भ के चारों ओर निम्नलिखित चार दृश्य प्रदर्शितहैं :-

(१) सन १८३७ ई० में रानी बिक्टोरिया का प्रथमतः टेम्पल बार मार्ग से नगर प्रवेश ।

(२) सन १८७२ ई० में युवराज कुंवर वेल्स के स्वास्थ्य लाभपर सन्तपाल गिरजे का जलूस ।

(३) प्राचीन टेम्पल बार का दृश्य ।

(४) नवीन टेम्पल बार ।

इस यादगार की लागत पैंसठ हजार रुपये बतलाते हैं । यह टेम्पल बार आज राजतिलक के उपलक्षमें अपनी सुघर सजावट से सकल जनमन रंजन कर रहा है । सड़कोंके मध्य भागमें होने से इस परसे जो धन्वाकार पुष्पमालाएं लटकाई गई हैं वह दोहरी महराबों कीसी शोभा देती हैं इनके बीच चमकीले सुनहरे अक्षरों में God save the King—God bless the Queen आशीर्बचन बाहु प्रसारन पूर्बक कल्याणबाद कर रहे हैं ।

यद्यपि अनेकों भांति के पुष्प पत्र आदि काटछांट कर सब ओर से लगाए गए हैं तथापि इस बात का भली भांति ध्यान रक्खा गयाहै कि स्मारक का कोई अंग वा कोई दृश्य सजावट के कारण छिप न जाने पावै । सो शोभा निःसंदेह अनूप हुई है ।

——— +:o:+ ———

लडगेट सरकस LUDGATE CIRCUS.

यह स्थान एक प्राचीन यादगार है । और बस्ती जोकि लडगेट हिल से टेम्स तक बिस्तृत है जिसको ब्लैक फ्रायर (Black friars) कहते हैं, सन १२७६ ई० में प्रतिष्ठित हुई थी यहां पर एक रंगशाला भी बनाई गई थी जिसके अधिकारियों में प्रसिद्ध कबि शेक्सपियर भी थे जिनके कई नाटकोंके अभिनय इसमें हुए थे ।

यद्यपि यह स्थान वर्तमान समय में बहुत ही सुन्दर और चित्ताकर्षकहै तथापि बारहवीं शताब्दी की प्राचीनता इसमें अब कुछ भी नहीं हैं क्योंकि सोलहवीं शताब्दी की प्रसिद्ध अग्निदाह ने इसकी भी बिलकुलही कायापलट कर दी थी । राजतिलक के उपलक्षमें इस सरकस की सजावट भी एक अनुपम छटा दिखा

रही है । अन्यान्य राजमार्गों की भांति यहां पर भी बन्दनवारों के लिए ऊंचे ऊंचे सुन्दर स्तम्भ खड़े किए हैं । इनके अतिरिक्त चारो कोनों पर आठ बहुत ऊंचे स्तम्भ खड़े करके उनपर बहुतही मनोहर महरावैं लटकाई हैं, महराबों के चार मध्यस्थलहैं जिनपर अंगरेजी राज किरीट के चार बड़े रत्न, कनाडा, आस्टरेलिया, अफरीका और इन्डियाकी मणिमय पताकायें लहराती हुई राजा धिराज के महाप्रताप को बायु में उड्डीयमान कर रही हैं । ग्रेट बृटिन के तीनों संयुक्त राज्यों एवं लंडननगर के बाहु चतुष्टय स्तम्भों के साथ भली प्रकार दिखाये गए हैं । मध्य भाग में दस फीट ऊंची वेदिका पर एक बहुत बड़ी सुनहरी सिंह मूर्ति बैठाली गई है जो जातीय बीरता की घोषणा कर रही है । ऊपर बर्णन की हुई महराबैं और पताकायें ऐसी योग्यता से लटकाई गई हैं कि सभों का निकास मध्यस्थित राजमुकुट से प्रत्यक्ष जान पड़ता है ।

ब्लैक फ्रायर पुलकी शोभा भी दर्शनीय है । दोनों पार्श्व में ऊंचे ऊंचे स्तंभ खड़े करके उनपर गैस दीपावली की रंग बिरंगी हांडियां झालरों की भांति लटकाई गई हैं, जोकि दिनके उजाले में अनेक प्रकारके मणि रत्नादिकों की आभा देते और रात्रिमें मनोहर प्रकाश करते हैं ।

—— +:o:+ ——

गिल्डहाल GUILD HALL.

इस जनसाधारण महलकी शोभा भी समयके अनुकूलही है । इसके ऐतिहासिक राजद्वार पर रत्नप्रभामय प्रदीपों का सुबृहत राज मुकुट स्थापित कियागया है जिसके दोनों ओर राजा धिराज एडवर्ड के नामाक्षर, ई० आर० (E. R.) मणिमय दीपा वली की पंक्तिमें सुशोभित हैं ।

यह महल आदि में खृष्टीय सम्वत १४११ में निर्मित हुआ था। परन्तु सोलहवीं शताब्दी के दाह ने इसकोभी भस्मकरडाला था। सो बर्तमान इमारत सन १८६५—६८ ई० की निर्माणकी हुई है। इसका हाल (सहन) १५३ फीट लम्बा, ५० फीट चौड़ा और ५५ फीट ऊंचा है। इसमें लार्ड नेलसन और ड्यूक वेलिंगटन इत्यादि अनेकों बीरपुरुषों की मूर्तियां बिराजमान हैं। गिल्डहाल पुस्तकालय में जोकि सन १८७१—७२ ई० में प्रतिष्ठित हुआथा सत्तर हजार पुस्तकोंका संग्रह है। इसके अतिरिक्त बहुतेरे प्राचीन लेखपत्र और सिक्के आदि भी संग्रहीत हैं और साथही एक संगीत विद्यालयभी है।

—— +:0:+ ——

मैनशन हाउस MANSION HOUSE.

नगर के प्रधान (लार्ड मेयर) की कचहरी का अलंकार भी बहुतही प्रभावशाली हुआ है। राजद्वार के शीर्षस्थानपर एक सुबृहत राजमुकुट अनेक रंगों के कांचका बना जगमगाता हुआ दिशाओं को आलोकमय कररहा है। इसपर एक ऊंची रायल स्टैन्डर्ड पताका लहराती हुई मानो किरीटपर चंवरढुलारही है। एवं बिधि प्रासाद के चहुंओर अनेकों जातीय ध्वजायें (National Banners) उड़तीहुई जागृत जातिके महत्व की घोषणा कर रही हैं, जिनको देखकर दर्शकका मनभी अवश्यही लहरा उठता है। पताकाओं के बीच में राजा रानी की सलामती (God bless our King and Queen) के वाक्य नियोजित करके जातीयताके साथ साथ राजभक्ति को भी बहुतही सार्थ रीतिसे प्रगट किया है।

स्मारक स्तम्भ MONUMENT.

मसीही सम्बत १६६६ में लंडन नगर में जो महादाह हुआ था और जिसमें प्राय: वीसकोटि रुपयों की पूर्णाहुति हुई थी उसी के स्मरणार्थ यह दोसौफीट ऊंचा स्तम्भ निर्मित हुआथा। इसकी आज की मनस्वी सजावट बतलारही है कि प्राकृतिक उपद्रव कितनेही क्यों न हों पराक्रमके आगे सबको सिर झुकानाही पड़ता है। कहते हैं कि यह आग एक बबरची (रोटी बेंचने वाले) की दूकान से लगी थी और इतनी बढ़ी कि प्राय: सम्पूर्ण नगरका सर्वनाश कर दिया था। स्मारक उपरोक्त दूकान के ठौर परही बनाया गया है।

—+:0:+—

इंगलिस्तान का बैंक BANK OF ENGLAND.

इसकी शोभा सजावट निरखकर सचमुच नेत्र चौंधिया जाते हैं। यह कुबेरालय (धनागार) संसार भरमें सबसे अधिक बिश्वास पात्र माना जाता है। धन में भी सर्वश्रेष्ठ है। यहां पर प्रत्येक समय दश कोटि पाउन्ड, स्वर्ण मुद्रा प्रस्तुत रहने का नियम है। इसके अतिरिक्त पचास सहस्र नोटों का यातायात नित्य हुआ करता है, जोकि प्रत्येक पांच पाउन्ड से लेकर एक सहस्र पाउंड तक के हैं अर्थात् लगभग पचीस करोड़ पाउन्ड। रक्षित धनका हम क्या पारावार बतावैं ?

इसी लक्ष्मी बिलास भवन की आभ्यन्तरिक श्री आज राज तिलक के उपलक्षमें मानो इलेक्ट्रिक लालटैनके शीशों को भेदकर चारों ओर अपनी बिज्जुछटा फैला रही है।

सन्मुखीन भागमें शीशे काट कर ऐसी सुन्दर महराबें बनाई

हैं। मानो आकाश पर एकही कतार में सैकड़ों इन्द्रधनुष उदय हुए हों। दिन में रंग बिरंगे शीशों की चमक और रात्रि में मणि मय वैद्युत प्रकाश, एवं ठौर ठौर पर कांच के बने हुए बड़े बड़े पुष्प गुच्छ अपूर्व शोभा दे रहे हैं। सब के बीच में शीर्षस्थानपर God save the King रच्छहु ईश नरेशहिं का आशीर्वचन स्वेत चमकील प्रकाशके बीचमें शोभायमानहै। इसके अतिरिक्त सारी इमारत के सब ओर सब ठौर इतने अधिक झाड़ फानूस और दीपावली सजाई गई है कि जिसकी इयत्ता करना कठिन है। प्रकाश की अधिकता का अनुमान इसी से किया जा सकताहै कि इस भंडार की दीपावली आलोकित करने के लिए प्रत्येक घंटे साठ हजार फीट गैसकी आवश्यकता हुई है।

चौड़ी गली स्टेशन।

BROAD STREET STATION.

सामान्यतः लंडन के प्रायः सभी रेलवे स्टेशन सजावट में एक से एक निरालेहैं परन्तु यह बृहत गली का रेलवे स्टेशन अपनी सज धज की एक अपूर्व छटा दिखला रहा है। इसके कर्तारों ने कदाचित सुना होगा कि भूत वही जो सिर चढ़ बोलै। बस तुरन्त उन्हों ने अपने लिए भी यह ठान लिया कि रेल वही जो सिर पर डोलै। सो इस स्टेशन के प्रधान द्वारके ऊंचे कंगूरेपर रंग बिरंगे कांच के हांड़ी गिलासों का एक बिशाल रेलवे एंजिन बनाकर लटका दिया जो दिन में अनेक प्रकार के मणि रत्नादिकों की आभा देता और रात्रि में बिचित्र प्रकाश से दिशाओं को आलोकित करते हुए रेल कर्मचारियों के दक्षता की घोषणा करता है।

घटिका यन्त्रस्तूप की शोभा भी उसके प्रत्येक अवयव के वैद्युत प्रकाश से आलोकित होने के कारण अनूप है। दीपावली की प्रत्येक महराबमें राज नामाच्चर उपयुक्त स्थानोंपर लगे हुएहैं।

इसी भांति लंडनके सम्पूर्ण महल, द्वार, दीवार, कार्य्यालय आदि तिलक तय्यारी में अपनी अपनी शोभा सुघरई संसार को दिखला रहे हैं, हम कहां तक बर्णन करैं ! लंडन नगर के श्रंगार को लेकर बड़े बड़े बाग्जाल फैलाए जा सकते हैं, शब्द शब्द पर रूपक और अलंकार बताए जा सकते हैं। परन्तु इन बातों में हमारे चंचल मन को शांति नहीं मिलती है !

हमारे हिन्दू (आर्य्य) धर्म ने हमैं स्वार्थीपन में बड़ा पाप बताया है। हमारा एक प्रधान मन्तब्य यह है कि हम को अपनीही उन्नाति में सन्तुष्ट न होना चाहिए बरन सब की उन्नातिमें अपनी उन्नति समझना चाहिए इसीसे हम जैसे जैसे लंडन नगरकी अधिक अधिक शोभा, अपने राजाके निज देशकी शोभा, देखते तैसे तैसे अभि लाषा और उन्नति की आशा बढ़ती थी कि उनके आश्रित बाहिरी देशों की भी ऐसेही उन्नाति होती ! और यह भी इच्छा उठती थी कि किसी भांति हिन्दुस्तानके सभी लोगों को एकबार लंडन नगर के दर्शन करा पाते, फिर पूछते कि कहौ अब चेरी छांड़ि न होउब रानी का मन्त्र कब तक जपा करोगे !

पैरिस प्रदर्शनी PARIS IN LONDON.

हम लोगों के आदर सत्कार में प्रदर्शनी, थियेटर, पनोरमा और अन्यान्य तमाशों आदि का दिखलाना भी शामिल था। सो लंडन के सैकड़ों प्रमोद भवनों में से हमने भी कितनो हीं के देखने का आनन्द लूटा।

परमेश्वर ने अंगरेज जाति को जैसा उन्नति शिर किया है वैसीही यह जाति सुरुचि सम्पन्न भी है अथवा यह कहिये कि अपनी सुरुचि शलिता से इस जाति ने आदर्श उन्नति प्राप्त की है। सो आमोद प्रमोद की बातों में भी इस जाति की सुरुचि सब प्रकार से लक्षित होती है। प्रदर्शिनियां यहां अनेकों प्रकार की होती हैं। पुष्प प्रदर्शिनी, चित्र प्रदर्शिनी, कृषि प्रदर्शिनी, पशु प्रदर्शिनी, सौन्दर्य्य प्रदर्शिनी, सैनिक, नैतिक, दैशिक, अनगिनतियों नुमायशें प्रत्येक ऋतु में हुआ करती हैं।

साल में एकबार प्रावृट ऋतु में अर्ल्स कोर्ट नामक महल्ले में एक प्रदर्शिनी होती है, जिसका नाम लंडन में पैरिस का दृश्य है। यह सुदीर्घ भवन पैरिस के प्रकार पर निर्मित होकर लंडन बासियों को घर बैठे पैरिस की सैर कराता है। केवल सैर ही नहीं वहां के अनुकरणीय विषयों की शिक्षा एवं निराकरणीय बिषयों का विचार दर्शकों के हृदय पर अंकित कर देता है। इस पैरिस दर्शक रमणे में प्रत्येक प्रकार की रुचि के मनुष्य की भरपूर मनस्तुष्टि होतीहै। इसमें जलबिहार (Water chutes) पर्बतबिहार, बन बिहार, एवं झूला, रहंट और अनेकों प्रकार की दूकानें हैं। इसी तरह आखेटप्रिय लोगों के लिए सुन्दर शिकारगाह, कृत्रिम बन पशु इतस्तत: दौड़ते हुए और कई प्रकार के चलते छिपते आदि निशाने बने तय्यार रहतेहैं। नए नए आविर्भावों की दूकानें कारीगरी की नुमायशें, देश देशान्तरों के नमूनों पर अंगरेजी निर्माण की बस्तुएं और कला कौशलादि के नए नए यन्त्र इस प्रदर्शिनी में उपस्थित होते हैं जिनके विक्रय, प्रचार, और दिखाव से देश में नित नूतन कार्य्य क्षमता, उत्साह और ब्यापार की बृद्धि होती है। मन बहलाव की प्राय: सभी बातों में कुछ न

कुछ शारीरिक परिश्रम भी अवश्य होता है।

जल बिहार (Water chute) गंगोत्तरीसे जिसभांति ऊपर से जल प्रबाह नीचे की ओर छूटताहै उसी तरह एक ऊंचे स्थान पर से जल का प्रबाह छोड़ते हैं, उसी प्रबाह के साथ दस पांच स्त्री पुरुषों को बिठलाकर एक नौका भी नीचे को उतारी जाती है। इसी को वाटर शूट कहते हैं। यह नौका छूटतेही द्रुतगति से नीचे को ऐसी चलतीहै जैसे बलवान हाथों से छोड़ा हुआ कमान का तीर। सम जल पर आतेही बड़े बेग से तीन चार धक्के आरोहियों को देकर नौका साधारण चालपर आजाती है। और नाविक धीरे धीरे हिलाता और डोलाता हुआ किनारे ला उतारता है यह खेल भी बड़ा मनोहर और साथही धक्कम धुक्की मे शारीरिक स्वास्थयदायक भीहै। स्त्री पुरुष सभी यह नेवारा खेलतेहैं। हम लोगों ने भी कतिपय ललनागणों के अनुरोध से इस जल बिहार का सुख अनुभव किया था।

आखेट स्थान— कृतृम झाड़ झंखाड़, रेत पत्थर और बन्य पुष्पादिकों से ऐसा उत्तम बनायाथा जो असली–नकली के भेद से प्रायः शून्य जानपड़ता था। बनैले पशु इधर उधर दौड़ाते और उन्हींपर निशाना लगवाते थे। बन्दूकें भी तय्यार धरी रहती थीं। हमारे लोगोंने भी बहुतसे निशाने मारे और वाह वाहैं लूटीं।

फ्रेंच फौज— एक स्थानपर मोमकी मूर्त्तियों में फ्रांसीसी सेना ऐसी बनाई थी कि घोड़ा, आदमी, तोप, बन्दूक इत्यादि सभी सजीव और असली जानपड़ते थे। अंगरेज लोग फ्रेंच फौजको तनिक हीन दृष्टिसे देखते हैं। हमारे समझ में भी वेलोग अंगरेजी सेनाकी भांति चुस्त चालाक नहीं हैं। सो इस प्रदर्शिनी

में भी मोमी सिपाही वैसेही झुकते ऊंघते दिखाए गएहैं, सवार घोड़ेकी पीठ परही जमुहाई लेरहा है और पियादा अपनी बन्दूक परही आड़लेकर ऊंघ रहाहै। किसी की पीठ झुकी है, किसीका पेट बेडौल है। इसी तरहकी फ्रेंच फौज दर्शकों को अपना तमाशा दिखा रही है।

इस पैरिस प्रदर्शिनी के निर्माता अंगरेज हैं और इन फ्रेंच सैनिक मूर्तियों के शिल्पी भी अंगरेजही हैं। सो इस सैनिक रचना को देखकर हमको यह विश्वास होगया कि कोई जाति चाहे कितनी ही उदार क्यों न हो दूसरों के दोष देखने दिखाने में वह बिबेक का अतिक्रम करही जाती है। परन्तु आर्य्यदृष्टि से यह काम सभ्यताका नहीं कहाजासकता। हमारी प्राचीन आर्य्य सभ्यता इस प्रकारके कामों को नीचवासना के नाम से पुकारती है।

झूला—यहांपर एक बड़ाभारी झूला कोई तीनसौ फीट ऊंचा बना हुआ है, उसमें सैकड़ों हिंडोले रेलगाड़ियों की भांति के टंगे हैं। यहझूला वैद्युत शक्तिद्वारा संचालित है। प्रदर्शिनी भवन में इस झूले के निकट खड़ेहोकर देखने से यह बहुत बड़ी वस्तु मालूम पड़ती है और भवनभी बिशाल जानपड़ता है. परन्तु इस हिंडोले पर आरोहण करके हिलते डोलते ऊपर चढ़जाने से एक बिराट चमत्कार दिखाई पड़ता है।

लंडन का सुबिशाल नगर—अनगिनतियों रेलें इधर उधर दौड़ती हुई, कोई महल अट्टालिकाओं परसे दौड़ी चलीजारही हैं, कोई भूमिफोड़कर पाताल में घुसी चलीजाती हैं. कोई तनिक तनिकसा धुआं उड़ाती हुई चुरट पीनेकासा आनन्द लेती जाती हैं। कोई अपनी बिद्युत शक्तिके आगे इन्द्रदेव को भी लजाना

चाहती हैं । सड़कोंपर चलतेहुए मनुष्य, घोड़ागाड़ी आदि मक्खी मच्छड़ से दीख पड़तेहैं । चारोंओर जिधर दृष्टि दौड़ाइए सिवाय बड़े बड़े महल, कारखाने और पुतलीघरोंकी चिमनियों के और कुछ दिखाईही नहींपड़ता । हां—बाबाटेम्स और उनके किनारों की रमणीयता भी दृष्टिको अपनीओर आकर्षित करती है । क्याही चमत्कार कल्पना ! हम अपनी नदी गंगाको माता कहतेहैं । अंगरेजोंने टेम्सको अपना बापही बनाडाला ! क्याखूब ! ऊपरसे देखने में प्रदर्शिनी का स्थान बिलकुलही छोटा सा घेरा घास फूस की कुटीर मात्र जानपड़ने लगता है ।

इसीभांति प्रिय पाठक ! जबतक हमलोग विद्याके सोपानपर चढ़कर संसारके अद्भुत चमतकारों को नहीं देखपाते तबतक हमें अपनी दीन अवस्थाका ध्यानभी नहीं आता । अपनी बर्तमान तुच्छ अवस्था कोही सर्वोपरि माने बैठे रहते हैं । परन्तु जब विद्यारूपी झूलेपर चढ़कर संसारकी अन्यान्य उन्नतजातियों एवं देशोंको देखपाते हैं, तब अपनी दशा दुर्दशाका यथार्थ बोध अनायासही होजाता है ।

भगवानकी कृपासे ही आज अंगरेज लोगों से हमारा पाला पड़ा है, यह आजदिन उन्नतिके आदर्शस्वरूप बन रहे हैं, सो हमको इनके उन्नायक गुणों की ओर सब प्रकार से ध्यान देना योग्य है ।

स्फटिक प्रासाद CRYSTAL PALACE.

प्रधान लंडन नगरसे कुछदूर बाहर कोई छःसौ बीघेकी ऊंची भूमिपर यह शीशमहल सन १८५३–५४ ई० में सवादोकरोड़ रुपयों की लागतसे निर्मित हुआ था । इंगलिस्तान की ऋतु कैसी

परिवर्तन शीला और कठोर है सो पाठकों को ज्ञातही होगयाहै। परन्तु यह महल ऐसी सुन्दर रीतिसे निर्माण कियागया है कि दर्शकों को सभी ऋतुओं के आमोद, प्रमोद, खेल कूद और नाच रंगकी समान सुबिधा देताहै। हर शनिबार और बृहस्पतिबार को इस महल में एक तरह मेलासा लगता है।

एक शनिबार को हिन्दुस्तानी महिमानों की सुश्रूषा के लिए इस काच प्रासादमें बिशेष आयोजन किया गया था। हेम्पटन कोर्ट से स्पेशल ट्रेनों द्वारा हम लोग गए थे। रेल ऊंचे मार्ग (High level) से जाती है, सो दोनों ओर के बाग बगीचे, खेती बाड़ी और ग्राम्य भवन (Country houses) आदि का दृश्य भी बड़ा ही मनोहर बोध हुआ। साधारण ट्रेनें लंडन नगर से शीशमहल को प्रायः प्रत्येक पन्द्रह मिनट में जाती आती रहती हैं। महल के हाते में सत्तर अस्सी हजार आदमियों के घूमने फिरने, सैर तमाशा देखने और खान पान करने का सुन्दर सुभीताहै। नाट्यशाला, बाद्यशाला, भोजनालय, पाठालय, आदि कई बिशाल भवन हैं, जिन प्रत्येक में चार हजार आदमियों के सुखपूर्बक बैठने का स्थान और प्रबंध है।

घुड़दौड़ के मैदानमें सुन्दर सजीले घोड़े और सवार अपनी अपनी होड़ जीतने की धुन में लगातार दौड़ रहे हैं। लान टेनिस के खेल जुदेही जारी हैं। एक ओर बायसिकलों की बाजियां हो रही हैं। फुटबाल और क्रिकेट न्यारेही रंग जमा रहे हैं। पुष्करिणी पर छोटी छोटी रंग बिरंगी नौकाओं पर आरूढ़ होकर दम्पति एवं मित्रगण आनन्द से जलक्रीड़ा कर रहे हैं। दूसरी ओर गार्डन पार्टी, ईवनिंग पार्टी आदि की निमंत्रित मित्र मंडलियां परस्पर भोजन पान का सत्कार कर रहीहैं। ठौर

ठौर पर बैंड बाजे यथा समय, अवसर और रुचि के संगीत वाद्य कररहेहैं एक ठौर बहुरूपियाका स्वांगभी बड़ीही चतुराई का होरहा है। चित्रशाला में प्राचीन और नवीन अनेकों प्रकार के चित्र, बड़े नामी कारीगरों की कारीगरी के नमूने, उद्योगी मनुष्यों के महत्कीर्ति का प्रत्यक्ष बखान कर रहे हैं।

मध्यभाग में फौआरों के चहबचे और यन्त्रभी बनेहैं। परन्तु इन दिनों उनमें जल नहीं था? एक पुष्करिणी में बहुत प्रकारके मच्छादि जीव जन्तु क्रीड़ा कर रहे हैं।

जाड़े की ऋतु में बर्फ पर स्केटिंग खेल का एक सुविस्तर चिकना और समतल मैदान है।

एक गैलरी में मसीहसे तीन सौ वर्ष पहिले की कुछ पुरानी मूर्तियां और तत्कालीन जातियों के व्यवहृत अनेक पदार्थ एवं खृष्टीय छठी शताब्दीसे तेरहवीं शताब्दी तक की अनेकों वस्तुएं रक्षित हैं जिन्हें देख कर शिल्प सम्बन्धीय बहुत सी बातें ज्ञात होती हैं।

पैरिस का अवरोध, चित्रपट।

PANORAMA SIEGE OF PARIS.

एक छोटा सा गोलाकार गुम्बद है, उसके भीतर जाकर, ऊपर चढ़ कर, चौफेर घूम घाम कर देखिये। भीषण युद्ध क्षेत्र, तोप बन्दूक आदिकी धुआंधार फायर,प्रलयकारी धावा धपेड़ मानो कुरुक्षेत्र का सर्वनाशी दृश्य सन्मुख आन उपस्थित होताहै। यह फ्रान्सकी राजधानी पैरिस नगरका तारीख१९जनवरी १८७१ ई० के दिन का साक्षात् दृश्य है। जरमन सैन्य का नगर घेरना

चार महीनेसे जारीहै, और चौदह दिनकी निरन्तर गोलावृष्टि ने नगर को प्रायः ध्वंससा कर डालाहै। कठिन मारको सहते हुए पेरिसबासियों ने इन चार महीनों में प्रायः सब अन्न खा डाला। अब खान पान सामग्री का अकाल सा पड़ने वाला है !! इन्धन कोयला की कमी से शीत ऋतु अलगही सताने लगी है !!! ऐसे अवसर में सर्ब सम्मति से प्राणाय स्वाहा की मन्त्रणा हुई और सम्पूर्ण फ्रेंच सेनाने तीन भागों में बिभक्त होकर अवरोध भग्न करने की चेष्टा से धावा किया। वही भीषण दृश्य इस चित्र पट पर दिखलाया गया है।

यद्यापि फ्रेंच सेना की संख्या सुदृढ़ थी अर्थात् दक्षिणभाग अट्ठाईस सहस्र सैन्यका और बामभाग साढ़ेबाईस सहस्र का था एवं मध्यभाग चौंतीस हजारकाथा, तथापि सैनिक चालों में कुछ ऐसी गड़बड़ी होगई कि धावा ब्यर्थ होगया! जरमन सेना यह देख कर अपनी ओर से नगर पर धावा करती है और फ्रेंच सेना से जोकि अपने मोरचों में डटी हुई है कठिन संग्राम होता है। इस युद्ध में तीन हजार फरांसीसी खेत रहे। यही सब कांड चित्र पट (Panorama) में बिलकुल सजीव दिखलाया गया है। तोपों की बाढ़ें कठिन ज्वाला उगल रही हैं, धूआं से आकाश छा गया है। बड़े बड़े महल, कंगूरे भग्न हो रहे हैं, आग लग रही है, सैकड़ों शव इधर उधर गिर रहे हैं, घोड़े आदि पशु भी चिघाड़ चिघाड़ कर भूपतित हो रहे हैं, बहुतेरी तोपें घोड़ों के मरजाने से आगे नहीं बढ़ सकतीं, परन्तु साहसी सैनिक लोग प्राण होम कर उनको आगे खींच लेजाने का उद्योग कररहे हैं— खींचते धकेलतेही में कइयों को गोलियों का शिकार होना पड़ा है परन्तु बचे बचाए लोग साहस नहीं छोड़ते।

सुदक्ष चतुर चित्रकार ने यह सब बातें ऐसी निपुणता के साथ दिखलाईहैं कि दर्शकको समरक्षेत्रके असली नकली समझने में कठिनता पड़ती है ।

ऐसे ऐसे चित्र, चरित्रों को देख कर कायर कपूतके हृदय में भी एक बेर बीरता की तरंग उठ खड़ी होगी।

पनोरमा से निकल कर पशुशाला देखिए, अनेकों पशुपक्षी देश बिदेश के, रंग बिरंगे, आपको मिलेंगे । भगवान की रचना को अपने आगे धर कर बुद्धि की घुड़दौड़में चाहे जितनी लम्बी दौड़ लगाइए मैदान आप को साफ सुथरा मिलैगा ।

दो महले पर बड़ी सुन्दरतासे सजीहुई सैकड़ों दूकानैं अनेक प्रकार की बस्तुओं, आविर्भावों और भेंट योग्य पदार्थों की खुली हुई हैं । मनोहर बस्त्राभरणों से अलंकृता युवातियां अपनी दूकानों के पदार्थों को बड़े भाव भक्ति से दर्शकों को दिखला रहीहैं । कोई कितनाही रूखा क्यों नहो शीशमहल की रमणीय आकर्षणीय दूकान से उसे कुछ न कुछ तो अवश्य क्रय करनाही होगा । कमलमुखी, सुहासिनीकी दूकानसे उसका एक स्मारकचिन्ह क्रय करने की सादर याचना का अनादर कौन कर सकता है ? पान भोजन के स्थानो में भी युवतियां हीं अधिक हैं । परन्तु सेवा कर्म के लिए पुरुष खिदमतगार आदि नौकर चाकर रहतेहैं ।

रात के आठ बजे से अग्नि क्रीड़ा का आरम्भ हुआ । यद्यपि यहां पर प्रत्येक शनिवार को आतशबाजी छूटतीहै परन्तु इसदिन बिशेष समारोह के साथ तय्यारी थी । अनेकों प्रकार के कौतुक मय आग्नेय दृश्य दिखलाए गए अनेकों रंग के अनार, चरखी, सरो आदि छुटाए गए । एक प्रकार के बान आकाश की ओर चलाते थे जोकि ऊपर पहुंचतेही छिटक कर तारागणों की भांति

खिल जाते और बड़ी मनोहर उजाली फैला देते थे। कई बान ऐसे चलाए गए जोकि ऊपर जातेही शुभागमन आदि के अर्थपूर्ण वाक्य बन कर कई चण तक प्रकाशित रहे थे।

अन्त में एक फुलवाड़ी वहुतही सुन्दर आलोकित कीगई जिसके प्रकाशपुंजके शीर्ष स्थानपर राजा चिरजीवीहों (God save the King)वाक्य बड़े बड़े मणि रत्नादि रूपी आग्नेय तारागणोंके मध्य में बड़ीवेर तक चमकता रहा। बैंड बाजोंमें भी यही जातीय संगीत गान किए जाने के बाद लगभग ग्यारह बजे रात को यह हमारा पर्व समाप्त हुआ।

—:o:—

महाराज का अस्वास्थ्य KING'S ILLNESS.

राज तिलक बिलम्बित।

CORONATION POSTPONED.

तारीख २४ जून को रायल अक्वेरियम नामक नाटकशाला में हम लोगों का समादर था। सो दूसरे पहर को वहीं बैठे हुए खेल तमाशे देख रहे थे। राजतिलक में अब केवल एकही दिन का बीच है। सारे नगर के बनाव श्रृंगार में प्रायः पूर्णता होगई है। सब ओर अनन्द मंगल छा रहा है। आबाल, बृद्ध, बनिता इस जातीय महोत्सव के आनन्द में फूले अंग नहीं समाते हैं। नाटक-शाला में भांति भांति की झांकियां और कर्तब दिखाए जा रहे हैं तालियों पर तालियां पड़ रहीहैं कि इतने में एकबारगी सन्नाटा सा छा गया! क्या हुआ? यह रंग में भंग कैसा? रंग मंच परसे नारद ने समाचार सुनाया! महाराज एडवर्ड का स्वास्थ्य संकटमें है। शस्त्रोपचार चिकित्सा के कारण महाराज बहुत पीड़ित हैं! सुनकर सब अवाक् होगए! असह्य दुःख हुआ! चन्द्र ज्योत्स्नामयी आनन्द

रजनी को दुःख रूपी काली घटाओं ने अंधकारमें परिवर्तित कर दिया ! सबके हृदय दुख से दहल गए ! मानो नान्दीने कहा :—

प्रिय नाचहु नाचहु ना, ठहरौ। अपने सुखकी अवधी न करौ !

अति रूपवती युवती दरसैं। बलवान सुजान जवान लसैं।
सब के मुख दीपन सों दमकैं। सबके हिय आनंद सों धमकैं।
बहु भांति बिनोद प्रमोद करैं। मधुरे सुर गाय उमंग भरैं।
चहुं ओर सुखै सुख छाय रह्यो। जनु ब्याहन घंट निनाद भयो।
पर मौन गहौ अवलोकि इतै। यह होत भयानक शब्द किते।
प्रिय नाचहु नाचहु ना, ठहरौ। अपने सुखकी अवधी न करौ।

(लार्ड बैरन पर श्रीनिवासदास)

सब हिन्दुस्तानी लोग उसीदम उठखड़े हुए और अपने कैम्प को चले आए। हम में से कतिपय जन महाराज के समाचार (Bulletin) लेनेके लिए बकिंगहाम राजभवनके फाटक पर गए

यहां (लंडन में) समाचार ऐसी जल्दी फैलता है कि आन की आनमें सब लोगोंको सबबात बिदित होजाती है। अस्वास्थय का समाचार निकले अभी कुछ पलही ब्यतीत हुएहोंगे कि सब रेलवे स्टेशनों और बाजारोंमें राजतिलक बिलम्बित होनेका समाचार छपकर चिपक गया। हमारे कैम्पमें भी उदासी छागई ! भगवान महाराजको आरोग्य करैं यही बिनती हरएक के हृदय और मुखसे निकल रही थी:—

रच्छहु ईश नरेशहि एक, यहै धुनि चारिहुं ओर समाई।

असमर्थ हिन्दुस्तानियों को भगवानका सहारा लेने के सिवाय और उपायही कौनसा है ? अतः सब हिन्दू, मुसल्मानोंने एकमत होकर परमेश्वर से महाराजकी आरोग्य कामनासे प्रार्थना करने का निश्चय किया।

राज महल हैम्पटन कोर्ट के होमपार्क उद्यान में वैदिक यज्ञ।

VEDIC HAVAN AT THE HAMPTON COURT PALACE HOME PARK.

पाठक ! कालकी विचित्र गति है ! जिस दिन, जिस शुभ घड़ी के आनेकी लालसा केवल हमहीं नहीं बरन समस्त संसार महीनोंसे बड़ी उत्कंठा से लगाए हुए था। जिसके उपलक्ष में नाना भांतिके रंग राग, साज सामान, बड़े ठाठ बाटसे किए जा रहेथे। अटल राजाज्ञा भी जिस तिथिको निर्धारित कर चुकी थी ऐसी सर्वानुमोदित, सर्वानन्दमयी घड़ी क्या टलजायगी ? ऐसा अनुमान भी कौन कर सकताथा ? राजाज्ञा अटल होतीहैं। इसमें मीन मेष नहीं, किसकी सामर्थ है कि ससागरा पृथिवी पति राजाधिराज एडवर्ड सप्तमकी आज्ञाको टालदे ? यहीं समझ करही तो लंडनके महाजनों ने लाखों रुपयेका धन फूंक कर गलियों के पार्श्वों में बड़े बड़े मंच बनाये थे, मंच क्या हरएक कुरसी अपने आपही मानो इन्द्रासन बन रहीथी। यह सब निर्माण इसी आशा पर था कि तारीख २६--२७ जूनको राजाकी सवारी निकलैगी तब जलूस देखने की परमेच्छुक प्रजासे इन बैठकों के मन माने दाम लेकर पुष्कल धनोपार्जन करैंगे। प्रजाभी राजदर्शन के लिये ऐसीही उत्सुक होरही थीं कि उसे थैलीका मुंह बांधनेकी मानो सुधिही नहीं थी। अपने राजाका मुकुट धारण किए हुए दर्शन करना अवश्यही सौभाग्यकी बात है। सो इस सौभाग्यको प्राप्त करने के लिये ब्रिटिश प्रजाभी वैसीही उत्सुक थी जैसीकि एक दिन आर्य्यसन्तान अपने राजकुंवर श्री रामचन्द्र को अवध में मुकुट धारणकिए हुए दर्शन की अभिलाषी थी।

पाठक! एक मुहूर्त के लिये उस अतीत कालको स्मरण कीजिये। कल्पनाही के संसार में सही, एकबार श्री महाराजा रामचन्द्रजी तथा महाराणी सीताजीकी समुकुट सिंहासनारूढ़ युगलमूर्ति का हृदय देश में दर्शन कीजिये। यदि इस अपवित्र दासत्व जीवन में वह आनन्द बदा नहीं है जोकि अवध और मिथिला की तत्कालीन आर्य्य प्रजाको मिलता था तो मानस व्यापारही में दो चार पल उस महान सुखका अनुभव करके जीवन के कुछ क्षणही पवित्र करनेकी चेष्टा कीजिये!

सो ऐसेही महामहोत्सव की तय्यारी में ब्रिटिश प्रजा तन मन धन से तन्मय बनी हुई तारीख २६ जून के दिन तिलक दर्शनको उसीभांति अटल जान रही थी जैसा कि प्रातःकाल सूर्य्यका उदय होना। लेकिन आशा बिफलहुई! राजाज्ञा टलगई! सब प्रबन्ध उलट गए। और सब सुख, सब आमोद प्रमोद, दुख शोक में पलट गए!!!

पाठक! ऐसेही कठिन अवसरोंमें बड़े बड़े बाचस्पति नास्तिकों को हार मानकर किसी अलक्ष्य महाशक्तिके सन्मुख शिर झुकाना पड़ता है? बड़े बड़े धुरन्धर राजा महाराजाओं के राज मुकुट उसी महाशक्ति के चरण तलमें लोटने लगजाते हैं। गर्वा हारी भगवानकी महिमा अपार है! कौन उनके सन्मुख गर्व कर सकता है? आज भगवानकी ऐसीही एक अचिन्त्य लीला को देखकर पृथिवी पतिकी आज्ञा को टाल देनेवाली ब्रह्मांडपति के आज्ञाकी घोषणा को सुनकर सभी लोगोंके शिर नत होगए।

भगवन! तुम्हारी लीला अपरम्पार है! हम क्षुद्र जीव दासत्वके फांसमें बंधकर तुम्हारी अलौकिक शक्तिको भूलजाते हैं। तभीतो संसारके तुच्छ बिभव प्राप्त कथित राजाओंके प्रभुत्व में

आकर दासजीवन बिताने लगते हैं ! और तुम्हारे पुरुषार्थ रूपी महादानका अनादर करके संसारमें मनुष्यत्व पदवी से भी पतित होजाते हैं ! परन्तु पिता तुम्हारीदया मनुष्य मात्रपर समान है। मनुष्य मात्र को तुमने अपने राज्य में समान अधिकार दिये हैं, और समय समय पर चितावनी देते रहते हो । इसी हेतुसे तो संसारके यह सब उतार चढ़ाव नित नित्यही हुआकरते हैं ? आज राज तिलक महोत्सव का बिलम्बित होजाना भी ऐसीही एक चितावनी है । और हैम्पटन कोर्ट पोपधर्ममन्दिर में वैदिक यज्ञकाहोना भी वैसीही एक घटना है ।

खृष्टीय सम्बत १५१५ में जब इस महलका निर्माण हुआ था तब कौन कह सकता था कि महागुरु वल्जी का भी कभी पतन होगा ? फिर उसीके निज भवन में उसका पतन अभिनीत होना एवं धर्म भवन से राज प्रासाद बनकर पुनः प्रजा प्रमोदक बनना आदि किसके ध्यान में आ सकता था ? फिर उसीभवन में आर्यों का वैदिक यज्ञ कैसा ? परन्तु यह सभी घटनायें संसारको प्रत्यक्ष देखने में आईं ।

जिस महाशक्तिने आर्य्यों को बृटनों के आधीन किया है उसीने आज राजभवन हैम्पटन कोर्ट में वैदिक यज्ञभी रचाया है सो हे अनन्तशक्तिमन् भगवन् ! तुम्हारी महिमा अपरम्पार, तुम्हें बारम्बार नमस्कार है ।

आज बृटिश प्रजाके साथ साथ भारतीय प्रजाभी अपने महाराज की रुग्नता के कारण परम ब्याकुल होरही है । जिन लीलामयकी लीलासे यह दुःख पड़ा है उन्हींकी कृपासे संकट मोचनभी होगा, यही जानकर हम सब हिन्दुस्तानी लोगोंने आराधना करना निश्चय किया । तदनुसार तारीख २८ जून १९०२

को दोपहरके समय सब मुसल्मानों ने एकत्रित होकर नमाज पढ़ी और सिक्खों ने इकट्ठे होकर श्रीगुरु महाराजोंकी फतह पुकारते हुए अरदास पढ़ी। एवं सबजाति और प्रान्तके हिन्दू लोगों ने मिलकर हवनयज्ञ किया।

यज्ञशाला सुन्दर रूप पुष्प पत्र लता बितानादिसे सजाई गई और विधिवत् होता आदि नियत करके पुष्कल सामग्री से प्रायः तीनघंटे तक वेदमंत्रों द्वारा बृहत हवन कियागया। हजारों अंगरेज, लेडियां और महाशयगण भीड़के भीड़ एकत्रितहोकर यज्ञकार्य्य देखरहे थे। पूर्णाहुति के पश्चात राजाधिराज की स्वास्थय कामनासे प्रार्थना कीगई। और कड़ाहप्रसाद (हलवा) जोकि प्रथमही सिद्ध करके रक्खाथा सबको बांटागया।

अंगरेज स्त्री पुरुषों ने भी बड़े आदर और प्रेम पूर्वक इस प्रसादको टोपियां उतार उतार कर ग्रहणाकिया। इस अवसर पर एक व्याख्यान अंगरेजी भाषा में भी दिया गया जिसमें उपस्थित समूह को यज्ञादि का उद्देश्य बतलाते हुए यह भी कहा गया कि जो यह हलवा बांटा गया है वह उसी चाल का द्योतक है जैसा कि अंगरेजों का स्वास्थ्यपान है अर्थात् अंगरेज लोग स्वास्थ्य के प्याले पीते हैं और हम हिन्दुस्तांनी लोग स्वास्थ्य का मिष्ठान भोजन करते हैं। अन्तर यदि कुछ कहा जाय तो इतना ही है कि पान से मस्तिष्क कुछ बिगड़ सकता है परन्तु भोजन से कदाचित कुछ बलिष्ट होसके। यह सुनकर अंगरेज लोग बड़ा सन्तोष प्रगट करते थे और कहते थे कि वास्तव में हिन्दुस्तानी लोग सभ्यता में बिलकुल समय के समान (Up to date) हैं।

कतिपय अंगरेजों ने यह भी कहा कि हिन्दुस्तान से लौटे हुए बहुधा पादरी लोग कहा करते हैं कि हिन्दुस्तानी लोग बड़े

मिथ्या विश्वासी होते हैं और भूत, प्रेत, काठ, पत्थर आदि को पूजते हैं, परन्तु वास्तव में वह सब पादरियों की कल्पना मालूम होती है और पोपडम के समय की भांति अब भी ठगना चाहते हैं। क्योंकि यहां प्रत्यक्ष देखने में आया कि हिन्दू लोग कोई भी मूर्तिपूजक आदि नहीं है बरन संसार के समान ही सुसभ्य हैं। इत्यादि ॥/

इसी भांति इंगलिस्तान के हैम्पटन कोर्ट महल का हमारा हिन्दू (आर्य्य) यज्ञ समाप्त हुआ और यहां की अनेकों घटना वली के मध्य में इतिहास बक्षस्थल पर यह घटना भी चिरकाल के लिए अंकित हुई। भगवानके दरबारमें समस्वर उचित प्रार्थना ओं की निश्चय सुनाई होती है। पूर्ण पुरुषार्थ के साथ, आशा पूर्ण शुद्ध हृदय से जाति गण एकमत होकर श्रृष्टि नियमानुकूल जो कुछ याचना करेंगे अवश्य मनवांछित फल पावेंगे। महाराज की आरोग्यता कामनासे हम सब लोगों ने एकमन होकर प्रार्थना की और उसका प्रत्यक्ष फल तत्कालपाया। उसीदिनसे महाराजा स्वास्थ्यलाभ करनेलगे और थोड़ेही दिनोंमें नीरोग होगए। प्रजा बर्ग की प्रार्थना ब्रह्मांडपतिके बड़े दरबारमें स्वीकृतहुई इस बात का मान्य श्रीमहाराज ने भी मुक्तकंठ से किया। जोकि उनकी राज तिलक के पूर्व दिन की स्पीच से बिदित है।

महाराज ने कहाः—

On the eve of my coronation, an event which I look upon as one of the most solemn and important in my life, I am anxious to express to my people at Home and in the Colonies and in India my heart felt appreciation of the deep sympathy which they have manifested towards me during the time that my life was

in such imminent danger. The postponement of the ceremony owing to my illness caused, I fear, much inconvenience and trouble to all those who intended to celebrate it; but their disappointment was borne by them with admirable patience and temper.

The prayers of my people for my recovery were heard, and I now offer up my deepest gratitude to Divine Providence for having preserved my life and given me strength to fulfil the important duties which devolved upon me as the sovereign of this Great Empire.

BUCKINGHAM PALACE,
August, 8th. EDWARD, R. AND I.

तात्पर्य्य यह है:—अभिषेक सम्बन्धी शिष्टाचार के प्रथम, जिसको कि मैं अपने जीवनकी एक पवित्र और बृहत घटना समझताहूं, मैं अपनी स्वदेशीय, उपनिवेशीय एवं हिन्दुस्तानी प्रजाके प्रति हार्दिक सम्बोध प्रगट करनेको उत्कंठित होरहाहूं। जिन्होंने मेरे आसन्न जीवन संकट के समय अपनी अगाध अनुवेदना सुव्यक्त की है। अभिषेक यज्ञके बिलम्बित हो जाने के कारण उनलोगों को बहुत असुबिधा और क्लेश उठाना पड़ा है जिन्होंने इस नेगको कीर्तिमान करनेके लिए बडे बड़े आयोजन किएथे। परन्तु उन्होंने उस नैरास्य को धीरता और शान्तिकेसाथ सहन किया! मेरी प्रजाकी प्रार्थना मेरे स्वास्थय के लिए सुनीगई और मुझको श्री विश्व नाथ की ओरसे जीवनदान एवं इस राजकीय शिष्टाचार के पूर्तिकी शक्ति मिली जिसके लिए मैं उस महाराजाधिराज संसारपतिके चरणों में अगाध कृतज्ञता प्रगट करताहूं।

बकिंगूहाम महलसे आठवीं अगस्त को। **हस्ताक्षर एडवर्ड राजाके**

पाठक ! महाराजकी उपरोक्त स्वहस्तलिपि को ध्यान पूर्वक पढ़िए । परमेश्वर की अलौकिक महिमा जिसके सन्मुख बड़े बड़े धराधारी सम्राटों के शिर नत-पदावनतहैं, स्पष्ट रूपसे परिलक्षित होतीहै । राजा एडवर्ड की प्रजावत्सलता भी प्रत्यक्ष झलकती हुई राजा प्रजाके सम्बन्धको भलीभांति दर्शा रही है । अतः हमारी ओरसे अधिक टीका टिप्पणीकी आवश्यकता नहीं है ।

—+:o:+—

रुग्नता ILLNESS.

महाराज एडवर्ड के अकस्मात अस्वास्थ्य का बृत्तान्त जानने के लिए पाठक अवश्यही अधिक इच्छुक होंगे अतएव हम अपने विलायत पहुंचने के दिन से ही उस बिषय में कुछ बतलावेंगे । तारीख १३ जूनको महाराज ने यथानियम राजकाज किया कार्य्योंकी अधिकतासे तनिक बिलम्बलोंब्यस्त रहे, पश्चात ब्यालू करके शयनको गए । ता० १४ के सवेरे श्रीमानको दाहिनी ओर तलपेट ब्याधि (Abdominal discomfort) की पीड़ा बोध हुई । परन्तु राजवैद्य सर फ्रांसिस लकिंग के उपचार से महाराज को दो पहर पीछे शान्ति जान पड़ी । सन्ध्या समय को राजा साहब अलडर शाट को पधारे और वहां महारानी सहित एक बाद्यसंगात के उत्सव में साम्मिलित हुए । उसी रात को महाराज को पुनः पीड़ा बोध हुई और बैद्यराज बुलाए गए । सर लकिंग सबेरे पौने पांच बजे पहुंच गए और औषधि देने से ब्याधि को कुछ शान्ति दे सके । १५ तारीख जूनको बिशेष शीत थी जोकि पाठक हमारी निज कैम्प ब्यवस्थामें सुन चुकेहैं, सो उसदिन राजासाहबकी पीड़ा में ऋतु का भी कुछ अयुक्त प्रभाव पड़ा । १६ तारीख को महा राजा वाजिरथारूढ़ होकर विन्डसर राजभवन को पधारे और

श्रीमान् बहुत आरोग्य और स्वस्थ प्रतीति हुए और १७ को बहुत आराम से रहे। १८ जूनको राजा साहब फिर अस्वस्थ हो गए और पेड़ू पर सूजन तथा ज्वर का ताप हो आया! राज वैद्यों के निदान से रोग (Perityphlitis) तलपेट व्याधि निश्चयहुआ। दो तीन दिनतक पथ्य, औषधि आदिके उपयोग से रोगमें कोई बृद्धि नहींहुई बरु सूजन आदि के मिटने से जल्दी आरोग्यहोने की पूरीआशा होनेलगी। इन कतिपय दिनों में महाराज इतने आराम होगए कि विंडसरसे लंडनको पधारसकें। अत: सोमवार २३ जूनको श्रीमान राजमहल बार्किंगहाम पैलेसको पधारआए।

ता० २४ जूनको पांच मुख्य राजवैद्यों ने मिलकर रोग एवं उसकी पूर्ण शान्ति के विषय में बिचार करके निश्चय किया कि शस्त्र चिकित्सा के बिना पूर्ण आरोग्य होना कठिन है और इसमें बिलम्ब करना प्राणसंकटकी बात है! वैद्योंने अपने मतको महाराजसे निवेदन किया और कहा कि श्रीमानकी जीवन रक्षाके लिए यह अति आवश्यक है कि शस्त्रचिकित्सा कीजाय और तिलकोत्सव बिलम्बित करदिया जावै। महाराज ने इस सम्मतिको स्वीकार करतेहुए भी बड़े दुःखकेसाथ कहा कि यह अनावसर बज्रपात सर्बसाधारण के जातीय उत्सवों में बिघ्न कारक और असुबिधाओं के कारण मुझको असह्य हुआ है। क्या प्रजासमूह इसके लिए मुझको क्षमा करैगी?

पाठक! महाराजकी महानुभावता पर टुकध्यान दीजिये! अपनी पीड़ाओंकी ओर तनिक भी ध्यान न देकर प्रजाकी असुबिधाओं की कितनी चिन्ता रक्खी? धन्य महाराज!! आपके प्रजा बात्सल्य को धन्य है!!! तभी तो इंगलिस्तान की प्रजा अपने राजा और देश के लिए तन मन धन से वारी रहती है। चाहै

महाराज के यह प्रेमपूरित बचन अपनी निज घरकी प्रजा (People at home) के ही लिए क्यों न हों परन्तु श्रीमान् की एक साम्राज्य भुक्त प्रजा होनके कारण हमारा हृदय भी इनबचनों को सुनकर गद्गद होगया था। और एकबार अपने श्री महाराजाधिराज रामचन्द्र जीके समय का स्मरण करके अश्रुजलकी बेगवान् धारा को किसी भांति रोक नहीं सका था! पाठक! जिन महाराज दशरथ ने प्रजाप्रतिनिधि स्वरूप ऋषिगणों के मख रक्षार्थ अपने सुकोमल राजकुमारों तक को भेंट कर दिया था तथा जिन महाराजाधिराज रामचन्द्रजीने प्रजापवाद शमनके लिए ही निज प्राणबल्लभा राजमहिषी सीता जी को भी त्याग दिया था ऐसे ऐसे महामहिम प्रजावत्सल महाराजों का प्रेम क्या कभी भूल सकोगे? पाषाण हृदय भी उनकी महान् प्रजाप्रियताकी कहानी को सुनकर आर्द्र होजायगा! परन्तु! वह दिन, वहबातैं आज केवल कहानी सी जान पड़ती हैं। आज यदि हम यह कहते हैं कि—

दैहिक, दैविक, भौतिक तापा। राम राज्य काहू नहिं ब्यापा॥

तो बहुधा लोग बिश्वास नहीं करते। बिश्वास कैसे करैं, गुलामी के गर्त्त में पड़े हुए जिस जाति की पीढ़ियां ब्यतीत होचुकी हों उसको जातीय मान, जातीय प्रेम और जातीय गौरव की बातौं एवं राजसुख की कहानियों पर क्योंकर बिश्वास जम सकताहै? पर महाराजाधिराज एडवर्ड सप्तम के उपरोक्त वचनों को सुनकर हमैं तो अपने महाराज दशरथ और रामचन्द्र की प्रजापालनका मानो सजीव दृष्टान्त मिल गया। अंग्रेज राज्य जैसा बाचनिक रामराज्य कहलाता है वैसाही यदि हमारे लिए कार्य्य में भी हो जाय तो हमैं अभावही किस बात का रह जाय? फिर (Home

and Abroad) अपना पराया और (White and Dusky) गोरे-भूरे आदि के शब्द हमको द्वैत भावापन्न दुख न दे सकें। पर ऐसा होना स्वेत चावलों को काले तिलों के साथ एकमिल करनेही की भांति जान पड़ता है।

मैं एकदिन वाटरलू स्टेशनसे रेलद्वारा हैम्पटन कोर्टको आरहा था कि मार्ग में वाक्शाल स्टेशन से उसी खंडमें एक बृद्ध महाशय सवार हुए। बातचीतसे मैंने जाना कि वह एक बड़े धनी, लिबर्टी कम्पनीके मालिक थे। महाराज के स्वास्थ्य सम्बन्धमें ही बातें होनेलगीं तो वह बड़े गौरवकेसाथ श्री महाराज के उपरोक्त मीठे वाक्योंका वर्णन करने लगे-उनका हृदय इनबातों को कहते हुए गद्गद् और नेत्र सजल होरहेथे जिसका प्रभाव मेरे हृदयपरभी निःसन्देह पूर्णरूपसे पड़ा। महाराज एडवर्ड की हृदयतल से सराहना करते हुए जब मैंने महाराजा रामचन्द्र की प्रजाबत्सलता का कुछ दिग्दर्शन कराया तो पाठक! सचमुचही वह बृद्ध महाशय अपने दोनों नेत्रों के जलबिन्दुओं को रोक नहींसके! कुछ चकितहोकर कहनेलगे क्या सचही हिन्दुस्तान ऐसे सहृदय नरपाल की गोदकासुख भोगचुका है? इसीके बीचमें उन्होंने यहभी कहा कि हमलोगतो घमंड करते हैं कि तुमको अन्यायी राजाओंके अत्याचारों से बचाकर हमहीं लोगोंने तुम्हारे देशको सुखीकिया है! परन्तु वास्तवमें यह हमारा भ्रमथा! रामराज्य के समयके देखते आज तुम्हारी स्वच्छन्दता केवल आभास कहीजाने के योग्यहै, इत्यादि। श्री महाराजके उपरोक्त मनोभावकी चर्चा सारे नगर में फैलरही थी। सभीलोग बड़े भक्तिभाव से महाराजके बचनों को दोहराते और परस्पर चर्चा करते थे।

इस रोगका कारण बैद्यलोग अपाचन बतलाते हैं। किसी

भांतिकी शारीरिक वा मानसिक थकावटके पीछे साधारण नियम मे अतिकाल करके भोजन करने एवं कठिन पदार्थों के खाने से अपचहोनाही इस (Perityphlitis) रोगका पूर्वरूप हुआकरता है। महाराज ने उस रात्रिको बिलम्ब करके एवं मानसिक परिश्रमके पीछे भोजन कियाथा और भोज्यपदार्थों में (Lobster Mayounaise) कठिन पाच्य बस्तुभी थी सो यही कारण महाराजकी रुग्नता का हुआ।

शस्त्रोपचार चिकित्साके दो तीन चार दिन पीछे तक समस्त प्रजामात्र में बड़ी उद्विग्नता रही। स्वास्थ्य समाचार (Bulle tins) सुनने पढ़ने के लिए सभोंको बड़ी उत्कंठा रहाकरती थी। और समाचारभी दिनमें चारवार निकलते थे।

यह समाचार मुख्य राजवैद्यों के हस्ताक्षर सहित राजमहलके फाटकपर विदित किए जाते थे और उसीदम सामयिक समाचार पत्रों द्वारा सम्पूर्ण नगर में फैल जाते थे। कई दिनों पीछे जब स्वास्थ्य स्थिर होगई तब सम्बाद केवल शाम सबेरेही निकलने लगे। परमेश्वर की कृपासे महाराज कृमशः निरन्तर आरोग्यता लाभ करते गए और अन्ततः स्वास्थ्य समाचार के साथ साथ तिलक समाचार सुनने का भी परम सौभाग्य हम लोगों को मिलने लगा।

भगवान की महिमा कैसी बिचित्र है, मनुष्य की बुद्धि क्या जान सकती है ?

अजब हैं कुदरत के कारखाने। घड़ी में कुछ है घड़ी में कुछ है।

—— +:०:+ ——

महारानी अलेक्जंड्रा और युवराज कुंवर वेल्स का संदर्शन

REVIEW BY QUEEN ALEXANDRA AND THE PRINCE OF WALES.

तारीख १ जुलाई को उपनिवेशीय सैन्य का और २ जुलाई को हिन्दुस्तानी सैन्यप्रतिनिधियों का संदर्शन हुआ था।

इंगलिस्तान की साधारण प्रजाने काहे को कभी इतने रंग रूप के आदमी अपने निज नगर में विचरते हुए देखे होंगे ? सो उन के लिए यह एक अभूतपूर्व लोचनलाहु था। वहां के सामयिक सम्बादपत्रों की ज़बानी साधारण की कौतूहलजनक सम्मति इस भांति विदित हुई।

As a spectacle, for wealth and warmth of colour it was a sight that only people from the East can show. It lit up sombre London.—*Daily Mail.*

अर्थात यदि वह बर्णों की बाहुल्यता और प्रगाढ़ता की दृष्टि से निरीक्षण कियाजाय तो वह एक ऐसा दृश्य था जो केवल पूर्बीय लोग दिखा सकते हैं। उसने नीहाराच्छन्न लंडन को प्रकाशमान करदिया।

इंगलिस्तानके लोग अपने राजा और राजपरिवारपर जितना प्रेम और भक्ति रखतेहैं हम हिन्दुस्तानियों का प्रेम और भक्ति उनके प्रति उनसे किसी अंश में कम नहीं है। सो अंग्रेजों की तीव्र आंखों ने जहां हमारी अन्यान्य बातों को निरख निरखकर परखा देखा वहां वह हमारे भावभक्ति पर टीका करने से न चूके। एक ने लिखा था—

These native sons of our Indian Empire repre-

sent many diversified races and creeds, and they differ from us in almost every thing save in their unswerving loyalty to Britain.—*Daily Chronicle.*

हमारे भारतीय राज्य के यह देशीय सन्तान बहुत सी भिन्न भिन्न जातियों और सम्प्रदायों के प्रतिनिधिस्वरूप हैं जो हम लोगों से प्रायः सभी बातों में प्रथक हैं परन्तु उनके ब्रिटानिया की अटल भक्ति हमारे ही समान है। अस्तु! हम लोग जो इन कतिपय दिनों महाराज की रुग्नता के कारण बहुत ही शोकित हो रहे थे परमेश्वर की कृपा से दुखसागर के किनारे लगे और पुनः हम लोगों में आनन्द मंगल की बातें होने लगीं।

आज तारीख २ जुलाई के सबेरे महारानी और युवराज कुंवर के राजदर्शन प्राप्त होंगे, हम सब लोग आनन्द और उछाहसे मग्न हो रहे थे। तड़केही से तय्यारियां करने लगे और लगभग साढ़े नौ बजे के हेम्पटन कोर्टसे स्पेशलट्रेनों द्वारा बिक्टोरिया स्टेशन पर पहुंच गए। वहां से मार्च करके हार्सगार्ड परेड को जाना था दूरी अनुमान डेढ़ मीलकी होगी। सड़क के दोनों ओर गोरी फौजें लाइन बांध कर सलामी देने के लिए खड़ी थीं तिसके पीछे पीछे दर्शकों की भीड़ की भीड़ डटी हुई थी। ज्यों ही हम लोग रेलवे स्टेशन से निकले कि कई बैंड बाजों ने अगवानी की और हम लोगों ने गोरा फौजों की सलामी एवं जन समूह की चियर्स, हुर्रे और करतालि आदि की ध्वनि के बीचमें होते हुए मार्च किया। कुछ दूर चल कर हाइड पार्कके कोनेपर पहुंचते ही श्रीमान राजड्यूक आफ कनाट आगे से आन मिले और जनरैली कमान लेकर अग्रसर हुए। हम लोग राजमहल बकिंघाम पैलेस के सन्मुख से होकर निकले वहां पर हमारे हिन्दुस्तानी

राजे महाराजे लोग रानी और युवराज कुंवरकी अगवानीके वास्ते खड़े थे। सब ओर के महल, अट्टालिकायें, मार्ग, जनपथ, आदि सभी स्थान जनसमूह से खचाखच भर रहे थे और सभी अपने जातीय उत्साहसे हर्षध्वनिको गुंजायमान करते थे।

हार्स गार्ड परेडका मैदान फौजों के वास्ते खाली रक्खागया था सो हमलोग वहींपर सैनिक रीत्यानुसार स्थित होगए। सन्मुख बहुतसुन्दर ऊंचे श्रेणीबद्ध मंच निर्मित हुएथे जिनपर बड़े बड़े महानुभावजन देशी विदेशी सब रंग रूपके मान्यगण उपस्थितथे। उस समयकादृश्य वास्तव में अंग्रेजों के लिए एवं हमारे लिए भी अनुपम था। एकपत्रने इस अपूर्व दृश्यपर ऐसे लिखाथा—

It was as if so many pages of our Indian History were being spread out for the world to take note of as the representations of India's fighting strength filed by. Princes and Peers, Colonial premiers and Powerful native potentates, the leading Statesmen of Britain and her Colonies were gathered together to witness a spectacle which in significance and impressiveness stands unique in our History.

ऐसा जान पड़ता था कि मानो हिन्दुस्तानी इतिहास के बहुत से पृष्ट जिनमें हिन्दुस्तान की समरशक्तियों का बिवरण भली भांति दर्शित है, सर्ब साधारण के सन्मुख अध्ययन करने वा बिचारने के लिए खोलकर रख दिए गए हों। राजकुमार लोग, मन्त्रिगण, उपनिवेशीय सामन्त और हिन्दुस्तानी राजे महाराजे, इंगलिस्तान के अगुआ राजनैतिक लोग और अन्यान्य बस्तियों के मन्त्री आदि सभी इस अवसर पर इस अभूतपूर्व अर्थपूर्ण और हृदयग्राही दृश्य को देखने के लिए एकत्रित हुए हैं।

हमलोग जब स्टेशन से हार्स गार्ड्स परेड को जारहे थे उस समय जनसमूह तो अनेक बिधि हर्षध्वनि आदिसे आल्हाद प्रगट कररहे थे किन्तु बहुतलोग निरीक्षक रूपसे बड़े ध्यानपूर्वक हमें निहारते ताकते मानो परीक्षा कररहे थे। कदाचित ऐसे परीक्षकों के निर्धारित परिणामपर आधार करकेही Daily Chronicle नामक समाचारपत्रने प्रकाश कियाथा कि—

Hidden behind a veil of Eastern imperturbability, the feelings of these dusky soldiers of the King were not easy to divine, but occasionally a pleased smile at the warmth of the public welcome lit up the brown face of one less impassive than his fellows.

अर्थात् पूर्बीय अक्षोभ्य स्थिरता के आवरण में ढके हुए राजा के इन श्यामल सैनिकों के मनोभाव जानलेना सरल नहीं था, परन्तु यदा कदा जनसमूहके स्वागतकी धूमधामसे प्रसन्नता सूचक कोई मन्द मुसक्यान एकाधि ऐसे मनुष्यके मुखमंडलको प्रकाशमान करदेती थी जो अपनेअन्य साथियों से भाव गोपनमें न्यून था।

हार्सगार्ड परेडपर फौजोंके यथास्थान स्थित होजानेके तनिक ही देर पीछे जनसमूहकी आकाशभेदी जयजयकार ध्वनिने श्री महारानी जी के पधारने की मानो सूचनादी और पलही में रानी साहबाका रथ दृष्टिगोचर हुआ। उसी समय हमारे बड़े कमांडिंग अफसर श्रीमान ड्यूक आफकनाट महोदय ने सलामी की आज्ञादी और समस्त सैन्य ने तत्काल तड़ितालोक की भांति प्रेजेन्टआर्म्स किया पीछे थोड़ीही देरमें युवराज कुंवरकी सवारीभी आन पहुंची। एवंबिधि अन्यान्य राजपरिवार और बिदेशी राज प्रतिनिधि आदिकोंकी सवारियां भी आईं। महारानी और युव-

राज कुंवरके साथ साथ अरदली में हमारे श्रीमान सर प्रतापसिंह ईदर नरेश, सर माधवराव सेंधिया गवालियराधीश, सर नृपेन्द्र नारायण कूचबिहारपति, सर गंगासिंह बीकानेरबर, कुंवर दौलत सिंह ईदर प्रभृति हिन्दू नरपति भी साथ थे। सलामी आदि का नियमित व्यौहार होचुकनेपर महारानी जीने प्रिंसेज आफवेल्स (युवराज बधू) और प्रिंसेज विक्टोरिया (राजकुमारी) सहित अपने रथमें एवं कुंवर साहब ने अश्वारूढ़ रहकर अन्यान्य सह गामियों सहित सम्पूर्ण दलकी पंक्तियोंके बीचसे होकर अभ्यर्थना स्वीकारहेतु प्रदक्षिणाकी।

इन सैनिक रीति व्यौहारों (Ceremonials) के पश्चात् श्रीमान् प्रिन्स आफ वेलस ने उन हिन्दुस्तानी राजालोगों और रजवाड़ी सरदारों को चीनके तगमें पहिनाए जोकि गत चीन संग्राम में सम्मिलित हुए थे। अन्य (Regular Army) रेगुलर आरमी को (जोकि चीनसंग्राममें रहेथे) श्रीमान् ड्यूकआफ कनाट ने पदक प्रदान किए थे। तत्पश्चात फौजने मार्चपास्टकी सलामी दी और तीनबेर महाराजाधिराज कैसर हिन्द के जय जय कार (Cheers) की ध्वनि की। पश्चात् सम्पूर्ण सैन्य और प्रजाबर्गकी जयजय कार एवं एकत्रित समस्वर वाद्यकी सुरीली जातीय गीतकी ध्वनिके मध्यसे श्री महारानीजीका रथ परेडसे बिदाहुआ। पीछे कुंवरसाहबभी अपने सहगामियों सहित पधारगए परन्तु मान्यबर ड्यूक आफकनाट सेनाको साथ साथ ले चलने के लिए फिरभी उपस्थित रहे। और आगे आगे चल कर वेलिंगटन आर्च (Wellington arch) तक पधारे वहां पहुंच कर सब लोगोंको बिदा किया और जबतक सब लोग निकल न चुके आप बराबर खड़े रहे। श्रीमानों की इतनी बड़ी कृपाके लिए

हिन्दुस्तानी तन मन से न्यौछावर होते थे। इस भांति तारीख २ जुलाई के दिनका श्रीमहारानीजी तथा श्रीयुवराज कुंवरका दर्शन मेला आनन्द पूर्वक समाप्त हुआ।

इस दिन सबेरेसे सन्ध्यापर्य्यन्त आकाश बराबर मेघाच्छन्न रहा सबेरे बहुत बेरलों कुहासा भी दबा रहा था परन्तु परेड के समय कुछ उजाला होगया था। सूर्य्यभगवान ने बादलों में मुंह छिपाये रखने की बड़ी चेष्ठा की परन्तु प्रजावर्ग की गगन बिदारी जय जयकार ध्वनि से अकस्मात् चौंक पड़े और ज्योंहीं उन्हों ने आंखखोली कि यकायक परेडसे लौटतेहुए राजरथ में श्री महारानी जीकी दैदीप्यमानप्रभः दीखपड़ी—और भगवानको तुरन्तही बादलोंकी ओटमें सरकजानापड़ा!!! शोक कि उनको अपने बंशधरों को दूसरों के आक्रोड़में नेत्रभर देखनेका भी साहस न हुआ। अथवा अपने बंशजोंकी इस अत्यन्त परिवर्तित दशाको निहारने में लज्जाबोध होनेके कारण आंखें बन्दकरलीहों जोहो—बात यह है कि इंगलिस्तान में रहनेपर्य्यन्त हमको सूर्य्य के दर्शन बहुत कम हुए। आजकी परेडपर लम्बी चौड़ी टिप्पनी करते हुए Daily chronicle में लिखा था।

This stately procession of our Indian fighting men was indeed a revelation to all who saw it, to all, that is to say, who had never been to India itself; and the only pity is that the colonial comrades of these "Grand men" of the East—to use the words applied by Lord Roberts to the Army of South Africa—were not on the Horse Guards' Parade to see and admire them—"Grand" by reason of their physique, their artistic beauty of form and feature, their martial mien

and dignity of bearing, reminding one of the figures on the tablets of Babylon, the friezes of Greece, and the triumphal arches of ancient Rome.

To be perfectly honest, some of the Anglo-Indian Volunteers, who brought up the rear of the panoramic procession, seemed to belong to an inferior race! from the æsthetic and even physical point of view—not to a conquering but a conquered race by comparison with all these splendidly warlike castes and tribes of Hindostan.

हमारे भारतीय योद्धाओं का यह राजसी जलूस वास्तव में उन दर्शकों को एक स्वर्गीय पदार्थ था जो स्वयम् हिन्द को कभी नहीं गए हैं। खेद केवल यही है कि इन पूर्बीय महापुरुषों के उपनिवेशीय सहचारी इस अवसरपर उनको श्रद्धास्पद दृष्टिसे देखनेको उपस्थित न थे जिनको लार्ड राबर्टस ने स्वयम् दक्षिणी अफरीका में अपने सैनिकों से महापुरुष नाम द्वारा सम्बोधित कियाथा यह महाशय अपने डील डौल, आकार और आकृति के यथोचित सौन्दर्य्य, बीरदर्प और महत्व पूर्ण चलन में वस्तुतः महापुरुष हैं जिनके दर्शनों से बाबलून देशकीमूर्तों, यूनानियों के आकारों और प्राचीन रोमकी बिजयस्मारकों का स्मरण आता है। सचतो यों है कि कुछ ऐंग्लो इंडियन (किरस्टान) वलुमटेर जो जलूसके पृष्ठभाग में थे वे सौंदर्य्य और शारीरिक दृष्टिसे भी नीचजातिके प्रतीत होतेथे। यदि हिन्दुस्तानकी इन सब प्रचंड युद्ध बिचक्षण जातियों और श्रेणियोंसे इनका मिलान कियाजाय तो ए पराजित जातिके जानपड़ते हैं न कि बिजयी जातिके।

पाठक! जो किरिस्टान मिश्रित उत्पत्ति (यूरेशियन) वाले लोग हिन्दुस्तानमें साहबी मिजाजके कारन अपनी भली चंगी

जबानकोभी तुम जाटा हम आटा आदिसे ऐंठाकरते हैं उनको बिलायतवाले किस निगाह से देखते हैं सो आपने इस रिमार्क से भली भांति जानलिया होगा । सचहै जो अपने बापदादोंके धर्म, अपने देश, और अपनी जातिकी वफादारी छोड़कर बेधर्म होजाता है वह नीच जातिका Inferior race क्योंनहीं कहाजायगा ? परेड का सुन्दर सम्बाद प्राप्तकरके श्रीमहाराजा कैसरहिन्द ने अपनी ओरसे निम्नलिखित प्रबोध सन्देशा भेजाथा—

* * * His Majesty desires it to be made known of his soldiers from the Colonies and from India, worthy representatives of the Empire, that in his sick room he heard with gratification the expressions of the welcome of his people to their loyal comrades.

* * * The Prince of Wales representing the King and the Queen, has been pleased to express his entire satisfaction with the troops reviewed at the Horse Guard's Parade.

अपने साम्राज्यके सुयोग्य प्रतिनिधि उपनिवेशीय और भारतीय सैनिकों के प्रति श्री महाराजा यह सूचित करना चाहते हैं कि उन्होंने अपने बीमारी के कमरेसे ब्रिटिश लोगोंकी उन अपने राजभक्त साथियों के अभ्यर्थना को बड़ी प्रसन्नतापूर्बक श्रवणकिया ।

राजा और रानी के प्रतिनिधिस्वरूप युवराजने हार्सगार्ड परेड पर दल दर्शन से पूर्णसन्तोष प्रगटकिया ।

—+:o:+—

भारतीय राजसभा में सन्मान ।

INDIA OFFICE RECEPTION.

इंडिया आफिस और उसके प्रधान अमात्य जार्ज हमिल्टन

के नामों से तो हम पहिले भी परिचित थे और जानते थे कि वह महावैद्युतयन्त्र जिसकी एकखूंटी वा हैंडिल वायसराय के स्वरूप में हिन्दुस्तान में बिराजा करती है वह इंडिया आफिस ही में स्थित है परन्तु ता० ४ जुलाई १९०२ ई० की रात को अपनी निज आंखों से उस महामहिप और शक्तिमान कार्य्यालय की कमनीय शोभा को देखकर परम सन्तुष्ट हुए। मन प्राण सभी हिम वत् शीतल होगए ।

यद्यपि इसका नाम भारत राज सभा है तथापि इस के सभी सभ्य महोदय और कर्मचारी आदि अंग्रेजही हैं । अर्थात् इस सभा में बीरबल, टोडरमल आदि का काम नहीं ; यहां सब मीरखुशरू ही लोग होते हैं । हमारे मान्यबर भारतसचिव लाट हमिल्टन महो दय ने अपने आफिस की इस बेर ऐसी सुन्दर सजावट की थी कि क्या लिखें ? सभी ठौर, सभी बस्तु और सभी साज सामान श्रीमानों की जाज्वल्य क्षमता का रूप स्पष्ट कर रहे थे। अकेले फूल पत्तों का बनाव शृंगारही ऐसा कीमती था कि जिसमें बाईस हजार रुपये सजीव चमक रेह थे। और ठौर ठौर पर बड़े बड़े दर्पण इस चतुराई से लगाए गए थे कि जिनके प्रतिबिम्बों से सब शोभा चौगुणी होगई थी ।

पाठक इस शोभासमूह का केवल दिग्दर्शन भी हम तुम्हें क्यों कर दिखावैं ? प्रत्यक्ष, उनमान, उपमान आदि किस रीति का अवलम्ब करैं कुछ समझ में नहीं आता । प्रत्यक्ष सन्मुख लाकर धरना तो शक्तिही में नहीं है । अनुमान और उपमान भी उसी का होसकताहै जिसका सदृश कभी देखा वा ध्यान में आया हो । मयकृत राजमन्दिर, भोज की राज सभा वा अकबरी दरबार आदि आदि सभों से यह इंडिया आफिस बिलक्षण और बिचक्षण

है। तब इतनाही कह कर सन्तोष करना पड़ैगा कि वह सबही भांति अनूप है।

लाट साहब ने बड़ी रुचिके साथ सब तयारियां ऐसी कराई थीं जिसमें सभाभवन के सभी दृश्य भारतीय बोधहों और श्रीमान अपनी इच्छामें कृतकार्य्य भी पूरे पूरे हुए। भवनके भीतर सम्पूर्ण ठाट, बाट, बनाव, सिंगार के साथ हिन्दुस्तानी राजा रईसों और सैनिकों का यथा स्थान स्थित होना और ऊपर निर्मल नीलमय आकाश में सुन्दर चन्द्रमा और तारागणों का टिमटिम चमकना, एवं सन्मुख बड़े आब ताब के साथ अमात्यादि परिवेष्ठित युव राज कुंवर प्रिन्स आफ वेल्स का दर्शन ! यह सब देखतेही हठात् नेत्रोंके सन्मुख एक बिजली सी चमक गई और एक पलके लिए आंखैं झंप गईं।

भगवन् ! भारत के इतने बड़े दिगन्त ब्यापी आकाश को उसके सम्पूर्ण चन्द्रतारकादि शोभा एवं जन समूह को लाकर इस छोटी सी कोठरी के भीतर बन्द कर देना तुम्हारी बिलक्षण गतिका प्रत्यक्ष निदर्शन नहीं तो क्या है ? अतः हे माया मय ! हम तुम्हारी मायाविनी शक्तिको बारम्बार नमस्कार करते हैं !!!

आजकी अभ्यर्थना के लिए लगभग दोलाख रुपये खर्चहुए थे सो भारत सचिव की उदारता भी अवश्यही सराहना के योग्य है कि अपने भारतीय महिमानों के आदर सत्कारमें इतना अधिक धन ब्यय किया। परन्तु पाठक ! हमने अपने यहां एक पुरानी मसल सुनी थी ! एक लाला साहब ने अपने यहां दस पांच मित्रों का न्योता किया। नियत समय पर सब आमन्त्रित लोग आए और लाला साहबने उनको बड़े आदर सन्मानसे भीतर लेजाकर बैठाला। हमारे यहां जूते उतार करही भीतर जाने का नियम

है सो सब लोग जूते उतार कर भीतर गए थे । लाला साहब के आदेशानुसार उनके एक चाकरने सब जूते इकट्ठे करके बेंचडाले और उन्हीं के दाम से उस दिन के भोजनादि का सब सामान किया और महिमानों को भली भांति तृप्त किया । बीच बीच में महिमान लोग जब किसी पदार्थ की सराहना करते तो लाला साहब बड़े बिनीत भावसे अधीनताई करके कहते कि महाशय ! यह सब आपही की जूतियों का तुफैल है सब लोग और भी फूल जाते थे । अन्त में पान इलायची आदि के पीछे जब सब लोग बिदा हुए और द्वारपर आए तब देखते हैं कि सभों के जूतेही नदारद हैं ! लाला साहब ने फिर भी नम्रता पूर्बक सम्बोधन करके कहा कि महाशय हमने तो पहिलेही आपसे निवेदन कर दिया था कि वह सब आपही की जूतियों के तुफैलसे था, इत्यादि । सो भाई ! इंडिया आफिस अभ्यर्थना के खर्चा मध्ये दो लाख रुपयों की लाट साहेबी उदारता के लिए भी हमें तुमहीं को धन्यबाद देना चाहिए क्योंकि वह सब बास्तव में तुम्हारीही जूतियों का तुफैल था, और (India Office) इंडिया आफिस हिन्द ही की तो सम्पत्ति है ?

यद्यपि दरबार में सभीलोग अपनी अपनी सर्वोत्तम पोशाकें पहिने हुएथे, तथापि हमारे राजा लोगोंकी सोनहली पोशाक सब से ऊपर चमकतीथीं । हमैंतो अपनी तिमिरयुक्त आंखोंसे कुछ ऐसा दीख पड़ताथा, मानो राजाओंने अपनी बुभुक्षित आंतों और काले चमड़ों को छिपाने मात्रके लिए वह चमकीली पोशाकें पहिनी थीं ।

इस सभामें श्रीमान युवराज कुंवर प्रिंस आफवेल्स महाराजा धिराज के प्रतिनिधि स्वरूप उपस्थित हुएथे । अतः सब देशी राजाओं और सैनिकों ने उनको तलवार भेंटद्वारा शाही ताजीमें

दीं। राजकुंवर के दर्शनसे हमलोगों को वास्तविक परमहर्ष प्राप्त हुआ था।

महाराज की बीमारीके कारण यह निश्चयकरना कठिन प्रतीत होनेलगा कि राजतिलक कबहोसकैगा। डाक्टरोंकी सम्मति में महाराजाको चलने फिरनेकी शक्ति और पूर्ण आरोग्यता लाभ करने के वास्ते कोई तीन महीनेका अवसर आवश्यक होगा इतने दिनोंतक न्योते आयेलोग क्योंकर ठहर सकते हैं? सो महाराजाके दर्शन बिनाकिएही हमलोग लौटजायंगे! यह सोचकर सब हिन्दुस्तानियों को बहुतही दुःख हुआ। अतः इंडिया आफिसके दरबार में सबलोगोंने भारत सचिवसे निवेदन किया कि यदि राजतिलक देखनेका सौभाग्य हमारे कपालमें न हो तो इतना तो अवसर हमको अवश्य दियाजावै कि हम अपने भारत वर्षीय साम्राज्यके बड़े राजा साहब का दर्शनही करके घरको लौटैं।

पाठक! इससमय हमारे हिन्दुस्तानी सैनिकों के मन राज दर्शनके लिए कितना उत्कंठित थे सो कहकर कैसे समझावैं? हिन्दू विश्वासके अनुसार राजाके दर्शनसे पुण्यहोता है। राज दर्शनसे अनेकों पापोंका मिटजाना बहुधा पुराणों में पढ़ाहै परन्तु बर्तमान हिन्दू प्रजाने राजाके दर्शन पानेका सौभाग्य कभीनहीं पाया! सो कुछलोग तो अपने पुराने हिन्दुआने विश्वासके अनुकूल इसबेर परीक्षाकरके देखनाचाहते थे कि देखैंतो राजा एडवर्डके दर्शनसे हमारे कौन कौन से पाप कटते हैं, किन्तु बहुतलोग ऐसाभी कहते थे कि चाहे पापकटैं या न कटैं जैसे हम मन्दिरों में पत्थरकी मूर्तिका दर्शन करने में पुण्य मानतेहैं, वैसेही राजाके दर्शन से हमैं निष्फल पुण्य क्योंन प्राप्तहोगा?

हा! अबोध, निरे सीधे सांचे हिन्दू! तुम गढ़े में धंसते चले

जाते हुए भी पाताल बिजयका स्वप्न देखरहे हो ! यह कैसी बिडम्बना की बात है ?

तुम्हारे पास अबवह प्रबोधिनी विद्या नहीं है जिसके द्वारा दुर्गा, सरस्वती आदिकी मूर्तियां भी तुमको दार्शनिक फल देती थीं, उसीतरह आज तुम्हारे दशरथ, रामचन्द्र, शिव, दधीचि, हरिश्चन्द्र आदि नृपति भी नहीं हैं जिनके दर्शन से पाप दूरभागते थे ! अबतो जैसी तुम्हारी शिला मूर्तियां निष्प्रयोजनीय होरही हैं वैसेही राजदर्शनभी बिनाराजाका प्रियकार्य्य साधन किए निष्फल है ! प्रत्यक्षही देखतेहो कि जो लोग राज काजमें हाथबटाई करतेहैं, प्रबन्धादि बिषयों में खूब तर्क बितक एवं शासन प्रणाली में भरपूर हस्तक्षेप करतेहैं वही बड़े बड़े अधिकार पाते और राजसभा में उच्चसे उच्चतर स्थान अधिकार करतेहैं ! परन्तु तुम अपनी सुधाई और पत्थर बुद्धिके कारण मधुमक्खी की भांति छत्ते के आसपास मंडराने कोही सबकुछ समझरहेहो !

यद्यपि राजपुरुषगण हमारी इस सुधाई को बुरीनहीं कहते बरन तरस खाते हैं, तथापि चाहते अवश्यही हैं कि उनकी निज प्रजाकी भांति हमभी सुबोध होजाते ! सो हमारी इस राजदर्शनकी प्रार्थनापर मंत्रिबर हामिल्टनका मन दयार्द्र होगयाथा। यद्दिचवह ततकाल कुछ उत्तर नहीं देसके परन्तु यह प्रत्यक्ष था कि वह हमारी बाललीलापर मोहित होकर इच्छा पूरी करने के लिए मन चित्तसे चाहने लगेथे, जैसाकि श्रीमानने तारीख ८ अगस्त को पुनः एकदरबार करके कहाथा।

अन्ततः परमेश्वरकी अनन्त महिमा, भारतसचिवकी सिफारश और राजाधिराज एडवर्ड महाराजकी कृपासे हमलोगोंकी इच्छा पूरी कीगई। और हम राजतिलक देखनेके लिए ठहरा

लिए गए । महाराजा साहब नित नित्यही आरोग्य लाभ करते जातेहैं, हमलोग राजगद्दी देखैंगे, राजदर्शनका पुन्य संचयभी कर पावैंगे, यह सुनकर हमाराआनन्द चन्द्र कलाकी भांति बढ़ने लगा ।

—+:o:+—

लिवरपूल यात्रा TRIP TO LIVERPOOL.

महाराजा बराबर स्वास्थय लाभकररहे हैं, परमेश्वरने चाहा तो अब चारपांच सप्ताह में राजतिलक अवश्य होजायगा अतः सभी महिमान ठहरालिएगए ।

इस अवसरको उत्तम समझकर स्वागतसभा ने हमलोगों को लिवरपूल, मान्चेष्टर, इडिनबरा आदि प्रसिद्ध नगरोंको दिखलाने का प्रबन्ध किया । तदनुसार हमलोग अपने सुपरिचित जहाज हारडिंग पर सवार होकरलिवरपूलके यात्रीहुए । इसबेर हमें सौथम्प टन नहीं जाना पड़ा हारडिंगसाहब स्वयम् टिलबरीडाक में चले आए थे । यद्यपि हैम्पटनकोर्टसे इस बन्दरगाह को नदीका रास्ता भी बहुतसुन्दर है और धुआंकश स्टीमरआदि सदा दौड़ाकरते हैं तथापि हमलोग नदीद्वारा न जाकर रेलद्वाराही गए थे । नदीके किनारे किनारेका दृश्य जैसा सुहावना और मनोहर है रेलमार्ग वैसा नहीं है । तौभी बड़े बड़े महल, बन, उपबनआदि जो कुछ मार्ग में दीखपड़तेहैं वह कुछ कम सुहावने नहींहैं । थोड़ीदेर में रेल हमें लोगोंको घाटकिनारेपर लेआई और हमसब जहाजपर सवारहोगए ।

ढाईदिनका जहाजी सफर पारकरने में जोकुछ कष्ट हुआ अठारह दिनके लम्बे सफर में उसका एक अंशभी नहीं हुआथा ! इस अवसरपर लगभग सभीलोग जहाजी अस्वास्थयसे घबरा गए थे । इनदिनों मौसम दुर्दिनसा होगया था इसीसे इतना अधिक कष्ट उठाना पड़ा !

अन्त में हमारा जहाज तूफानी झंकोरोंको झेलता झालता हुआ लिवरपूल में मरसी नदी के बन्दरगाह में पहुंचगया । पहुंचने के दिनही यद्यपि नगरके प्रधान लार्ड मेयरमहोदय तथा अन्यान्य मान्यजन जहाजपर आए परन्तु अस्वास्थय के कारण उसदिन किसीने उतरना नहीं चाहा ।

दूसरे दिन हम लोग नौकावों पर चढ़ किनारे आए । मान्यवर लार्डमेयर ने अपने दल बल सहित बड़ी तयारी के साथ अगवानी की । किनारे ही पर बहुतसी मनोहर रूप से सजी हुई ट्राम गाड़ियां खड़ी रक्खी गई थीं जिनपर सब लोगों को सवार कराके नगर परिक्रमा कराने का प्रबन्ध किया गया था । सब से आगे की गाड़ी में बड़े ही सुन्दर रंग बिरंगे कांचके दीपक और बिचित्र फूल पत्ते आदि बनाकर मस्तक पर भारतीय सैनिकों का स्वागत (Welcome to our Indian troops) लिखा था । और उसमें नगर का सर्वोत्तम बैंड बाजा बैठाहुआ स्वागतके उत्तमोत्तम गीत गा रहा था ।

इसी ट्रामगाड़ी की लम्बी ट्रेन में सवार होकर अब हम लोग नगर देखने को चले नगर की शोभा क्या लिखूं ! सभी ओर उत्तम बनाव शृंगार के साथ तिलक तयारी होरही थी । और सब नर नारी अपने जातीय उत्सव की खुशी में फूले अंग नहीं समाते थे । मार्ग, खिड़कियां, अट्टालिकायें सभी जन समूहसे भरपूर और हुर्रे आदि की ध्वनि से ब्याप्त हो रही थीं । यद्यपि लिवरपूल लंडन की भांति साफ सुथरा और चाक चिक्यमय नहीं है तथापि धन सम्पत्ति और ब्यापार सम्बन्ध में इंगलिस्तान भरमें दूसरे दरजे का नगर गिना जाता है । यहां पर कल कारखाने और ब्यापार की बड़ी बड़ी कम्पनियां हैं जो देश देशान्तरों

की सम्पत्ति को आकर्षण करनेमें चुम्बक पत्थर की भी नानी हैं। जहाज बनाने का कारखाना देखकर आंखें खुलगईं। बड़ी बड़ी भारी बिशाल कलें लोहके अभेद्य तखते और बड़ीबड़ी तोपों की ढलाई कसाई आदि देखकर अवाक् रहना पड़ताहै। बास्तव में हमारा और अंग्रेज जाति का मिलान करके देखने से जीवित और मृतक कासा भेद प्रगट दीख पड़ने लगता है।

शीर्षगामिनी रेल शहर में ऊपरही ऊपर दौड़ती फिरती रहती है। ऊंचे ऊंचे स्तम्भों पर इसकी पटड़ियां बिछी हैं जिनपर से रेल चलतीहै और नीचे तमाम कारबार आना जाना आदि होता रहता है। बिद्युत रेलवे भी नगर में खूबही दौड़ती है। इसका आना जाना बिना शब्द के कैसी जल्दी से होता है कि बात की बात में रेल आती और अदृश्य होजाती है। गाड़ियां भी बड़ी सुघर आराम की बनी हैं।

बंदरगाह के किनारे पर अन्न के कई कारखाने हैं जिन में गेंहूं, मकाई, आदि अनाजका काम होताहै। हजारों, लाखों मन अन्न बात की बात में जहाजों पर चढ़ाया उतारा जाता है। इसी तरह अन्न साफ करने, बीनने, पछोरने, बोराबन्दी करने आदि का काम कलों से पल मारते मारते ही—लाखों आदमियों के करने का काम—जड़ पदार्थों द्वारा सम्पन्न होजाताहै। लाखों मन अनाज गेहूं आदि यहां इकट्ठे देखकर हमारी आंखोंके सामने अपने देश का दुर्भिक्ष मुंह पसारे खड़ा हुआ देख पड़ने लगा! हम समझ ते थे कि हिन्दुस्तान में अकाल अनाबृष्टि आदि के कारण से होता है परन्तु बास्तव में वैसा नहीं है। अकाल बिदेशी रफ्तनी के सबबसे पड़ता है यह हमको साफ साफ दिखलाई पड़ने लगा! अकाल के सम्बत् में भी तो हिन्दुस्तानसे बिदेशों को गेहूं जाता

है ? और सुकाल में भी तो भाव वही अकालही वाला बना रहता है ? इससे प्रगटहै कि बिदेशी चालानों के ही कारण से हमारे देश में अन्न कष्ट बना रहता है।

जोहो ! हमें इससे क्या प्रयोजन ! हमतो यहांपर अंग्रेजोंका चमत्कार देखने आए हैं, उनकी महाशक्तिका परिचय लेने आए हैं अकाल सुकालकी बात छेड़ना इस स्थानपर अवश्यही अनुचितहै परन्तु क्याकरैं ! जलाहुआ पेट नहीं मानता ! भूखे मुखसे अन्नका ढेर देखकर राल टपकनेको हुई सो दोबात बिनाकहे रहा नहीं गया, पाठक माफ करैं। अंग्रेज जाति बड़ी क्षमतावान है, इनकीशक्ति अपार है हमतो इनकी शक्ति के पारावार का बर्णन भी नहीं करसकते ! सचपूछिये तो हमने अपने इसछोटेसे जीवन भर में दोही शक्तिमानों को देखाहै—अपने देशियों में तीर्थबासी पंडोंको तथा बिदेशियों में अंग्रेजराजको।

हमारे पंडे अपने यात्रियोंकी अपेक्षा अधिक धनपात्र होने परभी उनलोगों को हंसा खिलाकर, दमदिलासा देकर एवं मुक्ति का लालच दिखाकर पैसा वसूल करते हैं—पंडोंकी धनाढ्यता को भलीभांति जानते हुएभी दरिद्री यात्रीलोग अपना पेटकाटकर उनकी झोली भरनेमें कमी नहींकरते और सर्बस्वदेकर खुशी खुशी घर फिरतेहैं। क्या यह कम शक्तिमत्ताकी बातहै? इसीतरह हमारे महाराजा जातीय अंग्रेजलोग हमारी अपेक्षा लाखगुणा अधिक समृद्धिवान होतेहुएभी हमारा पैसाकौड़ी अद्भुत रीतिसे खींचतेहैं। जो पैसा हिन्दू राजालोग और मुसलमान बादशाह लोग हिन्दुस्तान के सुकाल समयमें बड़ी बड़ी लड़ाइयां करकेभी नहीं पासकते थे वही पैसा और वही धरतीकापैसा—काहेको—उसकेभिन्न अन्यान्य लगान बंधान अंगरेजलोग कैसी सुगमतासे वसूल कर

लेतेहैं ! इतनाहीनहीं बरन अवाध व्यापारके नामसे शरीरके अन्न, जल, वस्त्र आदि सभी आवश्यक पदार्थों के अधिपति बनगए हैं। क्या यह कम क्षमता और शक्तिमत्ताकी बातहै ?

सो अपने सरकारकी यहसब चातुरी बड़ाई देखकर मन बहुत प्रसन्नहुआ। हमलोग ऐसी बड़ी सरकारकी रिआया हैं, यह बड़े भाग्यकी बातहै यदिहम अपनी सरकार पर भरोसा बनाए रक्खेंगे तो अकाल आदिसे मरनेका कोई डरनहीं है।

लिवरपूलके सन्तजार्ज हालमें लार्ड मेयरकी ओरसे सब महिमानों को दावत दीगई। यह हाल बड़ी सुघराई से सजायागयाथा और स्वागत आदिके आदरकारी शब्द द्वारपर अपूर्व चमक दमक दिखला रहेथे। बड़ी सुन्दर सुन्दर मेजोंपर सब खाद्य और पेय पदार्थ मनोहर रूपसे सजाए हुएथे और हरएक मेजपर साफ सुथरे और मनोहर वस्त्रोंसे सजीहुई स्त्रियां परोसने खिलाने पिलाने के वास्ते उपस्थित थीं। यद्यपि सभी मेजोंपर विलायती खाद्य पदार्थ सब एकही प्रकारके थे तथापि हिन्दू और मुसलमानों के लिए कमरे अलग अलग नियत किए गएथे। सबलोगोंने यथारुचि खाया पिया और चुरट, सिगरेट आदि लेकर अपने जहाज पर वापस आए।

रात्रिको टाउन हाल में वाद्यसंगीत और चित्रपटी (Panorama) का तमाशा और लार्डमेयरकी स्वागत बक्तृता का जलसा हुआ। खूब समारोहकेसाथ बैठक हुई। टाउनहाल बहुतबड़ा राज प्रासादसा बना है, स्टेज और आरगन भी बिशालहैं। लार्डमेयर चार्ल्स पिटरी महोदयने अपनी प्रेमभरी बक्तृता में हिन्दुस्तानियों की बड़ी प्रसंशा और उनके आगमन से अपने नगरकी भाग्य

सराहना की। इस समयभी फल मेवे आदिसे सब लोगोंका सत्कार हुआ और कृतकार्य्यता के साथ सभा बिसर्जन हुई।

बड़े बड़े मान्यबर अंगरेज महाशयोंकी उत्साहपूरित खातिरदारी देखकर हमलोगों के मनोंपर उनके महत्वका अच्छा प्रभाव पड़ा। मैंने अपने साथियों मेंसे बहुतोंको कहते सुनाहै कि बेशक बड़ोंकी बड़ी बातहै एक यह साहब लोगहैं और एकहैं हमारे देशमें कामकरनेवाले छोटे छोटे अधिकारी अंगरेज लोग जिनके मिजाजों का कहीं ठिकानाही नहींलगता।

लोगोंका यह बिचार पक्का होता प्रतीत हुआ कि नीच लोग ही अधिकतर हिन्दुस्तानमें नौकरी करने जाया करते हैं। परन्तु बास्तव में ऐसा नहीं है। हिन्दुस्तान में काम करनेवाले अंग्रेज अधिकारियों आदि का हमारे साथ बहुत अच्छा ब्यौहार नहीं होता इसका कारण अंग्रेजों की संकीर्णता वा नीचता नहीं बरन हमारी अनभिज्ञताही एक मात्र कारण है। हम लोग अंग्रेजी रीत, नीतियों और राजनैतिक प्रपंचों (Politics) को नहीं समझते इसीसे हम दोनोंमें कुछ न कुछ भेद भाव बना रहताहै। नहीं तो अंग्रेजों को न तो हमारे काले चमड़े से घृणाहै और न जित जेता सम्बंध से! क्योंकि यदि उन्हें काली वा भूरी सूरत से अरुचि होती तो जापानियों को अपना श्रेष्ठ और प्रतिष्ठित मित्र न बनाते और न स्काटलैंड, आस्ट्रेलिया एवं अन्यान्य उपनिवेशीय प्रजा को समान अधिकार देते! सो निश्चयही हमें यह जो नित्य कई प्रकार के अपमान और ब्यंग देखने सुनने का दुर्भाग्य हुआ करता है सो सब हमारे निज दोषों काही फल है और इसका निवारण उपाय भी राजनैतिक परिज्ञान द्वारा हमारेही हाथमें है।

——+:0:+——

महम्मदी मस्जिद THE MOSQUE.

हमारे साथी मुसलमानों को लिवरपूल में शेखुलइस्लाम मौलाना शेख अबदुल्लाह कैलम (Quilliam) के मस्जिद की जियारत करने का बड़ा चाव हुआ था परन्तु प्रोग्राम पहिले बन चुकने के कारण देखने का अवसर नहीं मिलसका! तथापि मौलाना साहब के स्वयम् टाउनहालमें पधारने से सब को उनके दर्शन प्राप्त होगए थे।

मौलानासाहब अंग्रेज हैं परन्तु दीन मुसलमानी रखतेहैं और उन्होंने लगभग दोसौ आदमियों को अपना चेला बना लियाहै। आपने एक मस्जिद स्थापित कर रक्खीहै जिसमें नित्य नमाजके सिवाय अरबी, फारसी और कुरान आदि की पढ़ाई के क्लास भी हुआ करते हैं। हर शुक्रबारको जुमा नमाज होती है। इस्लामी धर्म एक प्रकारसे हमारे समझमें मनुष्यपूजक सम्प्रदायहै सो मौलाना साहब भी पूज्य दृष्टि से देखे जाते हैं। आपकी कई तरह की तस्वीरें भी जगन्नाथी पट की भांति बिकती हैं।

मस्जिद मुसलमानी होने पर भी वह इंगलिस्तान में और अंगरेज मौलवी के प्रबन्ध में है सो निरी दीवाल चबूतरे की तीन सीढ़ियों दार मस्जिदही नहीं है बरन उसमें पाठालय (Reading room) पुस्तकालय (Library)अद्भुतालय (Museum) आदि आदि बहुतसे आवश्यक और उपयोगी बिषयों की संस्थापनायें भी हैं। हमारे देश के निरे मौलवियों और पुजारियों को इस से अवश्य शिक्षा लेना चाहिए। लगभग दश बर्ष से मदरसा इस्लामियां नाम का एक बिद्यालय भी स्थापित है जिसका उद्देश्य यह है कि हिन्दुस्तान, तुर्किस्तान, मरक्को, सायरिया, मिश्र और अन्यान्य

देश देशान्तरों के मुसलमान छात्रों को जोंकि इंगलिस्तान में रह कर उच्च श्रेणीकी अंग्रेजी शिक्षाप्राप्त करना चाहते हों सहायता और सुबिधा पहुंचाई जावे ।

मौलवी साहब यह भी कहते हैं कि जो मुसलमान लोग यह समझ कर अपने लड़कों को विलायत नहीं भेजते कि कदाचित वह कृष्टान पादरियों के बहकाने से बिधर्मी हो जावैं अथवा पश्चिमी सभ्यताकी कतिपय बुराइयों (Vices of so called Western Civilisation)को अपनेमें लेलेवैं उनकोअब यह डरनहीं करना चाहिए क्योंकि मदरसा इस्लामियां पक्की दीनदारी का जिम्मेदार होता है । मौलवी साहब दीनदार खाने (Properly and religiously prepaired food) का भी प्रबन्ध करते हैं । बिद्यालय में बिज्ञान सम्मत कार्य्यालय (Laboratory) पदार्थ बिद्या (Science) रसायन बिद्या (Chemistry) बैद्युतबिद्या (Electricity) धातु शोधन बिद्या (Metallurgy) और बिज्ञानशास्त्र, अर्थशास्त्र, शब्दशास्त्र आदि आदि सभी प्रकार की शिक्षा का प्रबंध है ।

पाठक हमें तो इस्लामी डंकेकी यह आवाजें बड़ी ही प्यारी लगीं । और मैं मुक्तकंठसे अपने उन मुसलमान भाइयों के उद्योग की सराहना करताहूं कि जिन्होंने इंगलिस्तान में इस्लामी बेसुरे नगाड़े में से भी सुरीली आवाजें निकाललीं हैं । क्याही आनन्द हो यदि हमारा ठाकुरद्वारा वा शिवमंदिर भी लंडनमें इसीप्रकार के नियमोंपर स्थापितहोकर विलायतमें शिक्षा पाने के अर्थ जाने वाले हिन्दू लोगों के लिए काशी के गुरुकुल की भांति कामदेता ! बात असंभव नहीं है, पर कष्ट साध्य अवश्यही है । यदि जिन्दा दिली से हमारे धनी और जातीय गौरव के चाहनेवाले महाशय

गण उद्योग करैं तो लंडनमें विश्वनाथ मंदिर और विश्वगुरुकुल स्थापित करसकते हैं फिरतो विलायतजाना वैसाही पुनीत होजाय जैसी कि किसीसमय काशी यात्रा समझी जातीथी।

———+:o:+———

मदीना भवन MADINA HOME.

लिवरपूल में इन्हीं मौलवी कैलम साहब का स्थापित किया हुआ अवैधसन्तति के लिए एक स्थान है जिसका नाम मदीना भवन (Madina Home for children) है। इंगलिस्तानमें अवैध (जारज) सन्तान की कमी नहीं है। सुनाहै कि अकेले लिवरपूलके इलाके मेंही वार्षिक कोई दोहजार के लगभग मसीहा सन्तान पैदा होती है। लोग कहते हैं कि बालबच्चोंकी खेती इस देशमें अबतक बहुतायत से होती है (Baby farming is still being conducted on a large scale in this country) ऐसे भवन लंडन में भी हैं और प्रायः सब बड़े नगरों में हैं।

बर्णसंकरता रोकने के बहुत उपाय किए जातेहैं और यथा संभव लोग कृतकार्य्य भी होतेहैं परन्तु दुर्भाग्यसे जो ऐसी सन्तान पैदा होती है उसको निरा ढेला माटी समझलेना क्या मनुष्यता कहला सकती है? और माता पिताकी कुचालसे उत्पन्न हुई संतान कोभी कुचाली बनने वा पतित होने देना क्या जातिकी कठोरता (Cruelty) नहीं है।

अतः मौलाना कैलमने मदीनाभवन बनाकर अपने धर्ममें जो एक प्रकारसे प्राणबायु फूंकदी है मैं उसकी मुक्तकंठसे सराहना करता हूं।

प्रिय पाठक! यदि गहिरी दृष्टिसे बिचारकरं देखो तो गिरते

को उठानाही महानुभावता है। और लरखरातेको ढकेलदेना निःसन्देह पशुता है! हमने तनिक तनिक से अपराधों के लिए अपने भाइयोंको अपनेसे अलगकरके आज हजारों—लाखों नहीं करोड़ों—देसी ईसाई और मुसलमान बनाडाले! वर्णसंकरोंकी संख्या अपने अबिचारसे हम नित्यही बढ़ातेचलेजाते हैं। तनिक नहीं बिचारते कि हमारी जातीयताका इससे बराबर ह्रास और सत्यानाश होता चलाजारहा है!!! सचमुचही यह जो नौहजार नौसौ निन्नानबे टुकड़ियां जातियों के नामसे हमारेयहां विद्यमान होगई हैं यहभी इसीप्रकारके अबिचारका फल स्वरूपहैं!

माना कि हमारेयहां जारज सन्तान बहुतकम उत्पन्न होती है जोकि न होनेके बराबर है परन्तु फिरभी जो सैकड़ों सहस्रों टुकड़ियां बनतीहैं वह क्यों? केवल इसी कारणसे कि हम तनिक से सामाजिक अपराधके लिए कठिनदंड देडालते हैं—यथा किसी बाजपेयी ने यदि किसी अध्वर्य कन्यासे बिवाह करलिया तो हम झट उसको नीच बताने लगजातेहैं। इसीतरह यदि किसी क्षत्री कन्याने जाटसे बिवाह करलिया तो उसे हम तुरन्त पतित करदेते हैं।

बिचारदृष्टिसे देखिये तो इसमें जातिकी संकीर्णता और कठोरताके सिवाय और कुछभी नहीं है। यदि हम में समझहोती और हम गिरतेको ढकेलदेनेवाली पशुबृत्ति न रखते होते तो आज हमारी जातिकी बोटियां न बनगई होतीं!!! और न किसी किसी रसना लोलुप को हमें खाडालनेका हियाव पड़ता! सो मौलवीसाहब जो अनेकों पतनोन्मुख व्यक्तियों वा बच्चोंको अपने उद्योगसे पक्कादीनदार और कर्मण्य बनातेहैं यह उनकी बड़ी श्रेष्ठताका बिकाश करता है। मैंतो उनकी और उनके सदृश

कार्य्य करनेवाले पादरी साहबानकी मुक्तकंठसे बारम्बार बड़ाई करताहूं और चाहताहूं कि हमारे भाईभी अपनी कठोर संकीर्णता को त्यागकर तनिक उदारतासे कामलें।

---+:o:+---

न्यूब्राइटन टावर NEW BRIGHTON TOWER.

शेखसादी ने सच कहाहै—कि मजदूर खुश दिल कुनदकार वेश—प्रसन्न मन मजूराभी अधिककाम करताहै। सो इंगलिस्तानमें कर्मण्यता की बढ़ती के लिए आमोद स्थानों की ठौर ठौर पर सुब्यवस्था की गई हैं। लिवरपूल प्रांत में न्यूब्राइटन टावर भी ऐसाही एक सुबृहत् आमोदक स्थानहै। पैंतीस एकड़ भूमिके बिस्तार में यह इमारत बनी हुई है जिसके हरिआले बगीचे में गेंद, चौगान, फुटबाल, आदि आदि सब भांति के खेल कूद होने योग्य स्थान बने हैं। सुन्दर फुलवारी में टहलने के जन पद, झाड़ झंखाड़मय बनैली ओट, और हरित गुफायें, कृतृम झरने, छोटे छोटे पथरीले पर्बत, फौव्वारे, जन्तुशाला, आदि सभी आयोजन मन को खूब उत्तेजना देतेहैं। यहां पर नाच घरभी बहुतही सुन्दर बना हुआहै जहां पर कोई न कोई राधामोहन बने प्रायः सदाही नाचा कूदा करते हैं। थोड़ी दूरके गोल दायरे में दो तीन चक्करमे एक छोटी सी रेल दौड़तीहै जिसको हिमालया इलेक्ट्रिक रेलवे कहतेहैं। इसकी पटरी खूब ऊंचे नीचे उतार चढ़ावसे एवं कुछ दूर तक पर्वत की गुफा के भीतर होकर ऐसी बिछाई गई हैं कि गाड़ी में सवार हो कर एक बेर तीनों चक्कर लगा आने से मन बहलाव के साथ साथ शरीर की पूरी कसरत भी होजाती है।

स्विसबैक (Switch back) अर्थात् एक लम्बा समुद्री सूस (जन्तु बिशेष) बना है जिसकी पीठ पर बैठने के आसन होते हैं। यह रेलकी भांति पटरी पर बिद्युतशक्ति से दौड़ता है। इसीको स्वि-

बैक कहते हैं। इस पर बैठ कर भी बहुत लोग सैर तमाशा देखते हैं। परन्तु यह हिन्दुस्तानियों के ही योग्य है अंगरेजों के लायक नहीं क्योंकि इसमें शरीर की कुछ भी कसौटी नहीं होती! ऐसी स्विसबैक लंडन की पैरिस प्रदर्शिनी में भी देखी थी। पैरिस प्रदर्शिनी की भांति वाटर शूट भी यहां पर बनाहै। यहांपर नौका एक सौ तीस फीट की दूरी में पछत्तर फीट की उंचाई से छूट कर एक छोटीसी धारा में गिरती है। आरोहियों को इसमें भी अपूर्व आनन्द आता है। यहां पर रंगभूमि (नाटकभवन) भी बहुत सुन्दर बनी हुई हैं। चित्रपटी का तमाशा जिस में दक्षिणी अफ्रीका के कई भीषण संग्राम दिखलाए गए थे बड़े ही शिक्षादायक थे।

कम्पनी के इलेक्ट्रिक स्टेशन में बड़े बड़े कल कारखाने दर्शकों को अपनी कार्य्य क्षमताका अलगही परिचय दे रहेहैं। दो सहस्र अश्वशक्ति का एन्जिन सम्पूर्ण इमारतके कलपुरजों को निरन्तर चलाते हुए और रात्रिमें दीपावली को प्रकाशित करते हुए मानों उच्चस्वर से डंका दे रहा है कि हे शक्तिमान लोगो तुमभी मेरी तरह निःस्वार्थ मेहनत करके अपनी कर्मण्यता और शक्तिमत्ता का परिचय दो। साइकिलट्रैक अर्थात् पांवगाड़ी दौड़ाने का स्थान पौन मील के घेरे में बना हुआ है जहां पर दौड़ लगाने वाले खिलाड़ी लोग सदा बाजियां लगाया करते हैं।

बुर्ज की उंचाई छः सौ इकीस फीट है जिसके भीतर खूब लम्बी चौड़ी दालानें बनी हुई हैं जिनमें अनेकों स्मारक पदार्थ स्थापित हैं। पान भोजनकी मेजें भी यहां पर सर्वदा लगी रहती हैं। यहां की प्रधान बड़ी नाटकशालामें नित्य दो बेर खेलहुआ करते हैं। इसमें तीन हजार कुरसियां बिछी रहती हैं। बुर्ज की मंजिलों में चढ़ने के लिए वैद्युत उठान (lifts) लगे हुए हैं जिनपर

से चढ़ने में बड़ी सुगमता रहती है। बुर्ज में कई मंजिलें हैं परन्तु चारसौ फीट वाली मंजिलसे लिवरपूल की बहारदार झांकी देखने में बड़ी सुघर जान पड़ती है। उठान द्वारा पूरे छःसौ फीट की चढ़ाई एक मिनट से भी कम अवसर में पूरी होजाती है। ऊपर जाकर लिवरपूल की बस्ती पूरे पैंतीस मील के बिस्तार में देखिए। फिर मरसी नदी में जहाजी मस्तूलों का ताल बन निहारिए। आंखों को यदि कुछ दूर आगे जानेकी स्वतन्त्रा दे सकें तो मरसी मुहाना निहारिए जहां पर आइरिश सागर की बिशाल हिलोरें मरसी का सप्रेम आलिंगन कर रही हैं।

हम जब अपने जहाज हारडिंग द्वारा लिवरपूलको आरहेथे तब इस मुहाने पर समुद्रने कैसा झकझोरा दिया था कि क्याकहैं नितान्त बेसुध करदियाथा! पर वही हिलोरें आज ऊंचे चढ़कर देखने से नदीनदके प्रेमालिंगनवत प्रीत बोध होतीहैं। सो हमारे कवियोंने सचही कहाहै कि इच्छापूर्ति सुख और इच्छाबिघातही दुखहै सुख दुखकी इससे सुबोध अन्य कोई परिभाषा नहीं होसकती। इसीसे तो इच्छापूर्वक युद्ध ठानने में अनेकों प्रकार के क्लेश और क्षत, बिक्षत एवं प्राणत्यागपर्य्यन्त मेंसुख और उत्साह जानपड़ता है परन्तु साधारणतः तनिक शिरपीड़ा भी असह्य होजाती है।

न्यूब्राइटन टावरके विषय अधिक कहांतक कहैं पाठक उसकी सुन्दरता और उपयोगिता का इसीसे अनुमान करलेंगे कि उस की लागत साठलाख रुपयेकी है। और इसमें खेलने कूदने और सैर करने के लिए पिछलेसाल पौनेदोकरोड़ के लगभग आदमी आएथे। अवश्यही यहां आने और सैरदेखने के लिए फीसलगती है जिसकी आमदनी सेही टावरकम्पनी सब कारबार निर्बाहकरके अपना मूलधनभी बटोरती है।

पोर्ट सनलाइट PORT SUNLIGHT

लिवरपूलके सनलाइट साबुन कारखाने को. आजकल हिन्दुस्तानमें प्रायः सभीलोग जानते हैं। एक साबुनका कारखानाही क्या आजकलतो हमारे सभी कारखाने—जीवनमरण—इंगलिस्तानके बायेंहाथ के खेल होरहे हैं। सो वहांके कारखानोंको भलाहम क्यों न जानेंगे ? पर जानते नाममात्रही को हैं। अर्थात् जिनअर्थ शास्त्रीय नियमोंपर उन कारखानों का आधार और उन्नतिहै उनसे हम नितान्त अनभिज्ञ हैं। और न उनलोगोंकी रक्त शोषिणी चालौंहीं को समझते हैं ! ! ! कहतेहैं कि पोर्ट सनलाइट जायदाद के मालिक लिवरब्रादर्स ने केवल पंद्रहवर्षों के परिश्रम और उद्योग से यह विस्तारित कार्य्यालय स्थापित कियाहै जिसमें आज तीन हजारसे ऊपर स्त्रीपुरुष काम काजकरके जीविका निर्बाह करते हैं।

यह कारखाना दोसौबीस एकर भूमिके बिस्तार में बनाहै और अनेकों कल कार्य्यालयोंके अतिरिक्त यहां छःसौसे ऊपर अनेकखंडोंके मकानात बनेहुए हैं जिनमें कामकाजी तथा अन्य लोग अनुमान दशहजार अपने परिवारोंसहित निवास करतेहैं।

कारखाना अकेले साबुनका है। पाठक, उसी साबुनका कारखाना जिससे हाथमुंह और कपड़आदि धोते हैं और जिसके अभाव में आप सज्जी और रीठेसे काम चलालिया करते हैं। साबुन जैसे तुच्छ पदार्थका ब्यवसायी बनियां कितनाबड़ा महाजन बन सकताहै ? कदाचित आप बिचारमें नहीं लासकते ?

स्थानिक बिभाग और कार्य्य के सिवाय देशान्तरों से जो बस्तुएं आतीहैं यथा चरबी आस्ट्रेलिया और अमेरिका आदि देशों से—और बिनौले आदि मिश्र और हिन्द से इत्यादि इनके कारबारी तथा बिदेशों में माल बेंचने बिकवाने

वाले कारिन्दे आदि सैकड़ों सर्वत्र फैलरहे हैं। इस कम्पनी के कितनेही जहाजभी चलते हैं जिसमें कईतो आस्ट्रेलियासे यहांको तेलही ढोनेमें रातदिन दौड़ाकरतेहैं। पोर्ट सनलाइट गांवके प्रायः सभी लोगोंका आधार इस कारखानेपर है। या योंकहिए कि इस कारखाने के लिएही यहगांव बसाहै।

मकान के प्रधान द्वारपर एक खूब बड़ीसी घड़ी लगीहुई है फाटकपर रक्खीहुई (Visitors Book) किताबपर हस्ताक्षर करने के बाद अन्दर जाकर देखिए कि बहुतबड़े सजे सजाए कमरे (Hall) में पहुंचेंगे जहांपर सैंकड़ों स्त्री पुरुष लेखक (मुहर्रिरी) के कार्य्य में नियुक्तहैं जिनमें एकसौसे ऊपर टाइपराइटर मशीनसे कामकरतेहैं। आगेबढ़कर छापाखाना देखिए। यहांपर चालीस सादी छापेकी कलैं (Single Cylinder Machines) चलती हैं जिनमें साधारण किताबें और ब्यापार संबन्धी कागज पत्र छपते हैं। इनके सिवाय तीन अमेरिकन दुतरफी मशीनें (American Rotary Machines) भी चलती हैं जिनमें एकसाथही कागजके दोनोंओर दो तरहके रंगों में छापाजाता है। यह हमारेलिए बिलकुल नवीन आविर्भाव था। यहमशीन दोतरफा छापनेके अतिरिक्त कागजके तखतोंको काटकर सोलहपेजी वरके भी भांजदेती हैं। शीघ्रता ऐसी कि हजारोंताव कागज दोनोंओर छाप, काट, लपेटकर आननफाननमें फेंकदेती है। पाठक! इतनेही पर छापेकी समाप्ति नहींहै। तीन और बड़ी बड़ी पंचरंगी छापनेवाली मशीनें (Five Colour Rotary Printing Machines) हैं जोकि साबुन के पंचरंगे कागजीबक्स छापती हैं। मोटे कागजके टुकड़े प्रेसके जालमें लगादिएजाते हैं बस यह स्वयम् उन्हें छापकर बक्सके रूप में काटकूटकर तय्यार करके उगलदेती हैं। यह कलैं साढ़ेछःघंटे

रोज कामकरती हैं और सप्ताह के अड़तालीस घंटोंमें बारहलाख बक्स छापकाटकर बिलकुल तय्यार करके देदेती हैं। क्या आश्चर्य्य क्षमताहै, कुछ ठिकाना है ? छापने में स्याही, रंग आदि जोकुछ सामान मसाला लगता है वह सभी इस कारखाने मेंही तयार होताहै ।

आगे चलकर एक ओर जिल्दबन्दी का कार्य्यालय देखिए। इसमें किताबें सीनेवाली बीस कलैं हैं। जुजबन्दी करने, इकट्ठी करने, बराबर काटने और सीने की मशीनैं कैसी शीघ्रता और शुद्धता से काम करती हैं कि देखतेही बन आता है। इनकलों में प्रतिदिन चार लाख बीस हजार जुज अर्थात् प्रत्येक १२८ पृष्ट की एक लाख पुस्तकैं सिलाई, कटाई आदि होकर तयार होजाती हैं। कपड़े की जिल्द बांधनेवाली कलों की बड़ी बड़ी रीलों में थान के थान कपड़े लपेट कर लगा देते हैं और कागजके पट्ठे गट्ठड़ के गट्ठड़ नियत स्थान में धर देते हैं, बस मशीन आप से आप सभों को यथोचित टाल भांजकर प्रतिदिन नौ हजार जिल्दैं तयार करके दे देतीहै। रूलिंग, कम्पोजिंग, इलेक्ट्रोटाइपिंग, स्टीरियो टाइपिंग (Ruling, Composing, Electro-Typing, Stereo-Typing) आदिकी नवीन आविष्कृत कलैंभी अपने अपने कामोंमें लगीहुईहैं। कागजके बक्सों में तारकी कीलैं जड़नेवाली मशीन भी आश्चर्य्य जनक कार्य्य करती हैं। फिर काठ के बक्स बनानेवाली कल का काम देखकर तो मशीन के कर्ता की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकते! यह छोटीसी मशीन एक ठोंकमें छः कीलैं जड़तीहै। तख्ते के टुकड़े मिला मिलाकर एक आदमी पेंचमें डालता जाता है और कल छः छः कीलैं जड़कर अलग करती चली जाती है। इस भांति यह कल प्रतिदिन बीस हजार बक्स तयार करती है।

जिन बस्तुओं से साबुन बनता है उनके जांचने और शोधने का कारखाना ऐसा सच्चा परीक्षक है कि ढेरके ढेर चरबी, खार आदि बस्तुओंके साथ क्या मजाल कि एक तिनका भी अन्य बस्तु का चला जावै। कारखाने भर में एक स्थान से दूसरे स्थान को बक्स या साबुन आदि लेजाने के वास्ते चलते हुए तखते लगे हैं जिनपर बात की बात में सैकड़ों मन पदार्थ स्थानान्तरित होते रहते हैं। यह तखते प्रत्येक मशीन के निकट से होते हुए गुदामों की ओर चले गएहैं। सड़कों पर होकर माल ढोया जाना पहिले देखा सुना था परन्तु माल ढोनेवाली सड़कों को यहीं पर देखा। हम आश्चर्य्य करते थे कि अंगरेज लोग जो यह लाखौं करोड़ों बैल, गोरू, सुवर, मेढ़े आदि खा डाला करतेहैं इनके चमड़े से तो जूते आदि बनाते हैं पर चरबी क्या होती होगी? परन्तु सनलाइट कारखाने की अतलगुदाम को देख वह कौतूहल बिलकुल मिट गया। लाखौंमन सुवर, गाय, आदि पशुओं की चरबी यहां नित्य खर्च होती है, और यही साबुन लेलेकर हम लोग अपने बदन मंडल को सुबासित करते हैं। बलिहारी ऐसी रुचि की!

पाठक! सभ्यता की आज कल कितनी बड़ी उन्नति हुई है कुछ ठिकाना है? खार जैसी अपवित्र मृत्तिका और चरबी जैसी अपावन बस्तु से साबुन जैसा शुचिकर पदार्थ बनाना आश्चर्य्य उन्नति नहीं तो क्या है? शोक इतनाही है कि जहां माटी, पत्थर कूड़ा, करकट और पशुओं के चाम चरबी एवं बाल दांत तक बड़े बड़े उपयोग में आते हैं तहां हम और हमारे हाड़ चाम ऐसे व्यर्थ हैं कि निषिद्ध खादके काम तक में भी नहीं आसकते! मस्तिष्क और जीवन की बातही क्या कहैं क्योंकि इनका तो हम में सर्वथा अभावही सा है!!!

इतना सब देख भाल कर अब उस स्थान को देखिए जहां पर साबुन बनता है। एक सौ आठ बड़े बड़े बासन वा कड़ाह अग्नि की तेज आंच से उबल रहे हैं। हर कड़ाह कोई चौदह फुट गहरा है जिसमें साठ टन साबुन अंटता है। यह भी एक आश्चर्य्यमय दृश्य है। अग्नि की आंच से कड़ाह में पड़े हुए, तेल, चरबी, खार, आदि पदार्थ खद बद करके इस तरह पर बबूले छोड़ते हुए पक रहे हैं मानो हर बस्तु अपनी बड़ाई के मद में दूसरी चीज को तुच्छ समझ कर परस्पर मिलने से इन्कार कर रही है और बलपूर्वक लड़ झगड़ कर अलग अलग रहना चाहती है। थोड़ी देर खड़े खड़े यह तमाशा देखते रहिए। झगड़े को शान्त करने की कोई चेष्टा न कीजिए और न अग्नि को मन्द होनेदीजिए। कुछ देर में स्वयमेव सब शास्त्रार्थ शान्त होजायगा, खद बदानाभी बन्द होजायगा और प्रत्येक पदार्थ एक दूसरे से इस भांति मिलकर एक होजायगा कि फिर चरबी, तेल, या खार आदि का कहीं नाम निशान भी न रह कर एक पदार्थ और एक नाम वही साबुन रहजायगा। यही बनाना सम्पूर्ण कार्य्यालय का मुख्य उद्देश्य है। खड़े खड़े यहसब लीला देखतेहुए मेरेमनमें न जानें क्या क्या उधेड़बुन होतीरहीं !

हमारे देशमें आजकल जो यह सैकड़ों धर्म, सम्प्रदाय और जाति आदिके झगड़े उठखड़ेहुए हैं और परस्पर एक दूसरेका खंडन और विरोध करते हैं यहसबभी क्या जातीयतारूपी अग्नि की आंचसेही खौलउठे हैं? तबतो चिन्ह बहुत सुन्दरहैं। संभवहै कि समयपर यहसब परस्पर मिलजुलकर समस्त बड़ाई छोटाईको समान करके एकरूप, एकपदार्थ, एकदेशीय, एकजाति बनकर स्वयम् पवित्र और संसारके लिए शुचिकर बनजावैं !

पाठक, परमेश्वरकी लीला अपरम्पार है! उनके खेल ऐसे ही हुआकरते हैंतनिक तनिकसी बातों के भीतर बड़े बड़े आशय रहा करते हैं। सो क्या जानें हमारे इन लड़ाई झगड़ों और कलह बिवादों के बीचमेंभी कुछ भलाई छिपीहो? परन्तु भय यही है कि इन क्षणिक खदबद करने वाले बुलबुलों से घबराकर हम अलग अलग न होजाएं, नहींतो निःसन्देह उसीभांति नाशहोजावेंगे जैसे कड़ाहमेंसे छलके हुए बिन्दु नाश होजाते हैं। कड़ाह में उत्तापदेनेका तात्पर्य्य केवल पकाने के लिएहै नकि खदबद कराने और बुलबुले उठानेका परन्तु पकने के पहिले बबूले उठना आदि स्वाभाविकही होताहै इसीतरह बिद्वानों ने मानवबुद्धिको पक्कीकरने के लिए ज्ञानके उत्तापका बिधान कियाहै। जिसके योगमात्र से सम्प्रदायादिकों में परस्पर खदबद और मतभेद आदि होने लगजाते हैं परन्तु कुछकालतक ज्ञानोत्ताप जारीरहने से जब जातिके सम्पूर्ण सामुदायिक अवयवों में समान भावसे बिवेकरूपी उत्ताप पहुंचजाताहै तब सब एकाकारहोकर एकजाति और एकनाम धारन करके एकही महाब्रतके ब्रती होजाते हैं।

जबइन कड़ाहों में सब पदार्थ पककर मिलजुल एकाकार होजाते हैं तब दूसरे बड़े बड़े सांचों में ढालकर तहखाने के ठंढे कमरों में भेजजाते हैं। वहांपर साबुन ठंढाहोकर जमजाताहै और सांचे हटालिएजातेहैं। नीचेके घरोंमें जमाहुआ साबुनकाढेर पर्बताकार देखनेमें अजूबा पदार्थ जानपड़ता है।

मशीनों से साबुनकी बट्टियां काटना और उनपर नामादि के शब्द छापनाभी आश्चर्यदृश्यहैं। यह बट्टियां बनबन कर तखतेके चलतेहुए मार्गपर ढेरकेढेर में निकलने लगतीहैं और रास्ते के किनारे किनारे लैनकी लैन स्त्रियां (अंगरेज इन्हें लड़कियां

कहतेहैं क्योंकि यहसब बिनाब्याही अठारहबर्षसे लेकर ३० बर्ष तककी कुवांरी हैं) बैठीहुई उन्हें उठा उठाकर कागजों में लपेटतीं और बक्सोंमें धरती जाती हैं। इन कुमारियों की फुरती, सफाई और नन्हीं नन्हीं लाल लाल अंगुलियोंकी अबिराम गति देखतेही बनिआती है कहकर कैसे समझावैं ?

देखकर स्वभाव सुघट ईर्षाको मैंतो नहीं रोकसका ! इनकी कार्य्य क्षमता और अपनी बहिनोंकी निष्कर्मण्यता पर बिचार करके बड़ा दुःखितहुआ ! ! हमारे देशकी जनसंख्या का आधा भाग तो योंही स्त्रियोंकी अकर्मण्यता से अकाज होगया फिर एकभाग बच्चों और एक बूढ़ोंका निकाल डालिए। इसके अति रिक्त एक और बड़ाभाग पंडे, पुजारी, सन्यासी, भिखमंगे और भाट भांड़ आदिकोंका भी निकालनाही पड़ेगा, भलाफिर जहां एक कमानेवाला और आठ खानेवाले हैं वहांपर अकाल और दरिद्रताको कौन रोकसकता है ?

सुगंधित साबुनके कारखाने में जातेही मन मस्तिष्क अरघान से ताजे होजाते हैं। यहांकी शब्दांकिनी मशीनें अधिकतर सुन्दर और तीव्रगति वालीहैं। और कारीगर स्त्री पुरुषभी बिशेष चतुर और फुरतीले हैं।

इस पूरे कार्य्यालय को चलानेवाले दो बड़े बड़े एनजिन हैं जिनकी शक्ति बारह सौ अश्वबल के बराबर है। इसमें पचास बड़े बड़े भाफ पैदा करने वाले बाइलर हैं। जगह जगह पर कोयला पहुंचाने और राख निकालने आदि का काम भी बायु बेग सा होता है। एक बात और भी ध्यान देने योग्यहै कि बाइलरोंसे जो राख निकलती है उसकी यह देखने के लिए निरन्तर जांच हुआ करती है कि उसमें आवश्यकता वा उसके बल से अधिक वा कम

आंच तो नहीं हुई ? यह बात जली हुई राख या अधजले कोयलों की परीक्षा करने से जानी जाती है।

कार्य्यालय भर में एक दूसरे विभागसे लगाव रखने के लिए टेलीफोन लगे हुएहैं। जिनके द्वारा हर जन अपनी आवश्यकता को दूर रहते हुए भी ऐसे कह सकता है मानो वह सन्मुख बात चीत करता हो।

इतने बड़े कारखाने में जिसके हर कमरे में थोड़ी बहुत अग्नि सदाही बनीरहतीहै यदि दाह भड़कउठे तो कैसे शान्त कीजाय? इसका पहिले ही से बन्दोवस्त कर रक्खा गयाहै। सनलाइट फायर ब्रिगेड नाम से अपने ही कार्य्यालय के काम काजियों की एक पलटन बना रक्खीहै। जो आग बुझाने की कवायद-परेड फायर एनजिनों के साथ सदा किया करती है और ड्रिल, ड्यूटी और डिसिप्लिन में किसी सरकारी फौज से कम नहीं है। पानी बाहर के नलों से भी आता है और एक बड़ा भारी कूआ भी ५०५ फीट गहिरा बना हुआ है। एक और कूआ लगभग इतनाही बड़ा इन दिनों बन रहा था।

दिखलानेवाले ने हमसे कहा कि यह कूआ तय्यार होजाने पर कम्पनी पानी के लिए भी दूसरे की मोहताज न रहेगी जैसा कि यत्किंचित इस समय पर है। अर्थात् नलसे पानी लेना साबुन कर्तारों के विचार में दूसरे पर निर्भरता है! धन्य है स्वतंत्रता की ऐसी बढ़ती हुई चाह को!! एक हम हैं कि अपने बाप दादों के बनाए हुए कूपों को भी पाटकर अपनी आवश्यकताओं को हंसी खुशी के साथ जल कल के आधीन बनाते चले जाते हैं, नहीं सोचते कि यह प्रश्न धीरे धीरे जीवन मरण से सम्बन्ध रखनेवाला हुआ जाता है!!!

कार्य्यालय के सब विभागों में एक एक कमरा इसलिए अलग नियत है कि कारखाने में काम करनेवाला कोई व्यक्ति वहां जाकर अपने मतानुसार कोई प्रस्ताव वा विचार लिखकर प्रस्तुत करसके। सबको इस बातकी स्वाधीनता बल्कि उत्तेजना मिलती है कि काम काज की सुविधा, आय-व्यय की पड़ताल, समय-विभाग में परिवर्तन, वेतनादि की कमी बढ़ती, पदार्थों के संवार-सुधार, वा निज सम्बन्धी किसी भांति की वार्ता लिखकर कम्पनी को विदित करें। इनपर विचार करने के वास्ते नियत अवसरोंपर कमेटी-कौंसिलें बैठा करती हैं और इन पर यथायोग्य ध्यान देनेके अतिरिक्त प्रस्तावकों को यथोचित पारितोषिक भी दिलाती हैं।

कैसी सुन्दर व्यवस्थाहै, कैसी मनोहर कार्य्यवाही है, काम काजी लोग कितनी खुशी और कैसे मनचित्त से काम करते हैं यह सब बातें उपरोक्त सुप्रबन्धों से स्वयम् प्रगट हैं।

आगे पोर्ट सनलाइट गांव काभी थोड़ासा वृत्तान्त सुना देना हम आवश्यक समझतेहैं जहां पर कि इस कारखाने में कामकरने वाले हजारों स्त्री पुरुष निवास करते हैं। गांव में कम्पनी के बन वाए हुए छः सौ से ऊपर इकहरे और दोतल्ले मकानातहैं। और सड़कें लगभग चार मील के विस्तार में हैं। द्वारदेश परम रम्य छोटी छोटी झांड़ियों गुलाबादि पुष्पावलियों और हरित घास की क्यारियों आदि से जैसे शोभायमान दीख पड़ते हैं अन्तःपुर भी वैसेही आमोद प्रमोद और आराम बिश्राम के सभी सामान से भरपूर हैं।

इकहरे मकानों में एक रहायश की जगह, तीन शयन स्थान, एक बावरचीखाना और एक गुसलखाना होते हैं। तथा दो

तल्ले घरों में उपरोक्त स्थानों के अतिरिक्त एक बड़ी बैठक और कई अन्यतम शयनालय भी रहते हैं। मकानों की जाली शीशे दार खिड़कियों में सुन्दर रंग बिरंगे कटाव की झालरें और परदे बड़े सुहावने मालूम पड़ते हैं । दरवाजे सभी ऐसी कमानियों से लगाए हुए हैं। कि जाने-आने वालों को स्थान देने के पश्चात आपही आप बन्द होजाते हैं। गुसलखानों और बावरचीखानों में जल कल लगेहैं। हर कमरे में गैसके रोशनी की हांडियां लगी हुई हैं। सारांश यह कि सब घर सब साज सामान से भरपूर हैं। किसी बात की कमी नहीं छोड़ी गई है। सत्तुन के कारखाने में काम करनेवाले कुली मजूर आदि सब इन्हीं घरों में रहते हैं। अवश्यही कम्पनी इन लोगों से घरों का किराया लेती है और किराया, जल, रोशनी, सफाई, बगीचे आदि का अलग अलग होता है परन्तु नगरों की अपेक्षा बहुतही कम पड़ता है।

दरवाजे पर की छोटी छोटी फुलवारियों के सिवाय कुछ खेत भी कम्पनी ने तय्यार किए हैं जिनको कारखाने में काम करनेवाले लोग लगानपर लेकर उनमें अनेक प्रकार की तरकारियां, फूल, कन्दमूल आदि पैदा करते हैं। कृषि और पुष्प प्रदर्शिनी आदि के मेले भी हर बसन्त ऋतुमें हुआ करतेहैं जिनमें कई भांति के पारितोषिक भी दिए जाते हैं यह प्रदर्शिनियां मजूर लोग निजके व्यय और चन्दे से करते हैं।

गृहस्थी के आवश्यकीय सौदा सुलफ की सुविधा के लिए निवासियों ने मिलकर एक बड़ी सी सम्मिलित दूकान खोल रक्खी है जिसमें तीन विभाग, परचूनी, कसाई और बजाजे के रक्खे हैं। इसका प्रबन्ध एक कमेटी के हाथ में है सम्पूर्ण गांव के निवासी सब सौदा पत्री इसी दूकान से लेते हैं और साल

में हिसाब किताब करके जो मुनाफा होता है वह सब मेम्बरों के मध्यमें बांट दिया जाता है ।

ज्वाइंट स्टाक कम्पनी, या कोआपरेटिव सोसाटइी (Joint Stock Company or Co-operative Society) के नियमोंपर दूकान खोलकर ब्यौहार करना कैसा लाभदायक है यह हमारे देश में अबतक लोगों को भलीभांति विदित नहींहै । इसीसे हमारे मध्य में इस रीति का सर्बथा अभावही सा है परन्तु यदि सम्मति करके हम लोग इस भांति की कम्पनियां खोलैं तो बास्तविक बहुत बड़ा लाभ हो । ।

The Girls Institute—बाला बिनोद—गांव की सब कन्याओं ने एक सभा स्थापित कर रक्खी है जिसका नाम बाला बिनोद है । इसका उद्देश्य कन्याओं वा स्त्रियों की शारीरिक और सामाजिक उन्नति करना है । सभ्याओं को एक आना सप्ताहिक चन्दा देना पड़ता है जिससे उनको सभाभवन की सम्पूर्ण बस्तुओं के उपयोग का अधिकारहोजाता है । सभा स्थान सन्ध्या समय सभ्याओं के लिए खुला रहताहै वहां जाकर वे लोग कई रंग के खेल, गाना बजाना, पढ़ना, चित्रकारी आदि यथा रुचि काम करती हैं सभा की ओर से कई भांति की शिक्षाके क्लासभी होते हैं यथा, कपड़े धोना, कपड़े सीना, काटना, बेल बूटे बनाना, खाना पकाना, इत्यादि । इस सभा भवन के सन्मुखही एक टेनिस चौगान बनाहै जहां पर सन्ध्या समय सैकड़ों युवती बालिकायें पुतलियों की तरह फुरतीसे दौड़ धूपकर खेलती हुई गांव की शोभा को चौगुनी करती हैं ।

एक सुन्दर चौगान में कुछ इमारत बनाने के सामान एकत्रित हो रहे थे और कुछ मकानात बनते थे दिखलानेवाले ने हम

को बतलाया कि वह एक हौज (Swiming bath) बननेवाला है। उसने कहा कि यह हौज सौ फीट लम्बा और पछत्तर फीट चौड़ा गोलाकार बनेगा गहिराई किनारे पर तीन फीट और बीच में सात फीट होगी जिनमें दो लाख गैलन पानी रहा करेगा। किनारों पर जो मकान बन रहेहैं वह बस्त्र धारण करने के स्थान (Dressing Rooms) होंगे।

इंगलिस्तान में जलविहार (तैरने) का बहुत अधिक प्रचार है पानी में दौड़की होड़लगाना—एक दूसरेको छूना—बस्तु फेंककर खोजलाना आदि कई भांतिके जलखेल करते हैं। इनमें स्त्रियां भी बराबरका भाग लेतीहैं। साबुनके कारखाने में काम करनेवालों के लिए इन्हीं बातोंकी सुबिधाके वास्ते यह हौज बननेवाला है।

गांव में एक बहुतबड़ी इमारत अखाड़ेकी है। जिसमें तीन भाग, बालकों—स्त्रियों—और पुरुषोंके लिए अलग अलग हैं। इसमें तरह तरह की कसरतकरने के सामान मौजूद हैं। और शिक्षक भी नियतहैं। अखाड़े में प्रकाश और उष्णताका भी पूरा प्रबन्ध है। यहसबभी गांववालों के निज ब्ययसे परिचालित हैं।

Schools—पाठशालएं—गांवमें कई पाठशालाएं हैं छोटे बच्चों की चटशाल और ऊंचे दरजेके बिद्यार्थियोंकी पाठशालाएं अलग अलग हैं। बालक बालिकाएं एकहीठौर समस्तशिक्षा पातेहैं। छोटे बच्चोंको पढ़ानेवाली मेमें बालकोंको ऐसे दुलार से रखती हैं कि बच्चे अपनी निजमाताओं से अधिक इन मिश्रानियोंका प्यार करते हैं। स्कूलमें फोटोग्राफी शिक्षाकेलिए स्थान नियत है और वह ऐसा बनाहै कि चाहै जिससमय बिलकुल अंधेरा रात्रिसे भी अधिक काला बनसकता है फिर उसीदम दोपहरीकी भांति प्रकाशितभी होसकता है। स्कूलके बिचलेहाल में अरगन बाजा आदि

रक्खेहैं और रबिबारके दिन वहां धर्मसम्बन्धी व्याख्यान और शिक्षाएं होती हैं । बालकोंका बिगुलबैंड और ब्रासबैंड कैसे सुहावने और उनके मनमोदकारी हैं कि जिससे बालकों का स्कूल में जानेका चाव अधिक अधिक बढ़ता है ।

हम कहांतक गिनाएं–गांवकी सर्व सम्पन्नता इसीसे जानलेना चाहिए कि ऐसी कोईभी सभ्य आवश्यकता नहीं है जो निजगांव मेंही पूरी न होसके । बाग–बगीचे–फुलवारी–चौगान–थियेटर–नाचघर–गिरजाघर–संगीतशाला–चित्रशाला, प्रदर्शिनी भवन–साधारण भवन–(Public Hall) आदि आदि सभीबातें मौजूद हैं । भोजनालय भी (Hotels) कई हैं। एकहोटल बिशेष करके कुमारियों के लिएही है जिसमें एकहजार से ऊपर युवतियां एक साथ बैठकर भोजन पान करसकती हैं।पुस्तकालय अनेक बिषयों के कई हैं । पाठालय भी ठौर ठौर पर हैं । डाकघर, तारघर, सराय, प्याऊ आदि भी बनेहैं । अधिक क्या कहैं यदि गांव में किसीबस्तुका अभाव है तो वह केवल निरुद्यमता काहै । गांवभरमें चाहे जिसगली जिसओर जिससमय निकलजाइए कोने अंतरे खोजने परभी आप किसी को निरुद्यम, निरुद्देश्य नहीं पावेंगे । और यहीकारण सबकी हंसी खुशीका है ।

पाठक तनिक गहिरी दृष्टिसे देखिये ! एकमात्र साबुन के कारखाने का यह चमत्कार है ! अकेले साबुनके आधारपर सहस्रों जीवोंको उद्यम मिलताहै, सैकड़ोंभांतिके कारीगरों की रोजी चलती है । और संसारभरसे धन आकर्षण करनेका मानो महायंत्र चलाकरता है । एक हमहैं कि परमेश्वरकी दैनसे सैकड़ों सहस्रों प्रकारके पदार्थों को रखतेहुए भी हाथपरहाथधरे आकाशकी ओर ताका करतेहैं !

यहां एक परमसुन्दर बड़ा भोजनालय सुविख्यात नीतिज्ञ ग्लाडस्टोनके नामसे प्रसिद्ध है। इसकी प्रतिष्ठा उक्त महामन्त्री ने अपने हाथों सन १८९१ ई० में कीथी। इसमें बड़े बड़े भोजन भवनों के अतिरिक्त नाटक अभिनयों के सुन्दर मंच (Stage) भी बने हुए हैं।

Hulme Hall—ह्यूमहाल—नामक मनोहर मंदिर की स्थापना अभी १९०१ ई० में कोई तीनलाख की लागत से केवल स्त्रियोंके लिए हुई है। इसके मध्यस्थान में डेढ़ हजार जन एक साथ खानपान करसकते हैं। मध्यान्ह दो बजेके समय एकहजार के लगभग कार्य्यालय में कामकरनेवाली युवतियां एकसाथ बैठ कर भोजनकरतीं और परस्पर अनेक प्रकारके कथोपकथन करती हुई हमारे चित्तपर तो एक अपूर्वभाव उत्पन्न करती थीं!

पाठक! उपरोक्त ह्यूमहाल की रमणीगणोंको देखकर और अपने गांव गवईंकी खेतों में काम करनेवाली दुखिनी अबलाओं की दशाओं को सोचकर हमारे हृदय में जो आघात प्रतिघात हुआ था उसका उल्लेख करके हम आप का समय व्यय नहीं कराना चाहते, आप स्वयम् यथा रुचि इसपर बिचार कीजिएगा। और यदि अपनी दुखिनीबालाओं की अवस्था सुधारने की ओर आप का चित्त कुछ झुके तो यथाशक्ति उद्योग भी कीजिएगा।

इस चौके में भोजन का व्यय क्याहै सो भी सुन लीजिए। प्रथम तो प्रवेशिका सुल्क (Entrance Fee) एक आना देकर भीतर जाने का टिकट मिलता है। खाद्य पदार्थों का निर्ख इस भांति है:—

Meat and Potatœs मांस और आलू एक बर्तन दो आना
Roast Mutton भूना हुआ भेड़ का मांस ,, दो आना

Pudding मेवेदार, अंडे का हलवा	एक बर्तन	एक आना
Soup with slice of bread शोरवा-रोटी	,,	एक आना
Tart समोसे	प्रति	एक आना
Tea चाय	प्रति प्याली	आध आना
Bread and Butter माखन आर रोटी		आध आना वा एक आना

इसके अतिरिक्त दूध. क़ाफी अथवा अन्य पेय पदार्थों यथा ब्रान्डी, ह्विस्की, पोर्ट, शेरी आदि का दाम अलग पड़ता है।

ऐसे बड़े कार्य्यालय में जहां सहस्रों अश्वबलवाले एनाजिन चला करते हैं वहां कभी कभी आकस्मिक घटनायें होना भी स्वाभाविक हैं, अतः ऐसे अवसरों के लिए तात्कालिक उपचार के हस्पताल कारखाने के अन्दरही बने हैं एवं घायलों को उठाने, लेजानेवाले बिस्तरे और गाड़ियां बिशेष रूप से निर्मित की हुई हर घड़ी तय्यार रहती हैं। इसभांति प्रायः सम्पूर्ण अवस्थाओं में उपयोगी पोर्ट सनलाइट कार्य्यालय और गांव हमको अनेकों प्रकार के अनुभव और शिक्षायें देता है।

अंगरेजों की एक कहावतहै Cheerful homes make cheerful workers अर्थात् प्रसन्नतापूरित घरोंके निवासीही फुरतीले कामकाजी होते हैं। सो इंगलिस्तान भरमें इस बातका पूरा पूरा ध्यान रक्खा जाताहै कि लोगों का गृही जीवन आनन्दमय हो। इसीसे उनके सभी काम सफल होते हैं। सबके भलेमें अपना भला समझना संसार का अटल नियम है। जो जातियां इस नियम को जानती, मानती और बर्तती हैं उन्हीं का पूरे रूप से भला होता है। और जो इसके बिरुद्ध अपनी अपनी डाफली अपना अपना राग अलापती हैं उनका अधःपतन किसी तरह से रोके नहीं रुक सकता!

हमारे देश में सैकड़ों सहस्रों महाजनों के नित दिवाले निकलते चले जातेहैं ! हमारे सभी काम चाहे वह कल कारखानें सम्बन्धी हों वा दमड़ी सूद के ही हों बराबर फेल होते रहते हैं ? और उधर अंगरेजों के काम देखिए ! आज दो चार दस बीस भलेमानसों ने मिल जुल कुछ धन एकत्रित करके एक कारखाना खोलानहीं कि कल्ह लखपती करोड़पतीही नहीं बनते बल्कि संसार के उतार चढ़ाव के रोकने और उठानेवाले बनजातेहैं । इसका कारण खोजनेके लिए आप को दूर नहीं जाना पड़ैगा । आपही के विद्वानों ने बतला दिया है—

बिश्वासो धर्ममूलंहि प्रीतिः परम साधनम् । स्वार्थनाशस्तुवैराग्यं, इत्यादि धर्म अर्थात् औचिन्त्य पालन में कृतकार्य्यता का मूल पारस्परिक बिश्वास है और उसका साधन है प्रीति । अब बिश्वास कैसे उत्पन्नहो ! इसकेलिए शास्त्रकार कहते हैं—अभ्यासवैराग्याभ्यां तन्निरोध: । अभ्यास अर्थात् निरन्तर प्रवृत्ति और वैराग्यसे चित्त बृत्तियोंका निरोध होताहै तभी परस्पर में बिश्वासकी स्थिति होती है और स्वार्थ नाशही को वैराग्य कहतेहैं । पाठक ! आया कुछ समझ में, अंग्रेजों की कृतकार्यता का कारण ?

समुदाय रूपमें चाहै हम आजकल कंगाल होगए हैं परन्तु व्यक्तिगत धनकी हमारेयहां अबभी कमी नहींहै । जिन रियासतदारोंकी प्रजा दाने दाने को मोहताज दरदर डोलती फिरती है उन्हींको हमने दरबारों और अन्यान्य लाटभोजनों में प्रतिघंटे सहस्रों, लाखों रुपया व्ययकरते देखाहै !!! इसीसे तो कहना पड़ता है कि हममें आत्मगौरव और आत्मप्रेमका अभाव है नकि धनका ! सो भाई सचमुच हमैं अंग्रेजों से बहुतकुछ सीखना है ।

हमने सनलाइट कारखाले और गांवका वर्णन बिशेषरूपसे

इसीलिए कियाहै कि इससे इंगलिस्तान देशका कार्य्य और रहन सहन रीति का एकप्रकार पूरा नमूना मिलजाता है और उससे हम अपने लिएभी बहुतेरी शिक्षाएं निकाल सकते हैं । हमलोग सभ्यराजा की प्रजा होनेके कारण साम्प्रतिक सभ्यता (Todays Fashion)की आवश्यक वस्तुओंका उपयोग किए बिना रहनहीं सकते ! यह सभ्यताकी वस्तुएं साबुन, दियासलाई, सूई, मोमबत्ती, कागज, पेंसिल, चाकू आदि छोटी छोटी चीजोंसे लेकर घड़ी, छड़ी, साइकिल और अनेक भांति के वस्त्राभूषण आदि पर्य्यन्त हैं ।

पिछले समय में हमारी कंगालीका कारण केवल अन्नका अभाव हुआकरताथा जो अनावृष्टि आदिकेकारण दैवाधीन समझा जाताथा परन्तु आजके चमकते दिनमें केवल अन्नहीका अभाव दरिद्रता नहीं है बरन सभ्यताकी उपरोक्त वस्तुएंहीं हमको अधिक तर कंगाल बनारही हैं ।

पिछले समयका जगतसेठ गाढ़ेकी मिरजई और धोती पहिन कर राजदरबार में ऊंचा आसन पासकता था परन्तु आजकल दसरुपए का लेखनीचन्द भी बिना कोट पतलून पहिने अपनी मजूरीकी मेजपर कलम घिसने के वास्ते नहीं बैठपाता !

हम मुक्तकंठसे स्वीकार करतेहैं कि यहसब अवनति नहीं उन्नतिही है संसार में नई नई वस्तुओंका बनना और नए नए आविर्भाव अवश्यमेव उन्नति और वास्तविक सभ्यता है । परन्तु जो जातियां उन चीजों को स्वयम् न बना सकैं वा न करना चाहैं उन्हें तो हमारी समझ में सभ्य जीवन की अपेक्षा असभ्य वा जंगली जीवनमें ही सुख अधिक होगा । परन्तु एकबेर सभ्यता की चमक दमक देखकर फिर असभ्यता के अंधेरे गढ़े में गिरना

किस को पसन्द होगा ? इसी लिए कहते हैं कि ऐ देश के धनी मानी महाशयो ! परमेश्वरीय नियम प्रजामात्र को एकसां बनाने की ओर चल रहा है । यूरोपियन दुनियां की ओर आंख खोल कर देख लीजिए यदि आप अपनी कंगाल जाति को अपने धन सम्पति का सहभोगी नहीं बनाते तो निश्चय जानिए परमेश्वरीय नियम आपको उन कंगालों के कन्दमूल का भागी अवश्य बनावेगा । धन सम्पति का उपभोग अकेले नहीं किया जासकता क्योंकि यह पार्थिव उपज है और सृष्टिकर्ता ने उसे प्राणिमात्र के उपयोगार्थ रचाहै सो वह स्वार्थी का नाश अवश्यमेव करते ही हैं । इंगलिस्तान आदि यूरोपीय देशोंकी उन्नति दिनपर दिन इसी हेतु से हो रही है कि वहां के धनी लोग अपनी ही उन्नति से कदापि सन्तोष नहीं करते वरन जातिभरकी उन्नतिमें अपनी उन्नति मानते हैं ।

मैनचेष्टर यात्रा TRIP TO MANCHESTER.

दो तीन दिन तक लिवरपूल में रह कर यथा संभव नगर के विख्यात स्थानों, इमारतों, कारखानों और देवालयों आदि को भलीभांति देखभाल कर एवं लार्ड मेयर आदि के आदर सत्कार आदि ग्रहण करके हम लोग मैनचेष्टर देखने के वास्ते रवाना हुए । यद्यपि रेलद्वारा मार्ग सुगम और शीघ्रता का था तथापि हम लोग विलायती सभ्यताके अधिक अधिक चमत्कारों को देखने के अभिप्राय से नदी मार्ग से गए ।

लिवरपूल से मैनचेष्टर को एक नहर खोदलेगए हैं जिसको शिपकनाल कहते हैं । इसकी लम्बाई कोई छत्तीस मील है । नहर का पाट कमवेश सवासौ फुट और गहिराई छब्बीस फीट है । दो

विशेष धुवांकशों में सवार होकर हमारादल प्रातःकाल कोई दस बजे के समय लिवरपूल से रवाना हुआ और छः सात घंटे में मैनचेष्टर पहुंच गया। यह यात्रा बड़ी मनोहर और हर्षदायक हुई। किनारों पर झुंड के झुंड स्त्री पुरुष, बालक युवा एकत्रित होकर चियर्स आदि की ध्वनि से आकाश गुंजायमान करते थे। हमारे साथी लोग भी उत्तर देने से एकबेर भी नहीं चूके !

शिपकनाल के किनारे किनारे प्रायः सर्बत्रही नगर और ग्राम बसे हुए हैं। या यों कहैं कि बस्तियों के बीच से होकर यह नहर निकाली गई है सो किनारों पर के दृश्य हमारे लिए जैसे नवीन थे हम लोग भी उसी भांति उन दर्शकों के वास्ते अजूबा पदार्थ थे सो तमाशा दोनों ओरके लिए एकसां मन मोहन था। हमारे साथ किश्तियोंपर शिपकनाल कम्पनी के चेयरमैन तथा अन्यान्य कतिपय राजकर्मचारी एवंकई समाचार पत्रोंके रिपोर्टर लोग पार्टी की भांति सवार थे जो हमें मार्ग के सम्पूर्ण दृश्यों एवं अन्य बातों को भलीभांति बतलाते समझाते जाते थे। सत्कार पार्टी की ओर से जलपान आदि (Luncheon) के लिए मेवे फल इत्यादि किश्तियों पर रख लिए गए थे जोकि सब लोगों को इस अवसर में दो तीन बेर करके खिलाए पिलाए गए। जहां कहीं मार्गमें लाक (Locks) आदिके बीचमें हमारी किश्तियां दो चार मिनट के लिए ठहरती थीं वहां किनारोंपर स्त्री पुरुषों और बालक बालिकाओं का मेला लग जाता था। किश्तियों पर से बहुतेरे लोग केला, नारंगी, आदि फल किनारों पर खड़ी हुई स्त्रियों और बालकों की ओर फेंकते थे जिन्हें स्त्रियां तो लेकर मुस्कराती हुई थैंकयू (धन्यबाद) कहती थीं किन्तु बालकों में खालसा सेना की लूट के भांति गदर सा मच जाता था।

इस मार्ग में सात आठ लाक याने नहर की झील कई शीर्ष स्थायी पुल, कई नौकाओं के पुल और कितनेही नहर साफ करनेवाले पंच मिले जो सब अपने आपही आश्चर्य्यपदार्थ थे। कई अस्थिर पुल जिन्हें (Swing Road Bridge) कहते हैं मार्ग में मिलते हैं जिनका भार एक हजार टन से अठारह सौ टन तक है किन्तु एक तनिकसी कील के सहारे तत्काल हट कर स्टीमरों को मार्ग दे देतहैं और उनके निकल जाने पर तत्काल फिर पुल बांध लेतेहैं।

जिस तरह अस्थायी पुलों परसे सड़कें बनी हैं उसी भांति पुल के ऊपर से नदी भी निकाली हुई है। बारटन (Barton Swing Aqueduct) नामक एक स्थानपर चलनेवाले पुलके ऊपर से नदी की धारा निकाल दी है। जब किश्तियों को मार्ग देने के लिए पुल को हटाते हैं तब नदी की धारा को भी दोनों ओर फाटकों से रोक देते हैं। फिर जब पुल को यथा स्थान कर देते हैं तब नदी धारभी बहने लगतीहै। हमारी पार्टीके अंगरेजोंने यह समझकर कि कदाचित यह पुल हिन्दुस्तानियों को अवश्यही आश्चर्य्यमय जान पड़ा होगा प्रायः सभी लोगों से इसके लिए पूंछा। सब लोगों ने अपनी अपनी समझ और मति के अनुसार पुलके बनाने की तारीफ की थी। हमारे साथ के एक बलूची सरदार ने जो यत्किंचित् अंग्रेजी भी बोलते और अपनी अनोखी चाल ढाल के सबब समाचारपत्रवालों के विशेष लक्ष्य थे इस पुलको (Most good ? thing in England) इंगलिस्तान की बहुतही अच्छी वस्तु कह कर प्रसंशित किया था, सो इस वाक्य को लेकर दूसरे दिन प्रातःकालके समाचार पत्रोंमें कालमके कालम रंगे गए थे।

हमारी तो यह सदाही की टेंवहै कि दूसरों के मनसोहातीबात (यदि वह असत्य न हो)– सत्यम्ब्रयात् प्रियम्ब्रयात् कहने को अच्छा समझते हैं वैसेही इस विषयमें भी सभों ने कहा, यहां तक कि बलूची महाशय ने मोस्ट गुड (Most good) कह डाला परन्तु अखबारवालों ने तो इसबात को लेकर हम लोगों की अनभिज्ञता की पूरी तस्वीरही खींच डाली ! सो अंग्रेज लोग हमको वास्तविक जानने समझने में कितना अनजान हैं यह बात प्रत्यक्ष प्रगट हो जाती है। इसी तरह छत्तीस मीलकी दूरी में बसे हुए इंगलिस्तान के गांव गंवई, खेतबारी और देहाती जनसमूह को देखते भालते हम लोग मैनचेष्टर के बन्दर में पहुंच गए।

वहां पर बहुत बड़ी भीड़ के साथ नगर के लार्ड मेयर और फौजी करनल कमांडिंग अपने स्टाफ अफसरों सहित अगवानी के वास्ते उपस्थित थे। अगवानी का नेगचार होचुकने पर नागरिक बैंडों और उपरोक्त अफसरों की पेशवाई से हमारा दल नगर को रवाना हुआ। जनवासा नगर के चिड़ियाखाने के नाचघर में नियत था जोकि बन्दर से पांच मील की दूरी पर था और जाना पड़ा पैदल सो अच्छा कदमरंजा हुआ। सम्पूर्ण मार्ग के दोनोंओर पटरियों पर, एवं दरवाजों, खिड़कियों और ट्रामगाड़ी की छतों पर जनसमूह से खचाखच भरा था उनकी आकाशभेदी चियर्स ध्वनि भी हमारे साथ कदम मिलाएहुए बराबर चलती थी। जितनी दूर वा देर तक हम लोग चलते रहे नगरबासियों की सत्कारसूचक ध्वनि भी बन्द नहीं हुई। एक समाचारपत्र को यह पांच मील की दूरी पैदल पार कराना अधिक जान पड़ी थी सो उसने हम लोगों को तनिक प्रसन्न करने के लिए यह रिमार्क दिया था:—

* * * It was a long march of fully 5 miles.

But it was lightened and brightened all the way by immense numbers of spectators, who lined the foot paths, crowded the windows, packed the tops of trains and blocked up the ends of side streets in their anxiety to see and to honour the dusky soldiers of the King whose loyalty and valour was visibly brought to mind by the medals which were to be seen glittering on the breasts of most of them.

बन्दरगाह से जनवासा बेलेव्यू (Belle Vue) की यात्रा पूरे पांच मील की लम्बी थी। परन्तु दर्शकों की भीड़भाड़ ने इसे सहज और सुहावनी बना दिया था। इन दर्शकों की बहुत बड़ी भीड़ें सड़कों के दोनों ओर, खिड़कियों और मकानों तथा ट्राम गाड़ियों की छतों पर और चौरस्तों पर अपने राजा के पूर्वी धुंधले सैनिकों के देखने, आदर देने और स्वागत करने के वास्ते एकत्रित हो रही थी। इनकी राजभक्ति और बहादुरी उनके बक्षस्थल पर लटकते हुए चमकीले तगमों की झलक से दिखलाई पड़ती थी।

आदर सत्कार, पान भोजन।

पाठक ! चाहे हमसे आप मत भेद ही क्यों न करें पर हमतो यही कहेंगे कि हिन्दुस्तान की उन्नति में सबसे बड़ी बाधा बिदेश यात्रा निषेध है और देशान्तर यात्रा निषेध खान पान के व्यर्थ आडम्बर से है !!! हिन्दुस्तानियों को यात्रा में सबसे बड़ी चिन्ता और असुविधा खाने पीने ही की होती है ! और इसी कष्ट के डर से वे घर के बाहर पांव धरते भी सकाते हैं !!! सो मैनचेष्टर यात्रा में भी यह कष्ट हमारे दल को भुगतनाही पड़ा ! जहाज पर से दो दिन के खाने योग्य पकवान बना लाए थे उसी बासी

भोजन पर सन्तोष करना पड़ा ! यद्यपि लार्ड मेयर ने सम्पूर्ण दल को Dinner खाना खिलाने की इच्छा प्रगट की थी परन्तु हिन्दू कपाल में उसके वास्ते अभी थोड़े दिनों के लिए और भद्रा हैं ! सो उनकी महिमानी में हम लोगों ने केवल जलपान (Luncheon) मेवे, फल और बिस्कुट मिठाई ही आदि ग्रहण किया । लार्ड मेयर ने बड़े प्रेम भरे शब्दों में हिन्दुस्तानी पाहुनों (Our visitors from India) के स्वास्थ्यपान का प्रस्ताव करतेहुए कहा कि जहां तक उनकी स्मरणशक्ति जाती है मैनचेष्टर ने ऐसा महत्व पूर्ण दृश्य पहिले कभी नहीं देखा था और यह दर्शपर्श बड़े गौरव का हुआ है । सैनिकों की पोशाक के विषय में उन्होंने कहा कि सब लोग ऐसी सुघरई से सजेहुएहैं मानो सुविचक्षणस्त्रियों ने स्वयम् उनका श्रृंगार किया हो । (Their dresses looked almost as if they had all been attended by ladies maids) स्वास्थ्यपानके उत्तर में हम लोगों की ओर से कर्नल डापनने कहा कि यदि हिन्दुस्तानियों के आनेसे मैनचेष्टर बासियों को हर्ष हुआ है तो उससे बहुतही अधिक हर्ष इन हिन्दुस्तानियों को यहां पर ऐसा सुन्दर स्वागत और आदर प्राप्त करके हुआहै । इसके पश्चात शिपकनाल की कृतकार्य्यता के लिए टोस्ट Toast of the success to the Ship Canal का प्रस्ताव हुआ जिसके उत्तर में बाइथल Mr. Bythel साहब चेयरमेन ने कहा कि शिपकनाल यात्रा में इतना आनन्द कभी नहीं हुआ जितना कि इसबेर पूर्बी पाहुनोंके साथमें हुआहै।

रात्ति के प्रायः दशबजे से अग्निक्रीड़ा (आतशबाजी) का आरंभहुआ । इसी मकानकी छतपरसे एक अति विशाल बैठक बनाई गईथी जहांपर सम्पूर्ण दल बैठगया । सन्मुख बहुतबड़ा

मैदानथा उसके आगे अनेक प्रकारकी आग्नेय लीलाका उपक्रम हुआथा । रोशनी भी बहुतअच्छी होरही थी और यह मैदान लक्षों नरनारियों से भरपूरथा । आतशबाजी क्या थी सामयिक संसार का एक ज्वलन्त दृश्य और शिक्षाप्रद पाठशालाथी । सर्व प्रथम (Welcome to our Indian Troops) हिन्दुस्तानी फौजका स्वागत तथा फारसी अक्षरों में खुशआमदेद चन्द्रप्रभा (महताबियों) की प्रकाशित फुलझड़ियों में दिखाई दिया । फिर अनेकोंप्रकार की आतशबाजी जिन में साम्प्रतिक वैज्ञानिक चमत्कार अपूर्व रूपमें प्रदर्शित थे दिखलाई गई । तत्पश्चात ट्रान्सवाल युद्धक्षेत्र (Seat of War) का दृश्य आया ! इसके निर्माणकी सजीवता बर्णनके बाहर है । दक्षिणी अफ्रीकाकी पथरीली भूमि पहाड़ियां दर्रे, खोहैं उन्हीं में इतस्ततः बोअरोंके मकानात ऐसे स्पष्ट बनाए थे कि दर्शकको ऐसा जानपड़ता था मानो वह स्वयम् ट्रान्सवाल में बैठाहै । पहाड़ियों की पगदंडियों और मोरचों में आदमियों की दौड़धूप-बड़ी बड़ी खच्चरगाड़ियों में रसदपानी और मालअस बाबका इधर उधर आनाजाना, एवं रेलगाड़ी की ट्रेनों का आना उनपर बोअरोंका छापाडालना, फिर घनघोर युद्ध में तोप गोला गोली इत्यादि का दनादन छूटना, मकानों में अग्निका प्रचंडदाह और सैकड़ों सहस्रों आदमियों का इतस्ततः दौड़ना धूपना, गोली बन्दूक बांटना, घायल उठाना तथा सबके पीछे सुलहका स्वेत झंडा उड़ाना, इत्यादि सब कृत्य सजीव प्रत्यक्ष दिखलाए थे । इसके पीछे लाट राबर्ट और किचनरकी अग्निमयी मूर्तियां एवं बोअर अंग्रेज बीरों के सुलहका दरबार बड़े आतंक रूपसे दिख लाया गया ।

यह सब आतशबाजी छूटते समय दर्शकोंको मानो व्याख्यान

पूर्वक समझाया जारहाथा कि युद्धमें कैसा भीषणकांड उपस्थित होताहै । देशभर में मानो अग्निदाह उमड़ उठती है परन्तु थोड़े से उदारचेता योद्धाओं के अग्रसर होने और देशोंके प्रतिनिधि स्वरूप में प्राणार्पण करने से युद्धावसान से बिलकुल शान्तितथा परस्पर सुहृद्भाव उत्पन्न होजाता है । सबके अन्तमें राजा एडवर्ड और रानी अलेक्जेंड्रा की आग्नेयमूर्तियों की झांकी हुई, और चन्द्रप्रभामय (God save the King) रच्छहु ईश नरेशहि का प्रकाश हुआ । और जातीय गान (National Anthem) पूर्वक स्वागतकी कार्य्यवाही समाप्त हुई ।

दूसरेदिन हमलोगों ने नगरके कई कारखाने देखे । मैनचेष्टर को प्रायः लोग (Cottonopolis) जोलाहोंकी राजधानी कहते हैं सो वास्तव में सत्यही है । यहांपर अनगिनतियों पुतलीघर हैं लाखोंका माल नित्य तयार हुआकरता है । सूतीकपड़े ही यहांपर बहुतायत से बनते हैं जो प्रायः कारखानों से सीधे जहाजों पर लादकर देशान्तरों को भेजदिएजाते हैं । इंगलिस्तानके लोग उन्हें देखतेभी नहीं हैं । यहांके बने सूतीकपड़े जैसे सस्ते हिन्दुस्तान में बिकते हैं वैसे इंगलिस्तान की बाजारों में नहीं मिलते । कारण यही है कि वह सस्ते मोल के बस्त्र यहां बिक्री के लिए खुलतेही नहीं । कार्य्यालयों में सहस्रों अश्वबलवाले कितनेही यन्त्र चलते हुए अपने आश्रित भांति भांति की मशीनोंको बराबर चलाते रहते हैं जिन में कोई सूतलपेटती, कोई थानलपेटती, कोई रंगचढ़ाती, कोई ठप्पे छापती हैं । कारखानों के भीतर का अपूर्वदृश्य देख कर वेदान्तियों के जीव ब्रह्म की ऐक्यता पर विश्वास करने को मन चलायमान होउठता था । कमसे कम कार्य्य क्षमता के अंश में तो इंगलिस्तान के लोगों ने परमेश्वर का अच्छा अनुकरण

कियाहै । तभी तो भगवानने उनपर सबभांति प्रसन्न होकर उन्हें सामीप्य मुक्तिका भागी बनाया है !

मैनचेष्टर का म्यूनिसिपेल टेक्निकेल स्कूल एक बिशाल शिक्षास्थान है । जहांपर सबप्रकारकी हस्तक्रिया एवं मशीनोंका चलाना तथा अनेकों भांतिके निर्माण और पदार्थ बिज्ञान आदि की शिक्षा दीजाती है । साथही साथ लाखोंका ब्यापारी मालभी वहां तयार होताहै ।

लोहेके इंजीनियरी कारखाने यहांपर कईहैं । जिनमें बड़ी बड़ी तोपों और जहाजों के पुरजों एवं रेलवे के इंजिनों से लेकर अलपीन और सुई पर्य्यन्त बनते हैं । सहस्रोंमन लोहेका बातकी बात में गलकर पानीकी भांति तरल होजाना और लालवर्ण चहबचों में भरे हुए एवं नलिकाओं में ढलते हुए देखना आश्चर्य्यमय ब्यापार था । बड़े बड़े लोहे के टुकड़ों को लाल लाल अंगाररूप में ढलेहुए मशीनोंद्वारा उठाकर चबूतरेकी भांति बड़ी बड़ी निहाइयों पर रखकर सहस्रोंटन बोझवाले हथौड़ों से पीटते हैं । इसीतरह सहस्रों मन लोहा बातकी बातमें ईसपात बनायाजाता है । यहसब देख कर हमको अपनेदेशके भक्तजनों की वह कहावत याद आती थी अतप्ततनूर्नतदामोअश्नुते अर्थात् बिना तपाए हुए शरीरसे मुक्तिलाभ नहीं होसकती ! बास्तव में ऋषिने बहुत सत्य कहाहै । जैसे बिना तपाए और घनचोट खाएहुए लोहा ईसपात नहीं बनसकता वैसे ही कोई व्यक्ति वा जाति बिना परिश्रमी हुए और क्लेश सहन किए मुक्ति वा स्वतन्त्रता नहीं पासकती !

हमारेयहां तपश्चर्य्या, ईश्वरस्तुति प्रार्थनोपासना को कहते हैं । समस्त संसारकी सभ्य जातियों में ऐसाही मानाजाता है । स्तुति का तात्पर्य ईश्वरके गुण कर्म स्वभावका मनन करना और

प्रार्थना से निरभिमानतापूर्बक उन्हीं गुण कर्म स्वभावों को अपने में धारन करनेकी शक्ति याचना एवं उपासना का अर्थ उसके समीप जाना अर्थात् उक्त गुण कर्म स्वभाव को स्वयम् चरितार्थ करना है। सचपूछिए तो यूरोपियन संसारही ने इसबातको भली भांति समझा है।

श्रष्टिका उत्पन्नकरना ईश्वरका स्वभाव है इसबातको उन्हों ने अच्छीतरह मनन किया। अनेक प्रकारके श्रेष्ठपदार्थोंके परस्पर उपयोग उपभोग ही से श्रष्टिकी स्थिति है अतः उन्होंने नित्यकी रोटियों के लिएही परमपुरुषार्थ माना और ईश्वरसे प्रार्थनाकी कि हे प्रभुः आजकीरोटी हमें दानकर तिसके पीछे उन्होंने उपासना में मनलगाया। और उसमें यहांतक कृतकार्य्य हुए कि उनके निज निर्माण कभी कभी अलौकिक औरप्रकृत जैसे समान होने लगते हैं। सो यूरोप ने ईश्वरके गुण कर्म स्वभाव को अपने में धारण करने और उसके प्रियकार्य साधन रूप तपश्चर्य्या में जैसीउन्नति की है तपके फल स्वरूप सुखसम्पत्तिसे भी वैसेही भरपूर होरहा है। आज यूरोपीय संसार के समान भूमंडल भरका कोईभी अन्यभाग सुखी नहीं है।

क्याही अच्छा होता यदि हम भी सच्ची ईश्वरभक्ति सीखकर कर्मण्य जीवन प्राप्त करते! इच्छा तो होती है कि मैनचेष्टर के कारखानों के बृत्तांत अधिक बिस्तार पूर्बक लिखूं परन्तु जब देखताहूं कि मन अतिरंक मनोरथ राऊ तो मनमसूसकर रह जाता हूं! क्या पाठकों में से किन्हीं महाशयों का मन इन महान बिभवों की ओर चलायमान होगा? ईश्वर ऐसाही करै!

मैनचेष्टर जैसे बिशाल नगर को एक दिन में देखना वा दिखलाना जहां तक सम्भव था उतना हम लोगों ने देखा और,

स्थानिक कर्तारों ने दिखलाया। वैद्युत ट्रामगाड़ियों और घोड़ा गाड़ियों में बिठाकर नगरभ्रमण कराया। पैदल चलकर कतिपय उद्यान घूमे और निरख निरखकर बहुतेरे कारखाने देखे नगरके मध्यस्थित एक विशाल चौक में फायर ब्रिग्रेड की कवायद दिखलाई गई। यहां पर भीड़ भाड़ ऐसी घनी और अधिक थी कि एक ओर हमारे सन्मुखही धक्के से पिसकर एक स्त्री बेसुध होकर गिरपड़ी जिसे पुलीस बड़ी कठिनतासे उठाकर [Stretcher] डोली द्वारा निकट के हस्पताल को भेजसकी थी। फायर ब्रिगेड क्या है ? सोलवीं शताब्दी में जबकि लंडन में अग्नि का महादाह हुआ था तब से इंगलिस्तान के प्रायः सभी बड़े बड़े नगरों में अग्नि शान्त करने का उपाय तयार रहताहै जैसे लंडनमें वैसेही मैनचेष्टर में भी महल्ले महल्ले अग्निशान्ति के स्थान नियत हैं जहां पर आग बुझाने के एनजिन और अन्यान्य आवश्यकीय बस्तुएं उपस्थित रहती हैं। और नियत संख्या में यह अग्नि से लड़ने वाले शिक्षित सैनिक लोग उपयोगी सामान सहित सदा मौजूद रहतेहैं जो अपनी सीढ़ियों द्वारा ऊंची से ऊंची छतोंपर बातकी बातमें पहुंच जाते और सैकड़ों फीट ऊंचे और इधर उधर जलकी धार फेंक सकते हैं इसी सेनाको फायर ब्रिगेड कहते हैं। इनका अभ्यास भी वैसाही बेगवान है जैसा बायु के संयोग से अग्नि। इसदिन की कवायद में मैनचेष्टरकी फायर ब्रिगेडने हम लोगों को एनजिनों का उपयोग और सीढ़ियों का लगाना तथा ब्रिगेडकी कई भांति की चालें आदि बहुत उत्तमता से दिखलाईं। देखकर हमैं तो रामराज्य की वह बात फिर भी याद आगई—

दैहिक, दैविक, भौतिक तापा। राम राज्य काहू नहिं ब्यापा॥

अंगरेजों के देश में सचमुच रामराज्य बिराजमानहै। अग्नि

दाह और अनावृष्टि आदिही तो दैविक ताप कहलाते हैं ? सो इनको रोकने के लिए अंगरेजों ने कैसे कैसे विशाल उपाय किए हैं कि यह ताप कभी शिरही नहीं उठाते ! अग्निदाह का सामना करने के वास्ते जैसे फायर ब्रिगेड है वैसेही अनावृष्टि आदि का मुंह काला करने के लिए भांति भांति के कलाकौशल निर्मित किए हैं । एवं विधि दैहिक ताप दूर करने वा रोकने के वास्ते आरोग्य सम्बन्धी अनेकों उपचार सफाई और शुद्धता आदिके नियम प्रचारित कर रक्खे हैं जिससे इंगलिस्तान के निरोग्यता की बराबरी कदाचित आजकल संसार का कोई भी सभ्य देश नहीं करसकता ।

सो वास्तविक इंगलिस्तान में रामराज्यही है । पर हमारी कहानी के पढ़ने सुननेवाले महाशय कह सकते हैं कि हमारे देश के राजा भी तो वही रामोपम अंगरेजही हैं । फिर क्यों हमें दिन पर दिन प्लेग, महामारी, अनावृष्टि, अकाल आदि ढेर के ढेर दुःख दारिद्र घेरे रहते हैं ? इसके उत्तर में कहना यही है कि:—

यक दिशि कमला कर गहे, बरसत कंचन नीर ।
माथे छत्र दरिद्र को, बूंद न पड़त शरीर ॥

पारस पथरी को छूकर लोहा सुवर्ण होजाता है पर उसका सजातीय पत्थर निरन्तर उसके साथ रहने पर भी पत्थरही बना रहता है ! संसार भरमें सबसे पहिले भारतही सभ्य देश था । यह तो अपनी प्राचीनता से आगे तिलभर भी न टसका पर अन्यान्य देश इसी से शीक्षा दीक्षा ले करके आज सभ्यता और उन्नतिके कंगूरे पर चढ़कर झकैयां लेरहे हैं । सिरजनहार ने रामराज्य का सुख सबसे पहिले इसी देश को दिया था पर अपनी निरुद्योगता से यह उसे स्थिर न रख सका ! सो जिसे प्राप्त पदार्थ की रक्षा

करने की भी क्षमता न हो उसके लिए सुख स्वच्छन्दता के पुनः प्राप्ति की आशा, अकर्मण्य अवस्था में रहते हुए ही करना केवल बिडम्बना मात्र है !!!

Deserve and then desire — योग्य बनकर याचना कर यह एक प्रसिद्ध पुरानी कहावत है और आजकल के संसार का तो यह एक महामन्त्र है। सो जब तक हम स्वयम् योग्य नहीं बनते तब तक अपने रामोपम राजा से भी इंगलिस्तान की भांति रामराज्य का सुख नहीं पा सकते हैं। हमारे यहां की पुरानी कहावत है यथा राजा तथा प्रजा पर न जाने क्यों हमारी बर्तमान दशा इसके बिलकुलही प्रतिकूल हो रही है! राजा जाति के तो कोई भी गुण भारतीय प्रजा में नहीं पाए जाते! जातीयता, कर्मण्यता, उद्योग परायणता, पारस्परिक सहानुभूति, आत्म गौरव, आदि आदि जो हमारे राजा जाति भर के निज गुण कर्म स्वभाव हैं उन्हें जब तक अपने में लेने की चेष्टा नहीं करते तब तक न तो हम सच्ची राजभक्त प्रजा ही कहला सकते हैं और न वास्तविक सुख के भागी हो सकते हैं कहावत है कि मांगे मौत भी नहीं मिलती फिर भला सुखयाचना के पूर्ति की बातही क्या !!!

फायर ब्रिगेड की परेड देखभाल कर हम लोग रेलवे स्टेशन को आए और दो स्पेशल ट्रेनों द्वारा उसी दिन लिवरपूल को रवाना हुए। रेलवे स्टेशन तक लार्ड मेयर महाशय अपने दल बल सहित महिमानों को बिदाई देने पधारे थे। खूब उच्चस्वर की हुर्रे आदि ध्वनि की लहरों के साथ साथ हमारी ट्रेन भी अपनी ध्वनि सम्मिलित करती हुई रवाना हुई। थोड़ी ही देर में हम लोग फिर लिवरपूल में पहुंच कर अपने सुपरिचित जहाज हार्डिंग पर जाबिराजे और वह रात ही में साउथाम्पटन के लिए

रवाना होगया। दो दिन रात की समुद्री यात्रा करके हम लोग साउथाम्पटन और वहां से रेल द्वारा अपने निज घर हैम्पटन कोर्ट को पहुंच गए। हैम्पटन कोर्ट में पहुंचना घर पहुंचने ही की भांति जान पड़ने लगा था क्योंकि कई महीने रहते रहते वहां की सब बातें बस्तुएं बिलकुल परिचित और अभ्यस्त सी होगई थीं। और आलाप परिचय भी बहुत लोगों से होगया था। सो उन लोगों से पुनर्मिलन भी कुछ अपने ही लोगों के सम्मिलन की भांति जान पड़ता था।

---+:o:+---

"लंडन टावर" बुर्ज LONDON TOWER.

अब राजतिलक महोत्सव के लिए एक सप्ताह मात्र शेष है। उत्सव के पीछे ही हम स्वदेश यात्रा करेंगे सो हम इस थोड़े अवसर को जहां तक संभव हो पूरा पूरा काम में ला सकें यही उपाय बिचारने लगे। और इस अवसर में जो थोड़े बहुत प्रसिद्ध स्थान आदि देख भाल सके उनका बृत्तान्त आगे करते हैं--

जिन महाशयों ने इंगलिस्तान का इतिहास पढ़ा है लंडन टावर का नाम सुनते ही उनके स्मृति संसार में प्राचीन समय की अनेकों घटनाएं जागृत हो उठेंगी। रोमन साम्राट जूलियस सीजर ने जिस ठौर पर अपने विजय काल में दुर्ग निर्म्माण किया था उसी स्थान पर विजयी विलियम ने सन १०७८ ई० में इस टावर नामक दुर्ग की नीव डाली थी। उस समय में नगर रक्षा के मुख्य उपाय दुर्ग बनाना और कोट खींचना ही समझे जाते थे सो संसार भर में यह चाल समान भाव से बर्तमान थी। विजयी विलियम [William the Conqueror] ने इस दुर्ग को नगर की सरहद पर ऐसे सुठौर में बनाया था कि जिससे नगर की रक्षा औ

साशन दोनों भलीभांति होसकैं। सो उसने एकओर नगरके भीत का कुछ भाग गिराकर इस दुर्ग के वास्ते स्थान निकाला था। इसी कारण आजकलकी हदबन्दी से टावरका कुछभाग लण्डनमें और कुछ मिडिलसेक्स नामक प्रान्त में लगता है। यह दुर्ग लग भग अस्सीविघा भूमिके घेरमें बनाहुआहै। यद्यपि आजकल नूतन शस्त्रों के कारण यहदुर्ग किसी भांति सैनिक शक्ति में प्रधानता नहीं रखता तथापि प्राचीन काल में यह एक प्रधान दुर्ग और राज प्रासाद भी था। एवं विधि समय समय पर राजकीय बन्दीगृहकी भांति भी व्यवहृत हुआथा। मध्यभागमें एक सुरक्षित स्थान लग भग सवासौ फीट लम्बा चौड़ा स्वेत बुर्ज White Tower नाम से विख्यात है तथा औरभी बहुतेरे बुर्ज और विभाग हैं जिनका यत् किंचित वर्णन नीचे लिखाजाता है:—

प्राचीन समयमें इंगलिस्तानके सब राजा रानी—राजा चार्ल्स दूसरे के समयतक—कभी कभी इस टावर में निवास किया करते थे। और यह नियम था कि राजतिलक दिवस के पहिले राजा रानी इसदुर्ग में आरहें और यहीं से अश्वारोह होकर जलूस के साथ नगर में होकर वेस्टमिनिस्टर गिरजाघरको जावैं।

टावर हिल नाम से प्रसिद्ध एक कुछ ऊंचा स्थान है—जहांकी विस्तीर्ण हरियाली को बताकर हमारे पथदर्शकने उसे भलीभांति देखने को कहा! यद्यपि वहां आज हरियाली छोड़ और कुछभी नहीं देख पड़ता तथापि पाठक! इसतुच्छ तृणावर्त्तकी जड़ें न जाने कितने नामी गिरामी शरीरों के रक्तसे सिंचित हुई हैं!! कुछ ठिकाना है? यहां प्राचीन समयमें राजद्रोहियों का शिरच्छेद कियाजाताथा! इतिहासप्रसिद्ध सर साइमन बरली (Sir Simon Burley, 1388). राजा सातवें हेनरी के राजमन्त्री डडली (Dudley, 1510),

नार्दम्बरलैंडके डिउक (Duke of Northumberland 1553), लार्ड गिल्डफर्ड डडली (Lord Gildford Dudley, 1554), क्रामवेल, इसेक्सके अर्ल (Cromwell Earl of Essex, 1540) आर्कविशपलाड (Arch-Bishop Laud, 1645) तथास्काटलैंडके अनेकलार्ड लोगों का सन १७१६ से १७४७ तक इसी स्थानपर शिरच्छेद हुआथा! बेल टावर नामसे प्रसिद्ध एक ऊंची इमारत है इसीकी खिड़की परसे लेडी जेन ग्रे ने अपने पति का छिन्नशिर शरीर देखाथा! इसी के पार्श्ववर्त्ती मार्ग को (Queen Elizabeth's Walk) रानी अलेजिबेथ का पदचर कहते हैं क्योंकि अपने बन्दी अवस्थामें रानी साहिबा यहां भ्रमण करती थीं यह बात सन १५५४ ई० की है जब उनकी सगी बहिन रानी मेरी ने उनको कैद कर लियाथा।

इसके दाहिनी ओर ट्रेटर्स गेट ['Traitor's Gate] अर्थात् देशद्रोहियोंका द्वार नाम से एक निकास है कहते हैं इसी फाटक से होकर बकिंघाम के ड्यूक एडवर्ड (Edward Duke of Buckingham, 1521), सर तामस मोर (Sir Thomas More), रानी एनी बोलीन (Queen Anne Boleyn), एसेक्स के अर्ल क्रामवेल (Cromwell, Earl of Essex), रानी केथेरिन हावर्ड (Queen Katharine Howard, 1542), सामरसेट के ड्यूक सैमोर (Seymore, Duke of Somerset, 1551), लेडी जेन ग्रे (Lady Jane Grey), कुंवरि-फिर रानी अलेजिबेथ (The Princess—*afterward* Queen Elizabeth), एसेक्स के अर्ल डेवेरेक्स (Devereax, Earl of Essex, 1601), मोनमाउथ के ड्यूक जेम्स (James Duke of Monn outh), आदि बन्दीगृहों को लाएगए थे।

इसके सन्मुखही एकबुर्ज [Bloody Tower] खूनीबुर्ज नामसे

प्रसिद्ध है। सन १५८५ ई० में नार्दम्बरलैंड के आठवें अर्ल हेनरी परसी ने इसीठौरपर आत्मघात कियाथा तभी से इसकानाम खूनी बुर्ज पड़ा ! यहीं पर एडवर्ड पांचवें, यार्कके ड्यूक, और हेनरी छठवें के प्राणघात हुएथे!!!

वेकफील्ड टावर नामक बुर्ज जोकि तेरहवीं शताब्दी में राज्य के कागजपत्र संरक्षित रखने के काम में आता था अब राजकीय रत्नागार बना है। इस में एकछोटासा प्रार्थनाभवन (गिरजाघर) भी है। कहते हैं कि यहां पर राजा छठे हेनरी अपने कारावास काल में भजन कियाकरते थे। पाठक! स्मरणकीजिए! बड़े से बड़े राजाधिराज के ऊंचे मस्तकोंको भी अन्ततोगत्वा विपत्‌काल में उन्हीं पतितपावन के चरणतल में शांति मिलती है!! भगवान की महिमा अपार है !!!

इस टावर के मध्यभाग में एक बिशाल स्थान है जहां पर अंग्रेजी राजकिरीटोंका जाज्वल्य संग्रह है। सर्वोपरिबिराजमान रानी विक्टोरिया का किरीट है जो सन् १८३८ ईसवी में उक्त रानी साहबके राजतिलक समय में बना था। पछत्तर अलमासों के समावेश से मुकुट के सन्मुख भागमें क्रास चिन्ह-विशेष बनाया गया है। इस क्रासके नीचे एक अति सुन्दर नीलकान्तमणि जिस को राजा जार्जचतुर्थ ने क्रय किया था लगा हुआ है। शिखर देश और चहुंओर की मेहराबों में सात नीलमणि और आठहीरे जड़े हुएहैं, इसके अतिरिक्त बहुतसे रत्न और मणि मुकुटकी शोभा को बढ़ा रहे हैं। चोटी पर गुलाबपुष्प की भांति कटाव से चार बहुत जाज्वल्य मणि जटित हैं। मुकुट में कुल २७०० हीरे जवाहिरात लगे हुए हैं जिनका तौल लगभग चालीस अउंस होता है। राजा विलियम तृतीय और रानी मैरी द्वितीय के राज मुकुट भी

अपने मणि रत्नादि की आभाप्रभासे स्थानको जाज्वल्यमान कर रहे हैं। राजा चार्ल्स द्वितीय के राजतिलक समय का बनाहुआ सन्त एडवर्ड का मुकुट ऐसी सुघर काट छांट का बनाहै कि उसी के नमूनेसे पीछेके प्रायः सभी किरीट संवारे गए प्रतीत होते हैं। सन्त एडवर्डका स्वर्णगदा चारफुट सात इंच लम्बा जिसके शीर्ष स्थान में क्रास चिन्ह बना हुआ है दर्शनीय पदार्थ है। राजकीय गदा [Royal Sceptre] भी एक बहुमोल और स्मारक पदार्थहै।

निम्न लिखित यजनोपयोगी पदार्थ यहां पर संचितहैं:—

राजतिलक सम्बन्धी चमसा वा श्रुवा	Anointing Spoon.
उत्क्रोंच तैलपात्र	Eagle for the anointing oil.
संस्कारोपयोगी जलपात्र	Baptismal font.
यज्ञस्थाली	Sacramental plate.
याजनिक सुरापात्र	Wine Fountain.
न्याय कृपाण	Sword of Justice.
दया कृपाण	Sword of Mercy.

इनके अतिरिक्त अनेकों प्रकार के राजपदक-चिन्ह, बीर-परिच्छद तथा राजकीय-उपाधियों के तगमें आदि रक्खेहुए हैं।

यह सब चमत्कारिक पदार्थ देख भालकर बाहर निकलते समय हमने एक पार्श्व में ऊंचे स्थान पर वह तोपगाड़ी रक्खी हुई देखी जिसपर रखकर मृत महारानी विक्टोरिया का शव तारीख २ फरवरी १९०१ ईसवी को विंडसर रेलवे स्टेशन से सन्तजार्ज गिरजे को लेगए थे! देखकर हृदय में एक अपूर्व भावका उद्गार हुआ!! वसुधे! तू काहू की न भई? जिस स्थान पर रानी बिक्टोरिया का राजकिरीट सर्वोपरिबिराजमानहै उसीके पासही उनके मृत शरीर को उठानेवाली गाड़ी भी उपस्थितहै!!! राज क्षमता

और मानमर्य्यादा का अनुचित घमंड वृथाहै ! अन्ततः सबकी गति समानहै । सम्भवतः दर्शकों के चित्तपर यही प्रभाव स्थिरकरानेके हेतु सेही अंग्रेजी राजसभा [British Parliament] ने इस गाड़ी को यहांपर रखवा दियाहो ? पाठक ! स्मरणकरो ! परमेश्वरकी न्याय व्यवस्थामें राजा प्रजा मनुष्यमात्र सब समानहैं । प्रजा को तुच्छ दृष्टिसे देखनेवाले राजगणों का मानमर्दन अवश्य होताहै । चारदिना की चांदनी फेर अंधेरा पाख !!!

सन्तजानका उपासनालय जोकि ५५ फीट लम्बा और ३१ फीट चौड़ा एवं ३२ फीट ऊंचाहै बहुत प्राचीन निर्माण है । ऐतिहासिक घटनाओं को स्मरणकरने से विजई विलियम के प्रार्थना की गूंज आजभी इसकी दीवारोंके भीतरसे निकलकर मानो कानों में प्रवेश करने लगती है !

अस्त्रागार वा सिलहखाना [Armoury]—टावर के अस्त्रागार में पन्द्रहवीं खृष्टीय शताब्दी से अधिक प्राचीन अस्त्र शस्त्र वा कवचादि नहीं हैं । कहते हैं कि राजा अष्टम हेनरी के समय से यह आगार स्थापित हुआ है । यहांपर भांति भांतिके बहुतसे कवच ऐसे रक्खे हुए हैं कि जिनका उठानाही भार जानपड़ता है पहिनकर युद्धकरना तो बहुत बड़ा कामहै । इन कवचों के पहिनने वाले स्वयम तो बली और साहसी होतेही होंगे पर रणसज्जित योद्धाकी सवारी के घोड़ेभी खासे तोपखाने के चार्जर आवश्यक होते होंगे क्योंकि हमारे रिसाले के घोड़े तो कवचधारी सवारको कभी न लेचल सकेंगे ! प्रगटहै कि अगले समयमें योद्धाको शत्रु पर वारकरने की अपेक्षा अपने शरीर रक्षाका अधिकध्यान रहता था और वही पुरानीबात आज जंगीफौज में [Cover] यानेआड़ लेने के रूप में दिखाई देती है । पारस्य देशका व्यवहृत कवच

दिखलाने के लिए एक सैनिकका घोड़ा सर्वांग कवचाच्छादित और उसका सवार भी उसीभांति सर्वांग ढकाहुका एक पार्श्व में खड़ा है। इसी के निकट ब्रह्मदेश के जनरल महाबंधुल का कवच रक्खाहुआ है। यह जनरल साहब सन् १८२४ ई० में युद्धशायी हुए थे !!! ब्रह्मदेशका एकबड़ा घंटाभी यहांपर रक्खाहुआहै। जापान देशके भी दो कवच यहांपर मौजूद हैं। इसके अतिरिक्त पूर्वीय देशों के अनेकानेक अस्त्र शस्त्र और कवच दंड आदि यहां संग्रहीत हैं। इनमें से बहुतसी चीजें हमलोगोंकी परमपरिचित ईस्ट इण्डिया कम्पनी की संग्रह कीहुई हैं।

एक अन्य भाग में अनेकों प्रकारकी अंग्रेजी निर्मित राइफलें संग्रहीत हैं। यथा :—

सन् १८०१ और १८०७ के निर्माण बेकर राइफल्स,

सन १८३६ ई० का ब्रन्सविक [Brunswick] राइफल्स,

सन १८५१ ई० का माइनी [Minie] राइफल्स

सन १८५५ ई० का एनफील्ड मस्केट,

सन १८६५ ई० का स्नाइडर,

सन १८७१ ई० का मारटीनी हेनरी,

और वर्तमान व्यवहृत ली मटफर्ड मेगजीन राइफल्स।

एकओर प्राचीन समय के जल्लादोंकी तलवारें और कैदियों के गले और पैरों में डालने के हलके रक्खेहैं।

साठ सत्तर वर्षकी बनीहुई बहुतसीतोपें विशेषकर इंगलिस्तान की और कतिपय अन्यान्य यूरोपीय देशोंकी भी संग्रहीतहैं। सन १५४५ ई० में जो फ्रांसकेसाथ अंग्रेजों का युद्ध हुआथा उससमय स्पिटहेड बन्दर और आइल आफ वाइट के मध्य सागर संग्राम में मेरी रोज नामक जहाज जलमग्न होगया था उसपरकी एक तोप और

एक काष्टमय पम्प स्मारककी भांति यहां रक्खेहुए हैं।

प्राचीनकालमें कदाचित सत्रहवीं शताब्दीपर्य्यन्त प्राणदंड शिर काटनेके द्वारा दियाजाताथा सो एक ठौरपर एक शिरच्छेदक कुल्हाड़ाभी देखा। कहते हैं कि यह वही कुल्हाड़ा है जिसने सन १७४७ ई० में लार्ड लोवट [Lord Lovat] का शिरच्छेद कियाथा।

एक कांचके अलमारे में प्रसिद्ध ड्यूक वेलिंगटनकी वरदी पोशाक रक्खी है। और बहुत से लोहे के जंजीरों के बनेहुए कोट शिरत्राण आदि सुरक्षितहैं। यादरहे कि यह सभी याता हमारे पूर्वीय देशोंके निर्माण हैं अथवा उन्हींका अनुकरण मात्र है।

मध्य हालकी दीवारों पर दृष्टिपात करते ही सहस्रों बन्दूक, तलवार, ढाल, बरछे, पेशकब्ज, कड़ाबीन, गुर्ज, पिस्तौल आदि दिखलाई पड़े। यहां प्रायः संसार भरके सभी देशों के व्यवहृत अस्त्रादि संग्रहीतहैं। इनमें पंद्रहवीं शताब्दीसे लेकर वर्तमान समय तक के हथियारोंका संग्रह है। एक कांच के सन्दूक में मलका एलिजबेथके किलेदार (Master of the Armouries) सर हेनरी ली (Sir Henry Lee, K. G.) का शिरस्त्राण और भालेती टोपी (Tilting helmet) रक्खेहुए हैं। बहुतसे झिलम के जोड़ सवार और पैदल मूर्तों पर पहिनाए हुए और अलगभी रक्खे हैं जो प्रायः पन्द्रहवीं शताब्दी के हैं। तौल में प्रत्येक जोड़ा प्रायः अस्सी और नब्बे पाउंडके बीच में है। दो जोड़े कवच राजा हेनरी अष्टमके हैं। तथा उसी समयके अन्यान्य योद्धाओं के व्यवहृत जोड़ेभी हैं। कई तरह के धनुष, बाण, तरकश, एवं धनुर्धर मूर्तियां भी स्थापित हैं।

कवचका ब्यौहार राजा जार्ज चतुर्थके समयतक रहा। प्रतीत होताहै इनके समयतक यह प्रथा रहीहै कि राजतिलकके अवसरों

पर प्रजाकी ओरसे एक कवच राजाको भेंट कियाजाता था सो प्राचीन कालके प्रायः सभी राजाओंके कवच टावरमें सुरक्षितहैं।

Beauchamp Tower ब्यूकैम्प टावर–स्वेतबुर्जके सन्मुख वाली तिमहली इमारतका नाम है। यह नाम सन १३९७ ई० से इसलिए प्रचलित हुआ कि इसी स्थान पर ब्यूकैम्प परिवार के तामस–तृतीय अर्लवारविक बन्दी अवस्था में रक्खेगए थे। इसके मध्य स्थान की अंगेठी के ऊपर लैटिन भाषामें लिखाहै खीष्टकेअर्थ जितनाही अधिक कष्ट इसलोकमें सहन कियाजावे उतनाही अधिक गौरव परलोक में खृष्टिके साथ प्राप्तहोगा। यहलेख अरुन्डलके अर्ल फिलिप हवर्ड द्वारा ता० २२ जून १५८७ ई० में लिखागया था। फिलिप अपने रोमन केथालिक धर्मका ऐसापक्का विश्वासथा कि विश्वास परिवर्तनकी अपेक्षा आजन्म कारागारवास स्वीकार किया और दश वर्ष तक इसी टावर में बन्दी रहकर प्राण त्याग किया !!! लंडन टावर में कितनीही स्मारकबातें दर्शकों को चित्ताकर्षक मिलतीहैं कितनेही ऐतिहासिक विषय और अनेकों उत्तेजना देनेवाली घटनाएं स्मरण होती हैं, उन सबको यहां लिखना मैं अनावश्यक समझताहूं। जिन महाशयोंको अधिक जाननेकी इच्छाहो वह इंगलिस्तानका इतिहास पढ़कर स्वयम् जानसकेंगे।

———+:0:+———

क्यू नामक बगीचा KEW GARDENS.

भगवानने संसारके सारे सुखभोग उद्योगी पुरुष सिंहोंके लिए ही बनाएहैं। सच कहा है—

सकल पदारथ या जगमाहीं! कर्महीन जन पावत नाहीं!! पृथ्वीके ऊपर तथा उसके उदर में सबकुछ उपस्थित रहते हुए भी कर्महीन (अकर्मण्य) लोग हाथ पर हाथ धरे आकाश की ओर मुंह

फैलाए ताका करतेहैं, और उद्योगी और पराक्रमीलोग परमेश्वर की देनका आदरकरके भांति भांतिके आविर्भाव करते हुए नाना भांति के सुख भोग करते हैं।

लंडनका क्यू बगीचा भी आमोद प्रमोदके साथ साथ बनस्पत्यादि सम्बन्धी अनेक प्रकारके अन्वेषण और आविभाओं का एक मनोरम पाठशाला है। बगीचेका विस्तार कोई ढाईसौ एकड़ भूमिमें है। जिसमें अनेकों प्रकारकी आमोद सामग्री. चौगान, आदि तथा पान भोजनालय, नृत्यशाला आदि आदि सबकुछ मौजूद हैं।

Museum No. 1 प्रथम संग्रहालयमें प्रवेश कर देखिए नाना भांतिके बृक्ष और पौधे, बड़े छोटे सभी मिलके यथास्थान संग्रहीत हैं। इसको ब्यापार सम्बन्धी संग्रहालय कहतेहैं। अर्थात् यहांपर ऐसेही बृक्ष और पौधे हैं जो खाने पीने, बस्त्र और रंगबनाने, और औषधि आदिके काम में आते हैं।

यहांपर प्रतिवर्ष अनेक दूरदेशों से भांति भांतिके पौधे जड़ी बूटी आदि आयाकरती हैं और उपयोग अनुपयोग के विषय में परीक्षित होकर यथायोग्य नाम और काम प्राप्त करती हैं। कौनसा बृक्ष वा पौधा किस काममें आसकताहै और उसके कितने रूपान्तर होसकते हैं इत्यादि बातें प्रत्येक पौधे के साथ लिखी हुई हैं और रूपान्तर करकेभी उपयोगिता प्रत्यक्ष कीगई है। यहां बनस्पति सम्बन्ध में मोटी मोटी बातों से लेकर सूक्ष्म परिज्ञान पर्य्यन्तकी अच्छी शिक्षा प्राप्त होसकती है। तम्बाकू, अफीम, कपास, तथा वे बृक्ष जिनकी छालसे सन आदि प्राप्तहोता है और उनसे बस्त्र बनतेहैं एवं लौंग, इलायची, सौंफ आदि हमारे पूर्वपरिचित सभी पौधे यहां मौजूद मिले। एक पार्श्वमें कई बनस्पति विज्ञान शिक्षा-

रद पंडितों की तस्वीरें और मूर्तियां स्थापित हैं । सन्मुखही एक गोल तालाबहै जिसमें कईप्रकारके हंस, बतख, बक और अन्यान्य पक्षी स्वतन्त्रतासे विहार करते हैं । ग्रीस और सायरिया देश के जटायु (Pelicans) और मत्स्याहारी पक्षी (Cormorant यहां पर ऐसे विचरण करते हैं मानो ए यहींके प्रकृतवासी हैं । दर्शक लोगों से बिस्कुट रोटी आदिके टुकड़ उछल उछल कर लेते खाते और अपनी अठखेलियां दिखलातेहैं ।

Palm House दीर्घायत वृक्षालय-यह शीशमहल ६५ फीट ऊंचा ६६ फीट चौड़ा और ३६२ फीट लम्बाहै। इसमें सबतरहके छुहारे, खजूर और तालकेवृक्ष जोकि बृजील, वेस्टइन्डीज, हिन्द, चीन, आस्ट्रेलिया और अफ्रीकासे लाएगएथे मौजूदहैं । गरी, छुहारे केला, अंजीर, गन्ना, दारचीनी [गंधवल्कल] आदि के बृक्ष और पौधे बिलकुल हरेभरे और ताजे दीख पड़ते हैं मानों यह अपने निजदेशके जलवायु में ही वर्तमानहों । कारण यह है कि इस भवन में बाइलरों द्वारा गरमी पहुंचाकर हिन्दुस्तान आदि देशों की बराबर उष्णता प्रतिसमय रक्खीजाती है ।

Water Lily House कमल सरोवर—इस भवन में एक मनोहारिणी पुष्करिणी है जिसमें सिसली, सायरिया और नाइल की सुन्दर पद्मराजि प्रफुल्लित होरही है । मिश्र और हिन्दके पवित्र कमल भी यहां फूलरहेहैं । देखकर मन मुग्ध होताथा और चित्तमें आताथा कि विष्णु भगवानकी चरण कमलाश्रिता लक्ष्मी ने कदाचित इन्हीं पद्मपंक्तियोंपर लोभायमान होकर अभागे हिन्दोस्तानका परित्याग करदियाहो ! सचहै विश्व भक्तही प्रकृतविष्णु भक्त है और उनकी पाद पद्माश्रिता लक्ष्मी भी विश्वविजई के साथ साथ क्यों न रहैंगी ।

Economic Plants ब्यौहार सम्बन्धी पौधे---इनमें कदाचित संसारभरसे चुन चुनकर लाएहुए ब्यौहार योग्य बृक्ष मौजूद हैं। अन्नकी जातिके अनेकों पौधे, औषधियों की बूटियां, छाल देनेवाले बृक्ष और उत्तम काठके बृक्ष आदि आदि सभी यहां लाकर उगारक्खे हैं। प्रत्येक की उपयोगिता और उसके ऐतिहासिक बृत्तान्त भी लिखे रक्खे हैं। एक बलेविया का कोका [Coca] नामका पौधाहै जिसमें दानेदार भुट्टे पैदाहोते हैं। कहते हैं कि इनदानों में इतनी तृप्तिदायनी शक्तिहै कि इनको चाबलेने से आदमी बारहघंटेतक बिना थकावटके कठिन परिश्रम करसक्ता है। इसको खाकर बहुतबड़ी लम्बीदौड़में भी मनुष्य शान्त नहीं होता। यहांपर जायफल, मिर्च, और चायके पौधेभी लगाएहुएहैं।

Orchid House कांचके छोटे छोटे छायादार घरों में भांति भांतिके नन्हें नन्हें बृक्षहैं जिनमें लाजवन्ती, छुई मुई, भूपुष्प इत्यादिके अतिरिक्त कई पौधे ऐसे हैं जिनकेफूल कटोरियों की भांतिके होते हैं और उनपर जब मक्खी या और कोई कीट पतंग आदि बैठजाताहै तब वह तत्काल बन्दहोजाती हैं। कटोरियों में नन्हें नन्हें कांटेसे होते हैं जोकि उनके बन्दहोतेही कीड़के अंगमें चुभने लगतेहैं और वह फड़फड़ाकर उसी में मरजाता है। तब फूल फिर खुल जाता है। इसीकारण इस पौधे को (Flycatcher) पतंगारि कहते हैं। इस फूल की सुगन्ध उनकीड़ों के लिए बड़ी लुभावनी है जिसकी लालसा से वे फूलों पर जाबैठते और उनके शिकार बनजाते हैं।

Succulent House रसदार पौधे—इस स्थानपर हिन्दुस्तान, अमेरिका, ब्रजील, कनारी द्वीप, आदि देशान्तरोंके बहुतेरे रसीले बृक्ष मौजूद हैं। जैसे शहतूतके पत्तों को खानेवाले कीड़े

रेशम बनाते हैं उसीतरह एक वृक्ष विशेषकी पत्तियां खानेवाले कीड़े यहांपर पाले हुए हैं । कहतेहैं इसपौधेकी खेती कीजाती है । जहां पर यह कीड़े पालेजाते वहां वह सुखाकर रक्खे जातेहैं और उनसे एक वहुतही सुन्दर सिन्दूरिया रंग तय्यार कियाजाता है ।

Temple of the Sun सूर्य्य मन्दिर—मध्यभाग में एक प्राचीन मन्दिर है जिसको सूर्य्यमन्दिर कहतेहैं । कदाचित यह समयकी पड़तालके वास्ते बगीचे के बीचोंबीच धूपघड़ी स्थापित करने के लिए बनायागया होगा । परन्तु अब उतनाकाम इससे नहीं लिया जाता ।

Temple of Acolus वायु मन्दिर—इसका प्रथम निर्माण सन १७६० ई० बतलाते हैं । और जीर्णोद्धार सन १८४५ ई० में हुआ कहते हैं । यह बिलकुल पत्थरका बनाहुआहै । प्राचीन समय में जब लोगोंको ईश्वरका ज्ञान न था तब मानवीशक्तिकी अपेक्षा अधिक क्षमतावान सूर्य्य, चन्द्र, वायु, अग्नि आदिकों हीं को देवता मानकर जनसमूह आराधना करतेथे । परन्तु इंगलिस्तान के लोग अब अपनी उन पूजा विधियोंपर हठ नहींकरते बरन उन्हें जंगलीपन समझते हैं और आजकल जो देश और जातियां प्राचीन पूजाप्रणाली को प्रचलित रक्खे हैं उन्हें असभ्य वा अशिक्षित समझते हैं !

Museum No 2 दूसरे अद्भुतालयमें वृक्षावलीके अतिरिक्त बहुतसे चित्र और नकशे लगेहुए हैं । इनमें सन १७३४ का बनाहुआ क्यू बगीचेका नकशा भी है । परन्तु तब और अब में आकाश पातालका अन्तर होगयाहै । बगीचेमें नवीन आविस्कारों की अनेक उन्नतियां हुईहैं जो कि उस समय वहां किसी के ध्यान में भी कम आती होंगी ।

The Aroid House यूनानीभवन—इसका निर्माण राजा विलियम चतुर्थ ने करायाथा। यहांपर भी मिर्च, सोंठ, अरोरूट आदिके पौधे बहुतायत से हैं। एक बृक्ष ऐसाहै जिससे बड़ी मूल्य-वान टोपियां बनतीहैं। कहते हैं इसकी प्रत्येक टोपी अमेरिका में दो-ढाईसौ रुपयोंतक में बिकती हैं। यह टोपियां सुन्दर, हलकी और बेजोड़ होतीहैं एवं लपेटकर धरनेसे टूटती नहीं।

Kew Palace क्यूमहल-यहराजप्रासाद हमारेलिए अधिक ध्यानपात्र इसकारणहुआ कि महाराणी विक्टोरिया के मातापिता का शुभ पाणिग्रहण इसी महल में हुआथा।

Bamboo Garden बांसकी जातिके अनेकों गोत्र प्रवर एक बगीचे में कितनेही रंग रूपसे सजे लगेहैं। द्वार, लता, बितान और झाड़ बहुत प्रकारसे तोड़ मरोड़कर प्रकृतिको खूबही आज्ञा-कारी बनाया है। झील की शोभाको उसके आस पास के उड़ने, चुगनेवाले हंसादि विहंग और जलक्रीड़ाकारी कमल आदि फूल पत्र अधिकतर द्विगुणित चतुर्गुणित करते हैं।

ऐतिहासिक बृत्तान्त—क्यू बगीचेकी प्रथम स्थापना सन १५५१ ई० में एक डाक्टर टर्नर महाशयने अपने बनस्पति सम्बन्धी खोज विचारके लिए कीथी। सन १६८८ ई०में यह नीबू नारंगी उत्पन्न करने के लिए प्रख्यात था। राजाजार्ज द्वितीय के युवराज कुंवर फ्रेडरिक को बाग बगीचों में बड़ा प्रेमथा सो वह इस क्यू बगीचे की उन्नति मनाचितसे चाहतेथे। इन्हीं दिनों किसी कारणसे पिता पुत्र (राजा और युवराज) में कुछ अनबन होगई और कुंवर फ्रेडरिक को राजकाज (Politics) में सम्मिलित होने से रोक दिया गया। तबराजकाजसे उदासीन होकर युवराजने क्यू बगीचे को स्वयम् पट्टेपर लेलिया और उसीकी उन्नति करने में अपना

सम्पूर्ण समय लगानेलगे । उससमय इसकीभूमि केवल ९ एकड़थी राजा जार्ज तृतीयने इस मिलकियतको क्रय करलिया और रिछ मांड बगीचे की भूमिको भी इसी में सम्मिलित करदिया । सन १८४० ई० में रानी विक्टोरिया ने और भी बहुतसी भूमि इसके लिए प्रदान करके सम्पूर्ण बगीचे और आमोद स्थलोंको जाति के अर्पण करदिया । बगीचेमें कतिपय महल और चौगानजो उक्त रानीसाहबा ने सर्वसाधारण से स्वतन्त्र कर रक्खा था उन्हें भी हीरा जुबिली के समय महारानी जी ने साधारण के लिए खोल दिया । अब इस सुबृहत् उद्यान का प्रसार ढाईसौ एकड़ भूमि में है । हरियावल (Green) के पश्चिमोत्तर भाग की बड़ी बड़ी इमारतों में बनस्पति विज्ञान सम्बन्धी पुस्तकालय है । यहां पर भांति भांति के और देश देशान्तरों, द्वीप द्वीपान्तरों के तरु पल्लव फल फूल आदिके चित्र उनके ऐतिहासिक बर्णन सहित संग्रहीत हैं और अन्वेषण एवं संग्रह का कार्य्य निरन्तर जारी है । मैं क्यू बगीचा देखने गया था तब सर्व प्रथम इस पुस्तकालय ही में गया, द्वारपाल बड़े अदबके साथ भीतर लेगया वहांपर कार्य्याध्यक्ष ने यथोचित भावभक्ति के साथ सन्मान किया पुस्तकालय दिखलाते समय उसने जिज्ञासा की कि मैं फारसी अक्षर और उच्चारण जानता हूं बा नहीं ? हां, का उत्तर पाकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ फिर उसने बिनीत भाव से निवेदन किया कि यदि अधिक कष्ट न हो तो दो चार पत्तों के नामों का उच्चारण बतादिया जाय । मैंने सहर्ष उसकी याचना स्वीकार की । कुछ पत्ते कागजों पर चिपकाए हुए देशान्तर से आए थे उनका इतिहास तो अंगरेजी भाषा में लिखा था परन्तु नामों का उच्चारण अंगरेजी अक्षरों में नहीं लिखा था । मेरी इस थोड़ी सी सेवा के

प्रत्युपकार में कार्य्याध्यक्ष ने न केवल धन्यवादही दिया बल्कि एक सुबिज्ञ कर्मचारी को साथ करदिया कि वह सम्पूर्ण उद्यान हमको भलीभांति दिखला देवै। उसने कहा कि वह इस उपकार के बदले स्वयम् मेरे साथ होकर बाग दिखलाता किन्तु उससमय नवीन आए हुए फूल पत्तों की रिपोर्ट बनाने का कार्य्य अधिक था। उसने ऐसे बांछित समय पर मेरे वहां पहुंचने पर अपने भाग्य की सराहना भी यह कह कर की थी कि मैं बड़ी देरसे इसी चिन्ता में था कि कहां भेजकर इन नामों का उच्चारण प्राप्त करूं ? और सोच रहा था कि बिना दो तीन दिन की देरके यह कार्य्य सम्पादनहोही नहीं सकता ! कि परमेश्वर की कृपासे आपने स्वयम् आकर दो तीन मिनट के भीतरही मेरी मुशकिल को आसान कर दिया, इत्यादि।

पाठक ! क्या यह सच बात नहीं है कि सच्चे उद्योगी और कर्मवान की सहायता परमेश्वर स्वयम् करते हैं ? यदि आप का परमेश्वर पर बिश्वास है अथवा कर्म ही पर बिश्वासहै तो सच्चे चित्तसे कर्मक्षेत्र में अवतीर्ण होकर देखिए कि आपको मन बांछित फल प्राप्त होता है वा नहीं।

Kew Gardens, North Gallery क्यू बगीचे में नार्थ गेलरी—हमारे साथी ने इस इमारत की ओर अंगुली उठाकर कहा कि यह नार्थ गेलरी है। मैंने समझा उत्तरकी ओर होनेही से कदाचित इसका नाम नार्थ गेलरी पड़ाहो। परन्तु जब उसने बताया कि नार्थ नाम की एक श्रीमती देवी ने स्वयम् भूमंडल का भ्रमण करके अनेकों भांति के फूल, पत्ते, पौधे, बूंट, आदिके चित्र तैयार कर यहां उनकी स्थापना की है। तब श्रीमती मिस मेरियन नार्थ का नाम याद करके चित्त उमंग उठा और जल्दी कदम उठाकर मैं मकान के भीतर गया। चित्रकारी देखकर श्रीमती के अपूर्व

पौरुष, चित्तकी दृढ़ता और असामान्य साहस एवं चित्र निपुणता का सजीव प्रमाण मिला। धन्यहै उस रमणीकुल रत्नदेवी को जिसने आजन्म कौमार्यव्रत धारण करके देश देशान्तर भ्रमण किया और यह अनमोल रत्नागार संचय करके जाति और देशका हित साधन किया। सो उनके स्थापित किए हुए चित्रशालाके साथ श्रीमती नार्थ का यत्किंचित् जीवन बृत्तान्त भी बतलाना आवश्यकहै :—

मेरियन नार्थ का जन्म सन् १८३० ई० में नारफोक (Norfolk) के मिस्टर फ्रेडरिक नार्थ के घर हुआ था। मिस्टर नार्थ पारलियामेंटके मेम्बरभी थे। इनकी माता सरजान मैजारी बैंक (Sir John Majoribanks) की बेटी थीं। मिस नार्थको आरम्भहीसे बाजा और चित्रकारी की ओर बड़ी रुचि थी। और शिक्षा के इन विषयों में उन्हों ने इतनी अधिक उन्नति की कि लोग इनकी विद्या को ईश्वर प्रदत्त वा प्राकृत (कुदरती) कहने लगे थे। प्रथमतः मिसनार्थ ने अपने पिताके साथ सन् १८६५ और १८६७ में सायरिया और नाइल तट पर भ्रमण किया और बहुतसे नए नए पुष्प पत्रादिक के चित्र खींचकर स्वदेश को भेजे। जिनकी प्रशंसा बड़े बड़े पारदर्शी विवेचकों ने मुक्त कंठ से की।

सन १८६९ ई०में इनके पिताका देहान्त होगया! पितृवियोग के दुख को मिसनार्थ ने प्राकृत दृश्यों की ओर मन फेरकर सहन किया। और उसीवर्ष सिसली में भ्रमण करके बहुत प्रकारके पुष्प पत्रादि संग्रह किए और मनो योग पूर्वक उनके चित्र खींचे। एक प्रकार की सरपत जैसी घास जिसकी छालपर मिश्रके लोग प्राचीन समय में पुस्तकें लिखते थे बड़ी सुघरता के साथ चित्रित की हुई संग्रहालय में स्थापितहै।

सन १८७२ ई० में मिसनार्थ ने उत्तरी अमेरिका और वेस्ट

इन्डीज की यात्रा की और निराली यात्रा के अनेकों कष्ट सुख से सहन करके चितेरे संसारमें भांति भांति के नवीन आविष्कार प्रस्तुत किए।

इसके पीछे श्रीमती ब्रजील को पधारीं। वहां के महाराजा ने बड़ी खातिरदारी की और राजसी आदर सन्मान से लिया। मिसनार्थ को बनस्पतियों में इतना प्रेम होगया था कि जंगल में फूल पत्तों के मध्य रहने को ही वह अपना पारिवारिक जीवन समझती थीं और नगर वा ग्राम में रहने को महिमानी के दिन मानती थीं। ब्रजीलमें कुछ दिनोंतक मिसनार्थ एक जंगलमें रहीं थीं जोकि बस्ती से आठ मील दूर था। वहां एक दासी स्त्री के भिन्न उनके पास न कोई रहता और न जाता था। यही खाने पीने आदि के सामान लेकर जाती और उनके आदेशानुसार सेवा करती थी। श्रीमतीने अपने उसबन कुटीर और बनसहचरी का एक चित्र खींचा था जोकि इस गालरीमें आज भी उनबीते दिनों को स्मरण कराने के लिए बिराज रहा है। इस यात्रा के बाद मिसनार्थ ने संसार पर्य्यटन का संकल्प करके टेनारिफ (Teneriffe) कालिफार्निया (California) जापान (Japan) बोर्नियो (Borneo) जावा (Jawa) सिंगापूर (Singapore) और सीलोन (Ceylon) एवं हिन्दुस्तानके बहुतसे बन पर्वत तथा हिमालय और गंगाके निकटवर्ती अनेकों स्थान अवलोकन करके पांच सौसे ऊपर नए नए पौधों और बनस्पतियों के चित्र तय्यारकिए।

इस बड़ी यात्रा से लौटकर श्रीमती नार्थ कुमारी को यह ध्यान आया कि अपने परिश्रम के फलमें सर्व साधारण को भी भागी बनाना चाहिए क्योंकि इस नश्वर शरीर का फल केवल परोपकार ही है। अन्यथा सांसारिक पदार्थों का जीवन भर

उपभोग करते करते बिना प्रत्युपकार किए संसार त्यागदेना निःसन्देह साधारण का ऋणी बना रहना है । यह विचार उत्पन्न होतेही श्रीमती ने क्यू बगीचे में अपने व्यय से एक चित्रशाला बनवाकर उसमें अपने सब चित्रों को सर्व साधारण के लिए स्थापित करने का निश्चय करलिया । सन् १८८१ ई० में उक्त भवन तय्यार होगया और श्रीमती ने अपने निज हाथों से सब तस्वीरों को यथा स्थान लगा सजाकर सन् १८८२ में उसे जाति के समर्पण किया । यह दान महोत्सव तारीख नौ जुलाई सन १८८२ ई० को हुआ था । गालरी के चित्रों का बीजक जो कुमारी जीने बनाया था उसकी प्रथमावृत्ति में २००० प्रतियां प्रकाशित हुई थीं । वह सबकी सब जुलाई के अन्त होते होतेही बिक गईं । द्वितीयावृत्ति की पांच हजार पुस्तकें भी दूसरे साल के लिए एक भी नहीं बचरहीं । इससे स्पष्ट प्रगटहै कि जातिने दानका कितना आदर किया । मिसनार्थ को इस बात से बहुत हर्ष हुआ और उत्साहित होकर उन्होंने शेष बचे हुए देशों को बिचर करके अपने इस संग्रहालय को विश्वभर की परिपूर्ण पुष्प प्रदर्शिनी बना देने का निश्चय किया और आस्ट्रेलिया (Australia), तस्मानिया (Tasmania), न्यूज़ीलैन्ड (New Zealand), दक्षिणी अफ्रिका (South Africa), मडागास्कर (Madagascar), मरीशस (Mauritius), आदि देशान्तरों की यात्रा करके उन्होंने अपने आगार को और भी भरपूर किया । अफ्रीका की यात्रा करते समय लोगोंने मिसनार्थ से कहा था कि उस देशमें प्राकृतिक दृश्य कोई भी ऐसे नहीं हैं जो उनके मनको आकर्षित करसकें और न वहां की मरुभूमि में पुष्प पत्र ही उगते हैं ! परन्तु दृढ़प्रतिज्ञ नार्थ कुमारी को यह बातें बिरत नहीं करसकीं और अपनी अणुवीक्षणी दृष्टि से

उन्होंने उस बालुकारण्यमें भी अनेकों फूल पत्तेपाए और चित्रित किए। श्रीमती नार्थ कुमारी ने दक्षिणी अफ्रीका से लिखते हुए एक पत्रमें कहा थाः—

I am very tired and older every day, but this country is worth some fatigue to see. What lies people tell about it ! over and over again I have been told it is a most wretched country. No flowers, nothing ! and I find quantities of the most beautiful things on every side * * *

मेरी थकावट और बृद्धावस्था दिन दिन बढ़ती जातीहै परन्तु यह देश कष्ट उठाकर भी देखने योग्य है। लोग इसके बिषय कैसी अनर्गल बातें कहा करते हैं ! बारम्बार सुना था कि यह देश नितान्त अधम वा कुत्सित है। फूल तो नाममात्रभी नहीं हैं। वहां कुछभी नहीं है। परन्तु हमको तो ढेर के ढेर फूल बड़े ही सुन्दर और मनमोहन पदार्थ यहां पर चारों ओर दीख पड़ रहे हैं, इत्यादि।

आगे चलकर इसी पत्र में कुमारी जीने नानारूप रंगके फूल पत्तों और प्राकृत दृश्यों के बर्णन लिखे हैं। सच है—

जिन खोजा तिन पाइयां गहिरे पानी पैठ।
हौं बौरी ढूढ़न गई रही किनारे बैठ॥

श्रीमती नार्थ कुमारीके निःस्वार्थ साहसने सिद्धकरके दिखा दिया कि जिस अफ्रीका प्रदेश में लोग फूलों तक का अभाव बताते थे वहीं पर उद्योगवान् ब्यक्ति ने प्राकृत पदार्थों का मानो कोष पालिया सो बास्तवमें भगवानके इस बिशाल बिश्वभंडारमें किसी बात की कहीं भी कमी नहींहै केवल सच्चेहृदय और बिशुद्धमानस से सच्चा उद्योग चाहिए ! इन यात्राओं में इतने अधिक चित्र

तय्यार हुए कि श्रीमतीको चित्रशालाकी इमारतभी बढ़ानीपड़ी। इस भांति अपने इस सर्वहितैषी महा कार्य्य को समाप्त करके श्रीमती नार्थ कुमारी ने अपने विश्राम के लिए ग्लासस्टर (Gloucestershire) प्रान्तके अल्डरली (Alderly) नामक स्थानमें एक विशाल उद्यान के बीचमें शान्ति कुटीर बनाया और उसीमें रहने लगीं। मिसनार्थ ने अपनी दिनचर्य्या में सन् १८८६ ई० के बृत्तान्त में लिखा है :—

I have found the exact place I wished for at Alderley in Gloucestershire, and already my garden is becoming famous among those who love plants, and I hope it may serve to keep my enemies, the socalled "nerves" quiet for the few years which are left me to live, the recollections of my happy life will also be a help to my old age. No life is so charming as a country one in England and no flowers are sweeter or more lovely than the primroses, cow slips, blue bells and violets which grow in abundance all round me here.

मेरे मनके अनुरूपही मुझे स्थान अलडरली में प्राप्त हो गया है। बृक्षविज्ञान प्रिय लोगों में यह उद्यान भी प्रसिद्ध हो चला है। यह भी आशा है कि नाड़ी नस आदि रूपी शत्रुओं (रोगों) से यहां बचाव रहे। जीवनके इन थोड़े से शेष रहे हुए बर्षों में यह शत्रु अधिक न सतावें ऐसी आशा है। आनन्द जीवन के सुन्दर स्मारकभी इस बृद्धावस्था में सहायक होंगे। इंगलिस्तान में ग्राम्य जीवनसे अधिक मनोहर अन्य कोई अवस्था नहीं है। और न बसन्त-कुसुम, श्यामामंजरी और बनफशासे अधिक मनोहर और सुदर्शन कोई पुष्प होते हैं। सो यह सभी इस ठौर चारों ओर ढेर के ढेर लहरा रहे हैं।

श्रीमती नार्थ कुमारी ने प्रायः पांच बर्ष पर्य्यन्त इस ग्राम्य भवन में निवास करने के उपरान्त तारीख ३० अगस्त १८९० ई० को अमर लोककी महायात्रा की !!!

धन्यहै रमणीकुल अलंकार नार्थ कुमारीके अनथक परिश्रम को। इनका साहस और धैर्य्य बारम्बार सराहना के योग्य है। कौन कहता है कि संसारक्षेत्रमें कामकरनेको ठौरनहींहै? भगवान के बिस्तृत भुवन में सबकुछ है। निःस्वार्थ परिश्रम और मनोयोग द्वारा अन्वेषणसे तुच्छातितुच्छ तृणसे भी बड़े बड़े उपयोग और उपकार प्राप्त किए जासकतेहैं। जैसाकि मिसनार्थने बालुका राशिमय अफ्रीका देशमें भी रंगबिरंगे फूल पत्तों और मृगतृष्णिका आदि दृश्यों के चित्र प्रस्तुत करके वैज्ञानिकों को भी मोहित करदिया। परमेश्वरने संसार में इतने पदार्थ और इतने कार्य्य उद्यान सिरजे हैं कि बिना स्त्री पुरुष दोनों के अपना अपना भाग सम्पादनाकिए कार्य्यकी पूर्त्ति असम्भव होती है। स्त्रियोंमें स्वाभाविक मृदुता एक ऐसी ईश्वरदत्त वस्तु है कि जिससे वह संसारके अनेकों सुकोमल कार्य्योंको जिस सुगमता और उत्तमता से करसकती हैं वैसा पुरुष कदापि नहीं करसकते! यथा सुकुमार मृदुल शिशुकी शिक्षा क्या यथोचित रीतिसे पुरुष कभी करसकते हैं? वैसेही चित्रकारी और बनस्पति आदिके विषयमें पूरी निपुणता जैसी स्त्रियां प्राप्त करसकती हैं वैसी पुरुष कदापि नहीं करसकते! अतः यदि यहभाग स्त्रियां न बटावें तो निःसन्देह उस जातिमें ऐसे ऐसे महागुणों का अभावही होजाता है।

इसका प्रमाण हमारीही आर्य्य जातिमें प्रत्यक्ष देखाजाताहै!!! हमारे प्राचीन कालमें जबकि स्त्रियां भी समान बिदुषी और कर्मवान होती थीं, तब आर्य्य जाति में भी किसी बात का अभाव

न था ! किन्तु जब से स्त्रीशूद्रौनाधीयतामितिश्रुते की जनश्रुति चली तबसे हम पक्षाघात रोगी के सदृश निरे निष्कर्मण्य और पतित बनगए !!! अतएव अबतो आवश्यक है कि हमारे अग्रगन्ता महाशयगण भी साम्प्रत सभ्य जगत की ओर टुक निहारकर अपनी दशा सुधारने में उद्यत होजांय। सुधार बिना स्त्रियों की दशा सुधारे दुःसाध्य बरन असम्भव है !!! नार्थ गालरी के चित्रों का निर्माण सन १८७२ से आरंभ होकर १८८५ में समाप्त हुआ था। इसमें १४६ प्रकार की जातियों के फूलों और ७२७ बन पर्वतादि में उत्पन्न होनेवाले लता पल्लव एवं मसाला की भांति खानेपीने के काममें आनेवाले लगभग ९०० पौधोंकी तस्वीरें उपस्थित हैं। श्रीमती नार्थ कुमारी के परिश्रम और धन से बना हुआ यह चित्रागार न केवल अंग्रेज जातिही के लिए बरन संसार भर के लोगों बिशेषतः अन्वेषकों और भेषजों के वास्ते सुचारु शिक्षालय है। जितना ज्ञान श्रीमती ने अपना सर्वस्वजीवन लगाकर बनस्पति बिज्ञान बिषय में प्राप्त किया वह सम्पूर्ण उन्हों ने संसारके सन्मुख पुस्तक और चित्रमें परिणत करके ला रक्खाहै, एकबार देखने और विचारने मात्र से वह समस्त ज्ञान दर्शक एक समय में ही प्राप्त करसकता है। धन्य है श्रीमती के इस महादानको। सच्चा परोपकार इसको कहते हैं। क्या हमारे देशके बिद्वान लोग इस आदर्शरमणी के जीवन की ओर तनिक ध्यान देंगे ? वे अपनी उपार्जित बिद्या और अनुभवों को यदि पुस्तकों में करके अपनी जाति और देश के लिए दान करने की चेष्टा करें तो परोपकार के साथ साथ अक्षय कीर्ति भी लाभ होगी।

—+:0:+—

जन्तुशाला ZOOLOGICAL GARDENS

कहते हैं कि लंडन के पशुशाला की भांति सम्पन्न संसार में अन्य दूसरा नहीं है। इस सुविशाल बगीचे में लगभग डेढ़ हजार जातियों के पक्षी, आठ सौ जाति के चौपाए और प्रायः पांच सौ किस्म के कीड़े मकोड़े (सर्प आदि) मौजूद हैं। यथा सम्भव भगवान की जन्तवी रचना के सभी नमूने यहां लाकर रक्खे गए हैं।

परमेश्वर का प्रिय कार्य्यसाधन यदि भक्ति का एक अंग माना जाता है तो हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि इस जंतु संग्रह द्वारा अंगरेज जाति ने जो ईश्वर की अनन्त महिमा का यह एक बड़ा भारी नमूना सर्व साधारण के सन्मुख ला रक्खा है और उसकी चमत्कारी रचना का ज्वलन्त प्रमाण दिखलाया है इसी से उसने परमात्मा की अलौकिक कृपा प्राप्त करके यह सब श्री समृद्धि पाई है। कितने प्रकार के जीव जन्तु, पशु पक्षी, कीड़े मकोड़े, अंडज, पिंडज आदि परमेश्वर ने सृजन किए हैं कुछ ठिकाना है? फिर इन संग्रहकारियों का परिश्रम भी सराहना के योग्य है जो संसारभरका जन्तवी अनुभव इस एक बगीचे के भीतर ही करा देते हैं। पशु पक्षी आदि अनेक देशों और भांति भांति की ऋतुओंके हैं सो वह सभी एकही प्रकारके जल वायु वा भूमिमें जीवित नहीं रह सकते थे, अतः इस बगीचे में ऐसा प्रबन्ध किया गया है कि जो जन्तु जिस देशका है उसके लिए उसी के अनुकूल शीतोष्ण ऋतु बनारक्खी है। कहीं गरम जलके नल लगाए हैं। कहीं बालूकी ढेरी जमाकी है, कहीं घास पत्थर, कहीं ताल पुष्करणी आदि बनादिए हैं। किसी घरके भीतर हिन्दुस्तानी जेठ बैशाख कीसी गरमी है कहीं मारे जाड़के हाथ पांव ठरने लगते हैं। पक्षियों के बैठने उड़ने खाने पीने के वास्ते बड़े बड़े लोहमय जालों के ही

भीतर उनके उपयोगी तरुपल्लवादि लगाए हैं जिनपर वे स्वतन्त्र ता पूर्वक डोलते फिरते रहते हैं । सारांश यह कि सभी जानवरों के आरामकी पूरी पूरी चिन्ता कीगई है । यह सब देखकर मनमें आताथा कि परमेश्वरीय बिश्व बिद्यालय के उपयुक्त और कृत बिद्य छात्र अंग्रेज लोगही हैं । जोकुछ भगवान ने श्रष्टिमें सृजाहै वह सभी कुछ अंग्रेज जातिने भी सीखा वा सीखनेकी चेष्टा की है । सच्ची ईश्वरभक्ति इसका नाम है ।

सम्पूर्ण पशुओं और पक्षियों का बिवरन यहांपर देना मेरे लिए असम्भव है । और कदाचित् आवश्यकभी नहीं है क्योंकि पुस्तकमें पढ़ने मात्रसे कोई अनुभव प्राप्तनहीं होसकता । बड़े खेदका बिषयतो यह है कि हमारे देशबासी महाशय गण देखकर जानना अलगरहा पढ़कर भी तो कोई अनुभव वा उपकार नहीं करते ! कलकत्ता आदि नगरों के जन्तुशालाओं और अजायबघरों को कितने आदमियों ने नहीं देखा ! फिर उनमें से कितनों ने क्या लाभ उठाया !

कीड़े मकोड़ों के विभाग में बहुतेरी किस्मोंकी मकड़ियों को पिंजरेके भीतर हमने जाल बीनते देखा ! चिड़ियोंको गायन करते सुना ! इन जन्तुओं को अपने बन्दी होनेका कोई ज्ञान नहीं प्रतीत होता । कठघरों में बन्द बन्दरोंको दर्शकोंका मुंह चिढ़ाते देखा । यदि कोई तनिक सा छेड़ देता तो वे उसपर बड़ा क्रोध प्रगटकरते और दांत निकालकर दौड़ते थे । छेड़नेवाले इसपर खूब खिल खिला कर हंसते थे । यह देखकर हमको एक पुरानी बात स्मरण आगई थी ! गत १९००–०१ ईस्वी में जब हम चीनदेश में थे तब वहां प्रायः सभी बड़े देशोंकी फौजें साथही साथ रही थीं । कभी कभी फ्रेंच सिपाही लोग हिन्दुस्तानी सिपाहियों को काला कुली

कहकर उपहास करते थे! इसपर हिन्दुस्तानी लोग बड़े चिढ़ते और कभी कभी लड़ने झग ड़ने को मुस्तैद हो जाते थे। परन्तु अं- ग्रेज अफसर लोग इन्हें सम झा दबा कर शान्त करदेते थे। मनमें आया कि क्या हमारी भी दशा ठीक इन्हीं बन्दरों की तरह नहीं थी?

सर्प समूह में हमने अ जगर जातिका एकसांप देखा जिसकी यहख्यातिथी कि यदि उ सके पिंजरे में चूहा छोड़ दियाजावे तो पहिले तो वह उसकी ओर निगाह भी नहीं करता, सो चूहा किसी कोने में चुपचाप दबक जा ता। परन्तु तनिकही देर पीछे सर्पराज सदर्प फुस्कार छोड़कर ज्यों ही चूहे की ओर फन उठाते त्योंहीं वह चूहा दूरही से कूद कर उसके मुखारविन्द में स्वयमेव आकर आत्मसमर्पण करदेता! सर्प देवता को अपने स्थान से हिलने की भी आवश्यकता नहीं होती! यह बात सुनकर समझ में आया कि ठीक यही दशा सबल और निर्बल जातियों की है! सच है--

सबै सहायक सबल के, कोउ न निबल सहाय।
पवन जगावति आगि को, दीपहि देति बुझाय॥

यद्यपि प्राकृतही देखा जाता है कि निर्बलप्राणी प्रायः सबलों के आहार होते हैं परन्तु मानव सम्बन्ध में यह बात प्राकृत कदा चित नहीं है। क्योंकि मनुष्य मात्र एकही जातिके प्राणी हैं और इनके परस्परमें सबलता निर्बलता अपने निज कर्तव्याकर्तव्यों पर निर्भर रहती है। सच पूछिये तो निर्बलताही संसार में एक बड़ा भारी पाप है सो इस पाप से बचने का सबको उद्योग करना चा हिए। हम जो आंख उघार कर निहारते हैं तो हिन्दुस्तानी मात्र की निर्बलता साफ साफ दिखाई पड़ती है।

बगीचे में केवल जन्तु शालाही नहीं बरन आमोद प्रमोदकी सभी आवश्यक बस्तुयें और प्रबंध मौजूदहैं। पान भोजनके बिशाल

भवन नाच कूदके सुचिक्कन आंगन गान वाद्यके सुचारु मंच और लिखने पढ़ने के सुसम्पन्न पाठालय सभी बने हैं। साधारण जन सदा यहां पर चित्त बिनोदनार्थ आया करते हैं और परमेश्वरकी बिचित्र रचना एवं मनुष्यकृत सुन्दर श्रंगार को देखकर मन बहलाते हैं।

हमने एक मान्यवर बृद्ध अंगरेजपादरी महाशय से इसीजन्तुशाला में भ्रमण करते हुए पूछा था कि जितना मन अंगरेज लोग आमोद प्रमोदकी बातों में लगातेहैं क्या उतनाही गिरजे जानेकी ओर भी ध्यान देते हैं वा नहीं? बड़ी सादगी से उन्होंने कहा कि महाशय! अंगरेज लोग इन सब अमोद विषयों को भी ईश्वर भक्ति का साधनहीं मानते हैं। स्वस्थ और प्रसन्न चित्तही तो ईश्वराराधन का अधिकारी होसकताहै? और चित्त प्रहलादनके यही सब उपाय और साधनहैं।

परमेश्वर के प्रति प्रेम तभी उत्पन्न होसकता है जब उसके रचित संसार और सांसारिक पदार्थों में निःस्वार्थ प्रेम उत्पन्न होवै। इसीलिए अंगरेज लोग अपने सब कामों में चित्त बिनोदन को मुख्य समझते हैं। पादरी साहब ने यह भी कहा कि यहां पर प्रायः ऐसी रीति है कि बसन्त और ग्रीषम ऋतुओं में लोग बाहर भ्रमण और सैर तमाशोंमें मग्न रहतेहैं और शरद ऋतुमें गिरिजा घरों में उपासना करते हैं।

पाठक! कैसी सुन्दर उक्तिहै? परन्तु हमारे हिन्दुस्तानी बिचार से तो शायद यहसब बातें उलटी सी प्रतीत होंगी। किन्तु बात बास्तव में सचही है। हमारे शास्त्रभी तो कहते हैं:—

कुर्वन्नेवेह कर्म्माणि, जिजीविषेच्छतग्वंसमाः एवं त्वयि नान्यथेतोस्ति, न कर्मलिप्यते नरे। Ora et Labora

जीवन भर कर्म करतेही रहो। निकम्मे कभी मतबनो परन्तु

कर्मों में ऐसे लिप्त न होजाओ कि मकड़ी की भांति जालाबनाकर उसी में बद्ध हो प्राणतक बिसर्जन करबैठो ! आशय निष्काम अर्थात निःस्वार्थ कर्मसे है । क्या आजकल की अंग्रेजी सभ्यता बिलकुल हमारी प्राचीन सभ्यता की नकल नहीं है ? फिर हमें अपनी ही बस्तुको पुनर्ग्रहण करनेमें क्या हिचकना चाहिए।

+:0:+

जातीय चित्रशाला NATIONAL GALLERY.

इसकी स्थापना सन १८२४ ईस्वी में हुई थी। राजा चौथे जार्जके मन में एक जातीयचित्रागार स्थापित करनेकी अभिलाषा उत्पन्न हुई थी और सर्व प्रथम उन्हों ने इसका प्रस्ताव कियाथा। सन १८२३ ईस्वीमें जब लार्ड डोवर Lord Dower ने इसबिषय को पार्लियामेंट महासभा में प्रस्तुत किया तब सर जार्ज ब्यूमान्टने समर्थन करते हुए प्रतिज्ञा की कि यदि सरकारकी ओर से स्थान का प्रबन्ध स्वीकार किया जावे तो वह अपनी निज संगृहीत सब तस्वीरें जातीय चित्रागार के लिए दान कर देंगे।

प्रस्तावानुसार साठ हजार पाउंड का ब्यय राजकोष से स्वीकृत हुआ और सर्व प्रथम एक महाशय एंगरस्टीन J. J. Angerstein Esqr. की निज चित्रशाला क्रय करके ता० १० मई १८२४ ई० को सर्व साधारण के लिए खोलदीगई। उस समय केवल ३८ चित्र थे।

सर जार्ज ब्यूमाउन्ट ने भी अपनी प्रतिज्ञानुसार निज की१६ तस्वीरें जातिके लिए अर्पण करदीं। सन १८३१ ई०में एक पादरी हालवेल कार साहबने ३५ चित्र अर्पण करके गालरी को बृद्धिगत किया।

सन १८४६ तक इसीतरह के दान दक्षिणाओं से मिलाकर शायद कुल केवल १६२ तस्वीरें थीं ॥

सन १८४७ ई० में एक महाशय राबर्ट बरनन ने १५७ तस्वीरें दानकीं फिर बराबर साधारण जन अपनी अपनी ओरसे उसकी बृद्धि करते रहे।

सन १८७१ ई० में पछत्तर हजार पाउंड धन के व्ययसे बहुतसी तस्वीरें बनवाई और एकत्रित की गईं चित्रशाला के लिए धन सम्बन्धी दानभी सर्व साधारण से बहुत मिला जिनमें निम्न लिखित प्रधान हैं :—

सन १८६४ ई० में एक मिस्टर लेविस ने १००००० पौंड।
सन १८७८ ई० में एक ,, वीलर ने २६१२ पौंड।
सन १८८१ ई० में एक फ्रांसिस क्लार्क ने २३१०४ पौंड।
सन १८८५ ई० में मि० वाकर ने १०००० पौंड।

इनके अतिरिक्त समय समय पर आवश्यकतानुसार राजकोष से एवं सर्व साधारण से सहायता प्राप्त होती रही और जातीय चित्रशालाकी दैनन्दिन उन्नति होतीगई। पन्द्रहलाख रुपएकी लागत से चित्रशाला के वास्ते इमारत भी तय्यार कराई गई जोकि सन १८३२ से आरम्भ होकर १८ ३८ में समाप्त हुई थी।

आजकल इस गालरी में कोई एकहजार तस्वीरें सुप्रसिद्ध चित्रकारों की बनाई हुई उपस्थितहैं। जुदे जुदे बिभागों में समय समय और देश देशान्तरों के चित्रकारों की तस्वीरें लगाई हुईहैं यथा पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी के (Tuscan) चित्रकारों की तथा इटालियन, जर्मन, फ्रेंच, स्पेनिश, बेनीशियन, फ्लिमिश, तथा प्राचीन और आधुनिक काल के ब्रिटिश चित्रकारों की कारीगरी इत्यादि यथास्थान उपस्थित रहकर दर्शकों का मन

हरण करती हैं। कुछ तस्वीरोंका यत्किंचित दिग्दर्शन कदाचित पाठकों को रोचकहो यह समझकर यहांपर दियाजाता है:-

बसन्तकाल में लंडनका दृश्य—आकाश धूमिला परन्तु किंचित प्रभामय, जहां तहां बादलों के टुकड़े दिखलाए हैं। नदी में बहुत सी नाव नौकाएं रंगबिरंगे फूल पत्तों से सजी हुई दौड़की बाजियां लगारही हैं। सड़कोंपर मनुष्यों के चलफिर की भीड़के सिवाय बहुत प्रकारकी गाड़ियां इधर उधर दौड़ती दिखाई हैं। पुलीस मैन कहीं हाथ ऊंचा किए हुए खड़ा है और गाड़ीवानों ने अपने घोड़ों की बागें खींचली हैं।

The Procession from Calvary कालवरी से रथीयात्रा प्रभुमसीह के शवको चार शिष्यगण शूलीसहित अपने कन्धों पर उठाकर लेचलते हैं। सन्त पीटर बगल में साथहैं। माता मरियम भी हाथ जोड़हुए रथीके पीछे पीछे चलती हैं! उनके पीछे दोपवित्र स्त्रियां हैं!!! यह चित्र बड़ाही हृदय ग्राहीहै।

Peasants returning from Market ग्राम्य हाट सौदा इस चित्रमें दो कुमारियां पैदल और एक स्त्री गोदमें बच्चालिएहुए टट्टूपर सवार गांवकी बाजार से लौटतेहुए एक क्षुद्रनदी को पार कररही हैं। बृक्षों की ओटमें हाटभी दिखलाई है। तस्वीर १८३४ की बनी हुई है।

प्रसिद्ध चित्रकार जान कन्स्टबल की बनाई बहुतसी तस्वीरें हैं जोकि प्रायः साधारण ग्राम्यगृह गिरजा चौगान आदि की हैं। परन्तु इनमें हरियाली, जलकण, ओसबिन्दु, आकाश की नीलिमा धूमिलापन, सूर्य्य की किरणें आदि प्राकृत दृश्यों को ऐसी उत्तमता के साथ दिखलाया है कि सब कुछ प्रत्यक्षही से प्रतीत होने लगते हैं।

The Corn Field खेत खालियान–बृक्षों के मध्यमें पके अन्नके ढेर लगे हैं । सामने कुछ दूरपर एक जल प्रवाह में एक चरवाहा मुंहसे पानी पी रहाहै । और उसकी भेड़ों की रक्षा उसकापलातू कुत्ता बड़ी सावधानी से कररहा है । खलियानसे दूर गांवके गिरजा घरका कंगूरा देख पड़ता है । यह तस्वीर सन १८२६ की बनी हुई है ।

The Siege and Relief of Gibralter जिबराल्टर युद्ध जिबराल्टर सागर में जो स्पेनिश लोगों के साथ युद्ध हुआ था उसी की यह तस्वीरहै । समुद्र में कुछ कुछ गोला गोली भी जारी है । कुछ रण पोत हटे जा रहे हैं । कोई कोई गोलों की मार से जल उठेहैं । छोटी किश्तियां उनपर के बचे हुए सैनिकों की रक्षा के वास्ते दौड़ी चली जारही हैं । बड़े बड़े सैनिक अफसरों की प्रतिकृतियां भी चित्र में उत्तमतासे दिखलाई हैं । आकाश, जल, धूवां, चिनगारियां, बाढ़ों आदि को बड़ी ही स्पष्टता के साथ दिखलानेके साथ साथ युद्ध कालकी हड़बड़ी भी लोगों के चेहरों पर साफ साफ झलका दी है ।

Thomas Daniell तामस डानियल–इनका चित्र हमको इस कारण अधिक रुचा कि इन्होंने अपने जीवन के दश बर्ष हिन्दुस्तान में व्यय किये थे और सन् १७८३ से १७९३ तक कन्याकुमारी से लेकर हिमालय पर्य्यन्त के मध्यवर्ती प्रायः सभी प्रसिद्ध स्थानों का भ्रमण किया था । हिन्दुस्तान के बहुत से चित्र इन्होंने अपनी अंग्रेज जाति केलिये प्रस्तुत किये इसकारण इनकी ख्याति अंग्ररजों में बहुत अच्छी है । इनका जन्म लंडन में सन् १७४८ में हुआ था और अपनी जन्मभूमिही में सन् १८४० ई० में निर्बाण प्राप्त हुए ।

William Hogarth विलियम होगर्त—इस सुप्रसिद्ध चित्र कार की बनाई हुई बहुत सी तस्वीरें गालरी में मौजूद हैं। इनका निज चित्र भी दर्शनीय है। होगर्त का जन्म सन् १६९७ और मृत्यु १७६४ में हुई थी! चित्रकारी के अतिरिक्त यह महा शय ग्रन्थकार भी हुएहैं। इनकीबनाई पुस्तक (The analysis of Beauty, written with a view of fixing the Fluctuating of Ideas of Taste) रुचि अनुरूप सौंदर्य्य परीक्षा एक प्रसिद्ध ग्रन्थ है जिसके अनुबाद जरमन और इटालियन भाषाओं में भी हुए और बड़े चाह से पढ़ेगएथे। विलियम होगर्त के बनाए चित्रों में एक बियोगान्तनाटक के छः दृश्य जिसका नाम (The Marriage "A-la-Mode") अनमिल बिवाह है बहुत प्रसिद्ध है। प्रबंध (Plot) यह है कि एक बिन प्रीतिका बिवाह एक ओर की धनाढ्यता और और दूसरेओरकी पदोन्नति (Rank) के कारण से रचाया जाताहै। परन्तु उनमें परस्पर प्रीति बिलकुलनहीं है। अन्तमें पति जो एक प्रतिष्ठित पदस्थ पियर (Peer) है पत्नी के प्रति उपेक्षा और दुर्बृत्ति प्रगट करता है। इसभांति पीड़ित होकर पत्नी भी पतिब्रत धर्मसे पतित होजाती है। अन्त में उसके जार और पति में द्वन्द्वयुद्ध होता है। पति मार डाला जाता है परन्तु जारको भी पुलीस पकड़कर प्राण दंड दिलाती है। शेषमें पत्नी बिष प्रयोग से आत्मघात करती है और अनमिल बिवाह नाटक की झांकी यों समाप्त होती है।

पहिले चित्र में बिवाह की तय्यारियां दिखाई गई हैं। एक बहुत सजे हुए कमरे में दूल्हा दुलहिन के पिता तथा भावीदम्पति की जोड़ी उपस्थित है। बर के पिता अपनी बंशावली खोलकर अपनी और अपने पूर्ब पुरुषों की कुलीनता की बड़ाई बखान रहे

हैं। और कन्या के पिता महाशय दान दहेज आदि का सूचीपत्र खोलकर मानो कह रहे हैं कि धनके आगे कुलीनता को अवश्य शिर झुकाना पड़ता है। उधर भावी दम्पति यद्यपि एकही पलंग (Sofa) पर विराजमान हैं तथापि अपने अपने बर्तावोंसे बतारहेहैं कि ऐसे विवाह वास्तव में विवाह नहीं बल्कि द्यूतकी होड़मात्र होते हैं। जबतक बाजी न जीत सकैं तभीतक का परस्पर संगम है। दुलहिन देवी ब्याहकी अंगूठी को उछाल उछालकर खेलती हुई एक अन्य व्यक्ति (एक युवक वकील) से बातें कर रही हैं और वह इनपर इतना अनुराग प्रगट कर रहा है कि जिससे दूल्हा महाशय को कुढ़न पैदा हो। उधर बर महाशय अपने रूप गुण और कुलीनता के गर्व में तिलमिलाए हुए इन सब बातोंकी कुछ भी परवाह न करके दूरास्थित आईने में अपना बनाव सिंगार निरख रहे हैं।

दूसरा चित्र दम्पतिके भोजनालय काहै। खानेके कमरे में प्रातःकालका नाश्ता सजाहै दूसरे बगल में छोटी छोटी खेलकी मेजापर ताशकी बाजियां अबभी बिछीहैं और मोमबत्तियां जल रहीहैं। समय रात्रिनहीं दोपहर दिनका है। एक नौकर ऊंघता हुवासा दीपकबुझाने की चेष्टा करता हुआ दीखपड़ता है। लेडी महाशया खानेकी मेजपर बैठी जमुहाई लेरही हैं जानपड़ता है कि रातभर जागकर ताश खेलती रहीहैं। पतिमहाशय भी रातभरकी गैरहाजिरी पीछे आकर एक कुरसी पर अलग बैठगएहैं। हाथ पतलून की पाकटों में पड़े हैं। दम्पति में परस्पर अनबन और दोनोंकी स्वच्छाचारिता बहुतही स्पष्ट रूपसे अंकित कियाहै।

तीसरे चित्रमें एक छद्मवैद्य और एक दूतीका अपूर्व दृश्य दिखलायाहै। बीबीने यह ठट्ठा कियाहै। एक दूती द्वारा अपने

दुश्चरित्र पतिको धोखादिलाकर एक युवती के समीप भेजा है और वहां एक छद्मवैद्य भी उपस्थितहैं । परिहासमें अनर्थ के भय से दूती एक छूरा लेकर जार को डराती है । वैद्य महाशय शान्त भाव से यहसब देखते हैं । मन्दभाग्य युवतीके चेहरेपर डरकाभाव अपूर्व रूपसे परिलक्षित है ।

चौथा चित्र काउन्टेस का श्रृंगारभवन दिखलाता है । वृद्ध पियर (Peer) महाशय (दूल्हाके पिता) का देहान्त होजानेके कारण अब यह दम्पति अर्ल और काउन्टेस (Earl and Countess) पदाधिकारी होगएहैं । अर्थात् पत्नीकाधन पतिको और पतिका कौलीन्य पत्नीको प्राप्तहोगया है । विवाहका अभीष्ट सिद्ध होचुका काउंटेस पदवीको प्राप्तहोकर बीबीके बनाव श्रृंगारका अब अन्त नहीं रहा । उनका श्रृंगारभवन नगर के बड़े आदमियों से भरा हुआहै । उनमें युवावकील सिल्वरटंग महाशय और एक इटालियन गवैया भी है । तस्वीर में सिल्वरटंग साहब सोफापर आधे लेटेहुए काउन्टेस महाशयाके हाथमें एक टिकट देरहेहैं । इस चित्र में दस ग्यारह आकृतियां बड़ीही सुन्दरतासे खींची गई हैं ।

पांचवें चित्रमें द्वन्द्वयुद्ध के परिणाम में अर्लका माराजाना दिखलाया है । युवा सिल्वरटंगसे अपनी पत्नीका अनुचित व्यवहार जानकर अर्ल महाशयने उससे द्वन्द्वयुद्ध किया और उसके द्वारा मारेगए । सिल्वरटंग भागनेका प्रयत्न करता है । परन्तु पुलीस ने आकर पकड़ लियाहै युद्धस्थली शयनागार रूपमें सजी हुई दिखलाई है ।

छठवां चित्र सर्वान्तिक दृश्यका है । कांउटेस अपने पिताके घरमें विषप्रयोग द्वारा आत्मघात करती हैं । मकानकी खिड़की टेम्सनदी की ओर खुली हुई है । नदीकी धारा और किनारे भी

दीखपड़ते हैं। मकान में एक सोफापर काउन्टेस का शरीर पड़ा हुआ है। भूमिपर बिषकी खाली बोतल पड़ीहै और उसके पासही एकटुकड़ा कागजका है जिसपर यह लिखाहै कि काउन्सेलर सिल्वर टंग की मृत्युही इस मृत्युका कारण है !!

इससे प्रगट है कि अर्लको द्वन्द्व में मारडालने के अपराध में सिल्वरटंगको अदालतसे फांसी होगई थी यही सुनकर काउन्टेस ने आत्मघात किया है। उसके पिता यत्नपूर्वक अंगुलियों से अंगूठियां उतार रहे हैं इस मृत्युके लिए शोक करनेवाले केवल दो हैं! एकतो काउंटेसका शिशुबालक और दूसरी उनकी दासी जोकि बालकको गोदमें लिए हुए शवके समीप रुदन कररही है। मकानके पीछे घराने के डाक्टर साहब लौटे हुए जाते दिखाई पड़ते हैं। बाहर एक पन्सारी (Apothecary) बड़ी घबराहटमें खड़ा है। मानो विषबेंचने के कारण इसपरभी कोई विपत्ति आनेवाली है। मकानके एक पार्श्व में बिछीहुई खानेकी मेजपरसे एक ऊंचा पूरा मरभुखा कुत्ता कुछकेक उठाले भागनेकी चेष्टा कररहा है।

बस यही उस अनमिल बिवाहका परिणाम है! चित्रकार की कुशलता चित्रोंके अंग अंग से प्रत्यक्ष होतीहै। चित्र देखतेही सम्पूर्ण इतिहास चित्तपर आन उपस्थित होते हैं। यह चित्र सन् १७४४ ईसवी में तय्यार हुए थे परन्तु आज भी इनकी आब ताब ऐसी है कि मानो अभी चित्रकार के घर से लाकर धरे गए हैं।

होगार्त ने इन चित्रों को सन १७५० ई० में नीलाम में बेंचा था जब कि ऐसे सुन्दर और बहुमोल वस्तुके इतने गुणग्राहक भी न थे कि शिल्पी को उसके निजलागत और परिश्रमका उचित बदला मिलसकता। उस समय केवल एकही ग्राहक मिष्टर लेन इन तस्वीरों को क्रयकरने को उद्यत हुए थे और उन्होंने केवल

१२६ पाउंड में खरीदीं। होगार्त इस नाकदरी से बहुत हतोत्साह हुआथा क्योंकि यह दाम उसके परिश्रम और चित्रों के सौन्दर्य्य की अपेक्षा बहुतही कमथा। पीछे इन्हीं तस्वीरों को मिष्टर अंगर स्टीन ने सन १७९७ ई० में १३८१ पाउंड में खरीदा था।

इनबातों से स्पष्ट जाना जाता है कि कोई भी पदार्थ वा गुण चाहे कैसाही उतकृष्ट क्यों न हो जब तक उसका परिचय और ज्ञान सर्वसाधारण को भलीभांति नहीं होता तबतक गुण ग्राहकता भी नहीं होती। इसदशा में गुणी वा आविर्भावक लोगों को हताश वा उपेक्षाव्रत्त कदापि न होना चाहिए वरन सर्वसाधारण को उनविषयों में शिक्षित करना आवश्यक है। ज्यों ज्यों साधारणको ज्ञान प्राप्तहोगा त्यों त्यों गुणोंकी चाहभी बढ़ती जायगी।

आजकल बहुधा हमारे देशके हिन्दी ग्रन्थकार अपनी पुस्तकों का आदर न देखकर ऐसेही हताश होकर आगेको लिखनाही छोड़बैठते हैं। उनको होगार्त आदिके समयकी याद करना चाहिए और अपने कर्तव्यको आनेवाले समयके भरोसे पर निरन्तर करते रहना चाहिए।

The Field of Waterloo June 18, 1815 वाटरलू समरक्षेत्र जून १८वीं सन १८१५ ई०

कवि बायरन कहते हैं:—

Last noon beheld them full of lusty life;
Last eve in beauty's circle proudly gay;
The midnight brought the signal sound of strife,
The morn the marshalling in arms; the day,
Battle's magnificently stern array!
The thunder-clouds close o'er it, which when rent,
The earth is covered thick with other clay,

Which her own clay shall cover heaped and pent,
Rider and horse, friend, foe, in one red burial blent.

लख्यो बिगत मध्यान्ह तिन्हैं बर बल तन धारे ।
गत सन्ध्या अहमेव सहित सौन्दर्य्य पसारे ॥
रण दुन्दभि अध राति परम परचंड बजायो ।
प्रातकाल अति प्रबल समर महि शस्त्र चलायो ॥
दिवस माहि युत बहु सजाव रण व्यूह बंधायो ।
घन सविज्जु बहु छये बहुरि छनदा चमकी जब ॥
न्यारिहि धूलि प्रगाढ़ जमी महि मंडल पै तब ।
जेहि कुधूलि* कहं राशि लागि सबभांति छपायो ॥
हय सादी हय मित्र शत्रु मृत-गर्त्त† मिलायो !!!

इसचित्र में वाटरलू युद्ध का दृश्य बहुत स्पष्ट रीति से दिख लाया है। मैदान में मनुष्यों और घोड़ों आदि के शवों के ढेर पड़े है ! रात्रि के सुनसान में कतिपय स्त्रियां मशालें जलाकर मृतकों के मध्य में अपने सम्बन्धियों को खोज रही हैं ! एक ओर किले में आग लगी हुई अब भी जल रही है ! दृश्य बड़ाही हृदय ग्राही है ! तस्वीर चार फीट नौ इंच ऊंची और सात फीट नौ इंच चौड़ी है। और सन १८१८ ई० में तय्यार हुई थी।

Chineden on Thames टेम्स नदीतट—कुछकुछ पानीमें कई गौयें खड़ीहैं। नौकायें पाल गिराएहुए किनारे लगीहैं। कतिपय सुन्दर फूल पत्तों से लदे हुए बृक्ष नदीमें झुके हुए हैं। दूरपर पुराने मकानात दिखलाई पड़ते हैं। दृश्य ऐसा सुन्दर है कि नदी बृक्षादि मानों आंखों के सन्मुख प्रत्यक्ष लहरा रहे हैं। धन्य है चित्रकार की बिचक्षण कारीगरी को।

---

* पृथ्वी की धूल। † कबर।

The blind fiddler सूरदास—एक परिवारमें बैठे सूरदास सरंगी में कुछ रागसुना रहे हैं। एक कुरसीपर पांव फैलाए हुए गोदमें एक बालकलिए माता बैठी है। पार्श्वमें दूसरी चौकी पर बैठा हुआ पिता अपनी अंगुलियोंसे बच्चेको बहलाता है। पीछे एक कुटिल बालक अपने हाथों में चीमटा फुकनी लिए हुए सूर दास का मुंह चिढ़ाने की चेष्टायें कर रहा है। एक कुत्ता भी निश्चेष्ठ भावसे खड़ा हुआ मानों रागमें लवलीन हो रहा है। तसवीर में परिवार के कुल बारह चित्र कुत्ते सहित दिखलाये है। हम समझे थे कदाचित हमारेही देशके सूरदास लोग भजनानन्दी होते होंगे परन्तु इस चित्र को देखकर जान पड़ा कि प्रायः सर्वत्र ही यह लोग गानवाद्य के प्रेमी होते हैं॥

धर्म सम्बन्धी तस्वीरें! बाइबिलकी कथाओं के सम्बन्ध में भी बहुतसी तस्वीरें प्रायः चार पांच सौ बर्षतककी पुरानी बनी हुई मौजूद हैं। इनमें माताके गोद में शिशुमसीह, शिष्यों के मध्यमें और दूतोंके साथ मसीह की तस्वीरें, तथा और भी बहुतेरी आश्चर्य्य कर्मों की दिखानेवाली और कतिपय अनोखी असंभव चित्रकारियां भी हैं। पाप पुण्य, स्वर्ग और नरक, सुख और दुख, धर्म और अधर्म आदि के काल्पनिक चित्रभी तत्कालीन समझके अनुसार अच्छे बनाएहैं।

यह चित्रशाला दर्शकों के लिए बिनाफीस सदा खुला रहता है। थोड़े बहुत स्त्री पुरुष इसस्थानपर प्रायः सब समयमेंही मौजूद रहते हैं। कोई चित्रकारी में निपुणता प्राप्त करने के लिए खूब ध्यान से तस्वीरों के अवयवोंको निरख परख रहे हैं कोई रंगोंकी चटकईपर बिचार कररहे हैं कोई कोई केवल सौन्दर्य्य निरीक्षण ही से चित्त बहला रहे हैं।

पाठक ! हमको तो अंग्रेजों की रुचि सौम्यता पर बारम्बार सिहाना पड़ता था ! जो बात हमने देखी सभी मनको प्रसन्न, फुर्त, और आनन्दित करनेवाली साथही उन्नति की ओर लेजा नेवाली पायी ! परमेश्वर हमें भी वैसीही रुचि देते ! कि हम भी कर्मण्य बनकर सच्चे सुख के भागी होते !!!

Foreign Schools नेशनल गालरी के वैदेशिक विभाग में यूरोपीय अन्य देशोंके चित्रकारोंकी बनाईहुई तस्वीरें रक्खीगईहैं। यह सबभी एक दूसरे से चढ़ बढ़कर हैं। प्रधानतः इनमें धर्म सम्ब न्धी चित्रही अधिकहैं। माता मरियम कहीं बालक मसीह को गोद में लिये हुए हैं। आसपास सन्तजोजेफ, सन्तजान आदि बिराजते हैं। कहीं महात्मा मसीहके शूलीका भयानक दृश्य हृदय में करुणा उपजा रहा है। हाय हाय! महापुरुष के शिरपर कांटों का मुकुट पहिराकर दुष्टों ने शूलीपर कीलों से ठोकदिया है! क्षतों से रुधिर प्लाव जारी है !! शिष्य गण असहाय अवस्था में खड़े आकाश की ओर ताक रहे है !!! कैसा भीषण दृश्य है !

जिन महात्मा मसीह का नाम लेकर प्राण न्यौछावर करने वाला आज दिन पृथ्वी का एक बहुत बड़ाभाग प्रतिक्षण उद्यत होरहाहै। जो आज परमेश्वरके गोदका एकलौताबेटा मानाजाता है। जिसकी शिक्षा और बल पराक्रम का आंतक आज संसार भर मानता है उसी महात्मा मसीह की उसके जीवनकाल में ऐसी दुर्दशा हो ? पाठक ! इससे क्या प्रत्यक्ष नहीं दीख पड़ताहै कि साधारण आत्माओंमें महान उपदेशों का प्रभाव तत्काल नहीं पड़ सकता ! परन्तु महापुरुषों के उपकार निष्फल भी कदापि नहीं जाया करते ! संसार उनके उपदेशों और उपकारों का फल समयान्तर में प्राप्त करता और उन्हें असाधारण मान्य देताहै।

धर्म सम्बन्धी चित्रों के अतिरिक्त समुद्र नदी नौका जहाज आदि की भी तस्वीरें बहुतही सुन्दर और स्पष्ट हैं।

Natural History Museum पदार्थ विज्ञान अद्भुतालय-यहां पर परमेश्वर के रचना की पड़ताल खूब ही की गई है। अधिक क्या कहें आकाश से लेकर पृथिवी पर्य्यन्त सामान्य रूप सभी पदार्थों की नुमायश यहां मौजूद है। इस विशाल भवन में प्रवेश करते ही मध्यवर्ती प्रांगण (हाल) में ऋषि डार्विन की मूर्ति के दर्शन होते हैं। पदार्थ विद्या के वास्तविक मन्त्रद्रष्टा आचार्य डारविन के नाम और उनके आविर्भावों और शिक्षाओं से आज कल प्रायः सभी पढ़े लिखे लोग अभिज्ञ हैं। सो उनकी मूर्ति को इस अद्भुतालय में स्थापित करके स्थापकों ने निःसन्देह उक्त महात्मा का पूरा आदर किया है। इनकी शिक्षाओं को भली भांति समझाने के वास्ते मनुष्यादि प्राणियों के कंकाल लटकाए हुए हैं और साथ ही पशुओं के कंकाल भी हैं। प्रत्येक अवयव को एक दूसरे से सादृश्य मिलान के वास्ते अलग अलग फैलाकर भी लगा रक्खाहै इसी तरह से परमेश्वर की कारीगरी की अच्छी समालोचना कीगई है। विद्यार्थी लोग तो यहां आकर अपने अभीष्ट विषयों में अच्छा ज्ञान प्राप्तकरतेही हैं परन्तु साधारण दर्शक भी यदि ध्यानपूर्बक सब वस्तुओं को देखें तो बिना पंडित बने निस्तार नहीं पासकता।

इसमें बहुतसे विभागहैं यथा -(Geology) भूगर्भ बिद्या सम्बन्धी पशुसम्बन्धी. (Mineralogy) धातु विद्या सम्बन्धी. (Botanical) बनस्पति सम्बन्धी। हरएक पदार्थकी प्राथमिक अवस्था और उसके रूपान्तर एवं कार्य्यान्तर स्पष्ट रीतिसे दिखलाए हैं। यथा— कपास का बीज, रूई, ऊन, सूत, बस्त्र।

इसीतरह जीवोंके अण्डा वा पिंडसे लेकर उसके मरणान्तर पर्य्यन्त की सब अवस्थाओंके रूप यथा तथ्य मौजूद रक्खे हैं। बृक्षों के बीज से लेकर सैकड़ों बर्ष के पुराने बृक्षों की अवस्था आदि उनकी मोटाई के फेरों पर सम्बत के नाम खोदकर बतलाया है। देश देशान्तर के मनुष्यों के चेहरे उनके मस्तिष्कोंकी बनावट और भेदसहित मौजूदहैं। पशु पक्षी जो जिस देशकेहैं उन्हें उसी देशकी स्थितिमें रक्खा गयाहै अर्थात् बृक्ष मट्टी घोसला आदि सब असली ही लाकर रक्खाहै। धातु विभाग में खनिज पदार्थों के सम्पूर्ण रूप रूपांतर एवं समय समय और देश देशान्तर के निर्माणभी संग्रह किए हैं। मणि रतनादि खंडमें असंख्य सम्पत्ति संग्रहका कुछ ठिकानाही नहीं है।

अकेले हिन्दुस्तानसे लूटकर जो मणि माणिक्य वहां गएहैं उन्हींका मूल्य निरूपण करनेमें अंग्रेजोंका अटकल काम नहीं देता एक महाशय फ्राई (Fry) ने कहाथा—

In the inner room the visitor will be able to form some idea of India's gorgeous Jewels. The value of this collection is almost inestimable.

अर्थात भीतर के कमरेमें दर्शक को हिन्दुस्तान के महारत्नोंका कुछ हाल मालूम होसकेगा। इनका मूल्य निरूपण करना असम्भव है।

पाठक! तुम आज दरदर झांकते फिरते हो कि हाय हम कंगाल होगए!! धरती हमें खाने भरको अन्न भी नहीं उपजाती और न मेघ पीनेभरको जलही वर्षातेहैं!!! हाय हमारा संचितधन गड़ा हुआ धनभी न जानें क्यों धरती ही में समागया! पर यदि ताकझांक छोड़कर सचमुच आंख खोलकर देखो तो जानसकोगे कि जिस वैद्युत शक्तिने तुम्हारे हाथ पांवकी संचालिनी शक्तिको

हर लिया है, जिसने अपने चमत्कारके आगे तुम्हारी आंखें मुंध लादी हैं उसी महाशक्ति ने तुम्हारे गड़े हुए धनागारको भी खींच कर समुन्दर पार जा फेंका है। नहीं सुनते India's Gorgeous Jewels की डाह भरी आवाज कितने गहिरे से निकल रही है? तुम चाहे जितना गहिरे पातालमें गाड़कर क्यों न धरो आज तो ऐसा भैरवीचक्र है कि कहीं भी बचाव की सूरत नहीं। अद्भुतालयके एक कोने में पड़े हुए हिन्दुस्तानी रत्नों मात्रका मूल्य निरूपण जब असंभव हो रहा है तब बताइए तो सही कि सारे देश में फैली हुई हिन्दुस्तानी मायाका कौन हिसाबहै? प्रश्न क्या क्या ही रहा कि हिन्दुस्तान की दौलत कहां गई?

भाई! बिदेशोंमें जाकर देखो तब जानोगे कि संसारमें क्या हो रहाहै और तुम्हारी क्या दशा है! घरके भीतर पड़े पड़े यह सब कैसे मालूम हो सकता है? जो लोग बिदेश यात्रा में धर्मकी हानि बताते हैं वे कपटी और महापापी हैं। हमको निश्चय हुआ है कि परमेश्वरने उन स्वार्थी दुष्टात्माओं के लिए महाघोररौरव नरकके बीचमें एक महामोहान्धतामिश्र नामक ब्लैकहोल (काल कोठरी) बनवा रक्खी है उसी में यह सब लोग चमगीदड़ की भांति लटकाए जावेंगे।

यूनाइटेड सरविस क्लब।

UNITED SERVICE CLUB

(Senior and Junior.)

इंगलिस्तानमें क्लबों का प्रचार बहुतायतसे है। बहुत प्रकारके क्लब प्रायः सर्वत्र स्थापितहैं और प्रत्येक ब्यक्ति किसी न किसी क्लबका सभ्य अवश्यही होता है। यूनाइटेडसरविस क्लब सरकारी

कर्मचारी आदिकों का बड़ा प्रतिष्ठित क्लब है । सभ्यों की बहुतायतसे इसमें दोभाग करदिएगए हैं सीनियर और जूनियर अर्थात् बृद्ध और युवक । इमारतों और सामानका बर्णनमैं क्याकरूं सभी एक दूसरेसे चढ़बढ़कर और प्रत्येक अपनेआपही स्वर्गका नमूना एवं कुबेर का धनागार है ।

मुझको सीनियर (बृद्ध) क्लबमें ही प्रायः जाने का अवसर हुआ है । जब अवकाशाभाव से परस्पर मिलने का समय निज निज स्थानों पर नियत नहीं किया जा सकता तब लोग क्लबों में मिलने का निश्चय करते हैं । क्योंकि प्रायः सभी मेम्बर प्रतिदिन थोड़े बहुत समयके वास्ते क्लबमें अवश्यही आते हैं । सो वहां पर चाहै जब बिना प्रतीक्षा (इन्तिजार) के भेट मुलाकात होसकती है । मैं भी ऐसेही अवसरों पर इस क्लब में गयाहूं । यहांपर स्वेत केश महाशयों के अतिरिक्त युवक एकभी नहीं देखा । बड़े बड़े राज कर्मचारी सिविल और मिलीटरी, पेंशनर और कर्मठ यहांपर मिले बहुत महाशयगण प्रायः पूरी कर्मठ वय हिन्दुस्तान में व्यतीत करके गएहुए मिले । उनको हिन्दुस्तानके विषय बातचीत करना बहुत प्रिय बोधहोता प्रतीत होताथा । जो लोग हिन्दुस्तान न भी आएथे वे भी किसीसे कम विज्ञ नहीं जानपड़ते थे । जिन लोगों का राजनैतिक सम्बन्ध में कुछभी हाथ है वे हिन्दुस्तान के विषयों को खूब अच्छीतरह जानते और समझते हैं । यहतो मुझे विस्वास होगया ।

क्लबका सेवाप्रबन्ध भी बहुतही उत्तम और फुर्ती का है । सेवक लोग बड़े चतुर और आज्ञाकारी एवं आवश्यकता को तत्काल पहिचान लेने वाले । सेवकोंको पुकारनेवाली घंटियां ऐसे सुठौर ठौर लगीहैं कि आगन्तुक के बिन जानेही नौकर ततकाल

आन उपस्थित होताहै और तनिक इशारा पातेही खातिरदारी के सामान. चाय, काफी, केक अथवा ह्विस्की आदि सामने सजा देता है। आतिथ्यकारी अपने हाथसे चाय आदि ढालकर मह मान को देता है। खातिरदारी का बहुतही सुघर प्रबन्ध है।

---+:0:+---

पारलियामेंट सभाभवन।
HOUSES OF PARLIAMENT.

राजकीय महा सभा भवन हिन्दुस्तान के महाराज इंगलिस्तान में रहते हैं। महाराजाकी सभा भी वहीं है। परन्तु साम्प्रतिक सभ्य प्रणाली के अनुसार राजसभाको राजाकी सभा कदापि नहीं कहसकते। प्रजाकी सभा चाहे भलेही कहलें। सो यह उप रोक्त राजकीय महासभा भवनभी प्रजाकी बैठकहीहै। इंगलिस्तान की साधारण प्रजाही हमपर शासन करती है। पार्लियामेंट प्रजा के मुखिया लोगोंकी सभा है इसके दो बिभाग हैं। कामन्स और लार्डस यहबात प्रायः सभी जानते हैं।

यह महासभाभवन सन १८४० में आरम्भ होकर १८५७ में बन चुकाथा। इसका फैलाव आठ एकर भूमिमेंहै। नदीकी ओर का सामना ९४० फीट लम्बा है। सम्पूर्ण हवेली में राजकीय बि भाग, लार्डसभा, कामन सभा और मध्य प्रांगण के अतिरिक्त ग्यारह चतुष्कोण कचहरियां, पांचसौ बिभाग और १८ निवास स्थानहैं। इसका घंटाघर तीनसौबीस फीट ऊंचाहै। घड़ीका वजन साढ़ेतीनसौमन बतलाते हैं समयकी सुई साढ़े ग्यारहफुट लम्बी है रात्रिके समयमें इस घंटेका शब्द प्रायः सब नगर सुनसकता है। इसका समय सदा ठीक ठीक रहता है। कहतेहैं कि चार सेकेंड से अधिक का फरक इसके जीवन भरमें कभीनहीं पायागया।

सभाभवन में प्रवेश करते समय दोनों पारश्वोंमें बडे बड़े राज नैतिकों की मूर्तियों के दर्शन होते हैं। इन मकानों की रोशनी के लिए चालीस हजारसे ऊपर बिजलीके लैम्प जलतेहैं और बाहरी भागों में तीसहजार रुपए मालके खरचेसे गैसकी रोशनी होतीहै। सभाकी बैठक के समय घंटाघरके ऊपर बहुत बड़ी बिजली की ज्योति जला करतीहै जिससे नगरभरमें बैठककी विज्ञप्तिहोजातीहै।

विक्टोरिया टावरनामक बुर्ज ३४० फीट ऊंचीहै यहां नारमन राजाओं (Norman Kings) की मूर्तियां स्थापितहैं। विक्टोरिया गालरी नामक बृहत विभाग में वाटरलू युद्धके पीछे वेलिंगटनकी सभा एवं नेलसन की मृत्युके चित्र कांचपर बनेहुए लगे हैं।

लार्ड सभाकी सजावट बनावट सभी बहुत ऐश्वर्य्यमई है। धातु और काठपर के काम बड़ेही सुघर और मनोहर हैं। सामने राजगद्दीहै तिसके सन्मुखही लार्ड चान्सलर(Lord Chancellor) की मसनद (Woolsack) है पियर (Peers) लोगोंकी बैठक बरा बर बराबर श्रेणियों में है। राजगद्दी की ओर को सामना लिएहुए रिपोर्टरों (सम्वादपत्रों) की गालरी और उनके पीछे दर्शकों का स्थान है। दीवारों पर बहुतसी भाव पूर्ण तस्वीरें लगीहुई हैं।

कामन सभा यद्यपि चमक दमक में लार्ड सभाके बराबर नहीं है तथापि साज सामान और बैठक निबन्ध आदि में उसके समानही है। लार्ड सभामें जिस ठौरपर राजसिंहासन है कामन सभा में उसी स्थानपर स्पीकर की बैठक (Speakers Chair) है। पासही दर्शकों की गालरी है। सन्मुख की बैठकें मेम्बरों की हैं और पार्श्वमें रिपोर्टरों के लिए स्थानहै। स्त्रियोंकी गालरीमें केवल चालीस बैठकें हैं। कामन सभा में छः सौ सत्तर सभ्य हैं। ऊपर के हालमें अनेकों तस्वीर समय समय के दृश्य और नाटकों के

अंश चित्रपटी और शीशोंपर लगे हुए हैं । पार्लियामेंट के इमारत की लागत साढ़े चार करोड़ रुपये बतलाते हैं । कहते हैं कि इस में अग्निदाह का डर अब बिलकुल नहीं है । यदि आग लगै भी तो केवल काठ का असबाब सामान मात्रही जल सकता है । छत और इमारतमें कोई नुकसान नहीं पहुंच सकता ।

—+:०:+—

लंडन का पुल LONDON BRIDGE.

लंडन का पुल भी एक बहुत प्रसिद्ध निर्माण है यहांतक कि इंगलिस्तान में एक मसल चलगई है कि ऐसा सुन्दर जैसा लंडन पुल As fine as London Bridge । वर्तमान पुल सन् १८३१ ई० का बना हुआ है परन्तु कई शताब्दी पहिले से भी यहांपर एक सुबृहत् पुल था जोकि अपनी दृढ़ता और सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध था । सन् १६८३ ई० के कठिन शीतमें जबकि टेम्स नदी जमकर बिलकुल बरफ होगई थी तब इसी पुल के निकटलकी वक्ष पर बहुत बड़ा मेला लगा था जिसमें भांतिभांति की अग्निक्रीड़ायें और दूसरे खेल तमाशे जमे हुए जलके ऊपर किए गए थे । सन १८१४ ई० के शीत ऋतु में भी नदी जमकर पत्थर होगई थी । इसपुलके बनाने में चौदह लाख अठावन हजार तीन सौ ग्यारह पाउंड धन व्यय हुआ था । कहतेहैं कि इसपुल परसे प्रति चौबीस घंटेमें बीस हजार गाड़ियां और एकलाख सात हजार पैदल आदमी निकलते हैं ।

—+:०:+—

सन्तपाल गिरजाघर ।
ST. PAUL'S CATHEDRAL.

कहते हैं कि इसी ठौर पर इसी नाम से बनाहुआ यह तीसरा

गिरजाघरहै । १६६६ ई० के प्रसिद्धदाहके पीछे बर्तमान इमारतकी नींव प्रतिष्ठा ता० २१ जून सन १६७५ ईस्वी में हुई थी और पूरे पैंतीस बर्ष में सन १७१० ई० में बनकर तय्यार हुआ था । इसमें सातलाख सैंतालीस हजार नौ सौ चौवन पाउंड धन व्यय हुआ था । मध्य स्थानकी लम्बाई ५५० फीट चौड़ाई १२५ फीट और ऊंचाई २२२ फीट है । बेदी (Cross) के पासकी ऊंचाई ३७० फीट है । सन्तपाल, सन्तपीटर, सन्तजेम्स की मूर्तियां भी यथा स्थान स्थापित हैं । दोसौसाठ सीढ़ियों पर चढ़कर ऊपरकी मंजिल में जाना होता है । सहस्रोंजन वहां चौफेर बैठकर उपासना आदि सुनसकतेहैं । यहां की एक आश्चर्यमय बात यहभीहै कि चाहे जिस कोने से दीवार के समीप मुंह करके धीरेसे भी कोई बात कहनेसे दूसरे छोरवाले आदमी भली भांति सुनसकते हैं ।

इस गिरजाघरके साथ एक पुस्तकालय भीहै जिस में सहस्रों पुस्तकें और हस्तलिपियां सन्तपालके समयकी मौजूदहैं । घड़ी घर मीनारभी दर्शनीय है । यहां की घड़ी १९ फीट लम्बी और बहुतही भारी है ।

स्वर्णमंडप (Golden Gallery) नामक स्थान के बाह्यभाग परसे लंडननगर की शोभा भलीभांति दीख पड़ती है । गलीगली स्पष्ट रूपसे दिखलाई देती है ।

सन्तपाल में आन्हिक पूजा प्रातःकाल आठ और दसबजे तथा दोबजे फिर सन्ध्याको चारबजे और रातमें आठबजे नित्य होती है । रबिबारके दिन आठ, साढ़ेदस, सवातीन और सातबजे पूजा होती है ।

सन १५०९ ई० में सन्तपाल ने धर्म शिक्षा के वास्ते एकस्कूल स्थापित कियाथा । जिसमें १५३ लड़कों के रहने और शिक्षापाने

का बिधानथा । सन्तजानकी पुस्तक पर्ब २१ में लिखाहै कि साइमन पीटरने जालखींचा और उसमें १५३ बड़ीबड़ी मछलियां आफंसी । इसी लेखके अनुसार सन्तपालने भी अपने स्कूल में एकसौ तिरपन बच्चे रखनेका प्रबन्ध कियाथा । सन १८८४ ई० मेंयह सन्तपाल स्कूल अन्यत्र एक बड़ी इमारत में उठगया और वहांपर एक हजार लड़कोंके रहने पढ़नेका प्रबन्ध हुआ । यह नवीनस्थान हैमर स्मिथ नामक महल्ले में चालीस हजार पाउंडपर क्रय हुआथा और एकलाख बीसहजार पाउंड के ब्ययसे इमारत बनीथी । इस स्कूलके लिए बार्षिक बारह हजार पाउंडका चन्दा मिलता है ।

+:0:+

कचहरियां LAW COURTS.

न्यायालय की इमारत सन १८६८-८२ की बनीहुई हैं । इसका प्रवेशोत्सव महारानी बिक्टोरिया ने डिसम्बर सन १८८२ ईस्वी में किया था । और न्याय विभाग के कार्य्यालय वेस्टमिन्स्टर हाल से जनवरी सन १८८३ में यहां उठआए थे । कुल इमारत पांच एकर भूमिके घेरेमें है । कचहरी के बिभाग खूब लम्बे चौड़े सैकड़ों फीट के बने हैं । जूरी हाल-और रजिस्ट्रार तथा हाकिमों के कमरे बहुत प्रशस्थ और सुन्दर हैं । इनके अतिरिक्त पान भोजनालय आदि आवश्यक स्थानों और सामान की भी बहुत उत्तम ब्यवस्था है । कुल हवेलीमें कोई आठसौ अभ्यान्तरिक बिभाग और हाल हैं एवं तीनसौ बाहरी कमरे हैं । भूमि और इमारतकी लागत साढ़े इक्कीस लाख पाउंड बतलाते हैं ।

+:0:+

न्याय शिक्षालय THE INNS OF COURT.

बारिष्टरी शिक्षाके चार आश्रम हैं । यथा मिडिल टेम्पल,

इनर टेम्पल, लिंकनसइन, ग्रेसइन, यह चारों खृष्टीय तेरहवीं शताब्दी में स्थापितहैं। इमारत भी प्रायः सोलहवीं या सत्तरहवीं शताब्दी कीहोगी। मिडिल टेम्पल की इमारत १५७२ ई० में बनी बतलाते हैं।

इन शिक्षालयों में अध्ययनका देशी विदेशी सबको समान अधिकार है। जो लोग कोई साधारण यूनीवर्सिटी परीक्षा पास हों उनको प्रवेशिका परीक्षा नहीं देना होती किन्तु जो अंग्रेजी अमलदारी में कोई परीक्षा नहीं पासहैं उन्हें अंगरेजी भाषा, अंगरेजी इतिहास और लैटिन भाषामें परीक्षा देना होता है। हिन्दुस्तानी विद्यार्थी लैटिन भाषाके इम्तहान से मुक्तभी होसकते हैं। इकीस वर्ष की आयु से कम अवस्था वाले लोग बारिष्टर नहीं बन सकते! अधिक चाहे जितनी आयु हो। मुखमें दांत न होंतो और भी अच्छा! शिक्षा की बारियां (Terms) साल में चार होती हैं और समाप्ति प्रायः बारह बारियों में होती है। अतएव प्रायः तीन वर्ष में बारिष्टरी शिक्षा समाप्त होती है। जो लोग नवम्बर महीने में दाखिल होसकें उनको लगभग चार महीने की बचत होसकती है। काउन्सल की ओरसे शिक्षक नियतहैं और लेक्चरों एवं शिक्षा के लिए नियमित प्रबन्ध है कुल फीस प्रायः डेढ़ सौ पाउंड होती है जोकि एक या दो बेरमें दाखिल करदेना चाहिए। इसके अतिरिक्त कुछ निज रीतिसे अध्ययनका प्रबन्ध भी करना आवश्यक होताहै जिसके लिए बहुतेरे पुराने बारिष्टर लोग वेतनपर प्राप्त होसकते हैं। उपरोक्त बारियोंके समय खाना भी शिक्षालय में खाना पड़ता है जिसका व्यय फीसमें सम्मिलित होता है।

---:०:---

बकिंगहाम राजमहल।
BUCKINGHAM PALACE

यह राजमहल महारानी बिक्टोरिया और बर्तमान महाराजा का प्रधान निवासस्थान है। यह सन १८२५ से आरम्भ होकर सन १८३७ में बनकर तय्यार हुआ था। महारानी बिक्टोरियाने सन १८४६ में महलके उत्तरभाग में एक विशाल नाचघर (Ball room) भी बनवाया था। सन्मुख खूब बड़ा मैदानहै। पीछे विशाल उद्यान और झीलहै। राजगद्दी भवन (Throne Room) ६४ फीट लम्बा बहुत ही सुन्दर सजाहुआहै। ड्राइंगरूम, बालरूम, ग्रान्ड सलून, कन्सर्ट रूम आदि आदि की शोभा हम क्या बर्णन करें पाठक अपनी अपनी कल्पना में अच्छे से अच्छे भावों को लेकर स्वयम् अनुमान करलें।

बाह्य भागों में बहुतसे मकानात कोई ढाईसौ कर्मचारियोंके तथा घोड़साल करीब डेढ़सौ घोड़ों और ८० गाड़ियों के लिए बनेहैं। महाराजा का राजरथ (State Coach) एकलाख रुपएकी लागत का है।

वर्त्तमान महाराजा एडवर्ड सप्तमका जन्म इसी राजमहल में तारीख ९ नवम्बर सन १८४१ ई० में हुआ था।

—+:o:+—

विन्डसर राजमहल WINDSOR CASTLE

इस राजमहल्का निर्माण राजा एडवर्ड तृतीय के लिए हुआ था और राजा हेनरी प्रथम, द्वितीय और तृतीय के समय बहुत बृद्धिगत हुआ।

राजा जार्ज चतुर्थ ने इस महलको उत्तम और सर्वांग सुन्दर

संवारनेमें लगभग डेढ़करोड़ रुपयोंके व्यय किएथे । इसके प्रधान विभाग यह हैं :—

(1) The King's Audiance Chamber राज दर्शन भवन ।

(2) Queen's presence Chamber रानी दर्शन भवन ।

(3) The Grand Chamber बृहत् सभा भवन—इसमें सुप्रसिद्ध बीरनेलसन, मार्लबरो और वेलिंगटन के स्मारक चिन्हों की स्थापनाएं हैं ।

(4) St. Georges Hall सन्तजार्ज का प्रांगण—इसमें तेरहवीं शताब्दी के बीरों के व्यवहृतबर्म और कवच इंगलिस्तान के कई राजाओं की तस्वीरें हैं ।

(5) The Grand Reception Room स्वागत भवन—बहुतही सुन्दर कारीगरियों और तस्वीरों से सुसज्जित है ।

(6) Waterloo Chamber वाटरलू स्मारक के भवन—यहांपर कई राजाओं तथा वाटरलू समर क्षेत्र के बड़े बड़े योद्धाओं की तस्वीरें स्थापित हैं ।

(7) The Grand Veselars बृहद्द्वार मंडप (चौपाल) इसमें समय समयकी पताकायें तथा अन्यान्य स्मारक पदार्थ संचितहैं । श्रीमहारानी बिक्टोरिया की एक मूर्ति भी यहांपर स्थापित है ।

महल का उद्यान भी बहुतही रमणीय है । बृक्षों की पंक्ति और सड़कों के उतार चढ़ाव ऐसे सुघर हैं कि जिधर दृष्टि डालें उधरही से हटाये नहीं हटती ! रानी बिक्टोरियाके बायुसेवन की सड़कके पार्श्व में उनके एक प्यारे कुत्ते की अष्टधाती मूर्ति बनी हुई लगी है और उसका जन्म और मरणदिन भी उसी के नीचे खोदा हुआ है । महल चारों ओरसे बहुत दृढ़ किले की भांतिका बनाहै । बुर्जों पर तोपें लगी हुईहैं ।

महारानी विक्टोरिया को यह महल बहुत प्रिय था। वह अधिक तर इसी महलमें निवास किया करती थीं।

—————+:0:+—————

इटन कालेज ETON COLLEGE.

विंडसर राजमहलसे करीब एकमीलके अन्तरपर यह कालिज है। राजमहल और कालिज के बीच में टेम्स नदी का एक सुन्दर पुल है। पुलपरसे नदी का दृश्य भी बड़ा सुहावना है। कालिज का प्राचीन गिरजाघर भी दर्शनीय स्थानहै। इटन कालिज की स्थापना सन १४४१ ई० में हुई थी। इसके प्रबन्ध कर्त्ता दस लेखक एक हेड मास्टर और बारह उपाध्याय (Choristers) नियतहैं।

यहांपर प्रायः नौ सौ लड़के दस और चौदह बर्ष की अवस्था के शिक्षा पाते हैं। प्रत्येक विद्यार्थी का व्यय डेढ़ सौ से दो सौ दस पाउंड तक सालका होता है। इनके अतिरिक्त सत्तर लड़के (King's Scholars) राजबृत्ति के पढ़तेहैं जिनको केवल पचीस पांउड सालाना देना पड़ता है। यहां के लड़कों की पोशाकें सब एकही सी हैं ऊंची टोपी और फ्राक कोट में सब बड़े सुघर दीख पड़ते थे।

इस कालिज के अधिकांश क्या प्रायः सभी लड़के सैनिक वालेंटियर होते हैं और फौजी कवायद परेड बहुतही उत्तमरीति से करते हैं। हम लोग देखनेगए थे तब इटनपल्टनने पूरी तयारी के साथ कवायद दिखलाई और सलामी ली थी। इनका अपना बैंड भी स्वतन्त्रहै। एकही अवस्थाके बड़े बड़े अमीरजादे बालकों की कवायद कैसी उत्तम थी कि हम क्या वर्णन करैं।

इस कालिज में प्रायः बड़े बड़े अमीर उमरावों के ही लड़के दाखिल होते हैं क्योंकि यहां व्यय अधिक होता है। और जो

इसमें दाखिल होते हैं वह पीछे बड़े बड़े पदाधिकारी भी अवश्य ही होते हैं। विद्यालय से निकलकर चाहे जिस काममें यह युवक गण पड़ें पर क्या अपनी बालकपन की देशरक्षार्थ असिग्रहण शिक्षा कभी भूल सकते हैं?

इस कालिज में हमारे हिन्दुस्तानी कंटिनजेंट भरको सन्ध्या भोजन दियागया था। मध्यहालमें बड़ी सुन्दरतासे आदर सत्कार हुआ। पीछे कुछ देरतक चौगान में खेल कूद भी होता रहा। बालकगण बड़े प्रेम से हिन्दुस्तान के विषय अनेक बातों के जानने के लिए बड़े उत्सुक जान पड़ते थे।

अलबर्ट स्मारक ALBERT MEMORIAL

यह राज राजेश्वरी श्रीमहाराणी विक्टोरिया के पूज्यपति प्रिन्स कन्सर्ट एल्बर्ट की समाधि है। जिसकी प्रतिष्ठा महाराणी जीने प्रजावर्ग सहित बड़े भक्ति भावसे की थी। आज, काल क्रमागत महाराणी जी भी यहीं अनन्त निद्रा प्राप्त कर रही हैं!!!

इस स्मारक चिन्ह में विलक्षण कारीगरीके साथ साथ अपूर्व पांडित्य काभी परिचय दिया गया है। मन्दिर के चारों कोनों पर यूरोप, अमेरिका, एशिया और अफ्रीकाकी मूर्तियां स्थापित की गई हैं। यूरोप अंगरेज रमणी अंगरेजी परिच्छदभूषिता बैल की सवारी में विराजमान है। अमेरिका महिषवाहनारूढ़ा तथा एशिया एतद्देशीय स्त्रीवेश भूषिता हस्तिपृष्ठपर स्थापित है। और अफ्रीका मिश्र देशीय साज सामान से ऊंट पर सवार है। यह चारों विशाल देश कुंवर कन्सर्ट और रानी विक्टोरिया के पैरों पर लोट रहे हैं। मन्दिर के भीतर विमान के चारोंकोनों पर कृषि, वाणिज्य शिल्प और कलाकौशल की मूर्तियां स्थापितहैं।

जो इस महान ऐश्वर्य्यके कारणोंको भी भलीभांति स्मरण दिला रही हैं।

इस मंदिरके निर्माणमें डेढ़ लाख पाउंड व्यय हुआ था जिस में एक लाख महाराणी विक्टोरियाने तथा पचास हजार पार्लियामेंट की आज्ञासे राजकोष से दिया गया था।

इस समाधिका दर्शन हिन्दुस्तानी दलने बड़ी भक्ति भाव से किया था। प्रत्येक जन द्वार सन्मुख जाकर दो बेर सलामी देकर वापिस होता था। सब की ओर से (सब के सम्मिलित व्यय से) समाधि पर फूल भी चढ़ाए गए थे।

समाधि मंन्दिर के सन्मुख निकटही एल्बर्ट हाल नामक विशाल भवन है। इसमें दश हजार जन एक साथ बैठ सकने का स्थानहै। यहां प्रायः वाद्य संगीत, नृत्य प्रदर्शिनी हुआ करतेहैं।

ब्रिटिश म्यूजियम (अजायब घर)
BRITISH MUSEUM

यह संसारभरमें प्रसिद्ध और सबसे बड़ा एवं सम्पन्न अजायब घर है। इसकी स्थापना सन १७५३ ई० मेंहुई थी। तबसे बराबर कुछ न कुछ बृद्धि और उन्नति इसमें होती ही आती है। आज कल इसमें ग्यारह विभाग हैं। यथा :—

Manuscripts लिपि विभाग।

Printed Books and Maps मुद्रित पुस्तकें और मानचित्र।

Prints and Drawings अक्स और चित्र समूह।

Oriental Antiquities पूर्वीय पुरातत्व।

Greek and Roman Antiquities यूनानी रोमीय पुरातत्व।

British and Mediaeval Antiquities and Ethnography बर्तानिया का प्राचीन (तेरहवीं से १६ वीं शताब्दी तक का) पुरावृत्त।

Coins and Medals मुद्रा व पदक ।

Zoology जन्तु बिज्ञान ।

Geology पार्थिव बिज्ञान ।

Mineralogy खनिज बिज्ञान ।

Botany बनस्पत्य बिज्ञान ।

अन्तिम चार बिभाग यहां से हटा कर केनसिंगटन के पदार्थ बिज्ञान अद्भुतालय (Natural History Museum) में लेगएहैं ।

Manuscript हस्ताक्षर बिभाग में देशी बिदेशी राजाओं के हस्ताक्षर और हस्तलिपियां इत्यादि संग्रहीत हैं इनमें तेरहवीं शताब्दी से लेकर अबतक के लेख पत्र आदि उपस्थित हैं । पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी के लेख राजा रानियों के बृत्तान्त तथा समर विजय सम्बाद आदि बड़े ही कौतूहलजनक हैं । उस समय की अंग्रेजी भाषा भी अबसे बहुत बिलक्षण थी ।

महारानी विक्टोरिया का दस्तखत जब वह चार वर्ष की राजकुमारी थीं पेन्सिलसे लिखा हुआ अबतक बिद्यमानहै । शाहंशाह रूस पीटर दी ग्रेटका सन १७२२ ई० सोलहवीं मईका लिखा हुआ एक जहाज बनानेवाले के नाम का पत्र रूसी भाषा में तथा नेपोलियन बोनापार्टिका लिखा हुआ पत्र फ्रेंच भाषामें इस बिभाग में मौजूद हैं ।

ऐतिहासिक लेख पत्रादि बिभाग में बहुतसे लेख समर समय के लिखे हुए और अलिवर क्रामवेल, वाशिंटन, नेलसन गार्डन, प्रभृति महावीरों की हस्तलिपियां मौजूद रक्खी हुई हैं ।

Charters चार्टर्स दानपत्र आदि बिभागमें आठवीं शताब्दी से लेकर सोलवीं शताब्दी तक के बहुतसे लेख स्वीकारपत्र दान पत्र मोहर आदि हैं ।

सन १२१३ ईस्वी के तारीख ४ नवम्बर का लिखा हुआ पवित्रात्मा पोपतृतीय (Pope Innocent III) का पत्र धर्मदान सम्बन्धी होने के कारण हमको अधिक कौतूहल जनक प्रतीत हुआ सो उसका कुछ बृत्तान्त पाठकों के जानने के लिए हम यहां देते हैं :-

इंगलैंड और आयरलैंड के राजा जानने अपनी सम्पूर्ण राज सभा सहित दोनों देशों के राज्यको पवित्र रोमन धर्मके अर्थ दान कर दिया। पविन्नात्मा पोप तृतीय ने राज्य, राजा और राज परिवार को अपनी तथा संतपीटर की रक्षा में स्वीकार किया। और अपनी ओर से राजा जान को शासन करने के लिए यह शपथ लेकर नियत किया कि वह तथा उसके बंशधरगण सदा पोप गुरुओं के आज्ञाकारी भक्त बने रहेंगे। इस शपथ वा दान पत्र पर बारह कार्डिनल और तीन विशप्सके हस्ताक्षर हैं।

राजा जानके स्वीकारपत्र में लिखा है कि उसने राज्यको पोप गुरुओं के समर्पण कर दिया और उनसे अधीन करद राज्य की भांति पुनः प्राप्त किया और स्वयम् तथा भावी बंशधरों की ओर से सदा भक्ति भाव रखने की शपथ के साथ एक सहस्र मार्क (मुद्रा बिशेष) वार्षिक कर देना स्वीकार किया। उपरोक्त लेख लैटिन भाषा में है।

प्राचीन कालकी यह सब बातें देखसुनकर हमको स्पष्ट जान पड़ता है कि तब धर्म के आचार्य्यों का प्रभुत्व प्रायः सभी देशोंमें समान भावसे वर्तमान था। हमारे राजा हरिश्चन्द्र का राज्यदान भी ऐसीही एक घटना थी। परन्तु ज्यों ज्यों सांसारिक व्यौहारों की शिक्षा अधिक बढ़ती जाती है त्यों त्यों राजनैतिक और धार्मिक व्यवस्थायें सर्बत्रही अलग अलग होती जाती हैं। सांसा

रिक विषयों में धर्म सम्बन्धी आचार्य्यों का हस्तक्षेप कदाचित बहुत अपेक्षित नहीं है । धर्म शब्द से हमारा तात्पर्य्य साम्प्रदायिक धर्म वा धर्मों से है उसके यौगिक अर्थ से नहीं ।

आशा की जाती है कि आजकलकी नई रोशनी के प्रकाश में हमारे देशवासी गण भी अपने धर्माचार्य्यों की उचित आलोचना अवश्य करेंगे । और व्यौहार सम्बन्धी विषयों में उनकी व्यवस्थाओं का मान्य उतनेही तक करेंगे जहांतक कि साम्प्रतिक सभ्य जगत के समान उन्नति करने में बाधायें न पड़ें ।

Literary and Autographs साहित्य और हस्ताक्षर इस बिभाग में नामी कवियों, लेखकों तथा चित्रकारों के लेख और हस्ताक्षर संगृहीत हैं ।

प्रसिद्ध कवि मिल्टन (जन्म १६०८ मृत्यु १६७४) का एक स्वीकार पत्र जिसमें उसने अपने रचित (Paradise Lost) का स्वत्वाधिकार एक सेम्युयल साइमन्स नामक छापेवाले को दिया था उपस्थित है । इसमें साइमन्स को अधिकार दिया गयाहै कि पांच पाउन्ड देने से उसको १३०० प्रतियां छापकर बेंचने का अधिकारहै तथा इसी भांति तीन आवृत्तियों तक प्रत्येक बेर पांच पांच पाउंड देना पड़ैगा । पीछे पूरा स्वत्व उसका होजावैगा ।

सर आइजक न्यूटनका लिखाहुआ एकपत्र तारीख २० जून १६८२का नवीन दृक्शक्ति विज्ञान (New theory of vision) विषय में यहांपर रक्षित है ।

सुप्रसिद्ध चित्रकार बिलियम होगर्त के लिखे हुए नोट (टिप्पणी) जो उसने बियर गली, जिनगली और पशुओं पर क्रूरता के चार दृश्य नामक चित्र तय्यार करने के प्रथम लिखे थे यहां पर रक्खे हुए हैं । इनमें शराबियों की खूब दुर्दशा बतलाई है । यह लेख सन

१७८१ ई० का है।

प्रसिद्ध कवि और सुलेखक गोल्डस्मिथ तथा एक प्रकाशक (publisher) जेम्स डाइस्ली के मध्य प्रतिज्ञापत्र ग्रेटब्रिटेन और आयरलैंड के महापुरुषों के जीवन बृत्तान्त (Chronological History of the Lives of eminent persons of Great Britain and Ireland) लिखने के लिए जिसमें डाइस्ली ने गोल्ड स्मिथको प्रति पृष्ट तीन गिनी (अड़तालीस रुपए पृष्ट) देने का प्रण किया था तारीख ३१ मार्च सन १७६३ ई० को हस्ताक्षर हुआ था यहांपर रक्खा हुआ है। यद्यपि गोल्डस्मिथ सन १७७४ ईस्वी पर्य्यन्त जीवित रहे तथापि उपरोक्त लेख लिख नहीं सके।

एवं त्रिथि थाकरे, कारलाइल, ब्रांडन मेकाले, आदि सुप्रसिद्ध कवियों और ग्रन्थकारोंके लेख, पत्र, आलोचनायें आदि संग्रहीत हैं।

Autograph literary works इस विभागमें पन्द्रहवीं शताब्दी से लेकर अबतकके प्रसिद्ध ग्रन्थ लाटिन आदि भाषाओं में हस्तलिखित और छापे हुए भी प्रदर्शित हैं। लेडी जेन ग्रे की प्रार्थना पुस्तक, मिल्टनकी बाइबिल, टेनिसन का हस्तलिखित पद्य इत्यादि वस्तुवें निःसन्देह दर्शनीय हैं। श्रीमद्भागवत, गुरु नानक का ग्रन्थ तथा कुरान भी एक स्थान अधिकार किए हुए हैं। हस्तलिपियों (Manuscripts) में एक लेख बहुत प्राचीन जो कि मिश्र के किसी शवके साथ सन्दूक में पाया गया था बड़ी सावधानी से रक्खा हुआ है। कहते हैं कि यह मसीह से तीन सौ वर्ष पहिले का लिखा हुआहै। शायद हकीम अफलातून का लिखा हुआ अथवा उनके समय का है।

मसीही पहिली शताब्दी के बहुतसे लेख जोकि मिश्र देशसे

लाए गए थे यत्नके साथ रक्षित हैं । एक मंदिर के पादरी का वार्षिक लेखा तारीख २३ अगस्त सन २२१ ईस्वी का है जिसमें कच्छपअवतार (Crocodile god) का वर्णनहै तथा औरभी कतिपय देवताओं का उल्लेख है जो उस मन्दिर से भाग पाते थे ।

पाठक ! कुछ समझ में आया ? अंधेरे समय में मच्छ, कच्छ बाराह, नृसिंह सभी अवतार हुआ करते हैं । और लोग मानते पूजते और भाग भी देते हैं । परन्तु उजाला होने से उन्हीं बातों पर साधारण लोग हंसी भी उड़ाने लगते हैं । जैसे किसी समय में यह सब बातें इंगलिस्तान आदि देशों में पूज्य बुद्धि से देखी जाती थीं परन्तु अब वही सब बातें जंगली और असभ्य ब्यौहार की कही जाती हैं ।

इंगलिस्तान का लिखित इतिहास ।

MANUSCRIPT CHRONICLES OF ENGLAND.

छापे की बिद्या प्रचारित होने के प्रथम इंगलिस्तान का इतिहास किस भांति लिखा जाता था इसबातको प्रगट करनेके लिए इस विभाग में प्राचीन समय के लेख जिनमें मसीही धर्म प्रचार तथा अनेकों युद्धादिके विवरण लिखेहैं प्रदर्शित कियाहै । ब्रिटन का सर्व प्रथम इतिहास सन ५६० ईस्वी में एक जन गिलदास (Gildas) नामक ने लिखा था । जिसमें रोमन लोगों के बिजय और देश त्याग तथा सेक्सन लोगों की चढ़ाइयां इत्यादि लिखी थीं परन्तु इसका असली लेख प्राप्त नहीं हुआ ।

दूसरा लेख सन ८५८ ईस्वी का लैटिन भाषामें लिखा हुआहै । बारहवीं शताब्दी का लेख पत्र जोकि यहां प्रदर्शित है उसमें

लिखा है सन्त पाटरिक ने जबकि आयरिश लोगों को मसीही धर्म शिक्षा दी थी तब श्रष्टि पैदा हुए पांच हजार तीन सौ तीस साल व्यतीत होचुके थे। राजा लायगर (King Loygare) के पांचवें साल अर्थात् मसीही सन ४२५ में सन्त पात्रिक ने धर्म प्रचार आरम्भ किया था और प्रायः चालीस वर्षों तक उपदेश करता रहा। उसने बहुत से आश्चर्य्य कार्य्य दिखलाए यथा अंधों को दृष्टि, बहिरों को श्रवणशक्ति दी और कुष्टियों को आराम किया। प्रेत बाधासे पीड़ित लोगोंको चंगाकिया अर्थात् उनके शरीरोंमें से भूत निकाल दिए मुरदोंको जीवन दिया और बहुतोंको बन्दीग्रहोंसे मुक्त किया। उसने तीन सौ पैंसठ पुस्तकें लिखी इतनेही गिरजे स्थापित किए और बारह हजार मनुष्यों को ईसाई बनाया। इत्यादि।

एक और इंगलिस्तान के इतिहास लेखक बीड नामक हुए हैं। इनका जन्म ६७३ ईस्वी में हुआ था। इनके इतिहासमें मसीह से ५५ साल पहिलेसे लेकर मसीही सन ७३१ तकके बृत्तान्त लिखे हैं। इनके लेख भी लेटिन भाषा में इस बिभाग में प्रदर्शित हैं।

वेस (Wace) नामक एक इतिहास लेखकने नारमन बिजय हेस्टिंग्स की लड़ाई का बृत्तान्त फ्रेंच काव्य में लिखा था। इस कवि का समय सन ११००-११७० ईस्वी है। इसके युद्ध बर्णन में कुल्हाड़ा, लौहदंड, ढाल इत्यादि की चर्चा अधिक है। लाठी डंडों से भी लड़ाई हुई थी। इस काव्यमय इतिहास के कुछ अंशों का अंग्रेजी भाषानुबाद भी उपस्थित है। पीछे इतिहास लिखने का काम पादरी लोगों के हाथ में रहा सो जितने लेख मिलते हैं प्रायः सभी धर्म बृत्तान्तोंसे भरे हैं। धर्म बृत्तान्त तत्कालीन संतों के आश्चर्य्य कर्मों से सम्बन्धित हैं जिसका कुछ निदर्शन ऊपर

सन्त पात्रिक के विषय दिया जाचुका है अधिक लिखना आव श्यक नहीं जान पड़ता। पाठक ध्यान दें हमारे इतिहास महा भारत आदिकों में भी साम्प्रदायिक खींचतान ने ठीक यही दशा उपस्थित की है।

ग्यारहवीं शताब्दी में एक लेखक विलियम माम्सबरी (William Malmesbury) हुए हैं। इन्होंने आदि से लेकर सन ११४२ ईसवी पर्य्यन्तका इतिहास लिखा है। इनको लोग बीड का यथार्थ क्रमानुयायी बतलाते हैं। इनके लेख का जो भाग म्यूजियम में सर्व साधारण के लिए अंग्रेजी अनुवाद सहित रक्खा गया है उस के एक अंश में यों लिखा है :—

"That day (of the battle of Hastings) was fatal to England, the day of the miserable downfall of their beloved country and of submission to new masters. Submission had indeed long been familiar to the English, who had changed greatly in the course of time. In the first years of their arrival they had the appearance and bearing of barbarians, they were practised in war, their worship was savage, but afterwards, when they had adopted the Christian faith, the peace which they enjoyed led them gradually, as time went on, to regard the use of arms as of but secondary importance, and to devote themselves entirely to religion. I am not speaking of the poor, whose lack of means generally restrains them within the bounds of right, and I pass over the Clergy, who are deterred from err not only by the consideration of their profession, often also by the fear of shame. I speak of the K

who by reason of their power could indulge their desires as they chose; yet of them, some in their own country, and some at Rome, put off their Kingly garb and gained the heavenly Kingdom, making a blessed exchange, while many who to all appearance gave themselves to the world throughout their lives did so that they might scatter their treasures to the poor or distribute them to monasteries.

What shall I say of the great army of bishops, hermits, abbots? Does not the whole island so shine with these relics of the old inhabitants, that you can scarcely pass a single village of any size without hearing the name of a new saint? And how many more are lost to memory for want of chroniclers? But as time went on the study of letters and of religion decayed, shortly before the arrival of the Normans. The Clergy, content with a smattering of literary knowledge, could scarce stammer the words of the sacraments; one who knew grammer was a prodigy and marvel to the rest.........

The custom of drinking together was universal, the night as well as the day being spent in this persuit They expended great sums, while living in small and contemptible dwellings; unlike the French and Normans, who live at a moderate rate in large and splendid buildings.

Drunkenness was followed by the vices akin to it,

which sap the vigour of a man. Hence it came about that they encountered William with rashness and headlong fury rather than military science, and after one battle, and that a very easy one (!), they surrendered themselves and their country into serfdom.

अर्थात् हेस्टिंग्स की लड़ाई का शेष दिनही इंगलैंड का घातक था। यही दिन उसके पतन और बिदेशियों के पादाक्रान्त बशवर्ती होनेका दिन था। समयके हेर फेरसे अंगरेज लोग बहुत परिवर्तित होगए थे। पराधीनता मानो उनकी चिरपरिचित सहचरी थी! जब अंगरेज जातिके लोग पहिले पहिल देश में आए थे अथवा अपने अरुणोदयकाल में वे चाल ढाल और सूरत शकल में असभ्य थे आराधना और धर्म बिश्वास में भी असभ्य थे पर युद्ध के बड़े अभ्यासी थे परन्तु जबसे वे ईसाई धर्मावलम्बी हुए तबसे कुछ तो शान्ति सुखके अनुभव से और कुछ धर्म की अधिक लीनतासे ज्यों ज्यों समय अधिक बीतता गया त्यों त्यों वे शस्त्राभ्यास को कम आवश्यक समझने लगे और सम्पूर्ण ध्यान ईसाई साम्प्रदायिक धर्म की ओर लगाने लगे! यह कथन दरिद्र मनुष्यों के बिषय नहीं है कि जिनकी आर्थिक संकीर्णता उन्हें न्यायकी सीमा से अलग नहीं होने देती। और पादरियों के बिषय में भी यह बिचार नहीं है कि जो न केवल उद्यम के लिए वरन लज्जाके भय से भी अधर्म से बचते रहते हैं। किन्तु यह कथन राजाओं के बिषय में है जो अपने अधिकार के कारण अपनी बासनाओं का इच्छानुरूप उपभोग करसकते थे। तिसपरभी उनकी प्रवृत्ति और लीनता धर्म के प्रति इतनी अधिक हुई कि कुछ तो अपने ही देश में और कुछ राजाओं ने रोम में जाकर अपने राजबस्त्र उतार परिब्राजकीय बसन धारण करके अपनेमतानुसार स्वर्ग राज्य के अधिकारी बने थे। फिर बहुतोंने तो प्रकाशमें अपना जीवन सांसारिक कार्य्यों में लगाया परन्तु वास्तव में उनकी निष्ठाधर्म के लिए ही सब काम करने की थी अर्थात् सांसारिक अधिकार इसीलिए

स्थित रक्खा कि जिसमें राज कोष को धनहीन और कंगालोंको बांटसकैं। अथवा सन्तों के अखाड़ों में लगा दें। जब राजाओं की यह दशा थी तब त्यागी बैरागी और सन्त महन्तों का क्या कहना है? समस्त द्वीप इनपूर्ब निवासियों के ऐसे चिन्हों से भरा पड़ा है कि छोटे बड़े सभी नगरों और गावों में ऐसा कोई कठिनता से मिलेगा कि जहां किसी नए नामी सन्तका नाम न सुनाई पड़े। उनमें से कितने ही तो **घटना लेखकों** के अभाव से विस्मृत होगए हैं। परन्तु दुर्भाग्यबश धर्म निष्ठा भी घटने लगी! नार मंडी निवासियोंके आगमनके कुछ पूर्बहीसे धर्म और बिद्याका पठनपाठन घट गया था! पादरी लोग बिद्या के किंचिन्मात्र पठन पर सन्तुष्ट होकर बाइबिलके शब्दों को भी कठिनतासे **ननुनच** (शुदबुद) कर सकने लगे! और बैय्याकरण शेष मनुष्यों के आगे बृत्तासुर और उनके आश्चर्य्य का कारण होता था! तभी से एकही साथ मद्यपान की रीति जगद्व्यापिनी भी होगई! और रातदिन यही हुआ करता था! फ्रांसीसी और नारमंडी निवासी बड़े बड़े और उत्तम भवनों में साधारण व्यय करते हुए रहते थे परन्तु इनके प्रतिकूल अंगरेजलोग छोटे छोटे और घृणास्पद मकानों में रह कर अधिक द्रव्य व्यय करते थे। मद्यपान के पश्चात् उसकी सहगामिनी मनुष्य बलभक्षिणी कुचालें भी बहुत चल पड़ीं! एतावता ऐसी घटना संघटित हुई कि उन्होंने विलियम का सामना युद्ध कौशल से न करके सहसा और परम प्रचंड कोपसे किया और एकही परमसुगम युद्ध के पश्चात उन्होंने स्वयम और स्वदेश को दासत्व में समर्पित करदिया!!!

पाठक! इस ऐतिहासिक लेखपर भलीभांति ध्यानदें! प्रत्येक शब्दपर विचार करें। क्या अपने देशकी दशाभी बिलकुल उसी के अनुरूप नहीं ज्ञात होती है?

हम प्राचीन कालकी बात आपको याद दिलाना नहीं चाहते जबकि आप सभ्य शिरोमणि आदर्श जाति और धर्म के अव

तार थे क्योंकि उससमयका इतिहासही आपके भिन्न और किसी के पास नहीं है। किन्तु हम महाभारत के पीछे का समय आपके सन्मुख धरकर पड़ताल करनेकी प्रार्थना करते हैं। बड़े बड़े महा बीर योद्धाओं के धराशायी होनेके पश्चात् शेषबचे हताश और निराश लोगों में हिन्सा प्रतिहिन्सा अथवा त्याग बैराग्य के अति रिक्त दूसरा भावही कौनसा उत्पन्न होसकता था? सो बहुत कर के नीच बासनाओं की ही प्रवृत्ति बढ़ी प्रतीत होती है। फिर ब्राह्मणों का संकीर्ण (Conservative) धर्मोपदेश इतना बढ़ा कि सम्पूर्ण जाति को तीनतेरह और बारहबाट कर दिया!

तत्पश्चात् जब ब्राह्मणों के आचार विचार आत्याचार की सीमा तक पहुंचगए और साधारण को उसकी प्रवृत्ति असह्य होगई तब महापुरुष बुधदेवका प्रादुर्भाव हुआ। जबकि आप जान ते ही हैं कि बड़े बड़े राजामहाराजाओं ने भी राज पाट त्याग कर बिरागधारण किया था। यद्यपि महात्मा बुधदेव की शिक्षा और इच्छा कि—

सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चित् दुःखमाग्जनः॥

सब प्राणी सुखी हों, सब नीरोग रहैं, सब मंगल देखें, कोई कभी दुःख न पावे।

सर्व मान्य और संसार को वास्तविक स्वर्गधाम बनानेवाली थी और एक समय तक इसने वैसाही काम किया भी तथापि इस परिवर्तन शील संसार में निरी शान्ति से न कभी काम चला है और न चलेगा। संसार की रचनाही विषम है पंचतत्व, अग्नि जल, पृथ्वी, वायु, आकाश इन सब एक दूसरे के बिरुद्ध गुण वाले पदार्थों के एकत्र सम्मेलन से इसका निर्धारण है तब भाई!

आपही विचार देखो ! केवल एक गुण शान्ति से ही क्यों कर जीवन रहेगा ? जहां शीतल जलकी आवश्यकता है वहां प्रचंड अग्निकी भी जरूरत हुई है इत्यादि—सो बौद्ध धर्म ने जहां शान्तिकी शिक्षा दी वहां लोगों में से राजसी वा तामसी गुण विशिष्ट वीरता का मानो नाशही कर दिया ! परिणाम यह हुआ कि एक समय के पराजित ब्राह्मण धर्म ने फिर भी शिर उठाया और महात्मा शंकराचार्य द्वारा उसमत (वेदान्त मत) की ऐसी बढ़ती हुई कि सर्व साधारण बिल्कुल कर्महीन स्वयम् ब्रह्म बन बैठे। उसमतकी बातको कविवर भारतेन्दु ने ठीक कहा है:—

रचिकै मत वेदान्तको जीवहि ब्रह्म बनाय !
हिन्दुहि पुरुषोत्तम कियो भारत चौकालाय !!

इसी के पीछे यहां पर मुसलमानों की आमदनी, फिर पोर्चुगीजों, अंगरेजों आदिआदि की आमद कहांतक गिनावैं सबकुछ आप स्वयम् अपनी आंखों देख चुके हो !!!

देशों और जातियों के पतन के कारण क्या हुआ करते हैं सो आप इन दोनों घटनाओं को पढ़कर विचार लीजिए ! इंगलिस्तान की अवस्था हेस्टिंग्स युद्धके दिनों जो थी जैसा कि उपरोक्त ऐतिहासिक के लेख से प्रगट है उसे ध्यान में लेकर देखने से पाठक ! कितना हताश होना पड़ता है ? जिस जाति और देश की वैसी अवनत् दशा होगई हो जैसी कि उस समय इंगलिस्तान और ब्रिटनों की होगई थी उसके पुनरुत्थानकी क्या कोई आशा शेष रहती है ? हताशहोकर लोग कहने लगतेहैं कि अब उन्नति असम्भवहै ! देशदशा असाध्यहै !!! परन्तु नहीं—कदापि नहीं ! वही इंगलिस्तान देश और ब्रिटन जाति केवल तीन चार शताब्दियों के साहस और उद्योग से वह चमत्कारिक उन्नति प्राप्त करती है जो आज संसार

भर प्रत्यक्ष देख रहा है।

सो भाई! इस परिबर्तन शील संसार में हताश होने की कोई बात नहीं है। परमेश्वर अमरहै आत्मा भी अमरहै संसारभी प्रबाह से अमरही है फिर हमको अपने सुदिनकी आशासे भरपूर उद्योग वान होने में क्यों कसर छोड़नी चाहिए! याद रहै—

अनेक जन्म संसिद्धि स्ततोयाति परांगतिम्।

——+:o:+——

तिलक तयारी।

CORONATION PREPARATIONS.

रहयो एक दिन अवधि कर, अति आतुर पुर लोग।

बिदेश यात्रा हमने कई बेर की है। ब्रह्मा, चीन इत्यादि देशों में जानेका अवसर हुआ है सचमुच कोई देश ऐसा सुहावना और चित्ताकर्षक नहीं देखा जैसा कि इंगलिस्तान! थोड़ ही दिनों महिमान की भांति रहनेपर भी देश और देशियों में इतना हेलमेल होगया था कि दिन जाते जाननहीं पड़े! बातकीबातमें केवल जहां तहां थोड़ा बहुत यत्किन्चित् देखने भालने ही में प्रायः दो महीने व्यतीत होगए! आनन्दमय दिन राजतिलक सम्बन्धी महायज्ञ का शुभ दिवस आन पहुंचा।

इंगलिस्तान की प्रजा, राजाप्रजा सभी आनन्दके महासागर में हिलौरें लेने लगे। जिधर देखिए जहां सुनिए—

साजहु सजहु शब्द गोपुरि।

सर्बत्रही तिलकोत्सवकी तय्यारियां होरहीं हैं। प्रत्येक मनुष्य के भाव पूर्ण मुख मंडलपर हर प्रकार की सुआशाओं का संचार झलक रहा है।

हिन्दुस्तानी महिमानोंके कैम्पों में भी बड़े सजधजकी तय्या

रियां हो रही हैं। हमारे राजे महाराजाओं की तय्यारियां निःसन्देह उनके गएबीते दिनों की अपेक्षा बहुत चढ़बढ़ कर थीं। हिन्दुस्तानी फौज कन्टिनजंट में भी बनाव सिंगार और आनन्द उछाह अपनी पूरी मात्रा में वर्तमान होरहा था।

एक दिन प्रथम ही से सब लोग सब तरह की सजावट का सामान करने लगे थे। सवारी के वास्ते घोड़े दो दिन प्रथम से आगए थे सो उनके साज सामान से वहुधा लोग रातों लगेरहेथे। सवारों को हैम्पटन कोर्ट से ह्वाइटहाल गलीतक अश्वारोही और पैदलों को रेलद्वारा जाने की व्यवस्था हुई थी। तदनुसार सवेरे ही से सब लोग अपने अपने निर्दिष्ट स्थानों को प्रस्थित होगए।

इंगलिस्तान में उजाला दिन अर्थात जब आकाश स्वच्छ और सूर्य्य प्रकाशित हो, बहुत सुहावना और सौभाग्य का दिन समझा जाताहै। जब कभी दिन स्वच्छ होताहै तब प्रायः सभी लोगों के भेंट आलाप का प्रधान विषय यही होताहै। राजतिलक का प्रातःकाल भी ऐसाही परमसुहावन और मनोहर हुआ। सब लोगों के चेहरे आनन्द से भरेहुए प्रातःकाल की प्रकाशित किरणों के योग से द्विगुण प्रकाश को प्राप्तहुए। उस प्रातःकाल के सौन्दर्य्य का सभी लोग बड़े चाव उछाह से बखान करतेथे। एडवर्डराजतिलक के जगतप्रसिद्ध सुदिन को सूर्य्य भगवान ने भी प्रकाशित किया है यह शुभवाद प्रायः सभी लोगों से सुनने में आता था।

वास्तव में तिलकप्रभात की पूर्व रात्रि को लोगों ने रात्रिही नहीं समझी वह रात सचमुच इतने काम काज में व्यतीत हुई जितना कि प्रायः कभी कभी दिन भी नहीं हुआ करता! सच है आनन्द की रजनी भी दिन से सुखदायिनी होती है।

आज लन्दन महानगरी सर्वांग सौन्दर्य धारण किएहुए राजा

एडवर्ड की अभ्यर्थना के लिए वैसेही प्रस्तुत दीख पड़ी जैसी कि एकदिन अयोध्यापुरी महाराज राम के प्रत्यागमन केलिए वर्णितहै।

राजमार्गों, विशेष स्थानों और साधारण ग्रहों के शृंगार सजावट का वर्णन जैसा हम प्रथम कहचुके हैं आज वह सब लावण्य लीला द्विगुणित चतुर्गुणित आभाप्रभा के साथ दैदीप्यमान होरही है ।

आज ता० ९ अगस्त शनिवार के दिन प्रातःकालीन प्रभाकर के दर्शन से लंडन नगरी सचमुच कमल की भांति प्रफुल्लित होगई अंगरेज कवियों ने इंगलिस्तान को गुलाब और हिन्दुस्तान को कमलकी उपमा दी है । सो यह उनकी उदारताही है नहीं तो कहां कमल और कहां हमारे ग्रीष्मोत्तप्त काले चेहरे ! परन्तु इसमें एक उक्ति और भी है बहुधा कवि मुखमंडल की उपमा में तो गुलाब और चरणों की उपमा में कमल का व्योहार किया करते हैं । हम लोग भी तो बिष्णु भगवानके पाद पद्मों को चरण कमलही कहते हैं ! संभव है कि अंगरेज कवि ने पद्भ्यां शूद्रो अजायत के अभिप्राय से ही अपने पादाक्रान्त हिन्दुस्तानको कमल की उपमा दी हो ! जो हो ।

आज तो सचमुच लंडनके महा जनसमूह रूपी सागरमें थोड़े से हिन्दुस्तानी राजे महाराजे और सैन्यगण पखुरियों सहित कमल फूल ही की भांति लहरा रहे हैं ।

जैसी कहावत है कि अंगरेजों के राज्य में कभी सूर्य्य अस्त ही नहीं होते वैसेही यह भी देखने में आया कि वह अंगरेजों के प्रबल प्रताप रूपी महा प्रकाश के सामने आंखें खोलकर निहार भी नहीं सकते ! सो तिलक महोत्सव के दिन तनिक इधर उधर से ताक झांक कर फिर उन्होंने तुरन्तही अपने मुखपर मेघावरण

डाल लिया और समस्त दिन फिर सन्मुख होने की हिम्मत न कर सके !

प्रातःकाल छः बजेसे ही पुलीस अपने अपने नियत विभागों में प्रबंधार्थ नियुक्त होगई और तभी से राजमार्ग जनसमूह से भर पूर होनेलगा। मिनिट मिनिट पर रेलें भीड़कीभीड़ उतारने लगीं नौ बजे के लगभग फौजों ने भी अपना अपना स्थान अधिकार कर लिया। यद्यपि अंगरेज की टेव से बेकाज खड़े खड़े वा बैठे बैठे समय बिताना बिलकुल विरुद्ध है तथापि आज का दिन विशेष दिन है। आज किसी को समयकी चिंता नहीं प्रतीत होती घंटों क्या पहरों एकही ठौरपर बैठे वा खड़े ही लोग बिताते हैं परस्पर कथोपकथन कर रहे हैं उद्देश्य केवल राजकीय जलूस का देखना।

सात बजे यज्ञ मंडप वेस्टमिन्स्टर गिरजा घर का द्वार खोल दिया गया। तभी से वहां बड़े बड़े राज पुरुषों का पधारना आरम्भ होगया। पियर्स, सपत्नीक देश मुख पियरर्स, कालोनियल उपनिवेशीय मंत्रिगण पमियर्स, (न्यायाध्यक्ष) मेयर्स तथा अन्यान्य पाहुने भांति भांति की पोशाकों और राजचिन्हों में दिखलाई देने लगे। एक ओर फौजी और जहाजी पोशाकों तथा चमचमाते हुए तगमों की चकाचौंध दूसरी ओर सर्वांग सौन्दर्य्यमयी रमणियों के मणि रत्नादि की आभाप्रभा दोनों परस्पर मानों होड़ लगा रहे थे। दर्शक समझ नहीं सकता था कि किस को बड़ाई की डिगरी देवै। इतने में अंगरेज दर्शक ने एक और ही रिमार्क छोड़ दिया —

"While here and there a gorgeous Indian potentate, a blaze of pearls and diamonds and coloured

silks, made the ladies gasp with envy."

अर्थात बीच बीच में कतिपय हिन्दुस्तानी चटकीले राजाओं के मणि मुक्तादि जटित रंग बिरंगे कौषाम्बर की चमकदमक को स्त्रियां ईर्षा की दृष्टि से देखती थीं।

कुछ हिन्दुस्तानी सभ्यों को राजमार्ग परसे पैदल जाते हुए देखकर डेली मेल समाचार पत्रके एक रिपोर्टर ने यह लिखा था--

There were four Baboos who walked the centre of the road bowing with stately dignity to the ironical plaudits of the crowd.

चार बाबू लोग राजमार्ग के मध्य होकर पैदल जा रहे थे और जन समूहके कटाक्षयुत जयजयकार और सलामी का उत्तर बड़ी राजमर्य्यादा के साथ झुककर देते थे।

यह पढ़कर तो हमको बड़ी हंसी आई! अनजान लेखक को अपने जनसमूह की सलामी का कटाक्षयुत होना तो ज्ञात होगया परन्तु बाबू लोगों का भाव समझने में उसने सचमुच बड़ी भूल की। अथवा द्वेष भावापन्न होकर स्पष्ट कहने में रुका हो! जिन हिन्दुस्तानियों को देखकर जनसमूह ने सलामी दी थी वे वास्तव में सलामी के पात्र थे ही अथवा यदि समूह ने कटाक्ष किया तो उन बाबू लोगों ने भी उन्हें नीच भावापन्न प्रजा के भिन्न और कुछ नहीं समझा था परन्तु उनकी कटूक्ति पर ध्यान न देकर सरलताका बर्ताव करके निःसन्देह अपनी मान मर्य्यादा की रक्षा की।

पाठक! इस सभ्यता के समय में जब कभी हमें ऐसी नीच बातें सभ्यों के मुख से सुनने में आती हैं तब प्रत्यक्ष यही ज्ञात होता है कि अब भी सभ्यताको बहुत कुछ उन्नति करना शेषहै।

राजमार्ग बकिंगहाम पैलेस से वेस्ट मिन्स्टर ऐबी तक के

मध्य का मार्ग मानो रंगशाला बन रहा है। क्षण क्षण में आवा गमन रूपी दृश्यपट परिवर्तन होता है साथ साथही तालिध्वनि और चियर्स, हुर्रे, जयजयकार आदिके शब्द सवेग उठते बैठते हैं।

बड़े बड़े राजकर्मचारियों के रथ, बिदेशी प्रतिनिधियों के यान राजनैतिक मंत्रियों आदि के स्यन्दन सवारी आदि का निकलना और जनसमूह का करतालि ध्वनि और जयकार पुकारना अपूर्व आनन्ददायक दृश्य था।

राज महल बकिंगहाम पैलेस के सन्मुख वाले बड़े मैदान में अंगरेजी फौज फुटगार्डस की संगीनें उनकी फौजी चालों के साथ खूबही चकाचौंध मचा रही थीं और उनकी वरदी सामान की चमक दमक शोभा को द्विगुणित कर रही थीं। एक ओर राज्य भरके बड़े बूढ़े पेन्शनदार सिपाहियों की टोली अपने नवीन रूप रंग की वरदी में सजे और हाथों में आसा लिए हुए अपूर्व दृश्य दिखला रहे थे। उपनिवेशीय ट्रूपर्स, हिन्दुस्तानी ल्यन्सर्स तथा जहाजी ब्ल्यूजाकट्स अपनी अपनी खाकी रंगीन तथानीली वर्दियों की तय्यारी के साथ सलामी गार्ड (Guard of Honor) सजे थे।

साढ़े दस बजे के समय राजपरिवारके आठ रथ बहुतबढ़िया सोनहरे साज सामान और बहुमूल्य घोड़ों से सजे हुए तय्यार होगए। राजभ्राता श्रीमान् ड्यूक आफकनाट लार्टकिचनर तथा महाराजा के अन्यान्य मुसाहिब लोग भी सजकर तय्यार होगए इतने में तोपने बम् की आवाज दी और बैंडने जातीय संगीत बजाया और महाराजाधिराज महाराणी सहित राजरथारूढ़ होगए।

अनेकों प्रकार की बंदना अभ्यर्थना और जनसमूह के जय जयकार के साथ महाराजा का रथ जिसमें आठ स्वेतबर्ण घोड़े

जुड़े हुए थे सम्पूर्ण जलूस के सहित आगे बढ़ा । सबकी आंखें राजदर्शन की इतनी प्यासी जान पड़ती थीं कि किसी को निमे षोन्मेष की भी खबर नहीं थी । सभों की टोपियां और रूमाल वायु में उड्डीयमान हो रहे थे । प्रजावर्ग की जयजयकार और जुहार के उत्तर में महाराजाधिराज बड़े प्रेमपूर्वक रथपरसे दोनों ओर झुकझुककर स्वीकृति प्रगट करतेथे । और पार्श्व में विराज मान श्रीमहाराणी जी भी मन्द मुसक्यान द्वारा अपना परम सन्तोष प्रगट करती थीं । फौजों की सलामी और जनसमूह की जुहार लेते हुए महाराजा साहब की सवारी जलूस सहित यज्ञ मंडप तक पहुंच गई ।

इधर जनसमूह भी कुछ कुछ बिखरने लगा मकानों के ऊपर छतोंपर खिड़कियों में और चिमनियों में बैठे हुए स्त्री पुरुषों का समूह कुछ कुछ इतस्ततः सरकने लगा । लैम्प पोस्टोंपर चढ़े हुए छोकरे और स्मारक मूर्तियों के कंधों पर चढ़े हुए लोग उतर उतर कर इधर उधर घूमने लगे । इसी अवसरमें सैकड़ों क्या लाखों पैकेट जलपान की मिठाइयां और लाखोंही बोतल जिंजर बियर आदि पानी खा पी डाली गईं । लोग महाराजा को मुकुटधारण किए हुए लौटती बेर दर्शन करने के लिए ताजे टटके होगए ।

—+:0:+—

यज्ञ मंडप WESTMINISTER ABBEY.

प्राचीन कालमें इंगलिस्तानके राजाओं का अभिषेक सरे ना मक प्रान्त के (किंगस्टन Kingston in Surrey) स्थान हमारे हैम्पटन कोर्ट के पड़ोस में है) में हुआ करता था परन्तु अब बहुत दिनों से वेस्टमिन्स्टर एबी नामक गिरजे में हुआ करता है । यह सन्त पितर का गिरजा घर (Church of St.

Peter) कहलाता है और इतना बड़ा है कि तीन पादरी लोग तीन वेदियों पर से सहस्रों जनसमूह को एक साथही उपदेशकर सकते हैं और एक दूसरेको किसी प्रकारकी बाधा नहीं होसक्ती इसमें बहुतेरी स्मारक मूर्तियां और तस्वीरें बनी हुई हैं खिड़कियों की शोभा और उपयोगिता निरालीही है जोकि सूर्य्य के प्रकाश समय में शीशोंके द्वारा भीतर रंगबिरंगेदृश्य उपस्थित करदेती है।

वह स्फटिक शिला (Stone of Scone or the stone of destiny) जिसपर इंगलिस्तान के राजाओं का मुकुटधारण होता है इसी गिरजाघर में स्थापित है। कहते हैं कि हजरत याकूब (Jacob) ने एक बेर इसी पत्थर को सिरहाना बनाकर उसपर शयन किया था और सोते समय स्वप्न देखा था कि स्वर्गीय अप्सराओं ने एक स्वर्ण सोपान लगाया है और वे उसपर से स्वर्ग मर्त्य का आवागमन करती हैं। प्रातःकाल जब वह उठे तब उस पत्थर की बड़ी प्रतिष्ठा की और उसपर तेल चढ़ाया।

और भी कहते हैं कि जब मूसाकी महामारी (Plagues of Moses) देशमें फैल रही थी और लोग त्राहि त्राहि कर रहे थे तब एक ग्रीक (यूनानी) जोकि इस पत्थर की पूजा किया करता था इसको लेकर स्पेन देशको भाग गया क्योंकि उसने कहा कि ऐसे देशमें रहना उचित नहीं है जहां इतने अधिक पाप और सन्ताप नित होते हों। वह जब जाकर स्पेनमें एक नवीन बस्ती बनाकर रहने लगा तब और भी बहुतसे आदमी वहां जा जाकर बसने लगे और इस ग्रीक को अपना न्यायाधीश नियत किया यह अपने उसी याकूब के पत्थर पर बैठकर लोगों का न्याय किया करता था उसी पर बैठ कर उसने बहुत से सर्वोपयोगी नियम निर्माण किए।

पाठक ! उनदिनों की महामारी का नाम मूसा का प्लेग था और आज कलके हमारे देश व्यापी प्लेग का नाम ? यह भी अवश्यही मूसा का प्लेग है क्योंकि मूसपर सवार होकर तो यह आताही है ! कसर वा अन्तर अभी केवल इतना ही है कि मूसाई प्लेग के पश्चात् उसदेश के लोग बड़े ही स्वच्छ और कर्मण्य बन गए थे और तबसे निरन्तर शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक और राजनैतिक उन्नति में आगे ही बढ़ते रहे। परन्तु यहां प्लेग तो बर्तमान है तथापि परिणाम में सर्व साधारण की कर्मण्यता अभी भविष्यत् की ओट में है । भगवान जानैं इस बर्तमान मूसाकी महामारी से भारतबासियों की किस भांति की सफाई अभीष्ट है ? संसार से उनके नाम निशान की सफाई अथवा मुरदादिली की सफाई ? सचमुच मुर्दादिली क्या जिन्दगी कहला सकती है ?

जिन्दगी जिन्दा दिली का है नाम । मुरदादिल खाक जिया करते हैं ॥

लगभग तीन हजार बर्ष के हुए स्पेन से इस पत्थर को एक राजा आयरलैंड को लेगए थे। कुछदिनोंपीछे वहां से भी स्काटलैंड के एक राजा उसे लेगए। स्काटलैंड के राजाओं का तिलक इस पत्थर पर बैठकर किए जानेकी प्रथा चलीथी। इंगलिस्तान के राजा एडवर्ड प्रथम ने जब स्काटलैंड पर चढ़ाई करके विजय प्राप्त किया था तब इस पत्थर को भी अपने साथ स्वदेश को लाकर सुविशाल मन्दिर वेस्ट मिन्स्टर एबी में स्थापित किया था तबसे यह बराबर उसी ठौर पर बिराज रहाहै। यहां पर देवदार (Oak) के बनेहुए चार सिंहों पर यह पत्थर प्रतिष्ठित और उस के ऊपर एक सिंहासन बना हुआ है। इंगलिस्तान के राजाओं का अभिषेक तबसे बराबर इसी सिंहासन पर होता आताहै।

इंगलिस्तान में अंधपरम्परा की एक जनश्रुति प्रचलितहै कि

जब राजा मुकुट धारण पूर्वक इस सिंहासन पर बिराजता है तब तत्रस्थ पत्थर में से भीनेभीने मन्दस्वर का कुछ गायन सुनाई देने लगता है । परन्तु यदि बनावटी पुरुष राजा के स्थान उसपर बैठ जाय तो गाना नहीं सुन पड़ता ! कहावत में यह बात अब भी वैसेही चली जाती है परन्तु आजकल इसपर किसी का विश्वास अवश्यही नहीं है । इसी से वह गायन हम हिन्दुस्तानियों को भी सुनाई नहीं पड़ा । परन्तु वह पत्थर और कहावत यदि हिन्दुस्तान में होती तो वह मन्दगायन हम लोग अवश्यमेव सुनते क्योंकि भाई विश्वास ही तो फलता है ? प्राचीनकाल में यह प्रथा थी कि राजतिलक के दिन मन्त्री मुसाहेब आदिकों के सहित राजा अश्वारोहण करके टावर से वेस्ट मिन्स्टर एबी को सम्पूर्ण नगर का भ्रमण करतेहुए जलूस के साथ जाते और सब प्रजावर्ग हर्ष प्रगट द्वारा स्वीकृति प्रदर्शित करते थे । अब भी जलूस निकलता है परन्तु आज के जलूस में महाराजा अश्वारूढ़ नहीं किन्तु रथपर महाराणी सहित विराजमान हैं ।

आज वेस्ट मिन्स्टर एबी जाज्वल्यमान प्रकाश धारणकिएहै । वही एबी जहां अनेकों राजपुत्रोंने मुकुट धारणकिए और अन्तमें वहींपर अनन्त शय्याशायी भी हुए आज पुनरपि नवीन राजा के अभिषेक हेतु मनुष्य शक्ति साध्य सभी श्रृंगारों से विभूषित होकर उपस्थित हैं । बड़े बड़े राजकर्मचारी, राजप्रतिनिधि, स्त्री पुरुष आदि सब यथास्थान बिराज चुके हैं इतने में महाराजा के पधारने का समय भी प्राप्त हुआ । एक पार्श्व में बैठेहुए विंडसर के चैपेल रायल (गिरजा स्कूल) और वेस्ट मिन्स्टर स्कूल के भजन चतुर बालकगण तत्काल उठकर ऊंचे स्वर से कहते हैं -

Long live the King राजा चिरजीवी हों !

Long live the Queen रानी चिरजीवी हों !

The King and Queen of England हां, इंगलिस्तान के राजा रानी !

इसी के साथ साथ ही मीठे मन्दस्वर से बाजा बजने लगताहै और सब उपस्थित समूह का हृदय पूर्ण चन्द्रदर्शन से समुद्र की भांति हिलोरें लेने लगताहै और आचार्य्य पुरोहितगण यह भजन आरंभ करते हैं —

Now thank we all our God.

आज सब मिल गीत गाओ उस प्रभु के धन्यवाद !

महाराजा और महारानी जब तक अपने श्रृंगारभवन में जा कर राजपट धारण करतेहैं तबतक यहां सिंहासन यात्रा का जलूस सजताहै। इसमें सर्वाग्र राजदूतगण जिनके स्वर्णमय वस्त्रालंकारों की चमक से चकाचौंध होरहाथा खड़ेहुए वस्त्रों पर सोनहरे काम के बनेहुए सिंह, गैंड़ा, वीणा आदि के चित्र भी हमारे पूर्वीय दर्शकों के चित्त पर कुछ पुरानी चालों का भाव उत्पन्न करातेथे। इसके बाद पुरोहितगण, लार्ड लोग, प्रधान न्यायाधीश, प्रधान भंडारी और कोषाध्यक्ष, आदि थे। मुख्य चारण राजपुरोहित इंगलैंड, आयरलैंड और स्काटलैंड के ध्वजाधारी लार्ड लोग और प्रधान कार्य्याध्यक्ष उनके पीछे सजे थे। हरएक महाशय (Nobleman) के साथ एक बालक छोटी सी चमकीली गद्दी पर ताज रक्खेहुए साथ था।

राजश्री अलंकारों में तीन राज किरीट सर्वोपरि प्रकाशमान गद्दियों पर धरेहुए बालकों (राजपुत्रों) के हाथों में शोभा देरहेथे इन राजमुकटों की बनावट का वर्णन हम क्या करें। लक्ष्मी जिस की चरणाश्रिता सी होरही है उसके मुकुट की शोभा हमारे

शब्दों में नहीं समासकती। महाराणी जी के सुन्दर सुहावने किरीट में अनेकों महारतनों के बीच सर्वाधिक प्रकाशमान हमारा शत्राजितमणि [कोहनूर] हीरा ऐसी प्रखर ज्योति में कीर्णविस्तार कर रहाथा कि उसने तत्क्षणात् हृदय के अन्तरतमस्थान में चुभ कर अपनी प्राचीन जीवनी की स्मृति को जाग्रत करदिया।

राजतिलक के स्मारक स्वरूप अलंकारों में राज्य चक्र की चमचमाहट भी वैसीही थी जैसी कि राजा एडवर्ड के राज्यपर सूर्य्य प्रकाश। राजदंड (Sceptre) के मणि रत्नों की आभाप्रभा के ऊपर ससीही क्रास का चिन्ह सांसारिक विभवके ऊपर धर्मार्थ बलिदान की कैसी उत्कृष्ट दीक्षा देरहा था कि सहृदय दर्शक उस हृदयग्राही दृश्य को क्या कभी भूल सकता है!

महाराणी का स्वर्णमय सुन्दर राजदंड जिसके ऊपर कपोत की एक मूर्ति बनी है वह भी बहुतही मनोहर है।

यज्ञीय सामग्रियोंमें तीन तलवारें भी हैं जिनको न्याय, दया और राज्य के कृपाण कहते हैं:

दो संयुक्त तलवारें हैं जिनमें एककी धार तीव्र और दूसरे की कुंठितहै। इसीको न्यायखड्ग कहतेहैं यह ऐहिक और पारमार्थिक खड्ग भी कहलाती है। दया की तलवार बिलकुल बेधार की है। और राज्यखड्ग साधारण सुन्दर तलवारहै। इन चिन्होंको प्राचीन परम्परासे जैसा लोग मानते आएहैं वैसाही आज भी मानते हैं।

वेदीपर अभिषेकसामग्रीप्रस्तुतहै जिसमेंएकस्वर्ण रचित उत्क्रोंच पक्षी पंख फैलाए बैठा हुआ मानो उड़ाही चाहता है। इसके पक्ष में अभिषेकका पवित्र तैल भरा हुआ है पक्षी के चंचुमें एक छोटा सा छिद्र है जिसके द्वारा प्रणीता में तैल निकालकर श्रुवासे अभिषेक करते हैं।

अभिषेक मुद्रिका जो इस अवसर पर महाराजा की कनिष्ट का को सुशोभित करती है वह भी एक प्राचीन स्मारक है। इस पर जो मणि जटितहै उसपर सन्त जार्ज का क्रास खुदा हुआ है। प्रत्येक राजा के अभिषेक पर इसको नवीन सोने से संस्कृत करते हैं जिसमें राजा की अंगुली में ठीक पहिनी जासकै।

+:o:+

अभिषेक CORONATION.

जलूस तय्यार हुआ। प्रथम श्रीमहाराणी जी एक परम सुन्दर चन्दोवा के नीचे जिसको आठ राजमान्य लार्ड लोग उठाए हुए थे पधारीं। श्रीमती की पोशाक लाल मखमली और बहुतही बढ़िया सोनेके कामकी थी लटकती हुई साड़ी जिसको ट्रेन कहते हैं उसकी लम्बाई कोई दस गज होगी उसको आठ सेवक चार चार दोनों पार्श्वों से उठाए हुएथे। शिरपर केवल एक रत्नजटित सोने की सरकट और गले में कई राजसी चिन्हों के अलंकार (Orders of the Garter, the Thistle, Saint Patrick, and the Bath.) सुशोभित थे। महाराणी के साथ की सहेलियों की छटा निराली ही थी। इनमें कई बिवाहिता और कई कुमारियां थीं। महाराणी जी मन्द चाल से सब उपस्थित लोगों की अभ्यर्थनाके उत्तर में दोनों ओर को झुकती हुई पधारीं। और वेदी तथा राजगद्दीको झुककर प्रणामकिया और पार्श्वमें उपस्थित अपने सिंहासन पर बिराज गईं। अंग सहायक दो पादरी लोग भी श्रीमती के दोनों ओर बैठ गए। ट्रेन उठानेवाले लोग अपने अपने निर्दिष्ट स्थानों को चलेगए और सहेलियां ने भी यथा स्थान आसन लिया।

अब महाराजा का जलूस आया राज्य के बड़े बड़े कर्मचारी

राजपुरुष राज कुमारगण तथा आचार्य्य लोग अभिषेक सामग्री लिए हुए साथ होलिए। सोलह लार्ड लोगों ने मानो षोडशोपचार वा सोलहों कलाओं सहित सोनहरे चन्दोवाको उठाया जिस के नीचे महाराजाधिराज एडवर्ड सप्तम सिंहासनको पधारे। महाराजा के ट्रेन को छः शाहजादों ने उठाया। महाराणी के पार्श्व ही में महाराजाने भी आसन ग्रहण किया।

राजारानी के विराजचुकनेपर सम्पूर्ण मंडली ने यथास्थान अपने अपने आसन लिए और सब के सावधान होजानेपर महाराजा अपने स्थानपर खड़े हुए और प्रधान आचार्य्य ने पुकार कर सब लोगों से कहा :—

Sirs, before you stands the King,
King Edward of this land !
Say do you your homage bring,
All ye who round me stand !

महाशयो! आज इस समय राजा एडवर्ड सप्तम आपके सन्मुख उपस्थित हैं।। यही इस देश के निश्चित (undoubted King of this realm) राजा हैं। आप महाशयगण जो यहां पर अपनी स्वीकृति प्रगट करने को (to do your homage) पधारे हैं सो कहिए कि आप लोग राजा एडवर्ड कोस्वीकार करते हैं?

इस अवसरपर महाराजा चारों दिशाओं को निरीक्षण करते हैं और मनोहारी संगीत वाद्य में रच्छहु ईश नरेशहिं का स्वर उठता है। साथ साथही शंखध्वनि (trumpets) आरम्भ होजाती है। इसके पश्चात् पुरोहितों सहित महाराजा एक सूक्ष्म ईश्वर प्रार्थना करते हैं जिसमें सम्पूर्ण उपस्थित समूह योग देता है फिर राजकीय शपथका समय है। महाराजाके आसन (faldstool) सन्मुख

खड़े होकर प्रधान राजपुरोहित ने श्रीमान से इस प्रकार प्रश्नो त्तर किए :-

The Archbishop—Will you solemnly promise and swear to govern the people of this United Kingdom of Great Britain and Ireland and the dominions thereto belonging, according to the statutes in Parliament agreed on, and the respective laws and customs of the same?

The King—I solemnly promise so to do.

The Archbishop—Will you to your power cause law and justice in mercy to be executed in all your judgements?

The King—I will.

The Archbishop—Will you to the utmost of your power maintain the laws of God, the true profession of the Gospel and the Protestant Reformed Religion established by law? And will you maintain and preserve inviolably the settlement of the Church of England and the doctrive worship, discipline and Government thereof as by law established in England? And will you preserve up to the Bishops and clergy of England, and to the Church therein committed to their charge, all such rights and privileges as by law do or shall appertain to them or any of them?

The King—All this I promise to do.

राजपुरोहित—क्या आप गम्भीरता पूर्वक निबंध करेंगे और शपथ लेंगे कि आप इन ग्रेटब्रिटिन और आयरलैंड के युक्त प्रदेश और उसके

आधीन राज्यों के बासियों को पार्लिमेंट स्वीकृत नियमों और प्रत्येक की रीति तथा शास्त्रानुसार शासित करेंगे ?

राजा—मैं गम्भीरता से ऐसा करनेपर बाधित होता हूं।

राजपुरोहित—क्या अपने भरसक अपने समस्त निर्णयों में आप कानून और दया युक्त न्याय का व्योहार करेंगे ?

राजा—मैं करूंगा।

राजपुरोहित—क्या आप अपनी शक्तिकी पराकाष्ठा पर्य्यन्त ईश्वर के नियमों, धर्म ग्रन्थ के सत्य स्वीकार और संशोभित शास्त्र संस्थापित **मत** को स्थिर रक्खेंगे ? और क्या आप इंगलिस्तानी गिरिजाकी दानलब्ध सम्पत्ति और उसके मत पूजन नियम बाध्यता और राजप्रणाली को जो विधि द्वारा इंगलैंड में संस्थापित है स्थिर और अबाध्य रक्खेंगे ? और क्या आप इंगलिस्तान के पुरोहितों और धर्मोपदेशकों के और उनके अधिकृत गिरिजा घरों के ऐसे समस्त दायगण और अंशों को कानून द्वारा जो उन को अथवा उनमें से किसी को मिले हैं या मिलेंगे संरक्षित रक्खेंगे ?

राजा—यह सब करने की मैं प्रतिज्ञा करता हूं।

जिस समय यह शपथ कार्य्यावली हो रही थी उस समय सम्पूर्ण मन्दिर में बिलकुल निस्तब्धता विराजमान थी। सभी लोगों को महाराजा के वचन सुनने की उत्कंठा थी सो समस्त सभा मानो राजामय होगई थी। महाराजा के वचन बहुत स्पष्ट और ऊंचे स्वर के थे सो प्रायः सब लोगों ने श्रवण किए।

तिस पीछे राजा साहब बेदी के निकट पधारे और मेखला ओं पर घुटने टेक कर शपथ के लिए प्रस्तुत हुए। पुरोहितने धर्म ग्रन्थ बाइबिल **महाराजा के सन्मुख किया और श्रीमानने उसपर हाथ रखकर शपथ पूर्वक कहा कि** जो बाचायें मैंने अभी सबके सन्मुख दी हैं उन्हें मैं पूर्ण करूंगा और उनकी रक्षा करूंगा **यह कह कर श्री**

आतने बाइबिल को चुम्बन किया। इतने में लार्ड कारिंगटनने शपथपत्र हस्ताक्षर के लिए प्रस्तुत किया जिसपर महाराजाने तत्काल हस्ताक्षर कर दिए।

अब अभिषेक (Anointing) का समय आया। सिंहासन पर सन्त एडवर्ड का सुनहरा चन्दोवा ताना गया और प्रधान आचार्य्य ने यज्ञतैल को प्रोक्षणी में डालकर निम्न लिखित मन्त्रों द्वारा महाराजा को अभिषिक्त किया। तैल संयुक्त स्वर्ण श्रुवा को महाराजा के शिरपर लेजाकर Be thy head anointed with holy oil, as Kings, Priests and Prophets were anointed ओम् भूः पुनातु शिरसि कहकर पुरोहितने आशीष दी कि हे राजा! तेरा शिर भी वैसाही पवित्रता लाभ करे जैसी कि राजाओं, ऋषियों और प्रोहितों को लब्ध हुई।

इसी भांति राजाके हृदयपर तैलस्पर्श करके उसने Be thy breast anointed with holy oil ओम् महः पुनातु हृदये मन्त्र पढ़ा। तब दोनों हथेलियों पर श्रुवा स्पर्श कराके Be thy hands anointed with holy oil ओम् करतलकर पृष्ठे पुनातुमत्रस्व मन्त्र पाठ किया। और सूक्ष्मतः ईश्वर प्रार्थना की—

O God, the Crown of the faithful, Bless, we beseech Thee, and sanctify this, Thy servant, Edward, Our King, and as Thou dost this day set a crown of pure gold upon his head, so enrich his royal heart with Thine abundant Grace, and crown him with all princely virtues, through the King Eternal Jesus Christ Our Lord, Amen.

हे! धर्मनिष्ठों के रक्षक ईश्वर! हम लोग आपसे प्रार्थना करते हैं कि हमारे राजा अपने इस भृत्य एडवर्ड को बर दीजिए

और पवित्र कीजिए । जैसे आप आज उसके शिरपर शुद्ध स्वर्ण मुकुट रखते हैं वैसेही उसके राजकीय हृदय को अपनी महान करुणा से सुशोभितकीजिए । और हमारे प्रभु यशस्वी कृष्ण (जीजस क्राइस्ट) के द्वारा उसके हृदयमें सम्पूर्ण राजकीय गुणप्रदान कीजिए एवमस्तु !

तब अभिषेक कार्य्य शेष हुआ । तत्काल एक आचार्य्य ने नरम रूमाल से महाराजा के अंगों को पोछकर वस्त्रादि यथा स्थान कर दिए । तब महाराजा खड़े हुए और प्रधान आचार्य्य ने यथा रीति उपवीत तथा दुपट्टा (Alb and supertunica) भेंट किया । तत्पश्चात् प्राचीन रीत्यानुसार लार्डग्रेट चेम्बरलेन ने सोने के कांटों (Spurs) से महाराजा के पैर छूए और न्याय खड्ग को श्रीमान की कमर से बांध दिया । तब महाराजा फिर वेदी के समीप गए और तलवार को खोलकर वेदीपर समर्पण कर दिया । तात्पर्य्य ईश्वरार्पण से यही है कि राजा निष्काम भाव से सम्पूर्ण राजकार्य्य करता है उसका स्वत्व कुछ भी नहीं सब कुछ ईश्वराज्ञा ही पर निर्भर है । प्रधान आचार्य्य पुनरपि उस तलवार को भंडारी (Lord Chamberlain) के हाथमें महाराजाके लिए फेर देता है और भंडारी आचार्य्य को एकसौ शिलिंग दक्षिणा देकर तलवार लेलेता है ।

यह सबकृत्य होचुकनेपर अब राजकिरीटधारणकरके सिंहासनारूढ़ होने का समय आया । यथा रीति महाराजाकी अंगुली में प्रजाकी ओरसे अंगूठी पहिनाई गई । यह वही मुद्रिका है जिस पर सन्त जार्जका क्रास चिन्ह अंकित है । और तब से अबतक निरन्तर राजतिलकके अवसरों पर राजा की अंगुली को विभूषित करती आई है । इंगलिस्तानके कार्य्यालयों की ओर से भेंट

स्वरूप दस्ताने पहिनाए गए और हाथों में राजदंड (Sceptres) धारण कराए गए ।

अब राजमुकुट की बारी आई । एक पुरोहित ने वेदीपरसे उठाकर उसे आचार्य्य (Dean) के हाथों में दिया । प्रधान आचार्य्य ने उससे लेकर बड़ी सावधानी के साथ महाराजाके शिर पर धारण कराया । अबतक सर्वत्र निस्तब्धता विराज रही थी । महाराजाके मुकुट धारण करतेही तत्काल शंखध्वनि (Trumpets) और जयजयकार से भवन गूंजउठा । चारों ओर मोतियों के झालर की भांति लगी हुई वैद्युत दीपावली अकस्मात जगमगा उठी और आलोकसे सम्पूर्ण मन्दिर प्रज्वलित होउठा । सब उपस्थितमान्य वरों ने अपने अपने ताज शिरों पर धारण करलिए । वाद्य संगीत "कलह इश नरनाहि" जयजयकार और बाहर तोपों की सलामियों के मध्य गदा राजाने उठाकर राजगद्दी पर आरोहण किया और वहीं विराजते रहे ।

इतने में श्रीमहाराणी जी का अभिषेक कार्य्य ऊपर वर्णन की हुई रीति भांतियों से ही सम्पन्न हुआ मुकुट राजदंड आदि सब महाराजा की भांतिही श्रीमती जी को भी धारण कराए गए तब उपस्थित महिलागणों ने भी अपने अपने ताजधारण कर लिए और उच्चस्वर से जयजयकार हुई ।

इस अवसरपर न केवल राजा रानी ही वरन सम्पूर्ण मन्दिर में उपस्थित जनसमूह मात्र मुकुटधारण किए हुए दीखपड़ते थे । राजा प्रजा सभी समान सभों की इच्छायें परिपूर्ण परस्पर प्रेम पुलकित सभी आनन्द में मग्न थे । इस समय के आनन्द परमानन्दमय दृश्य का वर्णन हम क्योंकर करैं ? सचमुच गिरा अनयन नयन बिनु बाणी का कविबचन हमें प्रत्यक्ष अनुभूत होता है ।

And when the crown of sparking light
Is placed upon his head,
The people all, with circlets bright,
A golden glory shed,
All through that grey old Abbey church,
The sun shine (electric light) dances clear,
The very wales shine with the light,
From crowns and sunshine there.
Once more the golden trumpets soind,
Again all present sing,
In one long cheering deafening round,
" God save the King,
God save our Lord the King "
While the great guns at the tower,
Roar like thunder through the sky,
To tell that at this, hour,
The King is throned high.

जबहिं चमत्कृत मुकुट, राज मस्तक पर धारयो
हारन सों जग मगत, सबहिं बर प्रभा पसारयो।
नच्चत भानुकर पुरार्चीन, वहि आश्रम माहीं
मुकुट मरकर जोति, पाय भांतें चमकाहीं।
स्वर्ण बिगुल पुनि बजैं, पुनः सब जन मिलि गावैं।
मुखद तीव्र स्वर माहिं, ईश भूपाल बचावैं।
"रच्छहिं प्रभु ममनाथ, नृपहिं" इमि सकल मनावैं।
गुरु भुशुंडि गण इतै, बज्र सम गढ़ पै गाजैं।
करन प्रगट एहि समय, भूप सिंहासन राजैं।

महाराजाके राजगद्दीपर विराजने उपरान्त प्रधान आचार्य्य एक धर्म पुस्तक (बाइबिल) भेंट करते हुए आशीर्वाद देते हैं और पुरोहित, आचार्य्य तथा बड़े बड़े राजकर्मचारी लोग सिंहासन के निकट तलवारें लिए हुए उपस्थित होजाते हैं। तब अधीनता स्वीकृति (Homage) की कृत्य आरम्भ हुई।

सर्वप्रथम युवराज कुंवर प्रिंस आफ वेल्सने सिंहासन समीप जाकर बन्दना की और झुककर इसभांति स्वीकृति प्रगट की :-

"I, George, Prince of Wales, do become your liege man of life and limb and of earthly, worship, and faith and truth I will bear unto you, to live and die, against all manner of folks. So help me God.

मै युवराज जार्ज अपने जीवन तन और भौतिक विश्वाससे आपका दास होता हूं। और मैं सत्य और धर्म से आपकी सेवा में प्रस्तुत रहूंगा। एवं सब प्रकार के मनुष्यों के प्रतिकूल आपका जीवन मृत्यु का सहकारी रहूंगा। इन प्रतिज्ञाओं के दृढ़ रखने में परमेश्वर मेरी सहायता करे

महाराज को चुम्बन करके ज्योंही कुंवर साहब उठने लगे त्योंही महाराजने बड़े प्रेम पूर्वक अपना हाथ उनके कन्धे पर रख कर चुम्बन किया तब युवराजकुंवर अपने स्थान को वापिस गए।

इसी भांति राजपरिवार के सब राजकुमारों ने अपनी अपनी स्वीकृति महाराजा के सन्मुख प्रगट की। तथा अन्यान्य प्रतिनिधिगणों ने भी उसी भांति रीतियों को पूरा किया।

यह कार्य्य समाप्त हो चुकनेपर फिर ईश्वर प्रार्थना (Communion Service) आरम्भ हुई जिसमें महाराजा और महाराणी ने भी सिंहासनों से उतर घुटने टेक कर योग दिया। प्रार्थना समाप्त हो चुकने पर महाराजा ने प्रधान आचार्य्य को रोटी

और मद्य (Bread and wine) भेंट की (यह पदार्थ थाली और प्याली में धर कर एक पुरोहित ने राजा केहाथमें दिए थे) जिसे ग्रहण करके आचार्य्य ने वेदी पर रख कर नैवेद्य (Oblation) लगाया। दक्षिणा में महाराज ने आध सेर सोना और सोने के काम का वस्त्र पुरोहित को भेंट किया। महाराणी ने भी इसी प्रकार भेंटें दीं। इस अवसर में परम मनोहर नए नए राग वाद्य संयुक्त गायन होते रहते हैं जिनके मन मोहन स्वर अपना अपूर्व प्रभाव सब पर डाले बिना रही नहीं सकते।

सब कार्य्य शेष हो चुकने पर राजा रानी उठकर एक अंत: पुर में जाते हैं और वहां भारी वस्त्रालंकारों को उतार कर त निक विश्राम लेते हैं।

राजतिलक का महायज्ञ जिसके देखने की लालसा न केवल इंग्लिस्तान की प्रजा बरन सारा संसार लगाए हुए था इस भांति भगवान की कृपा से सम्पूर्ण आनन्द मंगल के साथ आज समाप्त हुआ।

वापिसी जलूस।

THE PROCESSION RETURNS.

इधर मार्गों पर डटी हुई भीड़, सैनिक समुदाय और साधा रण दर्शनेच्छु प्रजा जलूस के लौटने की प्रतीक्षा में अकुला रही थी। ज्यों ज्यों देर होती थी त्यों त्यों लोगों की उतकंठा और भी बढ़ती जाती थी। वास्तव में प्रोग्राम में निर्धारित समय से लग भग बीस मिनट का समय गिरजे में अधिक लग गया था। इतने में तोप ने बम का शब्द किया। सब लोग चैतन्य हो गए कि अब महाराजा की सवारी गिरजे से बाहर पधारी।

पुलीस के बड़े कर्मचारियों ने एक बार वैद्युत शीघ्रता के साथ सम्पूर्ण मार्ग निरीक्षण कर लिया तब गिरजे से महाराजा अपने जलूस सहित लौटते हुए आगे बढ़े। पहिले वर्णन किए हुए प्रकार से ही वापिसी जलूस भी सजा था। महाराजा के रथ के आगे आगे हिन्दुस्तानी राजा लोगों की छटा अपूर्व शोभा दे रहीथी। मगुन कलशवालों (Bargemen and watermen) का साथसाथ ही चलना देखकर हमारे हृदय में अपनेदेशकी प्राचीन चालों की स्मृति जागरित होउठती थी। इस बेर महाराजा और महारानी मुकुट धारण किएहुए और हाथों में राजदंड लिए थे।

जन समूह के जय जय कार, बैंड के जातीय गान, और सब लोगों के करतालि ध्वनि से दिशाएं व्याप्त हो रहीं थीं। आनन्द का समुद्र आज लंडन नगर को सब ओर से मानों आप्लावित कर रहा है। इसी आनन्दमय ध्वनि के बीच में होती हुई महाराजा की सवारी धीरे धीरे राजमहल को पहुंच गई। राजद्वार पर यथारीति उपचार के पश्चात महाराजा और महारानी रथ पर से उतरे और महलों को पधार गए। हम लोग भी अपने कैम्प को वापिस आए।

महाराणी की राजसी पोशाक !

CORONATION ATTIRE.

ईंगलिस्तानमें जैसे और सब बातों की उन्नति है वस्त्र शृंगार विषय में भी बहुतही उन्नति हुई है। प्रायः छोटे बड़े सभी अंग्रेजों का शृंगार सम्बन्ध में बड़ा ध्यान रहता है। और इसकी चर्चा भी सर्वत्रही छोटे बड़े सभी भांति के सामाजिक अवसरोंपर हुआ करती है। समय समय की पोशाकें इनके यहां अलग अलग

निर्धारितहैं और सर्वदा प्रायः प्रत्येक ऋतुमें फेशन की बदली हुआ करती है। सो राजतिलक के अवसरपर महाराणी जीके पोशाक की चर्चा न हो यह क्योंकर संभव है ?

शृंगार सजावट की बात कुछ प्राकृतिक सीही है क्योंकि यह न केवल सभ्य जातियों में ही वरन जंगलियों में भी समान भाव से पाई जाती है। ब्रिटन जब जंगली जाति थे तब अपने शरीरों को भांति भांतिके रंगों से रंगकर संवारते साजते थे अफ्रीका आदि देशों के वन्य लोग अब भी वैसेही बर्ताव करते हैं। परन्तु इंगलिस्तान ने अब उन्नति की बाढ़ में शृंगार सम्बन्ध की बातों को खूब सुन्दर परिस्कृत कर लियाहै। सो इस परमोज्ज्वल शताब्दी में राजतिलकके अवसरपर महाराणी जीके राजसी पोशाक का क्याही कहना है ?

राजा हेनरी तृतीय की रानी के पोशाककी तयारी पचास हजार पाउंडकी थी और राजा जेम्स द्वितीयके रानी की पोशाक एक लाख पौंड की थी। कहते हैं कि उन सब बहुमोल बस्त्रोंकी आभाप्रभा और सौन्दर्य्य से महाराणी अलक्जेन्ड्रा की पोशाक चढ़ बढ़कर है।

पाठक! पंद्रह लाख की तय्यारी की पोशाक जिसके सामने फीकी कहीजाय उसके सौन्दर्य्य का हम क्या बखानकरैं? आप ही अनुमान कर लीजिए कैसी है! कहना इतनाही है कि यह पोशाक जिसकी इतनी बड़ी बड़ाई और प्रसंशा है हमारे इसी रीते बीते देशके कंगालकारीगरों की बनाई हुई है। दिल्ली के कारीगरों ने लाट कर्जन की मंजूरी में यह काम बनाया था।

आज हमारे दुर्दशाग्रस्त गिरे दिनों की कारीगरी ने जब पश्चिमके आदर्श उन्नत देशमें इतनी बड़ी प्रसंशा प्राप्त की है तब

हमारे सौभाग्य समय की सभ्यता का अनुमान विचारवान अंगरेज लोग अनायासही लगा सकते हैं !

सोनहरे काम के साथ साथ मणि मुक्तादि का संगठन ऐसी सुन्दरता से किया गया है कि मानो सचमुच तारागण प्रकाशित हो रहे हैं। राजकीय चिन्हों (Feoral emblems) को बड़ी सुघरई से पेंच देकर सम्मेलन करके दिखलाया है इंगलैंड, आयरलैंड, स्काटलैंड और इंडिया के पुष्पक प्रतिनिधि गुलाब, तिपतिया, भटकटैया, और कमल कई बेलबूटों द्वारा मिला जुलाकर उनपर अंगरेजी राजमुकुट पहिनाया है।

महारानी के हीरा जवाहिरात, जिनमें कोहनूर भी परिगणित है कहते हैं कि संसार भरसे श्रेष्ठतर हैं। इस अवसरपर यह सभी अलंकार श्री जीने धारण किए थे।

महारानी रानी एलेजिवथ के फेशन का गलाबंद (Collar) बहुत पसन्द करती हैं सो उसी प्रकार का सुनहरा गलाबन्द कई प्रकार के अलंकारों से जगमगाता हुआ धारण किया था।

यज्ञशाला (गिरजाघर) को जाते समय महारानी जी शिर पर कोई आभूषण वा अलंकार धारण नहीं किए थीं तिलक के पीछे लौटतेसमय राजचन्द्रिका (Crown) और पाटम्बर (Royal mantle) धारण किए थीं।

यह जड़ाऊ पाटम्बर खास लंडन नगरके कारीगरों का बनाया हुआ है इसमें भी साम्राज्य सम्बन्धी फूल पत्ते सूक्ष्म रूपसे कढ़े हुए हैं।

वस्त्रालंकार आदि के विषय में हमारे देश की और इंगलिस्तान आदि योरोपीय देशों की रुचि में बड़ा विभेद है। उनकी वस्तुओं के लिए हमारे पास कदाचित यथायोग्य

शब्द भी नहीं है (अन्ततः हमको तो नहीं ज्ञात है) इस कारण महारानी के पोशाक का अधिक ब्योरेवार वर्णन हम नहीं कर सकते पाठकों के लिए बहुत रुचिकर भी शायद न हो परन्तु लंडन में उस दिनकी साधारण बात चीत का यही प्रधान विषय हो रहा था। प्रायः सभी लोगों से हमने महारानी जीके पोशाक की चर्चा सुनी लोग एक एक वस्तु वा अंश को लेकर बड़ी बड़ी आलोचनायें करते थे।

रात्रिमें लंडनकी शोभा LONDON BY NIGHT.

राजसी जलूस निकलजानेके बाद दिनके तीसरे पहर लंडन के राजमार्गोंपर से भीड़ें कुछकुछ हटगई फौजें अपनेअपने कैम्पों को चली गई। और साधारण लोग तनिक मनफेर (Change) के लिए इधर उधर चले गए। थोड़ी थोड़ी बूंदा बांदी की बर्षा भी होगई जिसको वहांवाले तो वर्षा ही कहते हैं परन्तु हम उसे गुलाब पाशी ही कहैंगे क्योंकि दिन भरके काम काज के पीछे थोडी ठंढक आवश्यकही थी जिसे अवसर कीबात समझकर इन्द्र महाराजने पूरी की।

अब सन्ध्याहुई। दीपावली के चमत्कारने सूर्य्यालोक कोभी एकबेर मात कर दिया! इस समय मकानों, द्वार दीवारों, जन पथों के बन्दनवारों और महराबों की अपूर्व शोभा थी! दिनमें जो बेलबूटे मणि माणिक्य के फल फूलसे लटकते हुए दीखपड़ते थे रात्रिमें वह सब प्रकाशित होकर चारों ओर किर्णें बिखरने लगे। ठौर ठौरपर प्रकाशित शुभ सम्वाद राजा प्रजा दोनों के लिए कल्याण वाद आदि की शब्दावली दर्शक के हृदय को अलगही खींचे लेती थी।

बिदायी दरबार।

हम वर्तमानकाल के भारतवासियों को वास्तविक राजतिलक दर्शन का सौभाग्य इस जीवन में काहे को कभी प्राप्त हुआ था ! सो इस अवसरपर अपने महाराजा राजा एडवर्ड का छत्र धारण देखकर हम सभी हिन्दुस्तानी लोग हर्ष से फूले अंग न समाते थे। भगवान की कृपा से महाराजा के न केवल दर्शन वरन सिंहासनारूढ़ दर्शन करके हम लोग परम सुखीहुए। अभिलाषा पूरीहुई।

अब बिदायी का दिन आया। महाराजा साहब ने तारीख १३ अगस्त १९०२ ई० को हिन्दुस्तानी फौजों की बिदायी का दरबार नियत किया। तदनुसार राजमहल बकिंगहाम पैलेस के उद्यान में दरबार आयोजन हुआ। एकबार फिर सब लोग अपने अनुपम साज सामान से वहां उपस्थित हुए।

परमरम्य राजचन्देवा (Canopy) के नीचे महाराजा और महाराणी बिराजमान हुए। युवराज कुंवर वेल्स, उनकी रानी साहेबा, राजभ्राता डिउक आफ कनाट एवं राजपरिवारके अन्य राजकुमार तथा मान्यगण पार्श्व में समासीन हुए।

हमारे महाराजा कूचबिहार महारानी सहित उपस्थित हुएथे एवं जयपुर, गवालियर आदि के महाराजे तथा अन्यान्य हिन्दुस्तानी राजे रईस लोग भी दरबार में उपस्थित हुए। गोरी फौजों के सलामी गार्ड (Guards of Honor) बैंड बाजों के सहित पेशवाई के लिए लगाए गए थे। हिन्दुस्तानी कंटिनजंट ने सैनिक नियमानुसार सलामी दी उस समय सब बैंड बाजों ने सम्मिलित स्वर में जातीय संगीत बजाया और महाराजा साहब ने उठकर सलामी ली और एक सामयिक वक्तृता में अपना हर्ष प्रकाशित

करतेहुए कहा कि—

हिन्दुस्तान के इस तेजोमय (Splendid) सैन्य को देखकर मुझको बहुत बड़ी प्रसन्नता हुई। पहिले अपनी कठिन बीमारी के कारण मुझको डर हुआ था कि कदाचित मैं तुम सब को मिलने का सौभाग्य न प्राप्त करसकूंगा परन्तु मैं बड़ी प्रसन्नता के साथ परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि जिसकी कृपा से मैं आरोग्य होगया और यहां उपस्थित हूं। मैं इसबातसे बहुतही सन्तुष्ट हुआ कि तुम सब लोगों से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ और सब लोग मेरेहाथसे तिलक मुद्रा (Coronation Medal मेडल-तमगा) पावेंगे। उपस्थित समुदाय में कई फौजों को मैं अच्छी तरह से पहिचानता हूं क्योंकि जब मैं हिन्दुस्तान यात्रा के लिए गया था तब दिल्ली में उन्हें देखा था और अब फिर देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। मैं आशा करता हूं कि सबलोग इंगलिस्तान में रहते समय सुखी रहे होंगे और भली भांति आमोद (Enjoyed) प्राप्तकिया होगा। अब मैं चाहता हूं कि भगवान तुम्हारी स्वगृह यात्रा को भी सुख से और शीघ्रता से पूरी करे।

वक्तृता के पश्चात बैंड ने फिर जयजयकार बजाया और महाराजा अपने स्थानपर बिराजगए। फिर राजतिलक के पदक (तमगे) एक एक करके सबको दिए गए। राजे महाराजाओं ने भी राजा महाराजा (King Emperor) से पदक प्राप्त किए। तत्पश्चात ताजीम रस्मों के होचुकने पर महाराजा, महारानी तथा राजपरिवार महलों पधारे और सब लोग अपने अपने स्थानोंको बिदा हुए।

हम लोगोंके लंडन बिचरन का यह अन्तिम दिवस था अतः राजद्वार से लेकर रेलवे स्टेशन तक तथा हैम्पटन कोर्ट मार्ग के

प्रायः सभी स्टेशनों पर बहुत ही बड़ी भीड़ें जुड़ रही थीं। जयजयकार की ध्वनि से आकाश गूंज रहा था।

उपनिवेशीय सैन्य की बिदायी का दरबार हमसे एक दिन पहिले अर्थात १२ अगस्त को हुआथा। उस अवसर पर भी हमारे राजे महाराजे लोग दरबार में उपस्थित थे।

श्रीमान् राजराजेश्वर ने कलोनियल (उपनिवेशीय) सेना की सलामी लेने के पश्चात अपनी वक्तृता में उनसे कहा था कि मैं तुम्हारी देशभक्ति और बर्ताव की बहुत सराहना करता हूं, तुमने जो मातृभूमि की सेवा की है वह कभी न भूली जायगी।

इसके पश्चात सब लोगों को तिलकमुद्रा बांटेगए। महाराजा के वचन जोकि श्रीमान् ने उपनिवेशीय सैनिकोंसे कहे भलीभांति ध्यान देने योग्यहैं। यद्यपि हमारे लिए यह बात कुछ नवीन नहीं है क्योंकि जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी (जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर सेवनीयहै) यहतो हमारा मुखाग्र मंत्र है। तथापि उसमें प्रवृत्ति न होने के कारण महाराजा ने जहां उपनिवेशियों की सराहना देशभक्ति के लिए की थी तहां हमारी प्रशंसा केवल डील डौल (Splendidness) में की! विचारवान लोगों को इसपर ध्यान देनाचाहिए और अपने वास्तविक कर्तव्योंकी ओर काय, मनो, वाक्य से प्रवृत्त होना चाहिए।

इसी दिन हमारे जयपुर नरेश महाराजा सवाईमाधवसिंह जी ने राजा एडवर्ड सप्तम कैसरहिन्द को मित्रता अथवा स्वीकृति (Homage) स्वरूप एक तलवार भेंट की थी। यह रत्नजटित तलवार डेढ़लाख रुपए के मूल्य की है जिसे श्रीमान राजराजेश्वर ने बड़े प्रेमपूर्वक ग्रहण किया। विलायतवासियों में इसकी बड़ी चर्चा रही थी। यहीसब अनोखीबातें और हिन्दुस्तानी राजा रईसों की

चमकीलीपोशाकें आदि देखकर ही तो वहांवाले हिन्दकी अमीरी का अटकल लगातेहैं। अकाल और प्रजाकी दरिद्रता आदिकी बातें वे केवल सुनतेहैं परन्तु बनाव शृंगार और मित्रता पुरष्कार आदि को प्रत्यक्ष देखतेहैं तब उनको यही विश्वास होजाताहै कि वास्तव में हिन्दुस्तान अब भी बड़ा धनाढ्य देश है। अकाल वा दरिद्रता आदि की पीड़ा थोड़ेसे कंगालोंको होने के सिवाय देशब्यापिनी कदापि नहीं होती! नहीं तो यह सब चमत्कार प्रत्यक्ष देखने में कहां से आते?

शोक है कि विलायती साधारण प्रजा को हमारी वास्तविक दशा का ज्ञान बिलकुल नहीं है! उनको यह नहीं मालूम है कि हिन्दुस्तानियों में परस्पर महानुभूति का नाम भी नहीं रहा है! इसी से उन रईसों के शरीरों पर और हाथोंद्वारा यह चमत्कार दिखाई पड़ते हैं। किन्तु सचमुच उन्हीं के दूसरे भाई बन्दों की दशा देखकर सहृदय व्यक्ति को आंसू बहाना पड़ेंगे साधारण प्रजा की कथा ही क्या?

राजकीय खातिरदारी के अतिरिक्त इंगलिस्तान की सर्व साधारण प्रजा ने भी हिन्दुस्तानी प्रतिनिधियों और सेनाओं की बड़ी प्रेमभरी अभ्यर्थना की थी अतः उनका उपकार स्वीकार करना हमारी ओर से आवश्यक ही था। यह विचारकर हमारे बंगाल प्रान्त के प्रतिनिधि (क्योंकि अंगरेजी चालों को हमारे बंगाली भाई लोग शायद अच्छी तरह से जानते हैं) महाराज कुमार श्री प्रद्योतकुमार ठाकुर महाशय ने लंडन के लार्ड मेयर के नाम सम्पूर्ण हिन्दुस्तानियों की ओर से एक धन्यवादपत्र भेजाथा जिसके उत्तर में लार्ड मेयर ने हिन्दुस्तानियों की अनेक बिधि सराहना करतेहुए लिखा था कि इंगलिस्तान की प्रजा अपने

पूर्वीय भाइयों के प्रीति और स्नेह का अत्यन्त गौरव करती है और चाहती है कि यह भ्रातृभाव सदा के लिए स्थिर रहे ।

—— +:0:+ —— १ अप्रैल १९३२

अंगरेजी रस्म रवाजें ।

हम अपनी वापिसी यात्रा का वृत्तान्त लिखने के प्रथम कुछ थोड़ी सी बातें अंगरेजों के रीति व्योहारों के विषय भी कहना चाहते हैं । यद्यपि यह विषय मेरेलिए अनधिकार चेष्टा ही है क्योंकि मेरा चार घड़ी का इंगलिस्तान निवास इन विषयों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए पर्य्याप्त कदापि नहीं होसकता । इसके अतिरिक्त आजकल हमारे देश और देशियों का अंगरेजों और उनके व्योहारों के साथ इतना अधिक निकट सम्बन्ध हो गयाहै कि जिससे प्रायः सभी लोग उनके व्योहार वर्तावों को न केवल जानने वरन उनकी नकल तक करने लगे हैं तथापि हम आशा करते हैं कि उनके व्योहार वर्तावों को अपने एक सैनिक की दृष्टि से देखना और जानना आप अवश्य चाहेंगे सो यथासाध्य चेष्टा करूंगा ।

गृहस्थाश्रम ।

सामाजिक जीवन का प्रधान कार्य विवाह है । समाज की स्थिति ही इसी के आधार पर है । गृह, गृहस्थ और गृहस्थाश्रम इसी विवाह संस्कार की साथी अवस्था में हैं अतः प्रथम इसी विषय को लीजिए—

Love, Marriage and Home.

हमारे देश हिन्दुस्तान में लड़के लड़कियों का विवाह करना उनके पिता, माता वल्कि घराने के बड़ों के कर्तव्य में सम्मिलित समझा जाता है । स्त्रियों को विद्या शिक्षा न देने, परदे में रहने

और मनुष्य समाज से बिलकुल ही अलग रहने की कुप्रथा जब तक जारी रहे तबतक विवाह कार्य माता पिता के आधीन रहना अच्छा ही है। परन्तु इंगलिस्तान में इसके बिलकुल विरुद्ध है। सन्तान, बालक वा बालिका की शिक्षा दीक्षा माता पिता का कर्तव्यहै परन्तु विवाह मे उनका कोई सम्बन्ध नहीं, विवाह करना लड़के लड़कियों का अपना निज कर्तव्य है। सो यह कर्तव्य वे पूरा नहीं कर सकते जब तक कि भले बुरे का ज्ञान और परिवार पोषण, योग्य धन और कमाई की शक्ति उपार्जन न करचुके हों। अतः विवाह इंगलिस्तान में बीस पचीस बरष की अवस्था के नीचे कभी नहीं होता।

हमारे देश की भांति वहांपर लड़कियां और स्त्रियां मनुष्य समाज से अलग नहीं समझी जातीं अतः उनको उपयुक्त बर खोज लेने की पूरी स्वतन्त्रता प्राप्तहै। गिरजाघरों की उपासनाओं, सामाजिक उत्सवों, खेल तमाशों, नाच और भोजों, प्रदर्शिनियों, घुड़दौड़, साइकिल दौड़, किश्ती दौड़, आदि की बाजियों और सब प्रकार की आमोदशालाओं में स्त्री पुरुष, लड़के लड़कियां सब समानभाव से सम्मिलित होते हैं और एक दूसरे का परिचय प्राप्त करते हैं। परिचित होने पर विवाहार्थी लड़के वा लड़कियां (क्वारे लोगों को चाहे वे कितनीही अवस्था के हों लड़के लड़कियां कहने में अधिक सुविधा जान पड़ती है इसी से हम भी इन्हीं शब्दों का प्रयोग करतेहैं) जिनके गुण, कर्म, स्वभाव परस्पर मिलते जुलते हैं उनके विषय अधिक अन्वेषण करने में प्रवृत्त हो जाते हैं इसी को कोर्टशिप कहते हैं अर्थात् वर कन्या का अन्वेषण।

जैसे हमारेदेशके सामाजिक विद्वानों व वक्ताओं के मस्तिष्क

बालविवाह, अनमिलविवाह, विधवाविवाह, आदिमें खपाएजातेहैं वैसे इंगलिस्तान के समाजशिक्षक और पादरी लोग सर्व साधारण को विवाह न करने की शिक्षा प्रायः दिया करते हैं। मैंने कतिपय सामाजिक व्याख्यान सुने हैं जिनमें कहा गया था कि विवाहित जीवन की अपेक्षा एकाकी जीवन में अधिकतर मनुष्य ऊंचे उद्देश्य की कृतकार्यता प्राप्त कर सकताहै। एकाकी स्त्री वा पुरुष जहां संसार की भलाई, विद्या की उन्नति, नवीन आविष्कार, धर्म की सेवा और सामाजिक उन्नति में अपना सम्पूर्ण समय लगा सकने में स्वतन्त्र होते हैं तहां विवाहित व्यक्ति कदाचित आधा वा चौथाई समय भी नहीं लगा सकते। क्योंकि विवाह के फल स्वरूप निज सन्तान आदिकी शिक्षा, भरण पोषण और दम्पति के परस्पर आवश्यकीय कर्तव्यों के पालन में दत्त चित्त होना उनका औचित्य होजाताहै।

इसके अतिरिक्त जिन लोगोंकी आमदनी अपनी आवश्यक्ता पूर्ति के चार आदमियों के पालन पोषण योग्य पर्याप्त नहो उन को भी विवाह करना कदापि उचित नहीं है। यह बात केवल पुरुष के लिए नहीं वरन स्त्रियों के लिए भी कही जातीहै क्योंकि उद्यमद्वारा धनोपार्जन में कुशलता प्राप्त करना जैसा पुरुष का वैसाही स्त्री का अवश्य कर्तव्य है

कोर्टशिप के समय इन बातों पर ध्यान रखना स्त्री पुरुष सब को समझाया जाताहै। फिर जिन लोगों में कोई चिरस्थायी रोग हो उनको तो विवाह का नाम भी न लेना चाहिए क्योंकि उनके संयोग से चिर रोगी सन्तान पैदा होगी जोकि संसार को दूषित करने के अतिरिक्त कोई लाभ नहीं देसकती! और इस महापाप का भागी उन्हीं दम्पति को होना पड़ेगा। पादरी लोग शिक्षा

देते हैं कि कोर्टशिप के समय लड़के लड़कियों को मन में यह संकल्प न करना चाहिए कि विवाह अवश्य करेंगे वरन यह कि यदि सब भांति उपयुक्त जीवन का साथी (Partner of life) प्राप्त हो तब तो बिवाह करेंगे नहीं तो कुमार अवस्था में रहकर परमेश्वर और संसार के प्रति अपना कर्तव्य पालन करेंगे।

एक व्याख्यान में एक प्रसिद्ध समाजशिक्षक पादरी साहब के यहबचन कैसे हृदयग्राही थे ! पादरी साहब ने कहा कि "ए युवा स्त्री पुरुषो ! क्या तुमको स्मरण नहीं है कि तुम्हारे देश में बहुतेरे बालक बालिकायें ऐसे भी हैं जिनके माता पिता संसार त्याग गए और अपनी प्यारी सन्तान को जाति के भरोसे पर छोड़गए हैं ? फिर ऐसे वयप्राप्त स्त्री पुरुष भी हैं जिनको अपना संबन्धी कहने के वास्ते संसार में कोई नहीं है जो उनकी अस्वास्थ्य [बीमारी] अवस्था में औषधि और पथ्य का प्रबन्ध कर उनकी उचित सेवा करे ! क्या तुम्हारा हृदय इतना कठोर हो सकताहै कि वे बालबच्चे गलियों में कुत्तों की तरह मारे मारे फिरें और तुम देखते रहो ? फिर क्या तुम उन बूढ़े मातापिता सदृश लोगों का कराहना और बिना अन्नजल औषधि पथ्यादि के मरना देख सकोगे ? यदि नहीं तो याद रक्खो कि तुम में से बहुतेरे युवा स्त्री पुरुषों को विवाहबन्धन में पड़ने से बचना चाहिए। क्या तुम नहीं जानते कि बिवाह करने पर दम्पति एक दूसरे के आधीन होजाते हैं और परस्पर के कर्तव्यों के अतिरिक्त उन की कमाई और धन के भागी उनकी निज सन्तान होती है। बिवाहित स्त्री पुरुषों की कमाई में देश के असहाय और अनाथ व्यक्तियों के लिए अपेक्षाकृत कम भाग है। परन्तु जो लोग अबिवाहितहैं वे अपनी कमाई, अपने समय, अपने ज्ञान और अपने

शरीर का अपनी इच्छानुसार स्वतन्त्रता से अपनी जाति, धर्म और समाज की यथायोग्य सेवा में उपयोग कर सकते हैं"।

आगे चलकर एक और आवश्यक विषय पादरी साहब ने कहा जिसका सारांश यह था कि—"संसार में अनेकों प्रकार के ताप सन्ताप लगे रहते है। कभी अग्निदाह, कहीं समुद्र वा नदी में जहाज या नौकाओं का टूटना डूबना, कभी देश पर शत्रुदल का घिरआना, इत्यादि"। जैसे कि दूरदर्शी लोग ऋतु में अन्न आदि का संचय आगे के वास्ते कर लेते हैं। आनेवाली आवश्यकता की पूर्ति के उपाय पहिले से कर रखते हैं उसीतरह क्या यह आवश्यक नहीं है कि ऊपर बयानकीहुई अवस्थाओं के अकस्मात आपड़ने पर उनसे परित्राण के लिए पहिले ही से प्रबन्ध कररक्खे जावें। क्योंकि दावानल दहक उठनेपर कूप खोदना वृथाहोताहै। मानलो कि टेम्स नदी में एक नौका डूब रही है और उसपर एक असहाय स्त्री सहायताके लिए चिल्लातीहै। तूफान उठरहाहै। नदी में कूदना खतरे से खाली नहीं। ऐसी अवस्था में किनारेपर जातेहुए आदमियों में दो एक सस्त्रीक हैं और दो एक एकाकी। तब बताओ उस असहाय स्त्री की सहायताके लिए नदीमेंकूदना किसका कर्तव्य है? तुम निःसन्देह कहोगे कि एकाकी पुरुष को कूदना चाहिए क्योंकि सस्त्रीक व्यक्ति यदि साहस करे तो उस का ऐसा करना इसलिए अनुचितहै कि एक की रक्षा के लिए जाकर दूसरे अपने आश्रित [स्त्री] को दुखमें डालनाहै। तब क्या यह आवश्यक नहीं हुआ कि देश के युवकों में से कुछ उच्च मानस व्यक्ति अवश्य अविवाहित रहें। फिर युद्धादि में घायल योद्धाओं की सेवा सुश्रूषा और अनाथ बालक बालिकाओं का लालन पालन और शिक्षा दीक्षा अविवाहिता युवतियों का निज कर्तव्य

है क्योंकि विवाह करने पीछे उनको अपने पति की चिन्ता करना धर्म होजाता है"।

"युवती कन्याएं अविवाहित अवस्थामें अपनेआप डाकटरी, चित्रकारी, लेखकी, दूकानदारी, इत्यादि द्वारा उत्तम रीति से प्रचुर धनोपार्जन करसकती हैं परन्तु विवाह करने पश्चात उनको स्वतन्त्र उद्यम करना कठिन होजाताहै बल्कि उचित भी नहीं है उस दशा में उसको अपने पति पर निर्भर करना पड़ताहै अतः उपार्जन में कुछ कमी अवश्यही हुई। सो युवतियोंको विवाह करने के प्रथम इस बात की भली भांति छानबीन कर लेना चाहिए कि जिन्हें वे वरण करना चाहती हैं वे भलीभांति धनोपार्जन में समर्थ हैं वा नहीं। युवा स्त्री पुरुष का यह आवश्यक धर्म है कि विवाह के पहिले इस बात को भलीभांति जान लेवें कि दोनों में से कोई किसी पर भावी दम्पति जीवन में भार तो न डालेगा अर्थात किसी को किसी प्रकार अर्थ संकीर्णता आदि के क्लेश तो न पड़ेंगे? इत्यादि"।

उपरोक्त बातों को पाठक ध्यान पूर्वक विचारें। संसारयात्रा के लिए कैसी सुन्दर शिक्षा है सो कहनेकी आवश्यकता नहीं।

Engagement.

जैसे हमारे देश में विवाह के लिए यह बातें देखी जाती हैं कि—कुलं च शीलं च सनाथ धर्मं, विद्या च वित्तं च वपुर्वयश्च। इत्यादि।

कुल, शील, परिवार, धर्म, विद्या, धन, शरीर, आयु, की समानता आदि वैसेही इंगलिस्तान में भी कुल, शील और गोत्र, प्रवर आदि का विचार रक्खा जाताहै। किसी लार्ड का पुत्र एक कलाल की कन्या से कदापि सम्बन्ध नहीं कर सकता। ऐसेही सब बातों में समझ लेना चाहिए।

युवक स्त्री पुरुषों को समाजशिक्षक पादरी लोग समझाया करते हैं कि विवाह काज में केवल अपनाही स्वार्थ न देखना चाहिए बरन इस बात पर भी पूरा पूरा ध्यान देना आवश्यक है कि ऐसे सम्बंध को कुटुम्ब, परिवार, जाति, बान्धव और समाज पर क्या प्रभाव होगा। यदि किसी प्रकार की सामाजिक हानि संभव जान पड़े तो ऐसी अवस्था में अपने ऊपर कष्ट सहन करके भी सामाजिक हानि को मार्जना करना उचितहै क्योंकि विवाह जैसे शुभकार्य का प्रभाव वा परिणाम जाति के लिए भी वैसाही शुभ और मांगलि होना चाहिए जैसा कि अपने लिए हो। जब कि वर कन्या दोनों ने भलीभांति निश्चय कर लिया और दोनों की प्रीति समान हुई तब सम्बन्ध को प्रगट कर दिया जाता है। जिसको ईंगेजमेंट (Engagement) लगन कहते हैं लगनसम्बाद दोनों ओर के परिचय सहित प्रायः समाचारपत्रों में छपा दिया करते हैं।

लगन के सम्बन्ध में पादरी लोग शिक्षा देतहैं कि इस विषय को जीवन का एक बहुतबड़ा परिवर्तनकारी काम समझना चाहिए इसलिए इसको साधारण मनबहलाव या चित्त की प्रसन्नता ही न मानकर बड़े गौरव के साथ इसमें प्रवृत्त होना उचितहै।

चित्त की उत्तेजना वा आवेग से अथवा किसी प्रकार का स्वार्थ, दान दहेज वा सौन्दर्य आदि वाहय आकर्षणों से खिच कर लगन में प्रवृत्त न होना चाहिए बरन शुद्ध मानस से सब तरह की ऊंच नीच विचारकर परमेश्वर की सहायता की याचना कर के अपने पक्के विश्वास और न्याय से काम करना योग्यहै।

विवाहकाज सम्बन्ध में इंगलिस्तान और हिन्दुस्तान के मध्य रीति रस्मों में बड़ा भारी अन्तर यही है कि वहां पर विवाहयुवकों

का अपना कर्तव्य है और यहां पर वह केवल बालक बालिकाओं के मातापिताओं का चित्त विनोदक खेल मात्र समझा जाता है। इसी से इस सम्बन्ध में इंगलिस्तान की सामाजिक शिक्षा की बातें हमारे यहां भलीभांति समझ में नहीं आतीं! और न लोग उनपर मनोयोगपूर्वक ध्यान देतेहैं! यथा—कोर्टशिप (अन्वेषण) और एंगेजमेंट (लगन) के नियम हिन्दुस्तान में अंगरेज समाज के मध्य में हमारे बहुधा हिन्दुस्तानी सभ्य देखते और जानते हैं परन्तु उन पवित्र नियमों को हिन्दुस्तानी मस्तिष्क ने अबतक भलीभांति नहीं जान पायाहै! नहीं तो कोर्टशिप जैसे उद्देश्यपूर्ण पवित्र कार्य्य को कभी हंसी में उड़ा सकते?

अंगरेज लोग कोर्टशिप के समय को जीवन का स्वर्णोपम समय (Golden period of life) कहतेहैं। है भी ऐसाही। पवित्र प्रणय के प्रणयीजन एकत्रित होकर परस्पर हृदय खोलकर प्रेमालाप करते हैं उसमें जो आनन्द प्राप्त होताहै सांसारिक व्यवस्था में क्या उससे बढ़कर कोई और भी सुख होसकताहै? यह बात सहृदय पाठक स्वयम् विचार लेवें। परन्तु बात यह है कि जैसे अन्य सब कार्य्य स्वार्थपरता के मेल से सत्यानाश हो जाते हैं उसी भांति कोर्टशिप और एंगेजमेंट में यदि स्वार्थ की कुछ भी झलक हुई तो परिणाम अनर्थकारी होताहै।

याद रखना चाहिए कि यह संसार खेल कूद की चौगान और आमोद प्रमोद की नाटकशाला नहीं है और न यह सूद व मुनाफा कमाने की हाटही है जहां मनुष्य केवल मनबहलाव और अर्थसाधनमें लिप्तहोकर सम्पूर्ण कृतकार्य्यता प्राप्त कर सकेगा! हम तो यही कहेंगे कि—वास्तव में संसार एक युद्धक्षेत्र है जहां पर मनुष्य मात्रके वैरी काम, क्रोध, मोह, लोभादि दलपति

अपने अपने नाना रूप सहचर सैनिकों के साथ अपनी घात में लगे रहते हैं और उनको शिथिल पाकर तत्काल उनका नाशकर डालतेहैं । यही तो कारणहै कि संसार में जातियों के पतनोत्थान सदा देखने सुननेमें आते हैं । जातियों के पतनोत्थान की चरचा तो हमें इतिहास ग्रन्थों में मिलती है परन्तु व्यक्तिगत बढ़ावघटाव हम नित्य अपनी आंखों के सामनेही देखा करते हैं !

हा ! हमारे देखते ही देखते कितने ही बड़े बड़े बने बनाए घर मटियामेट होगए ! लाखों दिवाले नित्य निकला करते हैं सो कौन नहीं जानता ? कारण ! क्या खोजने जाना पड़ेगा ? कुछ नहीं केवल उन व्यक्तियों ने संसार को एक नाटकशाला और हाट समझकर अपने जीवन को वैसेही चरितार्थ किया जैसे कोई नाचघरों और बाजार में बर्तताहै । बस कामादि शत्रुओं को उन के परास्त करनेका अवसर मिला और शोक ! कि उनका सत्या-नाश ही करके छोड़ा !!!

ऐसीही बातों का ध्यान कोर्टशिप के समय में भी अत्यन्त आवश्यक है । निःसन्देह यह विषय परम पवित्र और जीवन को पवित्र करनेवाला और महान् उद्देश्य पूर्ण है यदि संसार की वास्तविक स्थिति को भली भांति समझ कर प्रवृत्ति कीजावे । यह भी स्मरण रहे कि तलवार की शोभा वीर पुरुष के ही हाथ में है। बन्दर के हाथमें पड़कर तो वह उस अज्ञान का नाशही करेगी !!!

जीवन के इस स्वर्णोपम समय में अर्थात् कोर्टशिप के सम्मि लन में अंगरेज समाज की निम्नलिखित कतिपय शिक्षायें भी ध्यान में रखने योग्य है :—

लग्न में स्थित युवक युवतियों को एक दूसरे के सम्बन्ध में चाहे जिस विषय का अन्वेषण व करते हों सर्वदाही उन बातों

को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए जिनपर मोहित होकर वा जिनके कारण से सर्वप्रथम लग्न स्वीकार किया था।

एक दूसरे के बड़प्पन की अवहेलना किसी अवस्था में कभी न करें।

कोर्टशिप के स्वर्णोपम समय को व्यर्थकी बातों और साधारण गपशपमें व्यतीत न करना चाहिए बरन इस पवित्रअवसर को ऐसा बनाना उचित है कि जीवनभर के लिए वह समय आनन्द दायक स्मारक होजाय अर्थात् दोनों (भावी स्त्री पुरुष) को चाहिए कि अपने विवाहित जीवन में अपनी और संसार की भलाई के किसी कार्य्य का कोई पक्का अनुष्ठान करें और उसमें कृतकार्य्यता के लिए सदा सचेष्ट रहें। क्योंकि ऐसे प्रेममय समय का किया हुआ अनुष्ठान क्या कभी बिस्मृत होसकता है? अथवा छिद्रान्वेषण से सदा अलग रहना चाहिए।

यह आवश्यक नहीं है कि कोर्टशिप के अवसर में एक दूसरे से मिलना बारम्बार हो बरन जब जब मिलना भेंटना होसके तब तब बार्तालाप के लिए सदा नवीन नवीन विषय चुनने चाहिए इनमें सांसारिक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक सभीप्रकार के विषय बिशेषतः जिसमें दोनों की अधिक रुचि हो, होना चाहिए। पत्रव्योहार में भी इस बात का ध्यान रहे कि उसमें कोई न कोई विषय ऐसा अवश्य लिखाजाय जो उनका परस्पर रुचिकर और लाभदायक भी हो। व्यर्थ पुनरुक्तियों से भरे पत्र कभी कभी अरुचि उत्पन्न करा देते हैं।

प्रीति को दिन दिन बढ़ाते रहना चाहिए प्रीति रूपी नवल अंकुरको यदि प्रेमजलसे समयसमय पर सींचतेनरहें तो निःसन्देह वह वैसेही मुरझा जायगा जैसे नया कल्ला बिना पानी के!

यदि वर को कन्या की ओर से उतनी प्रीति फेर नहीं मिलती जितनी पाने की उसने आशा की थी तो इसकी शिकायत नहीं करना चाहिए वरन आवश्यकहै कि अपने प्रीति की मात्रा को अधिक तीव्र कर देवे और इस भांति अपनी प्रिया की प्रीति सम्पादन करे । अप्रीति और कटुवाक्यों का कभी प्रयोग न करना चाहिए । परस्पर ऐसे वर्ताव करना चाहिए जिससे प्रीति और प्रेम की दिनदिन उन्नति होतेहुए वह इतनी दृढ़ होजावे कि वह दोनों की टेव सी बनकर जीवनभर का भी परिवर्तन न हो ।

विवाह ।

अंगरेजों में बिवाह की रीति बहुत साधारण है और हमारे देश के प्रायः सभी लोग जानते हैं । जो लोग न जानते हों वे यदि अपने धर्म के कारण किसी अंगरेज मित्र के ब्याह की दावत में न भी जासकते हों तो भी गिरजे में जाकर रीति रस्मों को तो देख सकते हैं । अतः इसके विषय अधिक लिखना आवश्यक नहीं है ।

जैसे हमारे यहां विवाह के अवसर पर प्रायः गालियां गाई जाती हैं वैसे अंगरेजों में नवीन दम्पति के ऊपर पुराने जूते फेंकने की रस्महै । और वे लोग कुछ सगुन असगुन का भी विचार करते हैं यथा विवाह के लिए शुक्रवार का दिन और महीने की तेरहवीं तारीख निषिद्ध समझते हैं । कुत्तों का अधिक भूंकना और कौओं का चिल्लाना असगुन समझा जाताहै । खाने की मेज पर छूरियों का एक दूसरी के ऊपर तिरछी पड़ना भी असगुनहै ।

विवाह वेदी से चलते समय नवीन दम्पति पर फूल और तन्दुल की वर्षा करने का रिवाजहै । यह चाल हमारे देश में भी आशीर्वाद की रीति पर प्रचलित है । दहेज की प्रथा अंगरेजों

में वैसी नहीं है जैसी कि हिन्दुस्तान में, परन्तु नवीन दम्पति को बन्धु, बान्धवों और मित्रों की ओर से उपहारादि की भांति बहुत सामान भेंट किया जाता है।

बिवाह की ज्योनारें भी बड़ी बड़ी होती हैं।

गृहस्थ जीवन।

हमारे देश में संयुक्त परिवार की प्रथाहै अर्थात माता-पिता. भाई-भौजाई, देवरानी-जेठानी, आदि आदि सब एकही घर में एक परिवार की भांति रहते हैं। जिनका व्यवसाय नौकरी, दुकानदारी वा शिल्पकारी है वे तो चाहे एक घर के रहनेवाले दो चार भाई आदि अलग अलग काम काज करते भी हों परन्तु जो भूम्याधिकारी, तअल्लुकेदार वा जमींदार हैं उनको तो मानो परमेश्वर ने संसार में कुछ काम करने के लिए बनाया ही नहींहै चाहे घर में आठ दस भाई और चचा भतीजे आदि कितनेही क्यों न हों सबके सबही एक मात्र उसी पैतृक भूमि की उपज पर निर्भर करके अपने समस्त जीवन को निरर्थक व्यतीत करडालते हैं यहांतक कि छोटे छोटे जमींदारों में तो ज्यों ज्यों सन्तान बढ़तीहै त्यों त्यों बटवारों के कारण उनकी जमींदारी छीजतेछीजते अन्त में उन बेचारों को बड़ी ही तबाही में डालती है !!! यह सब संयुक्त परिवार का फलहै।

अंगरेजों में यह प्रथा बिलकुल नहीं है। लड़का पिता के घर तभीतक रहसकताहै जबतक कि वह बिवाह नहीं करता अथवा स्वयम् धन उपार्जन की सामर्थ्य नहींरखता। भाई भाई एकसाथ कभी नहीं रहते। सब अपना अपना व्यवसाय, उपार्जन और अपना अपना घर अलग अलग रखते हैं। इसी कारण प्रत्येक व्यक्ति को अपने लिए उपार्जन करने की चिन्ता स्वयम् करनी

पड़तीहै और कोई किसी दूसरे पर जीवन निर्वाह के लिए निर्भर नहीं करता और परस्पर स्नेह का भी यही मुख्य कारणहै।

बिवाह होने के उपरान्त शुभदर्शन (Honey Moon) आदि के पश्चात् दम्पति को अपने गृहप्रबन्ध की चिन्ता होतीहै। पति अपना सम्पूर्ण धन-सम्पत्ति और आय-व्यय आदि स्त्री को समझा देताहै। पत्नी उसके यथायोग्य प्रबन्ध और व्यय की सूची तैयार करती है और परस्पर परामर्श पूर्वक सब काम यथा उचित चलाती है।

साधारण लोगों की कहावतहै कि अंगरेज बिवाहिता स्त्रियां धन के व्यय में प्रायः संकीर्णहृदया होती हैं। परन्तु यह बात वास्तव में संकीर्णता की नहीं किन्तु उत्तम प्रबन्ध की है। स्त्रियों का कथनहै कि बिवाह करने के प्रथम हम स्वयम् जो कुछ स्वतंत्र उपार्जन करतीं वा करने की शक्ति रखती थीं उतना धन हमको अब अपने पति के गृहप्रबन्ध में अपव्यय को रोककर अवश्य बचाना चाहिए जिससे हमारे उपार्जन न करने की कमी तो पूरी होती रहे। बहुधा स्त्रियां जो अपनी अबिवाहित अवस्था में शिल्प कार्य्य वा औषधि करके उपार्जन करती रही हैं वे बिवाह करने के पीछे भी अपने शिल्प को जारी रखकर उसके द्वारा उपार्जित धन को अनाथालयों वा पाठशालाओं को दिया करती हैं और अपनी डाकटरी विद्या को दीन दरिद्री और असहाय रोगियों की औषधि आदि करके सफल करती रहती हैं।

इंगलिस्तान की मध्य श्रेणी के लोगों में बहुत कम ऐसे स्त्री पुरुष मिलेंगे जो धनोपार्जन के कुछ न कुछ उद्यम उपाय करना न जानते हों।

अंगरेज लोगों में उधार लेनदेन अच्छा नहीं समझा जाता।

व्यापार व्यवसाय आदि के सम्बन्ध में यह बात अवश्यही प्रचलित है और सैकड़ां हुंडीवाली दूकानें (Banks) चलती हैं परन्तु साधारणतः केवल उपार्जन के अभावमें अथवा वेष, भूषण, फेशन के लिए जो कोई उधार लेनदेन करते हैं उनकी समाज में निन्दा ही होती है।

अंगरेज समाज अपने धर्म के साधन पांच बातों को समझते हैं यथा—सचाई (Truth), ईमानदारी (Honesty), सफाई (Purity), मेहनत (Industry) और रहमदिली (Kindness) और उपासना का अर्थ महापुरुष कारलाइल के शब्दों में to labour is to pray परिश्रम करनाही उपासना है बतलाते हैं। कतिपय बड़े आदमियों से उपासना के सम्बन्ध में मैंने यह भी सुनाहै कि संसार में रहते समय संसार की पूजा [Worship of Earth] और उस को छोड़जाने के पीछे स्वर्ग या स्वर्गस्वामी की पूजा [Worship of Heaven] विधेय है। यह वाक्य भी हम लोगों को अवश्य ध्यान देने योग्य है।

अंगरेज लोग सब विषयों में स्वतन्त्रता को बहुत श्रेष्ट समझते हैं। यहां तक कि जैसे पुरुषों के अनेकों मित्र (पुरुष और स्त्री दोनों) होते हैं वैसेही स्त्रियों के भी निज मित्र (पुरुष और स्त्री) होते हैं। स्त्रियों के अविवाहित अवस्था के मित्र-ऐसे भी लोग जिनसे कभी विवाह के लिए कोर्टशिप आदि का भी संबंध रहा हो बिवाहित अवस्था में भी बराबर मित्रता स्थिर रखते हैं। उनका कथन है कि चाहे किसी कारण विशेष से बिवाह न हुआ परन्तु जिन कारणों से मित्रता स्थिर हुई थी उनके मौजूद रहते मित्रता भी बराबर बनी रहनी चाहिए। एक पादरी साहब का

उपदेश हमने यह सुना है कि—

Better love and live apart if you cannot agree, than marry and live together and wrangle ever afterwords.

अलग रहकर प्रीति को स्थिर रखना उत्तम है इसकी अपेक्षा कि संयुक्त [विवाहित] होकर जीवनभर विवाद करते रहो।

सिद्धान्त कैसा सुन्दर और पवित्र है। परन्तु वही स्वार्थ-परता की गन्ध जबकभी इसमें घुस जाती है तब यही प्रीतिमानता बड़े बड़े अनर्थों का हेतु होजाती है। हमारे देश में तो यह शिक्षायें अभी समझ में भी नहीं आतीं, वर्ताव में आने की तो बातही क्या?

गृहस्थजीवन में सुख और आनन्द की स्थिरता के लिए अंगरेज समाज की यह शिक्षायें हैं। यथा:—

घर में आनन्द स्थिर तभी रहेगा जब स्त्री पुरुष दोनों का प्रेम बराबर बना रहे।

जिन कारणों से प्रथमहीप्रथम प्रेम का संचार हुआ था उन्हें सदा ध्यान में रखना चाहिए।

संसार के सब सुखों का आधार प्रेम पर है अतः गृहस्थी का सुख भी स्त्री पुरुष के प्रेम पर निर्भर करता है।

प्रेम।

निःछल और निःस्वार्थ प्रेम ऐसा पदार्थ है कि संसार भर की सम्पूर्ण सम्पत्ति, वसुधा मात्र, उसके आगे कुछ वस्तु नहीं है. उसपर बड़े शक्तिशाली सम्राट का भी कोई वश वा अधिकार नहीं होता, वाग्जाल से उसको धोखा नहीं दिया जासकता और बड़े से बड़े विचक्षण कार्य्यालय में भी प्रेम गढ़कर बनाया नहीं जासकता।

परस्पर छिद्रदर्शन की चेष्टा कदापि न करना चाहिए

क्योंकि यही अनबनाव की जड़ है।

परस्पर एक दूसरे की बात काटना भी कदापि उचित नहीं है चाहे बात किसी की भी सत्य वा असत्य हो। ऐसी अवस्था में बात का टाल देना ही सर्वथा योग्य है।

प्राय: देखने में आताहै कि किसी काम के बिगड़ जाने पर उसके उत्तरदाता व्यक्तियों में दोष को अपने जिम्मे लेने को कोई भी प्रस्तुत नहीं होता दोष चाहे अकेले किसी का ही क्यों न हो! इसी तरह एक दूसरे को दोषी कहकहकर बिगड़हुए कार्य के अतिरिक्त परस्पर द्वेषभाव का एक दूसरा बड़ा झगड़ा खड़ा कर लिया करते हैं।

संसार में वैर विरोध की बढ़ती का बहुत बड़ा कारण यहीहै सो परिवारों में स्त्री पुरुषों के लिए भी योग्यहै कि किसी कार्य के बिगड़ने पर परस्पर एक दूसरे को दोषी ठहराने की कदापि चेष्टा न करें बरन दोष को अपने ऊपर लेलेने की सरलता प्रदर्शित करें। ऐसा करने से विषमता अनायासही दूर होजायगी।

सन्तपाल की इस शिक्षा पर सदा ध्यान रखना चाहिए कि- (Let not the sun go down upon your wrath) परस्पर अनबनाव रहतेहुए सूर्य्य को कभी अस्त न होने दो। अर्थात् दिनके झगड़े को सन्ध्या के पूर्वही मिटा डालो।

एक कहावत चली आती है कि कोई एक धर्म प्रचारक जान वेजली अपने एक सेवक को साथ लेकर कहीं धर्म प्रचार को गए थे वहां किसी बात पर सेवक के साथ उनका मतभेद हुआ। बहुत कुछ हुज्जत तकरार हुई। सन्ध्या को जब दोनों घर लौट आए तब जान वेजली ने सेवक से कहा कि कहो भाई क्या अब तुम मुझसे क्षमा प्रार्थना करने को प्रस्तुत हो? सेवक ने तुरन्त

उत्तर दिया कि नहीं महाशय ! कदापि नहीं, मेरा अपराध ही क्या था ? सत्य बात तो मेरी ही थी फिर मैं क्षमा क्यों मांगूं ? इसपर वेजली महाशय ने कहा कि अच्छा भाई तो तुम सच्चे हो अपराध मेरा ही था क्योंकि दो में एक का अपराध तो अवश्यही था, अतः मैं तुमसे क्षमा प्रार्थना करता हूं कृपा पूर्वक मेरे अपराध को क्षमा करो यह सुनकर तो सेवक अवाक् रहगया और बड़े विनीत भाव से प्रभु की बन्दना करने लगा। बखेड़ा इस भांति शान्त होगया और दोनों प्रभु और सेवक शान्तिपूर्वक शयन करने को गए। इसीभांति हमको उचितहै कि पारिवारिक बखेड़ों को भी शान्तिपूर्वक मिटाडालाकरें।

एक दूसरे के सुख और आनन्द की फिकर अपनेसे अधिक रखना उचित है। यदि पुरुष स्त्री के सुख सम्पादन की चिन्ता रक्खेगा तो स्त्री अपनी आवश्यकता से अधिक पुरुष के सुखचैन की चिन्ता अवश्यही रक्खेगी। यह नियम जैसे परिवार के लिए उसी भांति जाति और देशमात्र के लिए भी समझना चाहिए।

स्त्री को उचित है कि पुरुष की रुचि के अनुकूल कामों में अपना चित लगावे और उसके कर्तव्यकर्मों की जानकारी प्राप्त करने की सदा चेष्टा करे। इसी तरह पुरुष को भी उचित है कि स्त्री के प्रीति सम्पादन का सदा ध्यान रक्खे और घर के काम काज विषय में स्त्री की सम्पूर्ण बातों और परामर्शों पर सम्यग् ध्यान दे। गीत और वाद्य विषय में भी यथासंभव स्त्री पुरुष को अपनी रुचि एकसां करना उचित है। एक दूसरे के मित्रों से मेल और सद्भाव रखना, एक दूसरे के कर्तव्य कार्य्यों में मन लगाना और एक दूसरे के प्रिय पदार्थों आदि का प्यार करना परस्पर की प्रीति स्थिर रखने के उत्तम उपाय हैं।

अवकाश के समय में कथोपकथन के लिए सामयिक विषयों को विचार कर निश्चित कर रखना चाहिए जिससे बातचीतका समय अच्छी भांतिसे व्यतीत हो और बिना निर्धारण के अनर्गल बातों में समय का नाश न होने पावे।

तोषामोद (खुशामद) से बचना चाहिए। संभव है कि प्रेम की अधिकता में इस बात की ओर मन का झुकाव होजावे परन्तु यह वानि सदा हानिकारक है। सत्यता, निष्कपटता और सरलता को प्रतिक्षण ध्यान में रखना उचित है।

अंगरेज समाज के गार्हस्थ्य नियम बहुत सरल और स्वतन्त्र हैं अतः सब प्रकार से बर्ताव में लाए जाते हैं। निःसन्देह नियमों का अतिक्रम भी होताही है परन्तु अधिकांश नियमों का पालन सर्वसाधारण करते और सब स्वच्छन्दता पूर्वक आनन्द जीवन निर्वाह करते हैं।

प्राचीन नियम हमारे भी निःसन्देह ऐसेही हैं वा हमतो यही कहेंगे कि यह नियम हमारी ही नकल हैं परन्तु आज हमने जैसे अपने आलस्यबश सब कुछ खो दियाहै वैसेही गृहाश्रम धर्म को भी भूल गए हैं। सो अबतो हमें सब भांति अपने राजाधिराज का अनुकरण करनाही श्रेष्ठ जान पड़ताहै। हमारे लोग कह सकते हैं कि नकल करने में अपना जातित्व नाश होताहै। बात वास्तव में सत्य है। परन्तु सच पूछिए तो साम्प्रतिक सभ्यता केवल हमारी भूलीहुई प्राचीन सभ्यता मात्रही है यह किसी अन्य के घर की नकल कदापि नहीं है। संसार में अधिकांश व्याप्त सभ्यता का अनुकरणकरना नकल कदापि नहीं कहीजासकती।

स्वास्थ्य और सौन्दर्य्य Health and Beauty.

सौन्दर्य्य के विषय में संसारभर की सभी जातियों और

देशों की रुचि भिन्न भिन्न देखने में आती है। रुचि के अनुरूपही वेष भूषण भी कल्पित हुए हैं अतः एक दूसरे देश वा जातिवालों से सर्वथा विभिन्न ही पाए जाते हैं।

अंगरेजों के वेष भूषण और शृंगार से सौन्दर्य्य का जितना सम्बन्ध है उसको हम यहां पर नहीं लेंगे क्योंकि वह कृत्रिम और रुचि के अनुसार होने के अतिरिक्त हमारे देश में भलीभांति परिचित भी है। अतः स्वाभाविक वा शारीरिक सौन्दर्य के विषय में ही हम कुछ कहना चाहते हैं।

सौन्दर्य्य की मूल आरोग्यता को जैसा हम मानते हैं वैसाही अंगरेज भी स्वीकार करते हैं। तब अन्तर इतनाही है कि वे शारीरिक स्वास्थयरक्षा की पूरीपूरी चेष्टा सदा किया करते हैं किन्तु हम अपने वैराग्य के कारण देह की सुधिबुधि को भी बिसारकर विदेह बनने की चेष्टा करते करते परमेश्वर की दीहुई स्वास्थ्य और सौन्दर्य्य को भी खो बैठते हैं। स्वास्थय पर जैसा जल और वायु का प्रभाव होता है वैसाही खान पान और रहन मिलन आदि की नित्यचर्य्याओं के प्रकार का भी होता है। अंगरेज इस बात को बहुत अच्छी तरह से जानते हैं। और उन्होंने अपने नित्य के व्योहारों को स्वास्थ्य के नियमों के अनुसार ही निर्धारित किए हैं।

भोजन के विषय में एक कहावत है—

The wise do eat to live, Fools and gourmands live to eat. अर्थात बुद्धिमान लोग भोजन जीवन धारण करने के लिए करते हैं परन्तु निर्बुद्धि और पेटू लोग भोजन करने के लिए जीवित रहते हैं। तात्पर्य्य यह है कि बुद्धिमान लोग ऋतु, समय और पदार्थों के दोष गुण आदि की भलीभांति विवेचना करके भोजन का यथा

सब विधान करते हैं जिसमें स्वास्थ्य अच्छी रहकर बुद्धि और बल की वृद्धि होती रहे और उससे मानसिक और शारीरिक परिश्रम करके संसार को लाभ पहुंचाते रहें। परन्तु पेटू लोग अपने जीवन का उद्देश्य भोजन मात्र समझ कर उसी के आयोजन में निरन्तर लगे रहते और अपने स्वाद और इच्छापूर्ति के लिए अन्य जीवों का वृथा नाश और हानि करते रहते हैं।

यह मसल हमारे देशमें भी यथावत् चरितार्थ होती है। हमारे भोजनभट्ट भी ऐसाही करते हैं। बिचारे नन्हें नन्हें पशु पक्षी कीट पतंगादि न जाने कितने उनके विवरमंडल में प्रविष्ट होते रहतेहैं। खाने सोने आदि के भिन्न उनके जीवन का अन्य कोई उद्देश्यही देखने में नहीं आता। क्या कोई बतासकताहै कि हमारे गयावाल पंडे तथा अन्यान्य तीर्थादि के संडों के जीवनका क्या उद्देश्यहै? यही दशा बड़ी बड़ी जागीरोंवाले मन्दिरों के महन्तों की है! भगवान कभी हमारे देश के अगुआ लोगों का ध्यान इन भोजन भट्टों के जीवन परिवर्तन करने की ओर भी दिलाते!

अंगरेज लोग संसार को Work-a-day world नित्य परिश्रम करने का कार्य्यालय बतलाते हैं जो कोई यहां एक दिन भी काम करने के अयोग्य होता है उसकी उस दिन की मजूरी अवश्य काट लीजाती है।

भाई! हिन्दुस्तानी लोगो बस निश्चय यही कारण है जिससे कि हमारे देशभर की मजूरी का बिलकुल अपहरण होगया। और हम आप एक दूसरे का मुंह ताकते हुए अपना कोई कर्तव्य कर्मही निश्चय नहीं कर सकते!

अंगरेज समाज में भोजन के समय की बड़ी सावधानी की जाती है। दिनरात में चार पांच वेर भोजन पान करते हैं और

नियत समय पर ही भोजन करते हैं कभी अबेर सबेर नहीं होने देते। उनका कथन है कि हम भोजन की मेज पर इसलिए नहीं जाते कि हमें क्षुधा लगी है वरन इसलिए कि भोजन की घंटी हो गई हमें वहां जाना अवश्यहै। उनके यहां यह भी कहावत है कि बालकों को भोजन इसलिए आवश्यक है कि उनके शरीर की बृद्धि यथावत हो अतः अस्थि, मंजा आदि की बनावट में जो जो पदार्थ उपयोगी हों उन्हीं का सम्मेलन बालभोग में करना उचित है। और युवा लोगों को भोजन कर्मण्य जीवन धारण करने के लिए आवश्यक है। सो उनके लिए बलकारी और आलस्य को दूर करनेवाले पदार्थ होने चाहिए।

भोज्य पदार्थों के विधान में अंगरेज लोगों का ध्यान इस ओर बहुत ही विशेषता से होताहै कि शरीर में बल और शक्ति के जो जो पदार्थ यथा रक्त, शुक्र, मंजा, आदि हैं और नित्य के परिश्रमादि से जिनकी किंचित परिहाणि होती रहती है उन की बृद्धि वा पूर्ति करने में जो जो वस्तुएं उपकारी हों उन्हीं का बर्ताव भली भांति किया जावे।

यथाऋतु फलों का व्योहार अंगरेजों में बहुत प्रचालित है खाने के उपरान्त फलस्वादन अवश्य करते हैं और हरित शाक भी लवण वा भूने मास के साथ खाते हैं। अंडा अंगरेज लोगों में निरामिष भोजन समझा जाता है इसके मेल के विना तो कदाचित इनके घर का कोई भी व्यंजन न होता होगा। यह लोग समझते हैं कि शरीर के आवश्यकीय प्रायः सभी अण्वादि इसमें होते हैं। कोई कोई कहते हैं कि दूध या माखन अंडे का स्थानापन्न हो सकताहै और शकर मांस की एवजी कर सकता है।

स्वास्थ्य और सौन्दर्य्य का सम्बन्ध भोज्य पदार्थ के साथ

निःसन्देह बहुत ही अधिक है। परन्तु अंगरेज साधारण में हमें तो इतने पर भी रूप की लावण्यता न दीख पड़ी! अवश्यही यह मेरा दृष्टिदोष होगा।

चाहे मांसभोजी होने से हो अथवा अन्य कोई कारण से बहुधा अंगरेजों के दांत खराब होजाते हैं। शायद यह बात सच होगी कि परमेश्वर ने मनुष्यों के दांत मांस भोजन करने योग्य नहीं बनाए हैं सो जो लोग मांस खाते हैं उनके दांत स्वभावतः बिगड़ जाते हैं। और मद्य सेवन के कारण उनके नेत्रों का लावण्य भी रक्तिमा वा लाल डोरों से बिलकुल बिलीन होजाता है। न जाने क्यों अंगरेजों की जिह्वा भी ऐसीही कठोर होती है कि तीस चालीस बर्ष तक हिन्दुस्तान में रहकर गए हुए लोगों की भी हिन्दी बोलचाल तनिक शुद्ध नहीं होती! अन्यभाषा का उच्चारण उनसे यथावत् बनही नहीं पड़ता। मुझको कतिपय संस्कृतज्ञ विद्वान अंगरेजों से भी आलाप का अवसर हुआ शब्दों के उच्चारण विषय में उन्होंने स्वयम् कहा कि अंगरेज लोगों की जबान बड़ी कठोर होती है वे अन्य भाषाओं के शब्दों का उच्चारण स्पष्टतया नहीं कर सकते!

सौन्दर्य्य के लिए अंगरेजों में सुन्दर स्नान प्रचलित है साधारणतः उसके प्रकार यह हैं—

मौसमी पारा में जितने दरजे की उष्णता अपने को सुखकर हो स्नान के जल को भी उतनाही गरम रखते हैं।

जल को सन्ध्या समय बासन में रखकर उसमें दो मुट्ठी समुद्री लवण डाल देते हैं। प्रातःकाल स्नान के समय उसमें ऋतु के अनुसार उष्णता देते हैं।

बड़ासा स्पंज लेकर उसी जल से शरीर को एक या दो मिनट

तक अच्छी तरह धोकर साबुन का इस्तेमाल करते हैं। फिर शरीर को साफ जल से जोकि उसी दरजे का उष्ण हो धोकर दो मिनट तक मोटे तावल (वस्त्र) से पोंछते हैं।

स्नान के उपरान्त एक प्याला कोका (Cocoa) का पीते हैं।

सौन्दर्य्य रक्षा के लिए नित्यचर्य्या में यह बातें आवश्यक समझी जाती हैं--

प्रातःकाल के भोजन के प्रथम दस मिनट तक इतस्ततः भ्रमण करना।

प्रातःकाल आध घंटे तक मुद्गर या हथौटियों (Dumbbells) से व्यायाम करना।

जितना अवकाश मिलसके उतनी देर बाहर की टटकी वायु का सेवन करना।

मानसिक वा शारीरिक परिश्रम अधिक से अधिक दश घंटे तक करना, विशेष नहीं।

कम से कम तीन चार घंटा नित्य मित्रों के साथ घूमने फिरने बात चीत करने वा मनबहलाव में अवश्य लगाना। इस अवसर में काम काज की चिन्ता बिलकुल परित्याग कर देना।

उपरोक्त बातें स्त्री पुरुष दोनों के लिए समान हैं।

सौन्दर्य्य निद्रा The Beauty sleep.

अधिक रात्रि बीतने के पहिलेही शयनभवन को चले जाना, शयन करने के पहिले हाथ, पैर, मुख, आदि प्रच्छालन करना, पलंग पर जाने के प्रथम आध घंटे तक उत्तमोत्तम पुस्तकों में से कुछ भाग पाठ करना, शयनगृह को सुन्दर स्वच्छ सुगंधित वायु से शुद्ध रखना, दिन के समय घंटे दो घंटे तक सवारी वा पैदल भ्रमण करने उपरान्त घर आना, ऐसीही अवस्था के शयन को

सौन्दर्य्य निद्रा कहते हैं।

अंगरेजों की एक मसल है "Six hours sleep for a man, seven for a woman and eight for a fool" छः घंटे शयन पुरुषके लिए और सात स्त्री के लिए उचित है और आठ घंटे मूर्खों के वास्ते। कहावत यह अवश्य है परन्तु अंगरेजों की परिचर्य्या में आठ घंटे शयन काही साधारण नियम देखने में आताहै।

जल्दी शयनगृह को जाना और जल्दही उठना (Early to bed and early to rise) की कहावत भी वहुत प्रसिद्धहै परन्तु साधारण वर्ताव इसके बिलकुल विपरीत देखने में आताहै। प्रायः बारह बजे रात को सोते और आठ बजे प्रातःकाल उठते हैं। यह बात अवश्यही ध्यान में रखने योग्य है कि समय जो कुछ उनका व्यतीत होताहै वह बड़ेही आमोद प्रमोद और प्रफुल्लता से बीतता है। सन्ध्या भोजन के समय से लेकर आधी रात तक का समय पारिवारिक आमोद और मित्रमंडली के साथ में बड़ीही प्रसन्नता और आह्लाद में बीतता है जोकि शरदऋतु में प्रायः मकानों में ही रहकर और वसन्त एवं ग्रीष्म में जलविहार, बनविहार एवं थियेटर आदि में लगाते हैं। इसके पश्चात शयनगृह में जाने पर फिर सौन्दर्य्य निद्रा प्राप्त करने में क्या सन्देह है?

खेल कूद Games.

सौन्दर्य्य और स्वास्थय के साथ खेल कूद का बहुत घना सम्बन्ध है। सो अंगरेजों की नित्यचर्य्या में खेल भी एक प्रधान कार्य्य समझा जाताहै। जैसे जीवन के लिए भोजन, पान, कार व्यापार और मेहनत मसक्कत की जरूरत है वैसेही आमोद प्रमोद और खेलकूद की भी आवश्यकता समझी जाती है। खेल अंगरेजों में बहुत प्रकार के प्रचलित हैं यथा क्रिकेट, हाकी, फुट

बाल, सवारी, कर्तब आदि पुरुषमें एवं लानटेनिस, क्रिकेट गुल्फ इत्यादि स्त्रियों में परन्तु अधिकत: प्राय: सभी खेलों में पुरुष और स्त्रियां साथ साथ ही सम्मिलित होते हैं ।

एक दिन मैं एक परिवार के कई मित्रों के साथ नदी में सैर के लिए गया था । धारा में सैर करतेहुए कई और किश्तियां हम लोगों के साथ साथ हो ली थीं । दूसरी किश्ती के आरोहियों में एक वकील महाशय भी थे । बातचीत यही खेल कूद की चल पड़ी । मैंने अंगरेज स्त्रियों की प्रशंसा करतेहुए कहा कि वास्तव में यह बड़े गौरव की बात है कि हमारी अंगरेज बहिनें अपने भाइयों के प्राय: सभी कामों में बराबर का भाग लेती हैं । हमारे साथ की टोली में से एक बहिन ने प्रसन्नतासूचक भाव से कहा Glorious, isn't it ? गौरवान्वित ! है न ? दूसरी किश्ती पर बैठे हुए और अपने किश्तीकी डांड़ चलातेहुए वकील महाशय तुरन्त ही बोल उठे कि हां ! परन्तु मैं अपनी निज बहिन बेटी को इस प्रकार सब खेलों में बराबर सम्मिलित होते देखकर बहुत सुखी न होता । इस बातपर हमारी बहिन (जोकि हमारी किश्ती को स्वयम् चला रही थीं) ने खिन्नमना होकर पूंछा कि तब क्या महाशय आप स्त्रियों को पुरुषों के बराबर का अधिकारी नहीं समझते ? वकील साहब ने उत्तर दिया कि आप इतनाही क्यों कहती हैं मैं तो स्त्रियों को पुरुषों से कई अंशों में अधिक समझता हूं । यह सुनकर श्रीमती जी सन्तुष्ट हुईं और उनके मुख पर प्रसन्नतासूचक मुसकराहट झलकने लगी । इतने में एक अन्य पुरुष जो दूसरी नौका पर सवार थे वकील साहब की बात से मानो मिलाकर कहने लगे जैसे कि शिशुपालन इत्यादि में इसपर वकील महाशय ने आगे अपनी बहस चलाई कि "श्रीमती जी !

यदि आप न्याय करें तो दोनों का मिलान करने के वास्ते एक रणपोत और गिरजाघर की अपेक्षा अधिक उपयुक्त उदाहरण कदाचित न मिल सकेगा। क्या इन दोनों की समानता और समान उपयोगिता में किसी को इनकार हो सकता है? ऐसा होने पर भी क्या उन दोनों के कामों में कभी समता हो सकती है? निःसन्देह संसार में शक्तिमत्ता और समरप्रबलता की बड़ी ही आवश्यकता है कि इसके बिना जातीय जीवन का नाम तक भी स्थिर नहीं रहसकता। तो फिर क्या इससे यह परिणाम निकाला जासकता है कि गिरजाघरों की संसार में आवश्यकता ही नहीं है? अथवा युद्ध की अपेक्षा शान्ति का दरजा किसीभांति कम कहा जासकता है? कदापि नहीं। बल्कि शान्ति का दरजा कई अंशों में बड़ा ठहरेगा। रूसराज्यस्थापक महावीर पिटर ने भी War for peace, Peace for war युद्धही से शान्ति औरशान्तिही से युद्ध का आदेश दियाहै।

इसी प्रकार स्त्रियों का दरजा और अधिकार पुरुषों की अपेक्षा ऊंचा है सही परन्तु प्रकृति के नियमानुसार कठोर कामों का भार पुरुषों के ऊपर है और मृदुल भाग स्त्रियों का। अतः क्रिकेट और हाकी इत्यादि खेल भी स्त्रियों के निज नहीं हैं।

यह सब सुनकर मैंने कुछ हास्यपूर्वक कहा कि भाई! तुम्हारे कठोर कामों या खेलों में यदि हमारी बहिनें सम्मिलित होजाती हैं तो क्या उन खेलों में मृदुलता नहीं आजाती? और तुम्हारे अधिक आनन्द का कारण नहीं होतीं? अतएव वास्तव में यह इन बहिनों की कृपा और बड़ी दयालुता है कि हमारे कामों में योग देकर उन्हें हलका, मनोहर और मृदुल बना देती हैं। उदाहरण के लिए मैं अपने निज देश हिन्दुस्तान की बात कहूंगा जहां

पर स्त्रियां पुरुषों के साथ बिलकुलही नहीं मिलती हैं वहां पुरुषों को उनके सभी काम भारी और असह जान पड़ते हैं। परिणाम उनका आलसी होना प्रत्यक्ष है। दूसरी ओर अपने देश इंगलिस्तान को लीजिए, यहां आपके सभी कामों में स्त्रियां योग देती हैं परिणाम तुम्हारा ज्वलन्त जीवन संसार देख रहाहै। सो स्त्रियां सर्वतोभावेन श्रेष्ट और क्षमतावान हैं। इसमें क्या सन्देह ?

इस बात का चारो ओर से अनुमोदन हुआ और मुझको भी बहिन के निहोरे बहुत सराहना मिली।

—+:o:+—

हमारी वापिसी यात्रा ।

बिदायी दरबार के दो दिन पश्चात अर्थात तारीख १६ अगस्त १९०२ ई० को हमारा कंटिनजेंट हैम्प्टन कोर्ट से साउथाम्प्टनको हिन्दुस्तान लौटनेके वास्ते रेलद्वारा रवानाहुआ। यहां पर हमारा सुपरिचित हारडिंज खड़ा हमारी प्रतीक्षा कर रहा था। पहुंचतेही हम लोग अपनी अपनी पहिली अधिकृत जगहों में सवार होगए।

दूसरी रात को समुद्र में जहाजी मेला हुआ। सैकड़ों जहाज अपनी भांति भांति की ध्वजा पताकाओं और अलंकारों से सुसज्जित हुए। रात्रि में उनकी रंग बिरंगी रोशनी और उनका चमत्कारिक प्रकाश एवं समय समय पर सामरिक चालों के दृश्य परिवर्तन हम लोगोंके सामने एक अभूत पूर्व नाटक की आश्चर्य्य लीला में दिखला रहे थे। उस रात जहाजी नुमायश और जलूस देखकर दूसरे दिन के प्रातःकाल हमारा जहाज हारडिंज अपना लंगर उठा हिन्दुस्तान की ओर अभिमुख हुआ।

—+:o:+—

जिबरालटर GIBRALTAR.

इंगलिस्तान को जाते समय शीघ्रतावश हमलोग जिबरालटर, मालटा, आदि स्थानों को देख नहीं सके थे परन्तु लौटती बेर समय की कमी नहीं थी सो इन बन्दरगाहों की भी हमने अच्छी प्रकार सैर की। जिबरालटर स्पेन देश के दक्षिण ओर का एक द्वीप कल्प (प्रायद्वीप) अंगरेज़ी सरकार का एक गढ़ है। इस अन्तरीप (भूनासिका) की लम्बाई ढाई मील और चौड़ाई कहीं आध मील कहीं एक मील है। मध्यस्थिति टीला जिसको सिगनेल स्टेशन कहते हैं १२५५ फीट ऊंचा है। जिबरालटर की खाड़ी में पहुंचने पर भाव होता है मानो जहाज किसी ताल या दीघी में जारहा है। जल की निश्चलता और जहाज की निस्तब्धता से टीले का सादा दृश्य बहुतही शान्त प्रतीत होता था।

जिबरालटर की स्थिति ईस्वी चौदहवीं शताब्दी से कही जाती है और सन १७०५ ईस्वी से अंगरेजी सरकार के अधिकार में आकर यह सब देशों के लिए उन्मुक्त बन्दरगाह बना है। आबादी १८७०० अठारह हजार सात सौ की है। मुख्यतः निवासी अंगरेज़, स्पेनी, पुर्तगाली और इटालीय हैं। इनके अतिरिक्त कुछ यहूदी और मूर लोग भी बसते हैं। धर्म इन सभों का ईसाई, प्रायः रोमन कैथलिक है। आमदनी का औसत लगभग साढ़े छः लाख रुपए का है। खरचा प्रायः आमदनी से अधिक बताया जाता है। आमदनी की मदें—मकानों पर टैक्स, मालपर महसूल, मद्य और अन्य मादक पदार्थों पर महसूल तथा जहाज़ों का कारन्टाइन कर इत्यादि हैं। यहां के गवरनर का वेतन ६२५० रुपया मासिक है। यही सैनिक और दैशिक दोनों प्रकार की शक्तिसम्पन्न महाप्रभु हैं।

जिबरालटर एक सुदृढ़ गढ़ी है। इसके प्राय: सभी ओर तोपें लगीहुई हैं, बहुतेरी बुर्ज़ें बनीहुई हैं जिनपर तोपें चढ़ीहुई हैं और सब ओर से आनेवाले शत्रु पर अग्निवर्षा करने में समर्थ हैं। बुर्जों में रन्दे ऐसे काटेहुएहैं कि तोपोंपर कामकरनेवाले गोलन्दाज़ लोग ऊपर-नीचे, दायें-बायें, चाहे जिधर गोले चलातेहुए आप बिलकुल आड़ में शत्रु की मार से रक्षित रह सकते हैं। ऐसे बचाव के स्थान समुद्र की सतह से कोई साढ़े तेरह सौ फीट ऊंचे हैं।

गवर्नर बहादुर ने अपने राजा के महिमानों की बड़ी भाव भक्ति से अभ्यर्थना की थी ठौर ठौर पर जलपान, बरफ, मीठा पानी, आदि उपस्थित कर रक्खा था और दस-दस बीस-बीस आदमियोंकी पारटियों के साथ अपना एक-एक अफसर खातिर-दारी करने और दिखलाने के लिए नियुक्त कर दिया था। खाड़ी तट से ऊपर चोटी तक चढ़ने में कई घूमघुमाव के मार्ग पार करने पड़े और प्रत्येक खुले स्थान पर सैनिक दृढ़ता की योजना को देखकर हमको वास्तविक उत्तम शिक्षा प्राप्तहुई। हमारे साथवाले सत्कारी अफसर लोग प्रत्येक ठौर की सैनिक चालों को हमें भली भांति समझाते जाते थे, किस तोप पर कितने आदमियों की जरूरत होती है? उसकी कितनी मारहै? कितनी देरतक उसपर अविराम काम किया जासकताहै? कितने सैन्य की किधर आवश्यकता पड़तीहै? इत्यादि बातों को वह लोग हमको बहुत अच्छी तरह से समझाते और तोपोंको परिचालित करके भी दिखलाते थे। तात्पर्य्य हमारे सरकार की शक्तिप्रदर्शन और हम लोगों के सामरिक ज्ञानकी बृद्धि करानाथा। वास्तविक हमारेसरकार की शक्ति अपारहै। ऐसी ज्वलन्त शक्ति सम्पादन किए बिना क्या आजकल कोई जाति संसार में जीवित रह सकती है? कदापि

नहीं । संसार सचमुच कर्म स्थान ही है । यहां निष्कर्मण्य का जीवन कैसा ?

जिबरालटर की प्रसिद्ध इमारतों में सन्त माइकल की गुफा एक विचित्र स्थानहै । समुद्र से ११०० फीट ऊंचाई पर दो सौ फीट लम्बी और सत्तर फीट ऊंची कन्दरा दर्शक को चमत्कृत कर देती है । इसके प्रस्तरमय स्तम्भ और घूमघुमावदार दरे एवं उतारे की ढलाई सबही विचित्रहैं । इस गुफा से लगीहुई चार और गुफाएं हैं जिनमें से सबसे निचली गुफा कोई तीन सौ फीट की गहिराई पर है । इन गुफाओं में प्रकाश का कोई प्रबन्ध नहीं है । हम लोगों के लिए ठौर ठौर मोमबत्तियां रखदी गई थीं । अन्दर जानेका एक साधारण सा द्वार है वहांपर भीतरके विशाल स्थानों का कोई भी अनुमान नहीं होसकता । अपने हाथों में भी मोम बत्तियां लेकर जब हम लोग अन्दर गए तब गुफा का बिस्तार और बनाव कटाव देखकर आश्चर्यियत होगए । इसके भीतर पल टनें पड़ी रहसकती हैं । वायु प्रवेश के रन्ध्र ठौर ठौर पर बने हुए हैं । पत्थर से कुछ कुछ पानी भी झिरा करताहै जिससे नमी बनी रहती है । ग्रीष्मऋतु में इन गुफाओं के भीतर अच्छी ठंढक रहती है । चतुर्वेष्ठन टीलों के मध्य एक पार्श्व में राजगृह (गवर्नमेंट हौस) निर्मित है । यह भी एक अच्छी इमारत और बचाव की जगहहै सिविल हस्पताल, गिरजाघर, कचहरी, मालगुज़ारी के दफ़तर और पुस्तकालय भी दर्शनीय हैं ।

इस पुस्तकालयमें कोई पैंतालीस हजार पुस्तकें अनेक विषयों की मौजूद हैं । इसी के उत्तर-पूर्व अलग प्राचीन मूर जाति (उत्तर अफ्रीका निवासी जाति) के राजमहल का अवशेष चिन्ह खंडहर रूप में दंडायमान संसार के असारता की घोषणा कर

रहाहै ! दक्षिण की ओर एक मैदान है जोकि फौजों के लिए परेड का काम देता है और उसी के पास अलामदा नामक बागीचे हैं इनमें बादाम, नीबू, नारंगी, अनार, अंजीर, लुकाठ, आदि फलों के बृक्ष हैं।

जिबरालटर में सदा लश्करी आईन (मार्शल ला) जारी रहताह। जिसके अनुसार गवर्नर की आज्ञा प्राप्त किए बिना कोई बिदेशी एक रात भी वहां निवास नहीं कर सकता। सन्ध्या समय की तोप दगने पर नगरद्वार बन्द कर दिया जाताहै। यदि कोई बिदेशी एकदिन ठहरनाचाहे तो "टाउन मेजर" से पास लेना पड़ताहै और यदि कोई कई दिनों तक रहना चाहे तो उसे किसी नगरनिवासी की जमानत देनी पड़ती है। फौज के अफ़सरों की ज़मानत पर एक महीने तक रहने की आज्ञा मिल सकती है। किसी स्थान वा दृश्य का मानचित्र बनाना मना है। यदि कोई किसी प्रकार का नकशा बनाना चाहे तो उसको गवर्नर की बिशेष आज्ञा प्राप्त करना पड़ेगी। आईन के अनुसार सरकार को अधिकार है कि वह जब चाहे किसीके मकान और भूमि आदि पर सैनिक अधिकार प्राप्त कर लेवे। कदाचित यही कारण है कि साधारण निवासियों के मकानात बहुत सुघर और दृढ़ नहीं बने हुए हैं। और अंगरेजी रीति पर नवीन निर्माणशैली के अनुसार अपने घरों को न बनाकर लोग जहां के तहां पुराने घरों में बसते हैं। गलियां ऊंची नीची कहीं तंग कहीं चौड़ी हैं। फौजी बारिकें बहुत अच्छी बनीहुई हैं। फौज की संख्या यहां पर साढ़े छः हज़ार है।

यहां की ऋतु बहुत सुखद नहीं प्रतीत होती गरमी के दिनों में धूप कड़ी होती है और प्रायः प्रातःकाल १० बजे से सन्ध्या

पर्य्यन्त पूर्वीय झंझावात बहती रहतीहै। बर्षा शरद् ऋतु मेंहोतीहै।

दिनभर सैर करने और आदरसत्कार प्राप्त करने के पश्चात सन्ध्या समय ग्रांड परेड पर गवर्नर महाशय मेजर जनरल रेपर बहादुर की परेड हुई। उन्होंने बड़े प्रेमपूर्वक हिन्दुस्तानी कारोनेशन कंटिनजेंट का स्वागत किया और जिबरालटर में उतरने और सत्कार स्वीकार करने पर बहुत हर्ष प्रगट किया और यात्रा के लिए आशीर्वाद कहतेहुए सबको विदायी दी।

—+:0:+—

मालटा MALTA.

जिबरालटर से रवाना होकर दूसरा बंदरगाह हमको मालटा मिला। यहांपर हिन्दुस्तानी फौजें भी अकसर छावनी करने आया करतीहैं। हमारे साथ के कतिपय जन पहिले भी यहां रहचुकेथे यह टापू कोई १७ मील लम्बा और करीब दस मील चौड़ाहै। तट पर उतारेका स्थान कलकत्ते की जेटियों की भांति बनाहै। किनारे की सड़क बहुत गंदी दीखपड़तीथी प्याऊ जल-पान और मेवेफ़रोशों की दूकानें बहुतेरीहैं। ऋतु यहांकी कदाचित हिन्दुस्तान की सी होतीहै मापक यन्त्र का पारा गरमी के दिनोंमें ८० और ९० डिगरी के बीच रहताहै। यहां के निवासी अच्छे सुघर मेहनती हिन्दुस्तानी रंग रूप के होतेहैं। प्रत्येक जन एक छूरी अपने पास अवश्य रखताहै इनकी भाषा में बहुधा शब्द अरबी और इटाली के मिश्रितहैं। सम्पूर्ण मालटा छब्बीस गांवों में बिभक्तहैं इस टापू की प्रधानता जहाज़ों की आमदरफ्त, मरम्मत और कोयला आदि बस्तुओं के क्रयविक्रय के कारण बिख्यात है। और एक सुदृढ़ मध्यस्थ सैनिक स्थान (Military Station) भी है। साढ़े छः हजार पदाति फौजों के सिवाय यहांपर (Mediter-

raneau fleet) मडीटरेनियन जहाजी बेड़ा भी रहा करताहै जिसमें पांच हज़ार सैन्य युद्ध से सज्जित प्रतिक्षण तय्यार रहतीहै। आवादी यहां की डेढ़ लाख से कुछ अधिकहै। स्कूल और महाविद्यालय (युनिवर्सिटियां) भीहैं आरम्भ के चटशाल इंगलिस्तान के बोर्ड स्कूलों के नियम पर स्थापितहैं जिनमें बिना फीस के लड़के लड़कियों को शिक्षा दीजातीहै। नियमित अवस्थातक बालक बालकाओं को स्कूल भेजना आवश्यक कर्तव्यहै। यहांके साधारण पुस्तकालय में अड़तालीस हज़ार ग्रन्थ संग्रहीतहैं इमारत भी बहुत सुन्दरहै। मालटा की शासन शैली उपनिवेशीय प्रकार कीहै। फौजी अफसरही यहां का भी गवर्नर नियत होताहै जिसका वेतन जिवरालटर के गवर्नर के बराबरहीहै अर्थात् ५००० पांउंड सालाना। अठारह सभासदों की एक काउन्सिल बनतीहै जिनमें आठ प्रजाके निर्वाचित प्रतिनिधि और दस सरकारके चुनेहुवे अफसर लोग रहतेहैं।

मालटा एक प्राचीन उपद्वीपहै। भूमध्यसागर पर अधिकार क अभिलाषियों को यही प्रधान अड्डा मिलतारहाहै। पुराकाल में फनीशियन, रोमन और अरब आदि अनेक जातियों ने अपने अपने युवाकाल और गौरव के समय इसपर अधिकार जमायाथा। अब यह सन् १८१४ ई० से हमारी अंगरेज़ी सरकार के हाथमेंहै इमारत में पत्थर की कारीगरी यहां की बहुत अच्छी हिन्दुस्तानही की भांति रहीहै। प्राचीन इमारतों के भग्नावशेष पत्थरों पर आज भी वह चमत्कार दिखलाई पड़ताहै।

नगर की रक्षा के लिये सब ओर सुदृढ़ मोरचेबन्दीहै और कई छोटे छोटे किले भी बनेहैं जिनपर तोपें लगीहुईहैं। पानीके नल लगेहुवेहैं। रोशनी का भी अच्छा प्रबन्धहै। गिरजाघर भी

यहां पर कईहैं। सन्तजान का गिरजाघर अपने बहु मूल्य पत्थरों के निर्माण के लिये प्रख्यातहै। गवर्नर का महल—नाचघर—पुस्तकालय—हस्पताल आदि बड़ी और नामी इमारतैंहैं। हस्पताल का प्रधान चौवारा (हाल) पांचसौ तीन फीट का लम्बाहै जिसमें किसी प्रकार के स्तम्भ आदि का सहारा बिलकुल नहींहै यह "नाइट" लोगों के समय सत्रहवीं शताब्दी का निर्माण है नगर निरीक्षण के अतिरिक्त हम लोगों के लिये यहां पर सागर समर लीला के कुछ चमत्कार दिखलाने का भी प्रबन्ध हुवाथा। टारपीडो बोट और डेस्ट्रायर किश्तियों की चालैं कई प्रकार से दिखलाई गईं। यह जल जन्तु जिसप्रकार जलके भीतरही भीतर समुद्र मन्थन करते एवं अपना शिकार हेरलेतेहैं इसका अच्छा नमूना देखने को मिला। सागर समर की बातें हमारे देश हिन्दुस्तान में बिलकुल अविदित सीहैं। साधारण बन्दूक तलवार की बातें तक जब भूलगईहैं तब फिर सामुद्रिक बिद्याकी क्या चर्चा। जहांएक ओर यूरोपीय संसार समरबिद्या में नितनूतन उन्नति और आविष्कार करता चलाजाताहै तहां हम हिन्दुस्तानी लोग उसी यूरोप की एक महाशक्ति के आश्रित होकर भी अपने सोंटे डन्डे का भी इस्तेमाल भूलते चलेजातेहैं! कैसी बिडम्बना और लज्जा की बातहै!

हम लोग उपरोक्त सामरिक तमाशे देखकर अचरज करतेथे कि क्योंकर यह किश्ती पानी के भीतरही भीतर बेग से चलकर जहां चाहतीहै तहां पहुचकर अग्नि बर्षाने लगतीहै और तत्काल अलोप होजातीहै। मालटा निवासी छोटे छोटे लड़के जलमें कूद कूद कर कैसा जल बिहार करतेथे कि देखतेही बनिआताथा। हमेतो श्रीकृष्णजी का गेंद खोजने के लिये कालीदह में कूदना

स्मरण होआयाथा । कोई छोटी से छोटी वस्तु पैसा आदि आप सागर में फेंक दीजिये वे छोकरे चट निकाल लातेथे ।

—+:o:+—

यात्रा शेष TOUR CONCLUDED.

मालटा से चलकर हम लोग सईद बन्दर होते हुवे अदन पहुंचे परन्तु अदन में प्लेग के कारण वहां उतरना नहीं होसका । एक दिन बन्दर में रहकर बम्बई को रवाना हुवे । स्वदेश जननी जन्मभूमि—के पुनर्दर्शन की लालसा नित नित्यही तीब्रतर होने लगी । हम लोग जहाज़ी कर्मचारियों से बम्बई पहुचने का समय बारम्बार पूछा करते और उस घड़ी के शीघ्र आने की बड़ी उत्कंठा करतेथे । आगे बढ़नेवालों को अभीष्ट स्थान अवश्यमेव प्राप्त होताहीहै सो हम भी शनैः शनैः बम्बई बन्दर नियराने लगे अपने जहाज पर से बम्बई का प्रकाशस्तम्भ देखकर जो आनन्द हमारे हृदय में हुआ वह सचमुच बर्णन से बाहरहै ।

सितम्बर का महीना आकाश मेघाच्छन्न, कुछ कुछ बूंदा बांदी होरही थी । ऐसीही हर्षप्रदायिनी सन्ध्या के समय हमारा जहाज़ बम्बई बन्दरगाह में पहुंच गया ।

यहां पेशवाई अगवानी कुछनहीं यह तो अपने घर की वापिसी यात्रा थी । बहुत से लोग तो उसी सन्ध्या को किश्तियों पर से किनारे उतर गए थे परन्तु जहाज उस रात सागरही में रहा दूसरी प्रातःकाल किनारे आया और सब लोग किनारेकी बारकों में उतर आए हमने फिर भी अपने स्वदेशी भाइयों को नेत्रों भर देखा । देशी पुलिसमैनों को बन्दर पर इधर उधर टहलते देखा । महसूल उगाहनेवाले आदमियों, चपरासियों और सौदागरी कर्मचारियों को देखा और कुली मजदूरों को भी अपनी मजूरी के

कामों में जुटेहुए पाया। रेलगाड़ियों, एंजिनों, एंजिन डराइवरों और कोयला झोंकनेवालों को भी भरनेत्र देखा। यही सब दृश्य हमने इंगलिस्तान के साउथाम्पटन बन्दर पर भी उतरकर देखे थे।

इंगलिस्तान जाने के पहिले अपने और अपने भाइयों के सभी कारबार मेहनत मजूरी आदि हमने नित्यहीकिए और देखे जानेथे कभी किसी बात वा काम पर कोई गहिरा विचार वा ध्यान नहीं हुआ था परन्तु इस दिन इंगलिस्तान से लौटकर हिन्दुस्तान में पांव धरतेही उन्हीं सब अपनी पूर्ब दिनचर्य्याओं को देखकर न जाने क्यों हृदय में बड़े ज़ोर से आघात प्रतिघात होने लगा ?

साउथाम्पटन पोर्ट के कुली मजदूर और चाकर सिपाही भी तो उसी श्रेणी के मनुष्य थे जिसके हमारे बम्बईवाले आदमी हैं! ऐसेही कुबड़े, काने, बहिरे, लंगड़े और मोटमर्द वहां के भी कुली देखे थे और ऐसेही चौकन्ने, घूरते, घूमते वहां के पुलिसवालों को भी हमने पाया था परन्तु उनके और इनके कामों में, काम की फुरती चुस्ती और चालाकी में हमें आकाश पाताल का अन्तर दीख पड़ा। देखकर मन में बड़ा दुख उत्पन्न हुआ और यूनान देश के एक यात्री का यह बचन हठात् स्मरण होआया —

'Tis Greece! but living Greece no more!
So coldly sweet so deadly fair.
We start for soul is wanting there!

ग्रीस है, पर ग्रीस यह अब हाय ! प्राणविहीन है।
है मधुर अरु सुघर पर निश्चेष्ठ है अरु क्षीण है।
सापेक्ष्य इसमें जीवहै, पर जीवहीन मलीनहै।

सो अपने देश के लोगों में जीवन का अभाव देखकर वही भाव अपने विषय में भी प्रत्यक्ष जान पड़ने लगा।

पाठक ! निश्चयही हम इस विषय को अनुभव नहीं करतेहैं ! करते तो हमारे कामों में आज ऐसी शिथिलता क्यों दीखपड़ती ? अपनी प्राचीन अवस्था और आज की दशा को बिसूर बिसूर कर बम्बई उपकूल पर खड़ाहुवा मैं मनमानस की अनेकों हिलोड़ें खाता रहा ! कि—

हा ! कबहूं वे दिन फिरि होइहैं, वह समृद्धि सुख शोभा ।
कै अब तरसि तरसि मसूसि कै, दिन जैहैं सह छोभा !!
कहां परीक्षित, कहं जन्मेजय, कहं विक्रम, कहं भोज ।
नन्दवंश कहं, चन्द्रगुप्त कहं, हाय कहां वह ओज !!
काल बिबस जो गए नृपति वे, तौ क्यों उनके बालक ।
भए न उन सम काकी आशा, वे उपजे कुलघालक !!
पृथीराज जयचन्द कासु प्रेरण सों बैर बढ़ाई ।
आपस में कटि मरे, बिदेशी यवनहिं लियो बुलाई !
वाही दिन भारत स्वतन्त्रता जड़ मे तेल पिलाई ।
बैठे आप तमाशा देखत फिरैं सबै बिलखाई !
मथि लीन्हें सब सहज प्राकृतिक गुण भारतबासिन के ।
रहिगए सीठी छाछ सदृश ये दरदर चुगते तिनके !!!

[राधाकृष्णदास]

हमारा इंडियन कारोनेशन कंटिंजन्ट दल यहीं टूट फूटगया बहुतेरे लोग यहीं से पूना आदि स्थानों को सीधे चलेगये । शेष देवलाली कम्प तक एक साथही आये और वहां से अपने अपने स्थानों को गये । हिन्दुस्तानी बल्लमटेर नामधारी द्विजन्मा (यूरेशियन) लोग भी बम्बईही से अपने अपने मार्ग लगेथे । थोड़ेही दिनों के लिये जो यह अनेकों प्रान्तों के रंग बिरंगे पक्षी कारोनेशन नामक वृच के अवलम्बन से इकट्ठ हुवेथे सो सब

अपनी चहल पहल दिखलाकर अपने२ बसेरों को उड़गये । हमभी देवलाली में तथा मार्ग में वही सब पूर्व परिचित अपनी कंगाली के दृश्य देखते और हृदय पर अनेकों भावनाओं के आघात सहते हुये ता० १६ सितम्बर १९०२ ईस्वी को लखनऊ में पहुंचगये और "हमारी एडवर्ड तिलकयात्रा समाप्तहुई"

हम सब हिन्दुस्तानी लोग महाराजाधिराज एडवर्ड सप्तम भारत के राज राजेश्वर की बढ़ती मनातेहैं कि जिनकी कृपा कटाक्ष से हमलोगों को यह राजसूय यज्ञ देखने का सौभाग्यहुवा संसारकी साम्प्रतिक आदर्श सभ्यता को अपनी आंखों देखकर बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त हुवा और कर्मण्य संसार के प्रति भगवान की अनन्त देन का प्रत्यक्ष नमूना देखा । गोस्वामी तुलसीदासजी ने सच कहाहै :

कर्म प्रधान बिश्व करिराखा । जो जस करै सो तस फल चाखा ।

इंगलिस्तान और हिन्दुस्तान का मिलान करके महाराजा ने हमें अपनी आखों दिखलादिया कि देश वा जाति की उन्नति राजा के हाथ में नहीं बरन प्रजाही के हाथ में हुवा करतीहै । इंगलिस्तान के महाराजा निःसंदेह हिन्दुस्तान की भी वेसीही उन्नति और समद्धि चाहतेहैं जैसी कि अपने निज देश की । यह बात श्रीमानों ने हम लोगोंको अपनी राजधानी में बुलाकर दिखलाने से प्रत्यक्ष सिद्धकरदीहै और अपने देश का नमूना दिखाकर बतलादियाहै जबतक प्रजा स्वयं उन्नति शील ज्ञान वान–कर्मण्य और सभ्य नहीं होती तबतक राजा उसकी सम्यग् प्रकार से उन्नति साधन कर नहीं सकता । हमारी नितान्त अधः पतित दशा पर दया करके जो श्रीमहाराजाधिराज ने हमलोगों को इस प्रकार उत्तेजनादी हिन्दुस्तानी राजा रईसों से लेकर

सामान्य देशी और सैनिक सिपाही पर्यन्त को अपनी चमत्कारिक उन्नति को दिखलाकर भले पथ की ओर चलने की सुशिक्षा दी इसके लिये हमें महाराजा पर न्योछावर होना चाहिये । हम हृदयतल से श्रीमानों का सुगायन करतेहैं:-

करौ राज सुख साज, तेज दुगुनित फैलाये ।
पालौ प्रजा सप्रेम नीति मारग चितलाये ॥
हनौ चोर बटमार, शान्ति के शत्रु सजग नित ।
कामी कुटिल कृतघ्न, रहत जे सदा क्रूर चित ॥
जेहि हेतु मनावैं लोग सब, ह्वै सबही विधि प्रेममय ।
जयजयति सदा एडवर्डनृप, जय सप्तम एडवर्ड जय ॥
राज भार नृप लेत, शांति दसदिसि फैलायो ।
बीरन सों करि सन्धि, सुयश जगतीतल छायो ॥
राखन चीन स्वतन्त्र, मीत जापानहि कीन्ह्यों ।
भारतीय नृप सुतन, करन दलपति पन लीन्ह्यों ॥
कर बांधि बिदेशी खांड़ पै,
भारत हित साधन कियो ।
रच्छहु मिच्छहु हमकहं भले,
ईस कृपा जुगजुग जियौ ॥

३ अप्रैल १९३२ (शशिभाल कबि)

बिनय ।

सलामत रहो ! क्या लगाईहै ठोकर ।
बनाही न था गोया मदफन किसीका ॥

भाई !

देश और समाज की साम्प्रतिक दशा के बिचारने और समझने वाले सज्जनों !

आज कल की प्रकाशित दुनियां की ओर टुक आंख उठाकर निहारो। और तनिक प्राचीन जातियों के पतनोत्थान की बातों को भी इतिहास में खोलकर विचारो। तुम्हें इस नियमकी सचाई प्रत्यक्ष ज्ञात होजायगी कि:—

प्रत्येक को अपनीही उन्नति से सन्तुष्ट न होना चाहिये।
किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये॥

क्या हुआ यदि तम स्वयम् ऊंची मस्नद पर बैठने का अधिकार रखतेहो—क्याहुवा यदि तुम वेद पारंगत और बी॰ ए॰, एम॰ ए॰ की उपाधियां पाचुकेहो और क्या हुआ यदि तुम धन कुबेर भी बनगयेहो। सचमुच यदि तम्हारी प्रधानता—विद्वता और धनाढ्यता तुम्हारे देश और जाति के काम नहीं आसकती तो इनका तुम्हारे पास होना न होना बराबरहै। कितने अधिक आक्षेप का विषय होगा जब कोई क्षमतावान् व्यक्ति अपनी क्षमता से धरती माता का उपकार करने के बदले अपनी आंखों पर अपना मनमाना चश्मा चढ़ाकर उलटे ठोकरें लगाताहुआचलै!!!

याद रहै हमारे यह पार्थिव शरीर इसी हमारी धरती से बनते और अन्ततः इसी में लीन होजातेहैं।!

हमारे बड़े बुजुर्गों के शरीराणु आज भी हमारी आंखों के सामने इन्हीं बालू के कणों में चमकते दीख पड़तेहैं। इन्हीं कणिकाओं को अपनी दिव्य दृष्टि से देखताहुवा और धरती पर हमारे पदाघात को अपने शरीर पर अनुभव करताहुवा कवि हम—चश्मेपोश—लोगों से पुकारकर कहताहै:—

सलामत रहो! क्या लगाई है ठोकर!
बनाही न था गोया मदफन किसीका?

सहृदय सज्जनों !

सुनौ ! यह कैसा मर्मभेदी वचनहै !

यह आवाज़ उन्ही महापुरुषों की समाधियों से निकलतीहै जिनकी बाणी का आतंक एक समय में सारा संसार मानताथा । जो जगद्गुरु, परिब्राट और सम्राट भी थे । भाई ! उन्ही महात्माओं की आवाज़ जिनकी आज भी हम सन्तान कहलातेहैं ।

क्या हमको अपनी आंखें चश्मोंसे ढांके हुवे अन्धवत् ऊपर मुह किये उन्ही पूर्वजों और धरती माता को ठोकर लगाते चलना उचितहै ?

क्या पूर्वजों की कीर्ति पर पदाघात करना योग्य सन्तान का कर्म कहलासकताहै ?

हा ! हमारे पापों से आज माता को कितने कष्ट भोगने पड़रहेहैं ! माता हीन मलीन कातर और अनाथ होरहीहै ! भाई! दुःख असहनीयहै, टुक ध्यानदो । अपने आपकी देख भालकरो । अपने धार्मिक–धर्म प्राण–पूर्वजों के कुलमें कलंक मत बनो । गिरे भारत को अपनी पारस्परिक कलह कुचाल से ठोकरें न लगाओ । अपने कुटुम्ब अपने परिवार, अपनी जाति और अपने देश की उन्नति में अपनी उन्नति समझो । अपनी बड़ाई और विद्वता और धन का अपने देश बांधवों को सहभागी और सह भोगी बनाओ ।

संसार का उपकार करना अपना मुख्य उपदेश समझौ । शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना अपना कर्तव्य समझो, भगवान तभी तुम्हारा भला करेगा ॥

निवेदक

गदाधर

OPINIONS OF THE PRESS.

ON

"THIRTEEN MONTHS IN CHINA."

THE ADVOCATE.

DATED LUCKNOW, THURSDAY, 1ST MAY, 1902.

THIRTEEN MONTHS IN CHINA.

(By Thakur Gadadhar Singh, 7th Rajputs, Dilkusha, Lucknow. Price Re. 1-8 in Nagri Character.)

Such is the title of a modest little volume of 319 pages sent to us for review.

Indians employed in Military service are seldom noted for literary ability. They are as a rule, men of almost no culture, who primarily enter service in the ranks and gradually make their way upwards. The book under review, as coming from an Indian Soldier, did not raise high expectation as to its merits, but when its pages were opened we were very agreeably surprised with what we found therein. It reflects great credit upon the author to have so carefully observed and noted in detail, all the passing events in the hurry and scurry of Military life in active service and then to have them published in simple Hindi with his own comments profusely interspersed.

This book is a distinct advance and is likely to leave a permanent mark upon the budding Hindi literature.

The voyage from Calcutta to China, scenes at embarkation, battles at battle-fields, relief of the legation and march into Pekin, are very vividly described. The language and literature, religion and ethics, customs and superstitions of the Chinese are also touched upon. The origin of the Boxer movement, the weak points of the Chinese Government and its people, the intrigues of the Court and the corruption of the officials, have not escaped the keen observation of the author. The gruesome stories of the atrocities perpetrated by the combined armies of the so called civilised nations upon the fallen and helpless Chinese, men, women and children so vividly described by the author, under the chapter "Loot and Attyachar" surpass in their blood curdling effects, Colonel Meadow Taylor's "Confessions of the Thug." Not being content with describing China and the Chinese, the author has devoted a separate chapter to Japan and another to a comparison between China and India.

The conclusions which the author arrives at from his observations are, as a rule, sound and the style of the book is easy and natural, interspersed with wit and humour. The enthusiasm he has infused throughout in his writing is commendable. On the whole, thirteen months stay of the author in China, in the China war of 1900 and 1901 has been well spent.

We congratulate the author of "Thirteen months in China" and trust that this will not be the last book from his pen which we shall have to review. We are glad to learn that Thakur Gadadhar Singh will be a member of the Indian Coronation Contingent and leaves Lucknow in the course of the next week.

Pandit Shukdev Bihari Misra, B A., Vakil, High Court, a well-known Hindi Critic (Shashibhal Kavi) writes :

THE THIRTEEN MONTHS IN CHINA.

The very name of this book shows it has been written by an author who is an eye witness of the facts he narrates.

Most of the Hindi books that are being published now-a-days are either worthless novels, love songs or at most translations of some famous works. Unfortunately there is very little originality in the modern Hindi productions of the above mentioned nature.

Every book that is published involves some expenditure through paper, printing, notices and such like things, but if it does not compensate for the expenditure it must be considered as wasted. The only compensation which can be got through a book is the education of public opinion.

An education which does not develope the noble sentiments of its recipients is wasted, while one which imports filthy feelings is simply devilish.

I am much agrieved to remark that many books published this day infuse filthy ideas into the minds of their readers. But I become extremely gratified when in the midst of such books I get a composition which aims at the real amelioration of our countrymen. The author of the present production is Thakur Gadadhar Singh, of the 7th Rajputs Infantry, Dilkusha, Lucknow. He has produced an original work which is not in any way dependent for its materials upon any existing books. The nature of this book is novel for Hindi. Such works have been enriching the English but not our Hindi language. Happy shall be the day for our poor Hindi

when orators shall speak, poets sing and authors write in the same lofty spirit and with the same fervour as is herein exemplified. Will our Hindi knowing public also ever care to encourage such splendid productions?

The thirteen months in China is teeming with interesting facts. It contains in a brief form almost everything of interest about China and Japan. It shows in the most effective and conclusive manner that the tremendous success gained by Japan within so short a period is a living example for India to remove its defects. Both Indians and Japanese are Eastern people. So when one has obtained such a brilliant success by following one course, why should the other not attain a similar achievement by even treading the trodden path? Of course we are under a foreign Government, but the author justly feels sure that our Government, though foreign, will be as ready to help us as the Japanese Government, if only it sees us proceeding in the right direction.

He clearly says on the 25th page of his book that it is proper for the Hindus to abolish all the provincial and caste differences and form one great Hindu nation and thus deface the blot that is put by foreigners on our English Government that it wants to "devide and rule." This appears to be the only reason why our author has dealt so largely with everything relating to Japan.

The book begins with the description of a scene at Calcutta where General Leach is encouraging the Rajputs for their voyage to China. It gives a very good description of the voyage and most convincing arguments in favour of a slight variation in the current rules about pantry.

The first brief description of a battle that the book gives

is that of Tientsin. In it the bravery of a Japanese soldier is particularly noticeable.

From the illustrious example of that soldier our author draws the conclusion that what Japan possesses and our India lacks are self-sacrifice, education, love of mother tongue, self-reliance and Military tactics. The conclusions of the author are perfectly valid.

This Chinese war has seen the deaths of hundreds of Soldiers of the Allied Powers, why could not then even one of them renounce his self to acquire immortal fame for his country? One Japanese Soldier perished voluntarily at Tientsin aad thereby earned everlasting and awe inspiring name for his country, while twenty millions of our countrymen have perished involuntarily through hunger in the recent famines without earning any good name for either the Rulers or the Ruled!

Why did he only renounce his self for his country and why could others not? The only answer is that they were lacking in love of their country!

The book describes three or four more battles in which our Soldiers also took a direct and brilliant part. In these battles also the firing line of the Japanese is particularly remarkable. It was however reserved for our own brothers to relieve the "Foreign Legations" first of all and receive the open-handed hospitality of the ministers and the Ladies.

Naturally enough what the victorious armies heard from the defeated Chinese about the causes of their defeat, was nothing but recrimination. Our India is full of much the same thing, but it is difficult for one to notice one's own defects. Our author remains with the troops for only a little

after the fall of Peking. He then goes on describing several interesting buildings, Castles, &c. Later on in a few Chapters he notices the causes of the war and then proceeds with the History of the country. After noticing briefly the intercourse of the Chinese with the foreigners the author gives a vivid description of the several manners and customs, religious places, articles of commerce, &c. of the Chinese. China has accepted three different religions of Confucious (1100 B.C.), Laotsi (600 B.C.) and Budha (256 B.C.) and now-a-days we find a compound of all the three prevailing in the country.

The descriptions of the Confucian temples and the Lama Gurukul are also excellent.

The prophecy of Shri Krishna begining at page 273 is very opportune indeed.

A comparison of Japan, China and India shows that the causes which are operating as agents in dragging China and India down are :—

(1) Not following the modern improvements willingly but being dragged behind them.

(2) Pride and false belief on the strength of their country.

(3) Excess of population.

(4) False belief in religion.

(5) Want of female education.

(6) Want of love for the country and *sprit de corps* and hundreds of other wants too numerous to be mentioned.

This book contains pieces of advice to the Indians on almost every crying reform.

What a happy day it would be for India when the wishes

expressed here would be changed into real facts ?

I am unable to do justice to this work by quoting a few passages from it as in the words of Carlyle "ask me not to represent the Peruvian forest by three twigs." I can only say that Thakur Gadadhar Singh has in this work fully maintained his reputation of being one of the best and most highly enthusiastic writer of Hindi of the present day, and that he has rendered an invaluable service to his mother country and mother tongue.

He has fixed a moderate price of Re. 1-8 for a book of 320 pages printed in royal octavo form.

GOVERNMENT ADMINISTRATION REPORT 1902-1903

LITERATURE AND THE PRESS—PAGE 60.

* * * * *Chin men terah mas, or thirteen months in China*, by Thakur Gadadhar Singh, is the outcome of what the author saw and learnt in China, where he went with his regiment, the 7th Rajputs. The writer belongs to the progressive school of present-day Indian thought as represented by the *Arya Samaj*, and he inveighs against his comrades for their adherence to caste rules in matters of eating and drinking. Besides giving graphic accounts of the performance of the allied powers and of his own regiment, the writer at considerable length sings the praises of the Japanese, whose valour and military efficiency, he says, strongly impressed the Indian soldiers. He draws an unflattering comparison between the conduct of the Japanese and the soldiers of the great powers, aad passes severe structures upon the looting and shocking barbarities attributed to the latter.

THE INDIAN MIRROR.

CALCUTTA; TUESDAY. APRIL 22, 1902

THIRTEEN MONTHS IN CHINA.

We have been devoting latterly, that is during the past few days, much of our immediate attention to the "Eastern Question," not in the Western sense, but in relation to the kinship between Asiatic countries, claiming kindredship, such as India, China, and Japan. We almost think, that despite their seeming dissimilar circumstances, those three countries have a common future and a common destiny, and that the good or bad fortune of each must tell on the two others. Japan humiliated China with a suddenness which surprised the world, but at the same time transferred the "Eastern Question" from decrepit European Turkey to the real Far East. The war with China proved that an Asiatic Power, adopting the eight methods and endowed with sufficient self-denial and patriotism is the equal of any single American Power. However, it is not this sort of argument which we are going to adopt to-day. We are immediately concerned with a brief notice of a very remarkable production from the pen of Thakur Gadadhar Singh under the title of "Thirteen Months in China." We are unable to make any extracts in the original, for the work is written in the Hindi language. The Thakur is attached to the regiment of the "Seventh Rajputs," his present address being Dilkusha, Lucknow. He accompanied the regiment to China, saw Chinese and Japanese and Europeans together side by side, and his vivid word pictures of them, all in faultless literary Hindi, are almost in the nature of a revelation. This book deserves to be rendered into all the vernaculars of India. We are unable to follow our author in all his reflections, but his ideas are for the most part

good, and always suggestive. He is about to proceed to England to attend the ceremonies awaiting the King's Coronation, and may do much good there by speaking in a manner as is adopted in his book. His one chief impression seems to be the remarkable progress of the Japanese He had opportunities in China in the battle field, and off it of Japanese foresight and patriotism and bravery and self-denial. Of these things we have read in the accounts, published in the newspapers by Special War Correspondents. But Thakur Gadadhar's narrative is much more flowing, and glowing with enthusiasm. Our author is probably much too sanguine in his belief, that the British Government would be willing to help its subjects in India quite as much as the Japan Government has been helping the Japanese. We are expected by our author to sink all our provincial and caste differences : in that case, there would be no "divide and rule" policy possible. But this is a very Utopia anticipated by our author. And, indeed, we see a flagrant contradiction on another page, when Generals Roberts and White are congratulated on forming Indian regiments on this very caste system, a system which gave a separation as well as an individuality to the Rajput fighting man. We are not going to follow our author into heroic adventures by flood and field. We rather reiterate the more serious morals of his story. He has come to the conclusion that what Japan commands and employs in abundance, India abundantly lacks ; that is, education, a love for the mother-tongue, military training, self-reliance, and self-sacrifice. The Chinese lacked, like India, all those supreme qualities which must make any nation great and powerful, and, therefore China was crushed under the international Juggernath Car. The Chinese, when interrogated about their misfortunes, did not acknowledge that they were fairly beaten because they deserved to, but indulged to insensate recrimination much

as we Indians do, for if the truth must be told, we desire before we deserve. That is the moral we have been pointing out all these years. Among the causes of China's and India's downfall are the unwillingness of both to initiate reforms, and whining at being compelled to change our economic and social conditions under foreign compulsion. These are the chief causes of our degradation. The Thakur has referred to several more ineloqnent and convincing language. But our author's book must be read in its original mellifluous Hindi. The book will make a popular educational agent, and if adopted as an University text-book for the United Provinces of Agra and Oudh, will be far more productive of good than Lee Warner's "History of India" and similar publications.

"चीन में तेरह मास"

पर

सम्मतियां।

सरस्वती, मार्च १९०२

हम सहर्ष चीन में तेरह मास की प्राप्ति स्वीकार करते हैं। हिन्दी में अब तक हमने ऐसी दूसरी पुस्तक नहीं देखी है। इस पुस्तक में "चीन में सन १९००-०१ के महासंग्राम का आंखों देखा सम्पूर्ण बृत्तान्त, तथा चीन और जापान का संक्षिप्त इतिहास, रीति नीति, चीनियों के धर्म विश्वास, खान पान, व्यवहार बर्ताव, फौजी और देशी बृत्तान्त, नामी मन्दिरों, इमारतों आदि के सर्वांग वर्णन, बाक्सर विद्रोह, विदेशीय अधिकार," इत्यादि विषयों का बर्णन बड़ी सुन्दर और उपयुक्त रीति से दिया है। पुस्तक बड़े बड़े ३२० पृष्ठों की है और मूल्य केवल १॥) ही है। यों तो हिन्दी में अनेक पुस्तकें छप गई हैं और नित्य छपती जाती हैं, परन्तु इस बात के कहने में हमें संकोच नहीं है कि ऐसी पुस्तक दूसरी अभीतक नहीं छपीहै। भारतबासियों के लिये समयोपयुक्त शिक्षाओं का यह भंडार है। इस ग्रन्थ के रचयिता ठाकुर गदाधर सिंह (दिलकुशा, लखनऊ) हैं, जो युद्ध में स्वयं वर्तमान थे और जिन्होंने अपनी आंखों का देखा हुआ सब बृत्तान्त लिखा है। भिन्न भिन्न देशीय सिपाहियों का रहन सहन, उनका बर्ताव, उनकी बीरता, उनकी क्रूरता अथवा दयालुता, इन सब बातोंका ज्ञान इस पुस्तकके पढ़नेसे पूरापूरा प्राप्त होता है। भारतबासी राजपूत सेना को खान पान के सम्बन्ध में कैसे कैसे कष्ट उठाने पड़े और फिर वे किस बीरता से लड़े, ये सब लोगों के जानने और ध्यान देने योग्य बातें हैं। जापानी सिपाहियों की बीरताका बृत्तान्तपढ़ हमेंतो भारतवर्ष

के प्राचीन समय का पूरा पूरा स्मरण हो आया। सारांश यह कि यह पुस्तक ऐसी है कि जिसे प्रत्येक भारतहितैषीको खूब ध्यान से पढ़ना और विचार करना चाहिए। इसकी भाषा में यद्यपि दोष रह गए हैं, किन्तु और गुणों के आगे इनकी गिनती नहीं हो सकती, क्योंकि जहां गुणों का आधिक्य रहता है, वहां एक आधा दोष भी गुण ही की गिनती में हो जाता है। हिन्दी प्रेमी मात्र को उचित है कि इस पुस्तक को मंगवा लेखक का उत्साह बढ़ावें और आप उसे पढ़ लाभ उठावें।

हिन्दोस्थान, १३ एप्रिल १९०२

चीन में १३ मास (चीन संग्राम)—अर्थात चीन में सन १९०० ०१ के महा संग्रामका आंखों देखा सम्पूर्ण वृत्तान्त. तथा चीन और जापान का संक्षिप्त इतिहास, रीति भांति, चीनियों के धर्म्म, बिश्वास, खान पान, व्यवहार बरताव, फौजी और देशी वृत्तान्त, लामों मंदिरों, इमारतों आदि का सर्वांग वर्णन, बाकसर विद्रोह, विदेशी अधिकार, इत्यादि प्रायः सभी जानने योग्य विषयों का वर्णन ठाकुर गदाधरसिंहने भलीभांति से इस पुस्तक में किया है, ठौर ठौर ठाकुर साहब ने जो नोट किये हैं उनसे पुस्तक और भी रोचक हो गई है, यह चीन विषयक सम्पूर्ण वृत्तांत ठाकुर गदाधर सिंह जी का अपने नेत्रों से देखा हुआ है इसी से पुस्तक ऐसी सुन्दर बनी है कि एक बार आरम्भ करके बिना समाप्त किये फिर नहीं रहा जाता है मूल्य १।।) भेजनेपर यह पुस्तक "ठाकुर गदाधर सिंह दिलकुशा लखनऊ" से मिलती है।

राजपूत, १५ एप्रिल १९०२

चीन में तेरह मास—यह एक नये ढंग की अति उत्तम पुस्तक

है। आज तक इस तरह की पुस्तक हिन्दी भाषामें कभी लिखी ही नहीं गई। जो विषय जिस रीति से इस पुस्तक में लिखा गया है उसके लिये लेखक की हम जितनी प्रशंसा करें थोड़ी है इस पुस्तक के नाम से कोई यह न समझे कि चीन में एक वर्षमें बजाय १२ के १३ मास होते हैं और ग्रंथकर्ताने इन्हीं १३ मासों के विषय में कुछ लिखा होगा। नहीं यह बात नहीं है। चीन में सन १९०० में जो संग्राम हुआ था और जिस में लड़ने को ७ वीं राजपूत पलटन भी गई थी चीन में उसी युद्ध के समय से १३ मास तक ग्रंथकार ठाकुर गदाधर सिंह जी चीन में रहे थे और इन १३ मासों में रह कर जो कुछ देखा, सुना, अनुभव किया और चीन का वृत्तांत पुस्तकों में पढ़ा उसी को इस पुस्तक में लिखा है इस ग्रंथ में आंखों देखा चीन संग्राम का सविस्तर वृत्तांत, और चीन व जापान का संक्षिप्त इतिहास, रस्म रिवाज, चीनियों के धर्म्म विश्वास, खान पान, त्यौहार बर्त्ताव, दैशिक और सैनिक वृत्तांत, सुप्रसिद्ध मन्दिरों व अन्य इमारतों का वर्णन, बाक्सर विद्रोह और बिदेशी अधिकार की कथा ऐसी सुन्दर रीतिसे वर्णन की है कि पुस्तक के एक दो पृष्ट पढ़ने पर बिना पुस्तक को समाप्त किये रहा नहीं जाता। किसी देशी सैनिक ने किसी युद्ध से लौट कर युद्ध का कुछ भी वृत्तान्त कभी लिखा हो यह बात आज तक कहीं सुनने में नहीं आई परन्तु इसग्रन्थ के लेखक ने केवल युद्ध का ही वर्णन नहीं किन्तु चीन देश और आरम्भ से अपनी यात्रा का विवरण लिखकर अपने देशवासियों के लिये एक अपूर्व उपहार प्रस्तुत किया और हिन्दू जातिके प्रति समर्पण किया। यह पुस्तक सुन्दरटाइप और रायल सफेद चिकने कागज के अठपेजी आकार के ३२० सफों पर छपी है। मूल्य १।) है। क्षत्रिय मात्रको इस पुस्तक को पढ़ना चाहिये।

पुस्तक मिलनेका पता:—ठाकुर गदाधर सिंह जी ७वीं राजपूत्स लखनऊ।

श्रीमान् ठाकुर हरसुप्रसाद सिंह जी वकील व ज़मीदार, आरा, लिखते हैं :—

मान्यवर सम्पादक महाशय !

राजपूतों में जैसा विद्याका अभाव है वह सूर्य्य के प्रकाश से भी अधिक प्रगटहै। इस बिषय में कुछ लेख वा विवाद की आवश्यकता नहींहै वा इस समय के लिये इसको एकशियम (Axiom) मान लेना पड़ेगा। ऐसी दशा में एक राजपूत की लिखी हुई पुस्तक पर राजपूतों का ध्यान न पड़े व उसकी क़दर न करे तो कोई आश्चर्य्य की बात नहीं है। सच है जो जाति अपने योग्य भाइयों की प्रतिष्ठा नकरे उसकी यहीदशा होनी चाहिये। एकतो हमारी जाति में ऐसे लोगों का अभाव है उस पर यह क़दरदानी। हे ईश्वर तू ही अपनी कृपाकर व हम सब की दशा को सुधार गुणग्राहकों से ही गुणियों की अधिकता होतीहै। एक अतिउपयोगी पुस्तक "चीनमें तेरहमास" नामकी ठाकुर गदाधर सिंह जी ने लिखीहै। ठाकुर साहब बड़े गम्भीर व उत्साही पुरुष हैं। आप के धर्म्मभाव, देशभक्ति का आदर्श उस पुस्तक के देखने से छिपा न रहेगा। गत चीन संग्राम में आप सातवीं राजपूत बंगाल पलटन में चीन में पधारे थे। इस पुस्तक में तीनसौ सफों से अधिक में चीन संग्राम की विस्तृत कथा ऐसी उत्तमता से लिखी है कि पढ़ने के समय ऐसा जान पड़ता है कि पढ़नेवाला आंखों से चीन युद्ध देख रहा है। चीन की प्रसिद्ध इमारतें वा चीनियों के रस्म रिवाज वा धर्म्म व जापानियोंका पूरा व्यवरा लिखा है। कोई सफा कुछ न कुछ उपदेश देता ही है आपने जहां जहां आर्य्यावर्त्तकी दशासे चीन व जापानकी दशाका मिलान करतेहुए आर्य्यावर्त्त निवासियों की हीन दशा की ओर पाठकों का ध्यान दिलायाहै वहीं सच्चे देशहितैषी का हृदय भर आता है। ऐसे ऐसे मौक़ों पर ठाकुर

साहब की सम्मति बहुत ही योग्य पक्षपात रहित व सर्वमान्य है। धर्मभाव की झलक हर सफे में दीख पड़ती है बड़ा आश्चर्य्य तो यह है कि नाविल या उपन्यास के पढ़नेवाले को भी कुछ कम आनन्द नहीं आता है। पढ़ने वाले को बहुत कुछ ज्ञान लड़ाई लड़ने के तरीके का भी होता है। राजभक्ति व देशभक्ति प्रति शब्दसे झलकतीहै व बनावटी नहीं मालूमहोती। मज़हब व रस्म रिवाज का वर्णन, जिसमें अविज्ञ साधारण मनुष्योंको आनन्द नहीं आताहै, किया भी आपने ऐसे ढंग से है कि पढ़ने वाले की रुचि पढ़ने के समय बढ़ती जाती है। भाषा भी बहुत शुद्ध व सरस है व आपके वर्णन करने की रीति बिलकुल न्यारी व अपूर्व है सरांश इस लेख का यह है कि यह पुस्तक सर्वांश में अपूर्व व पूर्ण है व अपने ढंग की पहली पुस्तक है। मेरी सम्मतिमें इसको हर सुशिक्षित पुरुषको देखना चाहिये व विशेषतः राजपूतों को तो अवश्यमेव ठाकुर साहब के परिश्रम को सफल करने के अर्थ खरीदकर पढ़ना चाहिए छपाई व कागज़ भी उत्तम है। विस्तार भय से मैं इस लेख को समाप्त करता हूं। मैं ठाकुर साहब का बहुत बाधित हूं कि आप ने इस पुस्तक की एक कापी मुझे भेट की यद्यापि मैं इस असाधारण भेट के योग्य न था।

भारतजीवन, २१ एप्रिल १९०२

चीन में तेरह मास—ठाकुर गदाधरसिंह जी से हमलोगों को यह पुस्तक प्राप्त हुई है। आज यह पुस्तक हिन्दी में अपना जोड़ नहीं रखती। यह न किस्सा कहानी है न नाटक उपन्यास है न साहित्य की रसकहानी है वरन आंखों देखी बातों का परमावश्यकीय सुन्दर संग्रह है। पिछले बलवों में जहां चीन पर दुराधर्ष और युरोप आमेरिका के सभ्यतों की सेना जो चढ़ धाई

थी उसी का पूरा पूरा ज्यांकात्यों हाल चीनराज्य की राजनैतिक, समाजिक, धर्म्मविषय की और देश विषय का पूरा पूरा हाल ब्यौरेवार उत्तमप्रकारसे लिखागया है। इसी के साथ चीन और जापान की ऐतिहासिक बातें और उद्दण्ड बाक्सरों का हालभी सुन्दर ढंग से लिखा गया है। लिखनेवाले ठाकुर गदाधरसिंहजी अंग्रेजों की फौज में बाक्सरों के युद्ध में कलकत्ते से भेजे गये थे। सो उन्होंने जिस समय से कलकत्ता छोड़ा और जब तक चीन राज्य में पहुंचे तब तक का पूरा पूरा हाल लिखा है। जो लोग व्यर्थ के ऊटपटांग उपन्यासों के पढ़ने में अपना अमूल्य समय बिताते हैं उन्हें हमलोग अनुरोध करते हैं कि १॥) रुपये में इस पुस्तक को मंगवा के पढ़ें।